अमेरिका की संस्कृति

लेखक
ब्रैडफोर्ड स्मिथ

अनुवादक
कृष्णचन्द्र

यूरेशिया पब्लिशिंग हाउस प्राइवेट लिमिटेड
रामनगर, नई दिल्ली।

प्रकाशक का निवेदन

सयुक्त राज्य अमेरिका की भौतिक उन्नति को देखकर आम तौर पर यह समझा जाता है कि अमेरिकन लोग भौतिकवादी हैं और नैतिक मूल्यो मे उनका अधिक विश्वास नही है। लेकिन वस्तुस्थिति यह नही है। अमेरिका ने आर्थिक और भौतिक क्षेत्रो मे उन्नति कर अपनी जनता के जीवन-स्तर का बहुत ऊचा उठा लिया है जिमका परिणाम यह है कि वहाँ अधिकाश सख्या मध्यवित्त वर्ग की है। भौतिकवादी दृष्टिकोण अमेरिकन लोगो का विशिष्ट लक्षण नही है, बल्कि वह मध्य-वित्त वर्ग का लक्षण है, चाहे वह किसी भी देश मे हो। यही कारण है कि इस मध्यवित्त वर्ग की बहुसख्या की वजह से ही लोग भूल से अमेरिकन सस्कृति को भौतिकवादी सस्कृति समझ लेते है।

अमेरिकन सस्कृति मे छः आधारभूत तत्त्व है—व्यक्तिवादिता, स्वैच्छिक सगठन, सघवाद, प्रति-सन्तुलन, विभिन्न तत्त्वो और वर्गो की पारस्परिक क्रिया-अनुक्रिया और उसके द्वारा अन्तिम सश्लेषण और ऐक्य। यह छः-सूत्री प्रक्रिया अमेरिका के राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक जीवन मे हर स्तर पर नजर आती है और यह अमेरिका के इतिहास की देन है।

इस प्रक्रिया को भली भाँति समझ लेने के बाद इस भ्रम का सहज मे निराकरण हो सकता है कि अमेरिकन सस्कृति भौतिकवादी सस्कृति है।

अमेरिका ने जिस जीवन-पद्धति का बीजारोपण किया है और जिस उन्मुक्त समाज की नीव रखी है उसमे सक्रियता और गतिशीलता है, वर्त्तमान अन्याय के प्रति असहिष्णुता और भविष्य के प्रति आशावादिता है और वह आध्यात्मिक, मानसिक, शारीरिक और भौतिक शक्तियो से अनुप्राणित है।

अमेरिकन सस्कृति को समझने के लिए यह जान लेना आवश्यक है कि उसका स्वर भावात्मक है, अभावात्मक नही; प्रेमपरक है, घृणापरक नही। वह विनाश करना नही चाहती, निर्माण करना चाहती है। वह एक वर्ग को दूसरे वर्ग से लडाना नही चाहती, वर्ग-भेद को ही खत्म कर देना चाहती है। अमेरिकन इतिहास की एक विशिष्टता यह है कि उसमे हमेशा पडोसी के साथ अच्छे सम्बन्धो और सहयोग का उद्योग किया गया है। इससे अमेरिका मधुर पडोसीचारे का अभ्यस्त हो गया है और अब वह एक ऐसी स्थिति मे पहुँच गया है, जहाँ सारा विश्व ही उसका पडोसी है।

लेखक ने अमेरिकन सस्कृति के इस रूप को इस पुस्तक मे विभिन्न पहलुओ से समझाने का प्रयत्न किया है और इसमे उसे सफलता भी प्राप्त हुई है। अमेरिका की संस्कृति की विशद जानकारी देने के साथ-साथ यह पुस्तक उसके सम्बन्ध मे प्रचलित भ्रान्तियो का निराकरण करने मे सहायता देगी, ऐसी आशा है।

विषय-सूची

अध्याय : एक

संस्कृति का स्वरूप

हरेक सभ्यता एक परीक्षण है और सघर्ष मे विजयी होकर जीवित रहना ही उसकी सफलता की कसौटी है। सयुक्त राज्य अमेरिका की सभ्यता और अन्य अधिकतर सभ्यताओ मे यह अन्तर है कि वह प्रारम्भ से ही एक सोच-समझ कर किया गया चेतन परीक्षण रही है। प्लाइमाउथ और बोस्टन को प्रारम्भ मे छोटे-छोटे धार्मिक कस्बो के रूप मे बसाना, महाद्वीपीय काग्रेस की स्थापना, सविधान द्वारा सस्थापित सघीय प्रशासन, जैकसन द्वारा प्रतिपादित लोकतन्त्र, टेडी रूजवेल्ट का यथायोग्य व्यवहार, फ्रैंकलिन रूजवेल्ट की नई आर्थिक नीति, मार्शल योजना और ट्रूमेन सिद्धान्त—ये सभी चीजे अच्छे परिणामो और लाभो की दृष्टि से किये गये चेतन परीक्षण ही थी।

यूरोप के लोगो को अमेरिका मे आकर जिन नई परिस्थितियों का सामना करना पडा, उन्होने उन्हें नये-नये प्रयोग और परीक्षण करने के लिए मजबूर किया। प्रारम्भिक तीर्थयात्रियो ने अमेरिका की भूमि पर कृषि का परीक्षण किया, किन्तु वह सफल तभी हुआ जब उन्होने अपने मूल निवासी इडियन मित्र स्क्वांटो से यह सीख लिया कि उन्हें उसमे मछली की खाद देनी चाहिए और जब उन्होने हर व्यक्ति को यह अनुमति दे दी कि वह सामुदायिक भडार के बजाय अपने ही लिए उसका उत्पादन करे। विलियम ब्रैडफोर्ड ने प्लाइमाउथ मे अपने प्रारम्भिक वर्षों का जो रोचक वर्णन किया है उसमे उन्होने बताया है कि किस प्रकार उन्हें और उनके मित्रो को वन्य जीवन के तरीको को सीखते हुए एक के बाद एक असफलताओ का सामना करना पडा। अमेरिका मे प्रारम्भ मे आकर बसे अग्रेजो

की कितनी ही बस्तियाँ इन परीक्षणो मे नष्ट हो गईं या उन्हे बिल्कुल छोड देना पडा, और तब कही जेम्सटाउन और प्लाइमाउथ के लोग सघर्ष मे जीवित रहना सीख सके।

इस प्रकार अमेरिकनो को प्रारम्भ से ही नये विचारो को स्वीकार करने, उन्हे आजमाने, असफल होने और सफलता के लिए पुन प्रयत्न करने की शिक्षा लेनी पडी।

लिंकन ने अपने सर्वोत्तम भाषण मे अमेरिकन आदर्श को सार रूप मे बताते हुए उसे एक ऐसा परीक्षण कहा था, "जिसका प्रयोजन सब मनुष्यो के जन्मतः समान होने के सिद्धान्त को सिद्ध करना है।" उसके इन शब्दो ने हरेक अमेरिकन के हृदय को झकृत कर दिया था। उसने कहा था कि "हमारा गृह-युद्ध यह सिद्ध करने के लिए एक कसौटी है कि क्या इस आदर्श को साकार करने के लिए स्थापित किया गया राष्ट्र चिरकाल तक जीवित रह सकता है।"

फिर भी अमेरिकनो को आम तौर पर अपनी निज की सस्कृति की बहुत कम प्रतीति है और हमारे विदेशी मित्रो को तो उसकी और भी कम समझ है। शायद वे जानते तो बहुत कुछ है, किन्तु समझते कम हैं। हमारे जीवन की ऊपरी सतह की अभिव्यक्तियो को लोग खूब जानते हैं। उदाहरण के लिए भौतिक वस्तुओ की विविधता और बाहुल्य को, हमारे औद्योगिक और सैनिक सस्थानो की शक्ति को, व्यापार और निजी व्यवसाय को हमारे देश मे दिये जाने वाले महत्त्व को, हमारे नारी समाज की दिखावे की प्रवृत्ति को और हमारे बच्चो के सबल शारीरिक गठन को लोग भली भाँति जानते और स्वीकार करते हैं। किन्तु वे इन सब के पीछे विद्यमान भावना को नही जानते। अमेरिकन लोगो के व्यवहार और अमेरिका की रीति-नीति का अध्ययन करने वाले लोग अक्सर ऊपर की सतह पर ही रुक जाते है और उसकी प्रशसा या निन्दा करने लगते हैं—वे उस

ऐतिहासिक या सास्कृतिक स्वर-मालिका को नही जानते, जिस पर वह रागिनी रची गई है।

दूसरी कठिनाई यह है कि किसी एक अमेरिकन व्यक्ति मे जो भी प्रवृत्तियाँ या आदतें वे देखते हैं, उन सभी को वे "अमेरिकन" प्रवृत्ति या स्वभाव कहने लगते है। उदाहरण के लिए यह कहा जाता है कि अमेरिकन लोग भौतिकवादी होते हैं, किन्तु अधिकतर अमेरिकन लोग क्योकि मध्यम वर्ग के है, इसलिए यह सम्भव है कि भौतिकवादी होना केवल अमेरिकन लोगो की स्वभावगत विशेषता न हो, वल्कि सभी जगह के मध्यम वर्ग मे यह प्रवृत्ति पायी जाती हो। विदेशी लोग जिस अमेरिकन को एक आक्रामक प्रकृति के, शोरो-गुल करने वाले, शुद्ध आचारवादी, सतर्क और आवश्यकता से अधिक खाने-पीने वाले व्यक्ति के रूप मे देखते है, उसमे ये सब गुण अमेरिकन होने के कारण ही हो, यह आवश्यक नही है। यह सम्भव है कि उसमे ये गुण उसके धन्धे, पारिवारिक पृष्ठभूमि, धर्म, आयु या उसकी दौलत का परिणाम हो। ऐसी दशा मे जहा भी इस प्रकार की पेशागत या धर्मगत पृष्ठभूमि होगी या इस तरह की आर्थिक समृद्धि होगी, वही इस प्रकार के गुण पाये जाएँगे।

फिर भी कुछ आदतें, प्रवृत्तियाँ, प्रेरणाएँ, भावनाएँ, महत्त्वाकाक्षाएँ, विश्वास और निष्ठाएँ ऐसी है जो अमेरिकनों की चरित्रगत विशेषता हैं और इसी प्रकार कुछ ऐसी सस्थाएँ, समूह, सगठन और कार्य-कलाप भी हैं जो अमेरिकन समाज की विशेषता है। इन सबको समझने के लिए सस्कृति के अर्थ को समझने की आवश्यकता है।

सस्कृति क्या है?

सस्कृति का अर्थ है किसी समाज की जीवन-पद्धति, जिसमे उसकी शिल्प-कला, विश्वास और मान्यताएँ, सचित ज्ञान और वे मूल्य भी आ जाते हैं, जिनके लिये उस समाज के सदस्य जीते है। इसके अलावा उसकी विकसित कलाएँ, पारिवारिक जीवन, सन्तान-पालन, विवाह

और प्रणय की प्रथा, शिक्षा, व्यवसाय और शासन—अर्थात् उसकी शेष समूची विरासत भी जो उसके सदस्यो को उपलब्ध है या हो सकती है, उसके अन्तर्गत आ जाती है।

इस प्रकार किसी सस्कृति की पूरी कल्पना मन मे बनाने के लिए हमे सारे समाज को देखना पडता है। इससे यह बात स्पष्ट हो जाती है कि हम किसी समुदाय के सामुदायिक व्यवहार को उसकी सस्कृति के ताने-बाने के अग के रूप मे ही देख सकते हैं। अब तक सयुक्त राज्य अमेरिका के बारे मे जो कुछ लिखा गया है उसका बहुत-सा अश इस दृष्टि से अपर्याप्त है, क्योकि उसमे "अमेरिकन" लोगो की कुछ खास प्रवृत्तियो का पृथक् रूप मे वर्णन किया गया है और समूची अमेरिकन सस्कृति मे उनका क्या और कहाँ स्थान है, यह बताये बिना उन पर नैतिक दृष्टि से फैसले देने की चेष्टा की गई है। किसी देश के लोगों को "भौतिकवादी", या "धन का प्रेमी" या "अत्यधिक लैगिक प्रवृत्ति वाला" या "अत्यधिक मिलनसार" कहना उनकी वास्तविक पृष्ठभूमि को समझे बिना उनके सम्बन्ध मे नैतिक निर्णय देना है।

किसी समाज के व्यक्तियो का वर्गीकरण और सगठन अनेक प्रकार से किया जाता है। उसके हर सदस्य का आयु और लिंग की दृष्टि से, सामाजिक प्रतिष्ठा की दृष्टि से और विशिष्ट पेशे की दृष्टि से एक खास स्थान होता है। इसी तरह अपने परिवार मे और शिक्षा सस्था, बिरादरी, गुप्त सगठन, खेल, क्लब और ट्रस्टी मण्डल आदि विविध सस्थानो और सघो मे भी उसकी अपनी जगह होती है। लेकिन इन विभिन्नताओ और वर्गीकरणो के बावजूद उस समाज के सभी सदस्यों मे कुछ सर्व-सामान्य व्यवहार होते हैं। लेकिन इस सामान्य व्यवहार के साथ-साथ उनमे कुछ ऐसी अनुक्रियाएं भी होती हैं, जो उस समाज के भीतर किसी विशिष्ट सामाजिक समुदाय की विशेषता होती हैं।

संस्कृति व्यक्तित्व का एक निश्चित स्वरूप बनाने मे सहायक होती है। साथ ही वह अपनी सीमा के भीतर विविध प्रकार के व्यक्तित्वो

का निर्माण भी करती है। लेकिन इस व्यापक विविधता के बीच मे भी एक राष्ट्रीय चरित्र को स्पष्ट रूप मे पहचाना जा सकता है, क्योकि उस सस्कृति के भीतर हर व्यक्ति एक सर्व-सामान्य विरासत से प्रभावित होता है। इस प्रकार किसी राष्ट्र के राष्ट्रीय चरित्र या स्वभाव को खोजना उस समय तो सर्वथा उचित होता है, जब हम यह मान लेते हैं कि यह चरित्र या स्वभाव उसकी सस्कृति का परिणाम होता है, किन्तु जब हम उसे किसी विशिष्ट रक्त या जाति आदि का परिणाम मान कर चलते हैं, तब हम राष्ट्रीय चरित्र की सही खोज नही कर सकते।

सयुक्त राज्य मे अमेरिकन माता-पिता से उत्पन्न बच्चा यदि शैशव मे ही फ्रांस ले जाया जाए और वहाँ किसी फ्रेंच परिवार मे पाला-पोसा जाए तो टैकनिकल दृष्टि से उसकी राष्ट्रीयता चाहे कुछ भी हो, वह बडा होकर फ्रेंच ही होगा। इसी तरह यदि एक चीनी शिशु एक अमेरिकन परिवार मे पाला-पोसा जाए तो वह अमेरिकन की भांति ही सोचेगा, बोलेगा और काम करेगा। वह देखने मे भी अमेरिकन ही लगेगा, क्योकि आहार और जलवायु उसे खुश्क और कठोर बना देंगे और उसके चेहरे की बाहरी अभिव्यक्ति भी उस परिवार के जैसी हो जायेगी जिसमे उसका पालन-पोषण हुआ होगा। यद्यपि उसका ढांचा और त्वचा का रग उसके मां-बाप की भाँति मगोल जाति के ढांचे और रग के सदृश ही रहेगा, तो भी उसके रवैये, उसकी आदतें और आकाक्षाएँ उसके पालनकर्ता परिवार के ही समान होगी।

इस प्रकार एक राष्ट्र के लोगो को समझने के लिए हमे उनकी भौतिक परिस्थितियो (भौगोलिक स्थिति, जलवायु, प्राकृतिक साधन, खाद्य पदार्थो की उपलब्धि, शक्ति के स्रोत और औद्योगिक विकास), मानवीय प्रभावो (माता-पिता, नाते-रिश्तेदार, मित्र, पडोसी, सहकर्मी, अध्यापक, पुलिस और अन्य अधिकारी), उनकी सस्थाओ (परिवार, स्कूल, चर्च, अमीर-उमराव, सरकार और व्यवसाय), उनकी कलात्मक

अभिव्यक्तियो, विचार-धारा (राष्ट्रीय या स्थानीय रीति-रिवाज, सविधान, धर्म, सामूहिक निष्ठा और पूर्वजो के पूजा सम्बन्धी विचार) और तीन बुनियादी आवश्यकताओ—आत्म-रक्षा, आत्म-प्रजनन और आत्माभिव्यक्ति—की प्राप्ति के उनके तरीको पर विचार करना चाहिए।

हरेक सस्कृति एक पेचीदा ताना-बाना है, जिसका हरेक भाग दूसरे के साथ गुथ कर बुना हुआ है। हम अपने मन मे अर्थतन्त्र और प्रशासन या शिक्षा और मनोरजन आदि मे जो भेद करते हैं, वह वास्तविक उतना नही होता, जितना कि ऊपरी होता है। हम अपनी अर्थ-व्यवस्था की तब तक व्याख्या नही कर सकते, जब तक कि यह न बताएँ कि टैक्स लगाने, अन्तर्राज्यीय व्यापार पर नियन्त्रण करने और श्रमिक विवादो को निबटाने आदि के कामो मे सरकार क्या भाग अदा करती है। किन्तु हमारे मन की भी अपनी सीमाएँ और मर्यादाएँ हैं, इसलिए हमे मानवीय ताने-बाने को, सस्कृति के ताने-बाने को तोडकर अलग-अलग वस्तुओ मे विभाजित कर देना पडता है। तब हम उसे फिर एक समय ताने-बाने की बुनती के रूप मे देखने का प्रयत्न कर सकते है।

संस्कृतियों का सकट

आज अन्तर्राष्ट्रीय आदान-प्रदान इतना द्रुत और आसान हो गया है कि हम अन्य सस्कृतियो के साथ पहले की अपेक्षा अधिक सम्पर्क मे आ सकते हैं। पन्द्रह लाख से अधिक अमेरिकन प्रतिवर्ष यूरोप जाते हैं। अपने देश से बाहर निकले बिना भी हम यह सम्पर्क स्थापित कर सकते हैं, क्योकि आज पचास हजार छात्र और विदेशी विशेषज्ञ हम लोगो के बीच मे हैं।

सस्कृतियो का यह आदान-प्रदान उन्हे उद्दीपित और समृद्ध करता है। वास्तव मे इस आदान-प्रदान और सकर से ही सभ्यता ने तरक्की की है। ग्रीस ने पूर्व के प्राचीन साम्राज्यों से जो कुछ सीखा, उसने उनकी सस्कृति को अधिक उर्वर बनाया और पोषण प्रदान किया। रोम ग्रीक संस्कृति के सम्पर्क में आने से ही अपनी बर्बरतापूर्ण सभ्यता

से ऊपर उठ सका। उत्तरी यूरोप ने भी रोमन सस्कृति के सम्पर्क पर ही अपनी सभ्यता का भवन खडा किया। अन्धकारमय युगो के बाद इस्लाम के सम्पर्क और विस्तृत प्राचीन साहित्य के पुनरध्ययन ने समूचे यूरोप मे एक नयी सस्कृति को पुष्पित और पल्लवित किया। सयुक्त राज्य को यहूदी-ग्रीक-रोमन-यूरोपियन सस्कृति की ही विरासत नही मिली, बल्कि ससार के सभी भागो—अफ्रीका, एशिया, स्पैनिश अमेरिका और मूल-निवासी इडियनो की सस्कृतियो ने भी उसे प्रभावित किया।

हमारे भोजन मे जर्मनी, मैक्सिको, जापान और इटली, सभी जगह के भोज्य पदार्थ सम्मिलित है। इण्डियनो ने हमे मक्का और स्क्वैश (एक प्रकार का कद्दू) पैदा करना और सकोटैश (मक्का और सेम का बना एक खाद्य पदार्थ) खाना सिखाया। हमारे सारे देश मे चीनी भोजनालयो का कारोबार खूब चल रहा है और सभी बडी दुकानो पर सोयाबीन की चटनी, सेवइयाँ और चोमीन आदि चीनी खाद्य पदार्थ बिकते हैं। यह हो सकता है कि ये वस्तुएँ अपने शुद्ध मूल रूप मे न हो और अमेरिकनो ने उनमे कुछ परिष्कार कर लिया हो, क्योकि यह परिवर्तन और परिष्कार सस्कृतियो के सम्पर्क और मिश्रण का अनिवार्य परिणाम है।

हमने अपना अधिकतर सगीत इटली और जर्मनी से, चित्रकला फ्रास से, न्याय की धाराए इ ग्लैण्ड से और अपना लोक-सगीत अफ्रीकी स्वर-लहरियो से लिया है।

लेकिन सस्कृतियो का यह सकर जहाँ उन्हे समृद्ध बनाता है, वहाँ उसमे कुछ खतरे भी है। सास्कृतिक सम्मिश्रण से कभी-कभी सकेत और अभिव्यक्तियो मे गडबडी हो जाती है। उदाहरण के लिए भारत मे जाकर हम जब बातचीत मे अपना सिर दाये-बायें हिलाते है तो उसका अर्थ 'नही' समझा जाता है, जब कि वास्तव मे हमारा अभिप्राय उससे 'हाँ' होता है। इसी तरह जब किसी जापानी से पूछा जाता

कि है 'क्या तुम नही गये ?' और वह उसका उत्तर 'हाँ' देता है तब उसका अभिप्राय वास्तव मे 'नही' होता है।

सकेतो की यह गडबडी उस समय और भी गम्भीर हो जाती है, जब हम भूल से यह समझ लेते हैं कि उन सकेतो से हमारे प्रति असौजन्य प्रकट किया गया है या हमे धोखा दिया गया है।

जापान मे ऐसी कोई भी बात कहना असभ्यता और अविनय समझा जाता है जो किसी को पीडा या दु ख पहुँचाने वाली हो। लेकिन सभ्यता और दूसरे का खयाल रखने की यह कोमल और सूक्ष्म भावना स्पष्टवादी अमेरिकनो को अक्सर बेईमानी और कपट प्रतीत होती है।

जर्मन लोग उच्च पद और उच्च अधिकारी का सम्मान करने के लिए जिस आदर और नम्रता का प्रदर्शन करते है, वह अमेरिकनो को बहुत अजीब और बेढगी प्रतीत होती है, क्योकि वे हरेक को ही समान दृष्टि से देखने का प्रयत्न करते है और ऐसा दिखाने की चेष्टा करते हैं कि कोई ऊँचा-नीचा दर्जा नही है। अमेरिकनो के इस व्यवहार से ऐसा लगता है, मानो उनमे गम्भीरता बिल्कुल नही है, इसलिए उससे एक चिढ भी पैदा होती है।

साकेतिक अभिव्यक्तियो की यह गडबड होने के बाद दो भाषाओ के मिश्रण से शब्दो के अर्थ का अनर्थ भी हो सकता है और उसके बाद यदि दो विभिन्न सस्कृतियो और भाषाओ के लोगो मे तलवारे खिच जाएँ और एक तलवार दूसरी तलवार से आ मिले तो भी कोई आश्चर्य नही। इसलिए आज जिस अन्तर्राष्ट्रीय ससार मे हम रहे है, उसमे यह पहले हमेशा से अधिक महत्त्वपूर्ण है कि हम इन सकेतो के अर्थ को ठीक-ठीक समझे। अन्यथा विदेश यात्रा की जो बाढ आई हुई है वह मित्रता से कही अधिक दुश्मनी पैदा करेगी।

विदेश मे रहना या यात्रा करना बडा नाजुक काम है। जिन लोगो के पास समझने-बूझने और सौहार्द स्थापित करने के साधनो का अभाव है, उनकी खुशी अनजान स्थानो पर जाकर बहुत जल्दी गायब हो

जाती है और वे बहुत चिडचिडे हो उठते है और आलोचना करने लगते हैं। अमेरिकन लोग इस दोप का एक वडा उदाहरण है और उनके वारे मे विदेशो मे अक्सर यह कहा जाता है कि वे अमेरिकन ढग का भोजन, विस्तर और गाडियाँ न मिलने की शिकायत करते रहते हैं। लेकिन यह बात नही है। अगर अमेरिकन लोग अपने देश और अन्य देशो के बीच भिन्नता और अन्य देशो की विशिष्टता को देखने के लिए बाहर नही जाते तो फिर और किस लिए जाते है ?

लेकिन विदेशो मे जाकर आलोचना और शिकायत करने वाले ये अमेरिकन लोग अपने देश मे किसी भी प्रकार की आलोचना को सुनना नही चाहते। इसीलिए अपने देश मे आने वाले विदेशियो को वे प्यार करते हैं, उनका आतिथ्य-सत्कार करते है और उन्हें अमेरिकन जीवन के सौन्दर्य और सुख-सुविधाओ का अनुभव कराते है। लेकिन वे किसी भी तरह की आलोचना पसन्द नही करते। अमेरिका मे जाकर जब कोई व्यक्ति कोई आलोचना करता है तो हमेशा लोग यही कहते हैं कि "तब ये आलोचक लोग जहाँ से आये है, वही लौट क्यो नही जाते ?"

दो विभिन्न सस्कृतियो के लोगो मे एक दूसरे को समझ सकने की क्षमता के इस अभाव को देख कर लगता है कि लोगो के विदेश यात्रा करने का एक कारण शायद यह है कि वे विदेशो मे जाकर अपने मन को यह समझाने का यत्न करते है कि अपना देश ही सबसे अच्छा है। इस तरह नये परिवेश और नई परिस्थितियो की आलोचना करना यात्रा का एक अनिवार्य अग है, वल्कि उसका अधिक शिक्षाप्रद अग है।

विदेशो मे जाकर वहा की विभिन्नताओ की आलोचना करने का एक कारण शायद यह भी है कि आदमी को घर की याद सताती है, उसे लगता है कि अपने देश के, अपने घर के, सुरक्षित और निरापद आश्रय से टूट कर वह दूर जा पडा है और उसे यह भय होता है कि कही वहाँ वह असफल न हो जाए। यह आलोचना यात्री की आन्तरिक अनुभूतियो को

नई परिस्थितियों और नये परिवेश पर प्रक्षिप्त करती है। जब कोई भारतीय अमेरिका मे आकर कहता है 'कि अमेरिकन भोजन बेस्वाद और बेलज्जत है' तो उसका वास्तविक अभिप्राय यह होता है : "मैं भारतीय भोजन पसन्द करता हूँ। इसके अलावा, वेटरैस का व्यवहार सम्मानपूर्ण नही है, न्यूयार्क के लोग अग्रेजी नही समझ सकते और अगर वे मेरी अच्छे लहजे मे बोली गई अंग्रेजी को भी आसानी से नही समझ सकते, तब जिस विश्वविद्यालय मे मैं जा रहा हूँ वहाँ क्या मैं अच्छी छाप डाल सकूँगा और क्या मैं अच्छे अको से परीक्षा पास कर सकूँगा ?"

जिस तरह फ्रॉयड ने लोगो को यह समझा कर कि वे अपने आप को और दूसरो को व्यक्ति के रूप मे समझें, भय और दुःख से मुक्त किया, उसी तरह सस्कृति के स्वरूप की सही अवधारणा भी लोगो को यह समझने मे सहायता देती है कि जो भिन्नताएँ उन्हें सास्कृतिक समूहो में विभक्त करती है वे उतनी महत्त्वपूर्ण नही हैं, जितनी कि उनके भीतर अन्तर्निहित मानवता, जो उन सबको मिलाती और एक करती है। सस्कृति के स्वरूप को समझकर यदि हम इन भेदो और असमानताओ का अध्ययन करें तो ससार मे एक राष्ट्र के लोग दूसरे राष्ट्र मे अधिक सौहार्द से रह सकेंगे और लोग आज की अपेक्षा कही अधिक सख्या मे और अधिक बार दूर-दूर के स्थानो की यात्रा करने लगेंगे।

किसी राष्ट्र का जीवन उसके इतिहास, भूगोल, जलवायु, भाषा, सस्थाओ और रीति-रिवाजो से भी अधिक होता है। कुछ हद तक वह एक रहस्य होता है, क्योकि सामाजिक विज्ञानो ने जो कुछ उन्नति की है, उसके बावजूद कुछ प्रश्न ऐसे है जिनका उत्तर वे नही दे सकते। उदाहरण के लिए ऐसा क्यो होता है कि एक राष्ट्र के लोग वर्ग-भेद युक्त समाज को पसन्द करते हैं, जबकि उनका पडोसी राष्ट्र बिल्कुल साम्यवादी होता है ? क्यो एक राष्ट्र अधिक जीवन्त और सक्रिय होता है और दूसरा राष्ट्र आरामपसन्द और काहिल होता

है ? इन प्रश्नो के समाधान के लिए जो उत्तर दिए जाते है उनमे से अधिकतर उत्तर इतने सामान्य होते हैं कि उनसे समाधान नही हो पाता।

अमेरिकन सस्कृति उन सस्कृतियो मे से है जिनका वर्णन कर सकना बहुत कठिन है, क्योकि इसकी जडे बहुत अधिक है, उनके उद्गम और उसमे आकर मिलने वाली धाराएँ बहुत अधिक है। यह एक नाटक नही है, बल्कि विविध कार्यक्रमो से युक्त एक विचित्रानुष्ठान है, जो आज मनोरजन का एक विशिष्ट साधन समझा जाता है। हम यह पसन्द करते है कि उनमे हर एक चीज का थोडा-थोडा सा अश हो और इन अशो से मिलकर बना यह मिश्रण खूब आकर्षक, उग्र और ओजस्वी हो।

अध्याय : दो

देश-दर्शन

जब सूर्य सागर के उस पार से ऊपर उठकर पथरीले तट पर और तट के निकटवर्ती मेन द्वीप पर अपना आलोक फैलाने लगता है, उस समय भी कैलिफोर्निया मे अँधेरा छाया रहता है। वहाँ उषा की लाली उभरने मे अभी तीन घटे की देरी होती है। इस तरह दो महासागरो के बीच मे एक विशाल भूखण्ड फैला हुआ है। अभी हाल तक यह भू-खण्ड एक विशाल गैर-आबाद वीरान वन था, पर आज वह ससार के सभी भागो से आकर बसे लोगो का घर बन गया है। ये लोग यहाँ देश-देशान्तर से आकर जमा हो गये है, फिर भी वे अपने आप को एक राष्ट्र और एक देश कहते है।

धर्म, भाषा, रग, व्यवसाय, परम्परा, जल-वायु, रहन-सहन आदि बहुत-सी चीजें उन्हे विभिन्न वर्गों मे बाँटती है। न्यू इग्लैण्ड के ग्रामीण गणराज्यो मे लोग आज भी अपना शासन उसी तरह स्वय चलाते हैं, जैसे तीन सौ वर्ष पूर्व चलाते थे। वे अपने भीतर से ही ऐसे प्रतिनिधियो का चुनाव करते है, जो कस्बे की वार्षिक बैठक मे मतदाताओ द्वारा दिये गये निर्देशो के अनुसार साल भर तक बिना किसी वेतन के या नाम-मात्र के वेतन पर साल भर तक कस्बे का कारोबार चलाते है। लेकिन इन ग्रामीण गणराज्यो से एक घटे की मोटर यात्रा की दूरी पर ही ऐसे विशाल औद्योगिक नगर अवस्थित हैं, जहाँ यूरोप के अनेक भागो से श्रमिको के आगमन ने बिल्कुल भिन्न किस्म के समाज की स्थापना कर दी है जिसकी समस्याएँ और तनाव-खिचाव ग्रामीण समाज से सर्वथा भिन्न है।

जो लोग यह कहते है कि अमेरिकन जीवन एक खास किस्म का जीवन है, उन्होने अमेरिकन जीवन को अधिकतर न्यूयार्क की कॉकटेल पार्टियो मे ही देखा है। किन्तु सयुक्त राज्य अमेरिका को सही तौर पर जानने का एकमात्र तरीका यह है कि उसके एक छोर से दूसरे छोर तक यात्रा की जाये, और वह भी ट्रेन या विमान से नही, बल्कि कार से आराम-आराम से की जाये।

न्यू इग्लैण्ड से यात्रा प्रारम्भ कीजिये, जहाँ नये ढग के द्रुतगामी राजपथ बहुत कम हैं और जहाँ आपको हर पाँच मील पर अपनी गाडी को धीमा करना पडेगा, ताकि आप एक ऐसे सकरे कस्बे मे से आहिस्ता-आहिस्ता रेग कर निकल सके, जिसकी सडके कभी भी आज के व्यस्त यातायात की दृष्टि मे नही बनाई गई थी। यह दुर्भाग्य की बात है कि राजमार्ग से गुजरते हुए अक्सर आपको नगर का सब से गन्दा भाग नजर आयेगा—डिब्बो की तरह बने कारखाने, पुराने जमाने की जीर्ण-शीर्ण इमारतें, जो अब सरायो और घटिया होटलो का काम देती हैं या नगर की मुख्य सडक पर ईंटो और लकडी के खोखो के बने पुराने और भद्दे मकानो के सामने लगी दुकाने। किन्तु यह सम्भावना भी है कि आपको बिल्कुल हाल मे बने नये ढंग के रिहायशी मकान देखने को मिलें। अमेरिका मे युद्ध के बाद से मकानो का निर्माण बहुत तेजी से हुआ है और उसने सारे देश का चेहरा बदल दिया है। इन नये मकानो मे जमाने के रुझान की एक झलक मिलती है। वे आडम्बरहीन और सीधे-सादे हैं, इनकी खिड़कियाँ खूब चौडी और बडी है मानो मित्रता की भावना के साथ बाहरी दुनिया मे खुलती हो। ये मकान सड़क के साथ एक-दूसरे के पास-पास बने होते हैं और ये सडके और ये गलियाँ भी समकोण पर एक-दूसरे से तनकर बनी हुई नही होती, बल्कि अक्सर उनमे कुछ तिरछापन होता है।

उनके पास किसी जगह एक नया बाजार होगा और उस बाजार मे एक विशाल और कई मजिलो का सुपरमार्केट भी होगा, जहाँ

गृहिणिया बच्चा गाड़ी मे अपने बच्चो को डालकर लम्बे गलियारो के बीच मे घूम कर दोनो ओर काफी ऊँचाई तक करीने से सजाकर रखे डिब्बाबन्द खाद्य पदार्थो की मन-मुताबिक खरीद करेगी। द्वार पर एक क्लर्क रोकड़ के रजिस्टर के साथ उनके सामान और मूल्य की जाँच कर उन्हे बाहर विदा करेगा और दूसरा क्लर्क सहायता की आवश्यकता होने पर उनका सामान उनकी गाडी तक पहुँचायेगा। लेकिन गृहिणियाँ यहाँ आम तौर अपना काम आप देखती हैं। मजदूरी आज इतनी महँगी चीज हो गई है कि, जहाँ ग्राहक अपनी फिक्र आप कर सकता है, वहाँ उसका अपव्यय नही किया जा सकता। फिर भी आज सेवा-व्यवसायो मे पहले हमेशा की अपेक्षा अधिक अमेरिकन लगे हुए हैं।

न्यू इंग्लैंड से जैसे ही यात्री न्यूयार्क मे प्रवेश करता है, वैसे ही उसकी गाडी एक ऐसे उद्यानपथ पर आ जाती है, जो लगभग सौ मील तक पहाडी प्रदेश मे से गुजरता है। जिस पर न कही कोई स्टॉप है, न यातायात की साकेतिक रोशनियाँ और न कोई ट्रक। सारा यातायात इतने आराम और निर्विघ्नता से चलता है कि सप्ताहान्त की छुट्टियो के दिनो या यातायात के व्यस्त घटो को छोड़ कर गाडी स्वयं विशाल न्यूयार्क नगर के मध्य से भी आराम से फिसलती चली जाती है और बिना कही रुके या बिना किसी प्रकार के विलम्ब के पश्चिम की ओर न्यूजर्सी मार्ग पहुँच जाती है। इसके बाद उसके साथ लगे पेनसिलवेनिया मार्ग से मुडकर सीधा ओहायो की सीमा तक पहुँचा जा सकता है। ये सडकें द्रुत गति से यात्रा के लिए बनाई गई है, इजीनियरो ने इनका निर्माण बडी खूबसूरती से किया है और जिस प्रदेश मे से ये गुजरती हैं वह साफ-सुथरा है और उस पर अमेरिका की खूबसूरती को अक्सर बदसूरती मे बदल देने वाले बडे-बड़े इश्तहारो के बोर्ड कही नही लगे हैं।

यद्यपि ये सीधे मार्ग एक वरदान हैं, तो भी सिर्फ इन मार्गों के कारण ही यात्रा आसान नही हो जाती। हर पेट्रोल स्टेशन पर बढिया

नक्शे मिल सकते हैं। इन नक्शो को देख कर चाहे जिस नम्बर के मार्ग को पसन्द कर उससे यात्रा की जा सकती है। यदि पहले से ही मार्गों के बारे मे जानकारी और सलाह प्राप्त करनी हो तो वह किसी भी तेल कम्पनी को एक पत्र डाल कर प्राप्त की जा सकती है।

कार जैसे-जैसे पश्चिम की ओर बढती जाती है, वैसे-वैसे जमीन की शक्ल ही नही, मिट्टी का रग भी बदलता जाता है। न्यूजर्सी मे मिट्टी पीली और रेतीली है, पेनसिलवेनिया मे लाल, फिर ओहायो मे भूरी और इलिनॉय मे गहरी काली। जमीन जितनी किस्मो की है, उसका उपयोग और उस पर किया जाने वाला निर्माण कार्य भी उतनी ही किस्मो का है। पेनसिलवेनिया मे सफेद खलिहान नजर आते हैं जिनकी मेहराबें साफ और सुन्दर होती है और दरवाजे हरे रग से पुते होते हैं और पश्चिम के राज्यो मे ऊँची मीनारो के-से अनाज भंडार होते हैं।

यही नही, सभी जगह मोटल (मार्गों पर बने हुए ऐसे होटल जहाँ यात्री के ठहरने और अपनी मोटर रखने, दोनो की व्यवस्था होती है) भी मिल जाएँगे। वर्षा के बाद जैसे जगह-जगह कुकुरमुत्ता उग आता है, उसी तरह मुख्य सड़को के साथ-साथ स्थान-स्थान पर ये मोटल सिर उठा कर खडे हो गये है और यात्रियो और पर्यटको के लिए आराम और सुख-सुविधा की व्यवस्था करने मे पारस्परिक प्रतिस्पर्धा के कारण उनमे निरन्तर सुधार हो रहा है। पश्चिम मे मोटल सस्ते भी हैं और अच्छे भी और उनमे फर्श पर बिछे कालीनो से लेकर मुफ्त टेलीविजन, अखबार, बर्फ और स्वचालित हीटर तक सभी प्रकार की सुविधाएँ उपलब्ध हैं। उनमे नया फर्नीचर, साफ और अच्छे वस्त्र और गर्म पानी आदि की व्यवस्था मे तो कोई सन्देह ही नही है।

पूर्व के भीड-भरे नगर तो सिर्फ वस्त्र की किनारी की तरह है जिसके परे एक महाद्वीप फैला हुआ है। जितना पश्चिम की ओर बढते जाएँगे, नगर अधिकाधिक छोटे होते जाएँगे, क्योकि यह एक विस्तीर्ण महाद्वीप है, जिसके आगे नगर छोटे और महत्त्वहीन हैं। घूमते हुए घर-

घराते पहियो के नीचे से जैसे-जैसे मील पर मील पीछे जाएँगे, वैसे-वैसे जमीन का चेहरा बदलता जाएगा। यहाँ तक कि कन्सास मे भी, जो सूखे, बेरौनक और नितान्त कल्पनाहीन मैदान के सौन्दर्यरहित टुकडे के रूप मे मशहूर है, वैचित्र्य और विविधता भरी पडी है। इसकी काली और उर्वर धरती के खेतो मे पतझड मे भी शरत् काल की गेहूँ की फसल के नन्हे पौधे वसन्त की तरह हरियाली के साथ लहलहाते है। यहाँ मिसिसिपी के उस पार एकान्त क्षितिज तक धरती फैली हुई है और क्षितिज की समूची गोल रेखा के भीतर सिर्फ दो या तीन ही मकान दिखाई पडते है। जब आप कस्बो के पास पहुँचते है तब आप देखते हैं कि वे बिलकुल साधारण और श्रीहीन है, दूकानो का अगला भाग बिल्कुल सामान्य ढग का और कलाहीन है, छोटे-छोटे डिब्बो के आकार के मकान है और गिरजाघरो के शिखरो से भी ऊपर तक फैले मीनारो के ढग के अनाजघर है।

न्यू मैक्सिको पहुँच कर आप को यह मालूम होता है कि वहाँ नदियो के भीतर से धूल के बादल उठ रहे हैं। इन नदियो मे महीनो तक पानी की एक बूँद नही होती। सडको के एक छोर से दूसरे छोर तक घास के उभरे हुए गोले-से फैले रहते हैं। यहाँ जुते हुए खेतो का स्थान ऊँची-नीची भूरी पहाडियाँ ले लेती है, जिन पर कही-कही छोटे पेड़ उगे होते है। सडक के पास की सूखी मिट्टी मे सिर्फ सेज घास होती है और वह भी मुर्दा और सूखी प्रतीत होती है।

एरिज़ोना मे जहाँ-तहाँ बिखरी पहाडियाँ चिनी हुई दीवारो की तरह ऊपर उठती पत्थर की चट्टानो और उनमे पत्थर के घिसने से बने खम्भे प्राचीन ध्वस्त नगरो के खडहर से लगते है। यहाँ पेड का नाम भी नही है, नागफनी तक नही।

लेकिन जहाँ ऊँचे-ऊँचे पहाड आ जाते है और गहरी खड्डे दिखाई पडती हैं, वहाँ पेड फिर नजर आने लगते है। एक खड्ड की घाटी मे ससार की छ विभिन्न जलवायुओ मे से पाँच के पेड और पौधे एक

दूसरे के आस-पास उगे हुए हैं। वहाँ आप उत्तर के सर्द और नम जल-वायु मे पाये जाने वाले सदाबहार पौधे देखेंगे, किन्तु एक कदम आगे बढते ही मरुस्थल के गर्म और खुश्क मौसम के नागफनी और यूका के पौधे आपको मिलेगे। यह इलाका चरागाहो का है। यहाँ सडकों के दोनो ओर लोहे के जगले लगाकर पशुओ को उनसे दूर रखा जाता है। पशु इन जगलो को फाँद नही सकते।

यहाँ सारे दिन आकाश मेघाच्छन्न नही रहता और चिलचिलाती धूप सूखी धरती को तपाती रहती है। पशु झाडियो के बीच से हरे पत्ते खाने के लिए मुँह मारते रहते है।

साथ ही यह विराट् प्राकृतिक दृश्यो का प्रदेश भी है—यही ग्रैड कैन्यन (Grand Canyon) है जिसकी विस्मयकारी और मोहक भव्यता ही लम्बी यात्रा को सार्थक बनाने के लिए काफी है। यहाँ अलग-अलग बसे हुए इण्डियन लोगो के कस्बे है, जहाँ अब भी जीवन का ढर्रा बिलकुल पुराना है। इन कस्बो मे इण्डियनो की अपेक्षा 'ऑग्लो' लोग अधिक प्रतीत होते हैं। इन आँग्लो लोगो की स्त्रियाँ भडकीले स्कर्ट और ब्लाउज़ पहनती हैं और पुरुष अक्सर पुराने ढग के बाल कटवाते हैं और सिर पर रगीन पगडी बाँधते है। यहाँ सडको पर बने पेट्रोल स्टेशन अब व्यापारिक केन्द्र बनते जा रहे है, जहाँ पेट्रोल की अपेक्षा इण्डिअन लोगो के बनाये कम्बल, दरियाँ, जेवर और मृगचर्म के जूते बेचने की कोशिश अधिक की जाती है।

यह समझना भ्रम होगा कि यहाँ जमीन मैदानी और समतल है, कारण मिसिसिपी से ही कुछ चढाई आरम्भ हो जाती है। न्यू मैक्सिको और एरिजोना की ऊँचाई समुद्रतल से एक मील है और ग्रैड कैन्यन मे आप समुद्रतल से सात हजार फुट से भी अधिक ऊँचाई पर होते हैं।

सत्तर मील से अधिक तेज रफ्तार से चलते हुए भी आप को एसा लगेगा जैसे इस सफर का अन्त कभी नही होगा, यह लम्बा ऊसर टुकडा कभी खत्म नही होगा। इस विशाल पठार पर मनुष्य अधिक

सफलता प्राप्त नही कर सका है। अगर दो व्यक्ति मोटर चलाने वाले हो तो इस प्रदेश को पार करने मे आठ या दस दिन लग जाएँगे। इससे कम समय मे इसे पार करना दुःसाध्य है। यदि आप इस इलाके के दर्शनीय स्थानो को भी देखने लगे तो इस प्रदेश को पार करने मे करीब दो सौ गैलन पेट्रोल खर्च आ जाएगा। कितनी ही बार आप को इजन के पुर्जो मे चिकनाई का तेल देना पडेगा, कम से कम दो बार तेल बदलना होगा और हर बार रुकने पर मोटर के आगे के शीशे को साफ करना पडेगा, क्योकि सत्तर मील प्रति घटा की गति से भागते हुए इस शीशे से टकराकर सैकडो अभागे कीट-पतगे मौत के जाल मे फँसे हुए होगे। कार से यह आशा की जाती है कि वह बिना कही लडखडाये या फेल हुए तीन हजार मील लम्बी यह यात्रा पूरी कर सकेगी। अमेरिकन लोग यह मानकर चलते है कि उनकी कार मे यान्त्रिक दृष्टि से कोई त्रुटि नही है।

अमेरिकन के पास अगर कार न हो तो उसका क्या हाल होगा? यही उसका घोडा है और यही उसका टैक, जिससे वह विशाल वन प्रदेशो और लम्बी दूरियो पर विजय प्राप्त कर सकता है। उसके इजन की घरघराहट और पहियो की सरसराहट उसकी कविता है, उसका चमकीला रोगन और काँच की तरह चमकता सफेद क्रोम उसे वैसे ही प्रिय है, जैसे एक जगली को उसके मूँगा, मनके और आरसी। कार चमकीली और सुन्दर वस्तुओ के प्रति उसके प्रेम की अभिव्यक्ति है। उसकी ताकत ही उसकी शक्ति और ढाल है, क्योकि यदि उसका मालिक और अधिकारी उस पर चीखता चिल्लाता है या उसकी पत्नी उसे डाँटती-फटकारती है तो उसके पास भी सौ घोडो की ताकत है जो उसके दाएँ पाँव की तली के नीचे पडी धैर्य से उस वक्त का इन्तजार कर रही है, जब वह उसे तीव्रगति से यातायात की एक लम्बी धारा से आगे पहुँचाकर और लम्बी दूरी को पल भर मे ही पार करके पत्नियो और मालिको से उसकी श्रेष्ठता और उच्चता सिद्ध कर सकेगी।

इस प्रकार पश्चिम की ओर यात्रा करना मानो अमेरिका के इतिहास की पुनरावृत्ति करना है, क्योंकि अमेरिकन लोग हमेशा पश्चिम की ओर आगे बढते रहे हैं। पश्चिम की ओर जाना उस काम को आगे बढाना है जिसे हमारे पूर्वजो ने प्रारम्भ किया था।

यह ज्ञान और विद्या के हर क्षेत्र मे एक नया सबक सीखना भी है। तरह-तरह की जमीनें, नदियाँ, मैदान और पर्वतमालाएँ भूगोल और भूगर्भ-शास्त्र के पन्नो को बलात् हमारी आँखो के सामने खोलती चली जाती हैं। इस यात्रा मे आप हिरण, बारहसिगा, भैंसा, खरगोश, प्रेयरी प्रदेश का कुत्ता, लगूर और न जाने कितनी और किस्मो के प्राणी अपने-अपने विशिष्ट प्रदेशो मे देखेंगे। रास्ते मे अधिकतर यूरोपीय देशो के लोग, मैक्सिकन, इण्डियन, जापानी आदि आपको मिलेंगे। जलवायु भी रास्ते भर बदलता जाएगा। पूर्व मे आकाश का कोई भरोसा नही, अभी वह बिल्कुल स्वच्छ है और पल भर मे मेघो से घिर जाता है और पश्चिम का मौसम बिल्कुल साफ और वर्षाहीन होता है। विभिन्न नदियो की प्रणालियाँ, भूमि और उसके निवासियो का सम्बन्ध, कल-कारखाने और कन्सास के किसी मैदान मे एकाएक किसी तेल के कुएँ का ऊँचा शिखर—ये सब और इसी तरह की हजारो और चीजें आप को शिक्षा देती है।

स्थानो के नामो से भी बहुत कुछ जाना जा सकता है। मैसाचुसेट्स से कैलिफोर्निया तक सर्वत्र मोनोगाहेली, सस्केहान्ना, मिसिसिपी और मिसूरी आदि नदियो या कनैक्टिकट, अर्कन्सास और ओकलाहामा आदि राज्यो के सुन्दर नामो मे इण्डियन सस्कृति की छाप स्पष्ट नजर आती है। पूर्व मे आप नगरो के बोस्टन, हार्टफोर्ड और न्यूयार्क आदि अग्रेजी नाम सुनते है और पश्चिम मे पहुँचकर साइराक्यूज, रोम, कार्थेज और उटिका आदि प्राचीन साहित्य से लिए गए नाम आप को सुनने को मिलते हैं। ओहायो, इडियाना और इलिनॉय मे फिर आप को स्प्रिगफील्ड और सलेम आदि वही अग्रेजी नाम मिलते हैं जिन्हे

इग्लैंड से आकर बसे लोग अपने साथ लाये थे। स्पेनिश इलाके मे प्रवेश करने पर हमे सान्ता फे, अल्बुकर्क, लास वेगास, लास एजेलेस आदि स्पेनिश नाम सुनने को मिलते है।

पश्चिम मे प्राकृतिक दृश्य की सर्वथा नई-नई आकृतियो के लिए भी बट, अरोयो, कैन्यन, वाश और गल्च आदि नये नाम रखे गए है।

और उसके बाद हमे इस बात का प्रत्यक्ष प्रमाण देखने को मिलता है कि इन्सान रेगिस्तान को कैसे नखलिस्तान मे बदल सकता है और यह दृश्य सबसे अधिक विस्मयकारी है।

एरिजोना के उत्तर-पूर्वी कोने मे सडक इधर-उधर फैली पहाडियो के बीच से बल खाती हुई जाती है। इसके बाद आप फिर नीचे उतरते है और जैसे ही आप मोड लेते है, विशाल हूवर बाँध आपके सामने फैला होता है जिसने अपने अक मे ग्रैंड कैन्यन तक फैली विराट् जल राशि को समेटा हुआ है। यह बाँध इस सूखे प्रदेश पर आने वाली वसन्त की बाढो को रोकता है। वह अमूल्य अमृत-जल से सूखी धरती को सीचता है, जहाँ खिलते फूल मुस्काते हैं। उससे उत्पन्न बिजली साढे सात लाख व्यक्तियो की आवश्यकता पूरी करती है। जल के प्रवाह को नियन्त्रित कर के यह बाँध नदी के साथ-साथ नीचे बने अन्य छोटे बाँधो की जलराशि को भी नियन्त्रित करता है। इन छोटे बाँधो से भी बिजली पैदा की जा सकती है और खेतो की सिचाई की जा सकती है।

हूवर बाँध से लास वेगास (नेवाडा) तक केवल पच्चीस मील का सफर है, किन्तु इस थोड़ी सी दूरी मे भी आपको स्वतन्त्र लोकतन्त्रीय जीवन की झाँकी मिल जाती है। एक ओर आप एक सघीय परियोजना की कल्पना को साकार होता देखते है, जो स्थानीय प्रशासनो के साथ सहयोग कर समस्त जनता को लाभ पहुँचाती है और दूसरी ओर आप को एक ऐसा नगर दिखाई देता है जो जुआ खेलने वालो का स्वर्ग है, जहाँ चमकीली

रोशनियो से आकाश जगमगाता है। सार्वजनिक सगीत-शालाओ और नाट्यगृहो मे श्रोताओ और दर्शको की भीड़ लगी रहती है और शराव की नदियो मे निरानन्द और नीरस जीवन को डुवा दिया जाता और उसके वाद उसकी कुत्सा को और भी शान-शौकत के पर्दे मे छिपाने की कोशिश की जाती है।

लास वेगास से कुछ मील दूर पहुँचते ही आप कैलिफोर्निया में प्रवेश करते है। अब विशाल महाद्वीप का एक वडा भूखड आपके सामने पछाड खाकर लेटा हुआ है, किन्तु पूर्वी कैलिफोर्निया भी एरिज़ोना और नेवाडा की भाँति रूखा है, जहाँ नगे और ऊँचे-नीचे पहाड है, भूरी रेगिस्तानी मिट्टी पर नागफनी और सेज की झाड़िया है और फिर जूनियर के वौने पेड हैं, इसलिए हम अभी उस प्रदेश से दूर है जो हमारी आशाओ का केन्द्र है।

सान वर्नाडिनो पर रेगिस्तान खत्म हो जाता है। मटमैली हरी सेज की झाडियो का स्थान पाम के निकुंज और नारगी के वगीचे ले लेते हैं, जोशुआ के वृक्षो की टेढी-मेढी टहनियाँ और जुनिपर की गहरे हरे रग की शाखाएँ आँखो को तृप्त करती है। नगी धरती की जगह जल से सिंचित हरे-भरे मैदान आ जाते है और सब ओर हरियाली ही हरियाली दिखाई देती है।

अव खाली और निर्जन प्रदेश हमारी पीठ के पीछे रह जाता है, क्योकि हमारी आँखो के सामने हरा-भरा देश है और जहाँ प्रकृति उदार और हरी-भरी है, वहाँ लोगो की भीड स्वय जमा हो जाती है। यहाँ सडके चौडी हैं और यातायात चार समानान्तर धाराओ मे फिसलता और वहता चला जाता है। नगर एक दूसरे से मिले हुए हैं। सिर्फ उनकी सीमा पर बने नारगी के वगीचे और सडक के दोनो ओर लगी पैंठें ही इन्हे एक दूसरे से अलग करती है। यहाँ भी पहाड ऊँचे-नीचे है, किन्तु वाइविल के शब्दो मे, यहाँ की घाटियाँ अनाज की लहलहाती भरपूर फसलो से हँस और गा रही हैं। यही अमेरिकन लोगो के

पश्चिम की ओर कूच का लक्ष्य, अमेरिकनों के साहसपूर्ण अभियान की भौगोलिक सीमा है।

कैलिफोर्निया मे सिर्फ फलो के बगीचे और हरे-भरे खेत ही नही हैं, और न वहाँ केवल हॉलीवुड का स्वप्न-लोक या विचित्र और अद्भुत धार्मिक सम्प्रदाय ही है। आज कैलिफोर्निया एक विशाल औद्योगिक क्षेत्र बन गया है—इतना विशाल कि लॉस ऐंजेलेस आज क्षेत्र-विस्तार की दृष्टि से देश का सबसे बड़ा नगर है, यहा इस अकेले नगर में इतनी कारें हैं कि कुछ पूरे राज्यो मे भी उतनी कारें नही हैं और देश मे धूम-कुहरे की सबसे बडी समस्या भी यही है।

इस सारे प्रदेश को पार करना नीरस भी है और सरस भी, रोजमर्रा का साधारण सफर भी है और एक नवीन चुनौती भी। किताब पढ़ कर जितना कुछ यहाँ जाना जा सकता है, उससे भी अधिक यहाँ इस सफर मे आँखो से देख कर जाना और सीखा जा सकता है। किन्तु एक बात निश्चित है : यहाँ हर चीज पर देश की विशालता की स्पष्ट छाप है। यह देश इतना विशाल है कि यहाँ सब तरह की प्राकृतिक दृश्यावली दिखाई देती है, तरह-तरह के लोग, तरह-तरह के मौसम और आबो-हवा, तरह-तरह के रोजगार और धन्धे, और कितने ही प्रकार के लोक-जीवन, बोलचाल, पहरावे, विश्वास, मनोरजन, प्रशासन, अपराध, उदारता और कृपणता और अच्छाई और बुराई की झलक मिलती है।

लेकिन इस देश को बीचो-बीच से पूर्वी छोर से पश्चिमी छोर तक पार करते हुए इस विविधता का एक अश ही देखने को मिलता है। इस यात्रा में वे अन्तर्देशीय जल-मार्ग नही मिलते, जो ग्रेट लेक्स के रास्ते यूरोप से शिकागो तक या मैक्सिको की खाडी से दो हजार मील ऊपर सेंट पॉल, मिनेसोटा तक माल ले जाते हैं। इस सफर मे दो हजार मील लम्बा वह पैदल मार्ग भी कही नही आता जो मेन से जॉर्जिया तक ऐपलेचियन पर्वतमाला के भीतर से गुजरता है। दक्षिण का वह प्रदेश भी, जहाँ चौड़ी नदियाँ मद गति से बहती हैं, जहाँ पुराने ढग के सुन्दर भव्य-

भवन भी हैं और जीर्ण-शीर्ण ढहती दीवारो वाले दरिद्र आवास-गृह भी हैं, जहाँ पुराने जमाने के सवन्ना नगर मे प्रतिमाओ से शोभित चौक है और जहाँ फ्लोरिडा का चपटा और अर्धोष्ण प्रायद्वीप है। टेक्सास का अन्तहीन विशाल प्रदेश, लुइसियाना के काईभरे दलदली इलाके, उत्तर-पश्चिम के विस्तीर्ण जगल, पहाडी सिआटल के चमकीले हरे मैदान, गोल्डन गेट से धीरे-धीरे ऊपर उठते ढलानो से चिपटा सान फ्रासिस्को का सौन्दर्य, और रोशनियो के कण्ठहारो से सजे उसके पुल—ये सभी इस यात्रा मार्ग से दूर रह जाते है। मनुष्य पूरे एक जन्म मे भी इस सारे विशाल देश को देख पाने की आशा नही कर सकता।

सयुक्त राज्य का क्षेत्रफल उसकी महाद्वीपीय सीमाओ के भीतर तीस लाख वर्ग मील है। इस भूमि का चालीस प्रतिशत भाग चरागाह के रूप मे, अठाईस प्रतिशत वन के रुप मे, बाईस प्रतिशत कृषि-भूमि के रूप मे है और शेष दस प्रतिशत पर मकान और सडकें बनी है। तीस प्रतिशत भूमि पर सघीय सरकार का स्वामित्व है—इसका अधिकतर भाग राष्ट्रीय वन प्रदेश के या चरागाहो के रूप मे अथवा राष्ट्रीय उद्यानो के रूप मे है जिसमे ग्रैंड कैन्यन, कार्ल्सबाड की कन्दराएँ और यलोस्टोन के गर्म सोते आदि कितने ही प्रकृति के महान् आश्चर्य छिपे हुए है। पाँच करोड साठ लाख एकड का विशाल प्रदेश, जो इग्लैंड, स्काटलैंड और वेल्स के सयुक्त क्षेत्र के लगभग बराबर है, इण्डियनो के लिए सुरक्षित है।

प्रकृति की इस समृद्ध विरासत मे जितनी किस्मो के वन्य जीव-जन्तु है, उतनी किस्मो के ससार मे और कही भी नही है। सयुक्त राज्य की अन्न की उपज भी विशाल है—सन् १९५४ मे तीस अरब बुशल मक्का, एक अरब बुशल गेहूँ और साढे पैंतीस करोड बुशल आलू पैदा हुआ। इसी वर्ष २५ अरब पौंड मास का उत्पादन हुआ और इतनी ही खपत भी।

कोयला, पेट्रोलियम, इस्पात, बिजली, ताँबा, रूई, लकडी और कितनी ही अन्य वस्तुओ के उत्पादन मे सयुक्त राज्य का स्थान पहला है। अतीत मे इसमे से बहुत-सी प्राकृतिक सम्पदाओ का उसने क्रूरता से दोहन

और अपव्यय किया है या ससार को अत्याचार से आत्मरक्षा करने या युद्धध्वस्त प्रदेशो को फिर से आबाद करने मे सहायता देने के लिए उन्हे खर्च किया है। फिर भी उसकी मिट्टी, उसकी खानें और जगल आज भी प्राकृतिक सम्पदा से भरपूर है और साथ ही वह इस सम्पदा को सुरक्षित रखने की आवश्यकता को पहले से अधिक महसूस करता है।

बाहर से आने वाले पर्यटकों को आम तौर पर ऐसा लगता है कि अमेरिका मे जीवन की एक निश्चित पद्धति है। अमेरिकन सिनेमा-फिल्मो और रेडियो कार्यक्रमो, मोटरो और वस्त्रो की राष्ट्रव्यापी बिक्री, डिब्बाबन्द खाद्य-पदार्थों और पत्र-पत्रिकाओ के कारण ऐसा प्रतीत होता है कि सब अमेरिकन बहुत कुछ एक-जैसे है और एक ही ढग से काम करते हैं। सस्कृति के अनेक पहलू ऐसे हैं जिनमे वे सब समान रूप से साझी हैं। किन्तु इस समानता का अर्थ यह नही है कि वे अपनी विभिन्नताओ का आनन्द नही ले सकते। वरमौट का किसान, दक्षिणी राज्यो का बटाईदार खेतिहर, मिसिसिपी का नाविक, कन्सास का दूकानदार, शिकागो का प्रोफेसर, टेक्सास का पशुपालक या तेल कारखानो का कर्मचारी, नीग्रो कारखाना-मजदूर, ग्रीस से आकर बसा रेंस्तोराँ-मालिक, पोलिश पूर्वजो से उत्पन्न चिकित्सक, उत्तर-पश्चिम का जापानी माता-पिता से उत्पन्न निसेई बागान मालिक—ये सभी अमेरिकन है, फिर भी एक-दूसरे से भिन्न है।

अराजकता और अव्यवस्था पैदा किये बिना विविधता को बनाये रखना, लोगो को अपनी व्यक्तिगत विशेषता को कायम रखते हुए एक सर्वसामान्य सस्कृति मे सूत्रबद्ध करना ही क्या मानवीय सस्कृति का एक उच्चतर लक्ष्य नही है? और, क्या सस्कृति की यही कसौटी नही है कि वह अधिकाधिक किस्म के लोगो को अपने भीतर आत्मसात् करे और उन्हे इस विविधता का आनन्दोपभोग कराते हुए एक समाज के सक्रिय सदस्य होने की शक्ति और आनन्द उपलब्ध कराये? और, क्या यही इन विविध जातियो और वर्गों के नर-नारियो की, जो अमेरिका की जनता के अग है, सबसे बड़ी सफलता नही है?

अनेक राष्ट्रों का राष्ट्र

मानवीय इतिहास की यह अभूतपूर्व घटना थी। इटली और आयरलैंड से, जर्मनी और रूस से, ग्रीस और बालकन देशो और स्कैण्डिनेवियन देशो से लोग अपने गाँवो को, जहाँ उनके परिवार और पूर्वज चिरकाल से रहते आये हैं, और जहाँ ज्ञात रीति-रिवाजो और परिचित चेहरो ने उनके चारो ओर एक सुरक्षित दुर्ग बना दिया है, छोड-छोड़ कर यहाँ चले आये।

विशाल जन-समुदायो के एक जगह से उखड कर दूसरी जगह आबाद होने, जिन लोगो ने कभी यात्रा नही की थी, उनके सीमाओ और अधिकारियो की बाधाओ को पार कर यूरोपीय बन्दरगाहो तक पहुँचने के लिए उठाये गये कष्टो और अपमानो की और अमेरिकन बन्दरगाहो मे पहुँच कर एक नये देश मे हैरान और परेशान होने एव धोखेबाजो और धूर्तों का शिकार होने की इस मानवीय कहानी को आँकडे ठीक-ठीक बयान नही कर सकते। फिर भी इन कष्टो और सकटो के बावजूद १८५० मे ही अमेरिका मे आने वाले इन आवासियो की सख्या ३,७०,००० वार्षिक हो गई थी। हालाँकि यह सख्या अटलाटिक महासागर के दोनो तरफ की परिस्थितियो के अनुसार घटती-बढती रहती थी, तो भी रुझान इसमे वृद्धि का ही था। सन् १९०५ तक प्रति वर्ष बाहर से आने वाले लोगो की सख्या दस लाख से भी अधिक हो गई, और यह सख्या तब तक निरन्तर बढती गई जब तक कि प्रथम विश्वयुद्ध ने इन्सानो की इस बाढ को रोक नही दिया। युद्ध के बाद इस बाढ मे जब फिर वृद्धि होने लगी तो कानून ने इसे फिर कम कर दिया। अधिकतर अमेरिकन यह अनुभव करने लगे कि अब उनके सामने मुख्य काम यह है कि जितने

लोग अब तक यहाँ आ चुके है, उन्ही को भली भाँति आत्मसात् किया जाए। फिर भी बाहर से आने वाले आवासियो का यह ताँता अब भी जारी है। अब भी करीब दो लाख व्यक्ति हर वर्ष सयुक्त राज्य मे बाहर से आ रहे हैं। इस विशाल राष्ट्र के लिए यह सख्या भले ही बहुत वडी न हो, तो भी वह इतनी तो है ही कि उससे ओटावा के बराबर आकार का एक पूरा शहर आबाद हो जाए।

सन् १८२० से १९५३ तक करीब चार करोड व्यक्ति इस देश मे बसने के लिए बाहर से आये—४५ लाख ग्रेट ब्रिटेन से, इससे कुछ अधिक आयरलैण्ड से, २५ लाख स्कैण्डिनेविया से, लगभग ५० लाख इटली से, ६५ लाख जर्मनी से और ८० लाख व्यक्ति मध्य और पूर्वी यूरोप के उन भागो से आये, जिनकी सीमाओ मे बार बार इतने परिवर्तन हुए कि यह कहना सहज नही है कि कहाँ से कितने व्यक्ति आये।

इसका परिणाम यह हुआ कि सयुक्त राज्य अमेरिका अनेक राष्ट्रो का एक राष्ट्र बन गया, एक ऐसा देश, जहाँ ससार की सब प्रमुख भाषाएं बोली जाती है और जहाँ आज भी म्यूनिख जैसे जर्मन, मैड्रिड जैसे स्पेनिश और ज़ूरिख़ जैसे स्विस नगर आपको मिल सकते है। डिट्रॉयट के बीचो-बीच हैमट्राम्क नामक नगर है, जो सर्वथा पोलिश है और उसकी अपनी सरकार भी है। लॉस एंजेलेस ससार का दूसरे नम्बर का सब से बडा मैक्सिकन नगर है। चीन से बाहर जिन नगरो मे सब से अधिक चीनी आबादी है, इनमे सान फ्राँसिस्को भी शामिल है, जहाँ चीनियो का अपना अस्पताल है, डाकखाना है, थियेटर है, रेडियो स्टेशन और दैनिक समाचार-पत्र है और अपना अलग टेलीफोन एक्सचेंज भी है, जहाँ आपरेटर, छः चीनी भाषाएँ बोलते हैं और अपने सब टेलीफोन मालिको के नाम और नम्बर कण्ठस्थ रखते है। शिकागो का स्थान इटालियन आबादी के लिहाज़ से मिलान के बाद और पोलिश आबादी के लिहाज़ से वारसा के बाद आता है।

इडाहो राज्य मे पिरेनीज़ पर्वतमाला के इस ओर सब से बड़ी बास्क (विस्के के निवासी) लोगो की कालोनी है। स्विट्ज़रलैंड से आकर बसे लोगो ने ग्रीन सिटी (विस्कोंसिन) को संसार की स्विस 'पनीर' राजधानी बना दिया है।

न्यू मैक्सिको द्विभाषी राज्य है, जहाँ सरकारी सूचनाएँ स्पेनिश और अँग्रेज़ी, दोनो भाषाओ मे चिपकाई जाती है और जहाँ राज्य का सविधान दोनो भाषाओ मे सम्पुष्ट किया गया था। न्यू मैक्सिको मे अभी तक पुराने स्पेनिश जमाने के गाँव चले आ रहे है जहाँ अँग्रेजी भाषा का एक भी शब्द सुनाई नही पडेगा। एरिजोना मे एक-तिहाई ज़मीन पर इण्डियनो का कब्ज़ा है और उनमे से बहुत से अभी तक अपने पूर्वजो का-सा ही जीवन-यापन कर रहे हैं।

न्यूयार्क हमारा सबसे अधिक विविधतापूर्ण नगर है। वहाँ अँग्रेज़ी से भिन्न भाषाओ मे दो सौ पत्र प्रकाशित होते हैं। न्यूयार्क की ८० लाख की आबादी मे से अधिक से अधिक या तो विदेशज है या विदेशी माता-पिता की सन्तान है। सब से अधिक विदेशज इटालियन और रूसी हैं, जिनकी सख्या लगभग चार-चार लाख है। नगर की चौथाई आबादी यहूदियो की है, जो अनेक देशो से आकर यहाँ बसे है और इनमे से बहुत-से तो कई पीढियो से यहाँ रहते आ रहे है। न्यूयार्क ससार का सब से बडा यहूदी नगर है। और निःसन्देह नीग्रो, प्यूर्टोरिकन, हाइटियन और मैक्सिकन लोग भी बहुत बडी सख्या मे यहाँ रहते है। न्यूयार्क की हार्लेम बस्ती के मध्य मे सयुक्त राज्य की सब से अधिक फिनिश आबादी रहती है।

यूरोप के सभी राष्ट्रों ने और एशिया, अफ्रीका एवं अन्य अमेरिकी क्षेत्रो के अनेक देशो ने सयुक्त राज्य अमेरिका के निर्माण मे योग दिया है। वे सभी अमेरिकन है, क्योकि, जैसा कि राष्ट्रपति रूज़वेल्ट ने एक बार कहा था, "हम सभी यहाँ आप्रवासी है।"

अनेकता मे एकता

सत्रहवी शताब्दी मे जब यूरोपीय आप्रवासियो की पहली लहर प्रारम्भ हुई तो कोलम्बस द्वारा यूरोपीय ससार के लिए खोजे गये इस महाद्वीप मे आधा दर्जन राष्ट्रो ने पदार्पण किया और उसके तट पर अपने पाँव टिकाने के अड्डे बनाये। स्पेनिश लोग अमेरिका के तट पर उतर कर भीतर दक्षिण-पश्चिम की ओर और तट के साथ-साथ कैलिफोर्निया की ओर बढे। फ्रेंच लोगो ने मिसिसिपी नदी और उसके प्रवेश का सबसे पहले अन्वेषण किया और न्यू ओर्लियन्स शहर बसाया, जहाँ पुरानी बस्ती मे उनकी सस्कृति अभी तक पृथक् और स्पष्ट रूप मे विद्यमान है। लुइसियाना के दलदली प्रदेशो मे अभी तक फ्रेंच ही मुख्य भाषा है।

डेलेवारा मे सब से पहले स्वीडिश लोग आकर बसे थे और उन्होने उसका नाम न्यू स्वीडन रखा था। न्यूयार्क, जैसा कि सभी जानते है, पहले डच लोगो के पास था और उसके बाद उन्ही से अँग्रेजो ने उसे लिया। और पेनसिलवेनिया के अधिकतर भाग मे १७२० मे ही जर्मन लोग भारी सख्या मे आ बसे थे और वे 'पेनसिलवेनिया डच' कहलाते थे, हालाँकि वैसे उस पर जर्मनी का कभी अधिकार नही रहा।

किन्तु सयुक्त राज्य मे यूरोप से आकर बसने वालो मे सबसे अधिक आबादी ब्रिटिश लोगो की है। हमारी आधी आबादी इगलैंड, स्काटलैंड, वेल्स और उत्तरी आयरलैंड से आकर बसे लोगो की है। अमेरिकी जीवन-पद्धति का आधारभूत ढाँचा भी मुख्यत अग्रेजो की ही देन है। यहाँ की भाषा, कानून, पारिवारिक नाम, सरकार और शासन के प्रति रवैया और साहित्य, ये सभी चीजे असन्दिग्ध रूप से ब्रिटिश सस्कृति से ली गई है। प्रश्न यह है कि यह सस्कृति अन्य सभी प्रभावो से पराभूत होने से कैसे बची रह गई ?

सब से महत्त्वपूर्ण बात यह है कि प्रारम्भ की वे बस्तियाँ, जिनसे सयुक्त राज्य अमेरिका राष्ट्र का उद्भव और विकास हुआ, मुख्यत.

अंग्रेज बस्तियाँ थी। अमेरिका मे ब्रिटेन से आकर बसे औपनिवेशिक लोग १७० वर्ष तक ब्रिटेन के राजा की प्रजा रहे। उनकी जडें, उनकी भाषा, उनकी सस्थाएँ और प्रथाएँ, यहाँ तक कि ब्रिटिश ताज का प्रतिरोध करने का उनका तरीका, ये सभी विशुद्ध अंग्रेजी थे। वे अपने आपको औपनिवेशिक या अमेरिकन प्रजा समझने के बजाय अंग्रेज़ समझते थे, इसीलिए वे ब्रिटिश पार्लियामेट मे प्रतिनिधित्व अपना अधिकार मानते थे और उनका कहना था कि "अगर उन्हे प्रतिनिधित्व नही मिलेगा तो वे टैक्स भी नही देंगे।"

जेम्सटाउन मे स्थापित सर्वप्रथम अंग्रेज बस्ती का आयोजन और समर्थन ब्रिटिश शासन के अनेक बडे आदमियो ने किया था। इस बस्ती को ब्रिटेन के राजा का शासपत्र (चार्टर) भी प्राप्त था। अंग्रेजो की दूसरी स्थायी बस्ती प्लाइमाउथ थी, जो मुख्यतः इग्लैंड के उत्तर से आये किसानो के हाथ मे थी। इन लोगो को अपनी स्वतन्त्र सत्ता पर गर्व था और वे अपनी जमीनो को अपनी मिल्कियत बनाये रखने के लिए और एग्लिकन चर्च और ब्रिटेन के राजा के आदेशो की परवाह किये बिना बाइबिल की अपनी निज की स्वतन्त्र व्याख्या के अनुसार पूजा और धर्माचरण करने के लिए कृत-सकल्प थे। प्लाइमाउथ इस प्रकार की पहली धार्मिक बस्ती थी। इसके बाद पहले सलेम मे, फिर बोस्टन, प्रोविडेन्स और न्यू हैवन मे और उसके उपरान्त कनैक्टिकट के साथ-साथ भीतर की ओर और भी कई छोटी-मोटी बस्तियाँ बस गईं, जो सब एक-दूसरे से स्वतन्त्र और अलग थी। समूचे न्यू इग्लैड मे ग्राम गणराज्यो का विकास हुआ, जो शासन की छोटी और सुगठित इकाइयो के रूप मे फलने-फूलने लगे।

समूचे औपनिवेशिक काल मे, जो हमारी राष्ट्रीय सरकार की स्थापना के बाद के काल के बराबर लम्बा है, अमेरिका मे आने वाले आप्रवासियो मे अधिकतर इग्लैंड के लोग थे या उत्तरी आयरलैंड मे बसे स्कॉट लोग। बीस लाख गुलाम इस काल मे सयुक्त राज्य मे

आये, और उनका आगमन अमेरिकन सस्कृति को रूप प्रदान करने के लिए महत्त्वपूर्ण भी था, किन्तु फिर भी उसने कानून, भाषा और शासन मे अँग्रेजो के प्रभुत्व को चुनौती नही दी।

यद्यपि अमेरिका मे आये अँग्रेजो और स्कॉट लोगो मे कई किस्म के लोग थे, किन्तु दो बातो मे उन मे समानता थी—एक यह कि अपने देश मे वे अपनी स्थिति से सन्तुष्ट नही थे और दूसरी यह कि उनके पास अपने लिए नया जीवन-पथ बना लेने की क्षमता और साधनो की कमी नही थी। विलियम ब्रैडफोर्ड, जॉन विन्थ्रोप, विलियम पेन और लॉर्ड बाल्टीमोर जैसे ऊँची श्रेणी के लोग अमेरिका मे ऐसे धार्मिक नगर बसाने की कल्पना लेकर आये थे, जहाँ उनके धार्मिक विश्वास पूर्ण अभिव्यक्ति पा सकेंगे। दूसरे लोग अपने लिए उपलब्ध जीवन की सीमित परिस्थितियो—परिवार के पालन-पोषण के लिए पर्याप्त जमीन का अभाव, जमीदारो के अत्याचार या भारी कर-भार—से बचने और अधिक अच्छी परिस्थितियाँ और सुअवसर पाने के लिए देश छोड़कर यहाँ आये थे।

विलियम स्टाउटन ने लिखा था : "ईश्वर ने एक समूचे राष्ट्र को चलनी मे छान डाला था, ताकि वह इस नये वन्य प्रदेश मे बोने के लिए उत्तम किस्म का बीज भेज सके।" और उसका यह कहना सही था। नई बस्तियो मे बसने के लिए उस समय जो विकट परिस्थितियाँ थी वे उपयुक्त व्यक्तियो की छाँट के लिये अपने निज के सिद्धान्त लागू करती थी।

सयुक्त राज्य मे विदेशियो का आप्रवास पहले से ही अन्तर्राष्ट्रीय था। प्रारम्भिक तीर्थयात्रियो के साथ वालून और फ्लेमिश लोग यहाँ आये। जेम्सटाउन मे इटालियन, डच और पोलिश लोग आकर बसे। फ्राँस से आये ह्यूगेनोट (प्रोटेस्टेंट) लोग अमेरिका की कॉलोनियो मे पहले-पहल आकर बसे—इन्ही के वशजो ने पॉल रेवर, फेनिल और ड्यू पोट आदि अनेक प्रसिद्ध अमेरिकन परिवार सयुक्त राज्य को दिये।

जर्मन प्रोटेस्टेंट, खासकर मेनोनाइट और मोराबियन आदि अत्याचार-पीडित ईसाई सम्प्रदायो के लोग, विलियम पेन की सहिष्णुता की छत्र-छाया मे पेनसिलवेनिया मे आ बसे। अटलाटिक तट के साथ-साथ बसी सभी कालोनियो मे अंग्रेजी सस्कृति विविध प्रकार की अन्तर्राष्ट्रीय वासनाओ से सुवासित थी।

सन् १६५४ मे पहले-पहल यहूदी लोग मनहट्टन द्वीप में आये। किन्तु इस द्वीप ने १६४६ मे ही यह सकेत दे दिया था कि किसी दिन वह विश्व की विभिन्न सस्कृतियो को पिघला कर उनकी एक सम्मिश्रण सस्कृति का निर्माण करने वाली एक रासायनिक प्रयोगशाला का पात्र बन जायगा। उस समय तक बारह विभिन्न राष्ट्रो के लोग इसमे आ बसे थे।

अमेरिकन सस्कृति का सार-तत्त्व यह है कि वह अनेक तत्त्वो के मिश्रण से बनी है, फिर भी वह असन्दिग्ध रूप से एक नई सस्कृति है—वह एक सर्वथा नया सृजन नही है, किन्तु उसमे उन सब सस्कृतियो के पराग का परिमल है, जिनके मिलने से वह बनी है। किन्तु यह सम्मिश्र सस्कृति बिना किसी सघर्ष, शक्ति-परीक्षा या शर्मनाक अन्यायो के नही बनी। डचो ने स्वीडिश लोगो को डेलेवारा से निकाल बाहर किया, किन्तु बाद मे स्वय उन्हे भी अँग्रेजो के हाथो वहाँ से बाहर निकलना पडा। सौ वर्ष तक फ्रेंच और ब्रिटिश लोगो मे उत्तरी अमेरिका पर अधिकार के लिए लडाई चलती रही, क्योकि दोनो मे से कोई भी दूसरे को इस गैर-आबाद वन प्रदेश मे अपना साझी बनाने को तैयार नही था। उन्होने इण्डियनो को भी अपने इस सघर्ष मे घसीट कर लपेट लिया और यूरोप मे शक्ति और सत्ता के सघर्ष के उपोत्पादन के रूप मे प्रारम्भ हुई इस लडाई को खूब क्रूर और नृशस बना दिया।

पेरिस की सधि (१७६३) ने जब उत्तर की ओर से आक्रमणो के खतरे को टाल दिया तब महाद्वीप के सारे पूर्वी भाग पर अंग्रेजो का नियन्त्रण था, क्योकि स्पेन को, जो काफी विलम्ब से इस लड़ाई मे

फ्रांस के साथ शरीक हुआ था, फ्लोरिडा छोड देना पडा था (सन् १७८३ में फ्लोरिडा फिर कुछ समय के लिए स्पेन के हाथ मे चला गया और बाद मे सयुक्त राज्य ने उसे स्पेन से खरीद लिया।) इसलिए स्वभावत: इस प्रदेश मे शासन, धर्म और पारिवारिक जीवन के सम्बन्ध मे अग्रेज लोगो के विचारो का ही प्राधान्य था। किन्तु डचो के अच्छे रहन-सहन के शौक ने, फ्रेंच लोगो की वीरता और शौर्य ने, मूल निवासी इडियनो की बुद्धिमत्ता और भद्रता ने, नीग्रो लोगो के सगीत और विषादपूर्ण भावुकता ने, स्कॉट लोगो की मितव्ययिता और कठोर श्रम ने और फ्रेंच प्रोटेस्टेंटो की धैर्यपूर्ण कारीगरी और शिल्प ने अग्रेजो के इन तौर-तरीको को अपने-अपने योगदान से और भी समृद्ध बनाया।

अँग्रेज अमेरिका मे अमेरिकन बन गए। उन्होने इण्डियनो की भाँति शिकार खेलना और खेती करना सीखा। उन्होने इण्डियनो की भाँति लडना भी सीखा—अपनी इस नई सीखी युद्ध विद्या के कारण ही ये अमेरिकन अँग्रेज क्रान्ति मे ब्रिटिश सेना पर हावी रहे।

अटलाटिक तटवर्ती प्रदेश के पश्चिम मे स्थित विस्तीर्ण क्षेत्र को, जिसकी विशालता पर सहज में विश्वास नही होता था, आबाद करने का अवसर आने पर फिर बहुत बडी सख्या मे लोगो की शक्ति और दासता की आवश्यकता पडी। जब प्लाइमाउथ की छोटी-सी बस्ती ने कनैक्टिकट नदी पर अपना व्यापारिक केन्द्र स्थापित किया और टामस हुकर ने अपने धार्मिक सम्प्रदाय को वनवासी इण्डियनो मे फैलाते हुए उसी नदी के तट तक पहुँचा दिया, तब पश्चिम की ओर बढने के लिए हलचल और गति विधि प्रारम्भ हो गई।

कनाडा के ब्रिटिश लोगो के हाथो मे आ जाने पर, पश्चिमी प्रदेश और भी अधिक आकर्षक हो उठा। लोग वरमाँट में जाकर आबाद हो गये और न्यूयार्क में पहले से जो इलाके बसे हुए थे उनकी आबादी और भी सघन हो गई। क्रान्ति खत्म हो जाने पर उत्तर-पश्चिमी प्रदेश (टैरिटरी अर्थात् ऐसा इलाका जो बाकायदा सयुक्त राज्य अमेरिका का

अग नही बना था, किन्तु जिस पर शासन उसी का था) की ओर उन नौजवानो का ध्यान आकृष्ट हुआ, जिन्होने आजादी की लडाई मे हिस्सा लिया था। न्यू इगलैण्ड से ओहायो कम्पनी ऑफ असोसियेट्स के सदस्य ओहायो नदी के तट पर मैरियेट्टा मे अपनी पहली बस्ती बसाने के लिए गए। पेनसिलवेनिया से येनोनाईट और अथक परिश्रमी स्कॉच-आयरिश लोग पश्चिम की ओर जा बसे। इलिनॉय, विस्कौसिन, मिशिगन और इण्डियाना में भी नई-नई बस्तियाँ आबाद होने लगी। इसके बाद जैफर्सन द्वारा विशाल लुइसियाना प्रदेश के खरीद लिए जाने पर एक और बडा क्षेत्र अन्वेषण और बसाने के लिए खुल गया। इस तरह सीमा फिर पश्चिम की ओर खिसकने लगी।

सीमा क्षेत्र

अमेरिकन लोगो के लिए फ्रंटियर (सीमा) शब्द का अर्थ उससे सर्वथा भिन्न है, जिस अर्थ मे यह शब्द यूरोप मे इस्तेमाल किया जाता है। यूरोप में 'फ्रंटियर' का अर्थ है वह स्थान जहाँ देश की भूमि खत्म होती है, जहाँ प्रहरी पहरा देते हैं और जिसे लाँघने से पूर्व हर व्यक्ति को अपने परिचयपत्र और अनुमतिपत्र दिखाने पडते है। किन्तु अमेरिका मे 'फ्रंटियर' का अर्थ है स्वतन्त्रता, नये-नये अवसर और फैलने और आगे बढने के लिए स्थान। अमेरिकनो के लिए फ्रंटियर का अर्थ वह स्थान नही, जहाँ किसी देश के लोग रुक जाते हैं, बल्कि उनके लिए फ्रंटियर एक उन्मुक्त द्वार है, जो आगे बढने का आमन्त्रण देता है। उनके लिए फ्रंटियर वह स्थान नही है जहाँ लोगो को अपने अनुमतिपत्र और परिचयपत्र दिखाने पडते है, बल्कि उनके लिए वह ऐसा स्थान है, जिसे वे चाहे तो अपने कागजात दिखाये बिना चुपचाप लाँघ सकते है। वह ऐसी जगह है, जहाँ सभ्यता अपने बँधे-बँधाए तौर-तरीको के साथ अभी तक नही पहुँची, जहाँ विशाल खुला उन्मुक्त प्रदेश है, जिसमे लोग अपने कानून स्वय बना सकते है।

चाहे कोई व्यक्ति पश्चिम की ओर बढने का विचार न करता तो भी यह अनुभूति, कि उधर आगे बढने और फैलने के लिए अभी विशाल प्रदेश पड़ा है, अमेरिकनो के मन और रुझाव को प्रभावित करती रहती थी। अमेरिकनो के विचार मे सीमा सभ्यता के उस पार एक ऐसा प्रदेश था, जहाँ मनुष्य का नही, प्रकृति का राज्य था, जहाँ विशाल नदियाँ अनन्त आकाश और निर्मल स्वच्छ हवा मानवीय छल-कपट से उत्पन्न बुराइयो को बहाकर दूर ले जाते है।

पश्चिम की ओर नये अधिवासियो की एक के वाद एक लहरे आने लगी। पहले वन्य जीव जन्तुओ को पकड़ने और उनका शिकार करने वालो के जत्थे, फिर वहाँ आबाद होने वाले अग्रगामी लोगो के दल, और उसके बाद स्थायी रूप से बसने वाले किसानो के झुण्ड वहाँ पहुँचे और अन्त मे जहाँ-तहाँ विरल और छुटपुट बसे घर कस्बो और शहरो मे परिणत हो गये।

प्रारम्भ मे लोग पश्चिम की ओर चार मुख्य मार्गो से किसी एक से जाते थे। पहला मार्ग था दक्षिण अटलांटिकवर्त्ती राज्यो से मैक्सिको की खाडी के साथ-साथ, दूसरा दक्षिणी पर्वतो को पार कर टेनेसी और पुराने दक्षिण-पश्चिमी प्रदेश मे प्रवेश का, तीसरा ओहायो घाटी मे जाने का, और चौथा ग्रेट लेक्स के साथ-साथ बने रास्तो से पश्चिम मे जाने का। इन चार बडे मार्गो से आगे जाकर फिर सुविधानुसार लोग छोटे-मोटे रास्तो से किसी भी उपयुक्त स्थान पर जा बसते थे।

सन् १८४० मे जब फिर बडे पैमाने पर प्रशान्त महासागर के तट तक पश्चिम की ओर कूच प्रारम्भ हुई, तब भी भौगोलिक स्थिति और सुविधाओ के अनुसार ही मैदानो और पहाडो को पार करने के लिए कुछ मार्ग बने। इसके काफी समय बाद जाकर कही मैदानी राज्यो के आबाद होने पर बाकायदा सडके और रास्ते कायम हुए।

जो लोग पश्चिम की ओर आबाद होने के लिए आगे बढ गये थे, उनकी जगह अधिकतर नवागन्तुक आप्रवासियो ने ली। सन् १८२० और

१८३० के दशको मे इन नये आप्रवासियो ने पश्चिमी न्यूयार्क, पेनसिलवेनिया और ओहायो मे पुराने लोगो के द्वारा खाली की गई जमीन पर अधिकार किया। इससे अगले दशक मे ये लोग भी मिसूरी, इलिनॉय और दक्षिणी विस्कौसिन की ओर आगे बढ गये। इससे बाद के दो दशको मे वे पूर्वी आयोवा और मिनेसोटा मे और उससे अगले दशक मे प्रेयरी प्रदेशो तक जा पहुँचे।

एक लम्बे अरसे से यह बात सत्य रही है कि नये-नये क्षेत्रो मे प्रवेश करने की इस क्षुधा और प्रसार की आकाक्षा ने अमेरिकन चरित्र के निर्माण मे बहुत बडा योग दिया है। फ्रेडरिक जैक्सन टर्नर ने अपना यह विचार प्रस्तुत करते हुए कहा था कि इस वृत्ति ने अमेरिकनो मे स्वतन्त्रता, स्वावलम्बन और व्यक्ति वादिता को बढावा दिया।

यद्यपि प्रारम्भ मे लोग व्यक्तिगत रूप से नई-नई जमीनें पाने की आकाक्षा से पश्चिम की ओर जाते थे, किन्तु बाद मे जब स्थायी तौर पर कस्बे और शहर आबाद करने का वक्त आया तब वहाँ लोगो को बसाने के लिए कम्पनियाँ या सोसाइटियाँ बनाई गईं। कभी-कभी ये कम्पनियाँ और सोसाइटियाँ बाकायदा अपनी नई बस्तियो के लिखित सविधान तैयार करती थी जिनमे मेफ्लावर काम्पैक्ट (मेफ्लावर समझौता) मे प्रयुक्त शब्दो जैसी शब्दावली का प्रयोग किया जाता था। कभी-कभी ये नई बस्तियाँ इतनी छोटी होती थी और उनका हर निवासी एक-दूसरे से इतना परिचित होता था कि लिखित नियमो की आवश्यकता पडती ही नही थी। वेस्टर्न एमिग्रेशन सोसाइटी ने मैदानो को पार कर कैलिफोर्निया मे नई बस्तियाँ बसाईं और ओरेगन एमिग्रेशन सोसाइटी ने आयोवा टेरिटरी मे नये इलाके बसाये। चाहे कोई भी सोसाइटी या कम्पनी होती, यह आवश्यक था कि उसका सगठन खूब अच्छा हो, अन्यथा नई बस्तियो को सुरक्षित और सफल ढग से बसाना सम्भव नही था। सोने की खोज के लिए दौड-धूप के दिनो मे कैलिफोर्निया मे पहुँचने के लिए बनाई गई अनेक कम्पनियो ने तो बाकायदा अपने

विस्तृत सविधान तैयार किये थे और वर्दियाँ निर्धारित की थी। ये कम्प-नियाँ अपने साथ अपने डाक्टर, भूगर्भशास्त्री, पादरी, खनिज-विशेषज्ञ और मैकेनिक आदि भी ले गई थी।

प्रारम्भिक अमेरिकन समाज की विशिष्टता उन कठोर परिश्रमी व्यक्तियो के कारण नही थी, जिन्हे सर्वप्रथम अग्रगामी होने को गर्व था बल्कि उन असख्य कामो के कारण थी, जिन्हे लोग मिलकर करते थे—ये काम थे—मिलकर खलिहान बनाना, इकट्ठे होकर अनाज को कूटना और छडना, सेव के पेडो को तराशना, सूअरो का शिकार करना, सडकें बनाना और मक्का के भुट्टो से दानो को अलग करना। मिलकर सहयोग से किये गये ये काम नीरस और कठोर श्रम नही मालूम होते थे, बल्कि मनोविनोद बन कर आनन-फानन मे हो जाते थे और सामा-जिक कार्यों का रूप धारण कर लेते थे।

यूरोप से आकर आप्रवासी लोग अक्सर एक ही इलाके मे इकट्ठे बसते, अपने गिरजाघर बनाते, सभा-सोसाइटियाँ गठित करते, अखबार चलाते और परस्पर सहयोग से साँस्कृतिक क्रिया-कलापो का आयोजन करते। सामूहिक सहकारिता और स्वेच्छाप्रदत्त सहायता की यह भावना सारे ससार के ग्रामो मे व्याप्त रही है। इसलिए आप्रवासी लोगो का एक विशाल वर्ग इससे भली भाँति परिचित और अभ्यस्त था, क्योकि अपने देशो मे ये लोग अक्सर कृषि करते थे, खेतो मे एक-दूसरे के काम मे हाथ बँटाते रहे थे और सामाजिक अनुष्ठानो के द्वारा मिलकर आमोद-प्रमोद करते थे।

सन् १८८२ तक अधिकतर आप्रवासी लोग जर्मनी, स्कैण्डिनेविया और ब्रिटिश द्वीपो से आये थे। बहुत-से अंग्रेज आप्रवासी मिसिसिपी नदी की घाटी मे चले गये, जहाँ उन्होने एक ऐसे प्रदेश मे जो धीरे-धीरे जर्मन बनता जा रहा था, अंग्रेज सस्कृति को कायम रखने मे सहायता दी। सन् १८६६ के बाद उत्तरी यूरोप से आने वालो की अपेक्षा दक्षिणी और पूर्वी यूरोप से आने वालो की सख्या अधिक बढ गई और प्रथम

विश्वयुद्ध से पूर्व के दस वर्षों मे तो इन लोगो का अमेरिका मे आगमन एक बाढ मे परिणत हो गया। बहुत-से आप्रवासी अनिवार्य सैनिक भर्ती से बचने के लिए भाग कर अमेरिका आये थे, अत. इन लोगो के आन्दोलन ने अमेरिका की पृथक्तावादी नीति (मनरो सिद्धन्त) को और भी बल प्रदान किया।

एक नवयुवक नार्वेजियन ने १८४६ मे लिखा था कि "यहाँ यह नही पूछा जाता कि तुम्हारा पिता कौन था, यहाँ सिर्फ एक ही प्रश्न किया जाता है कि तुम कौन हो। यहाँ स्वतन्त्रता इन्सान को माँ के दूध के साथ घुट्टी के रूप मे मिलती है और सयुक्त राज्य का हर नागरिक उसे साँस लेने के लिए आवश्यक हवा की तरह अनिवार्य समझता है।"

यद्यपि सब मिलाकर आप्रवासी लोग यहाँ आकर प्रसन्नता अनुभव करते थे, क्योकि यहाँ उनको अपने श्रम का मूल्य मिलता था, उन्हें खरीदारी करने के लिए आमन्त्रित किया जाता था, उन्हें पूरी स्वतन्त्रता थी और किसी रूढि का पालन करने के लिए मजबूर नही किया जाता था, तो भी तो वे भीतर-ही-भीतर यह अनुभव करते थे कि वे भी पूर्ण रूप से अपने आप को इस देश के साथ एकाकार नही कर सकेंगे। अपनी निज की संस्कृति से वे स्वेच्छा से उच्छिन्न होकर आये थे और इस नई सस्कृति मे भी वे बेगाने और पराये थे। छिन्न-मूल होने की इस भावना ने अमेरिकन सस्कृति पर गहरा प्रभाव डाला।

आप्रवासी यह अनुभव करते थे कि दोनो दिशाएँ उन्हें अपनी ओर खीच रही हैं। उन्हें ग्रामीण जीवन की सुखद उष्णता प्यारी लगती थी, किन्तु जब कठोर सत्य और यथार्थ उनके सामने आ, खडा होता तो वे अनुभव करते कि वे उस स्थिति से आगे बढ चुके है। वे महसूस करते कि उनके पुराने मूल्यो पर प्रहार किया जा रहा है, इसलिए वे उनकी रक्षा के लिए कमर कसकर तैयार हो जाते। यदि वे अमेरिकन जीवन-पद्धति को अपनाने का प्र यत्न करते और अधिक अच्छे रिहायशी इलाके मे बसने

के लिए जाते तो उन्हें यह कहकर अनादृत किया जाता कि यहाँ उनकी आवश्यता नही है और वे जबर्दस्ती यहाँ घुसे आ रहे हैं।

नई संस्कृति का अगीकार

इसलिए इन आप्रवासियो ने अपनी सब आशाएँ अपनी सन्तानो पर लगा दी। लेकिन इसमे भी उन्हे एक दुविधा का सामना करना पडा : कारण, तत्त्वत उनके बच्चे अमेरिकन थे। वे यह नही चाहते थे कि उनके माता-पिता उन्हे अपनी पुरानी संस्कृति की शिक्षा दें, अपने पुराने देश के अनुशासन को उन पर थोपे। स्कूल मे वे यह अनुभव करते थे कि अग्रेजी सस्कृति और इग्लैंड से आये लोगो का सम्मान सबसे अधिक किया जाता है। खेल के मैदान मे वे यह अनुभव करते कि उनके पुराने देशों की सस्कृति को डागो, कैनक और मिक आदि अनादर-सूचक शब्दो से अभिहित किया जाता है।

सभी किशोरो और नवयुवको की भाँति वे भी अमेरिकन बन जाने के लिए उत्सुक थे। उनके माता-पिता भी पुराने तौर-तरीको का सम्मान नही करते थे, किन्तु कोई नया प्रतिमान और आदर्श उनके सम्मुख न होने के कारण वे अभी तक उन्ही से चिपटे हुए थे। लेकिन उनसे अगली पीढी ने इन पुराने तौर-तरीको को बिलल्कुल ही तिरस्कृत कर ठुकरा दिया। और तीसरी पीढी ने अनुभव किया कि पुरानी सस्कृति का यह तिरस्कार और परित्याग अमेरिकन तौर-तरीको का एक अग बन गया है, क्योकि इस पीढी को उसके माता-पिताओ से भी अच्छी शिक्षा मिली थी और उससे उसकी आर्थिक और सामाजिक स्थिति भी उनसे अच्छी हो गई थी।

अधिकतर नये अमेरिकन बच्चे राष्ट्रवादी बन जाते थे, क्योकि उन्हें यह आशा रहती थी कि इससे पुराना अमेरिकन समाज उन्हें अधिक अच्छी तरह से अपना लेगा। अनेक प्रेक्षको की दृष्टि मे आज अमेरिकनो मे राष्ट्रवादिता की जो उत्कट भावना दिखाई देती है उसका मूल कारण यही है। कभी-कभी तरुण लोग अपने आप को अपने घृणित मूलोद्‌गम

से ऊँचा उठाने के लिए गिरोह बना लेते थे और जो लोग उनसे इसलिए भेद-भाव करते थे कि उनका किसी ऐसे देश से आए लोगो और सस्कृति के बीच मे जन्म हुआ है, जिन्हें हिकारत की नजर से देखा जाता है, उनसे वे अपनी रक्षा करते थे। ये गिरोह आसानी से बदमाशो के गिरोहो मे परिणत हो जाते। इन तरुणो को अपने शारीरिक बल के सिवाय और किसी चीज का भरोसा नही था, इसलिए सफलता की सामान्य अमेरिकन आकाक्षा से प्रेरित होकर ये लोग ऐसी राजनीति मे घुस जाते थे, जहाँ शारीरिक बल उनके लिए सहायक होता था। अथवा वे अपने सुन्दर शारीरिक गठन और सबल देह के कारण खिलाडी बनकर खेलो में उच्च शिखर पर पहुँच जाते थे। यही कारण है कि फुटबाल की टीमों मे ऐसे पोलिश खिलाडियो के नाम बहुत आम हो गये थे जिनका उच्चारण भी आसानी से नही किया जा सकता था। बहुत-से तरुणो ने अमेरिका की उत्तम शिक्षा-प्रणाली का लाभ उठाकर ऊँचे पेशो की शिक्षा प्राप्त की और समाज मे अपने लिए आदर और सम्मान का स्थान बनाया।

माता-पिता के विदेशीपन को तिरस्कृत कर ये नौजवान अब विवाह के लिए उत्सुक रहते थे, क्योंकि इससे उन्हे अपने परिवार के सम्बन्धों का बन्धन काट कर अपना निज का विशुद्ध अमेरिकन घर बसाने का अवसर मिलता था। प्रेम और प्रणय रूढिवादिता से मुक्ति का एक प्रतीक बन गया और इस प्रकार अमेरिकन जीवन-पद्धति मे रोमाटिक प्रेम पर बल दिया जाने लगा। रोमाटिक प्रेम और प्रेमी-युगल ही अमेरिकन परिवार का आधार बन गये।

दो पीढियो के बीच मे विच्छेद और दरार पड जाना वैसे ही बहुत करुणाजनक होता है किन्तु इन विदेशज अमेरिकनो और उनकी अमेरिका मे उत्पन्न सन्तानो का यह विच्छेद तो और भी अधिक मार्मिक और करुणाजनक था। कुछ लोग इस विच्छेद को किसी भी तरह सहन नही कर सके। परिणाम यह हो गया कि तरुण पीढी के कुछ लोग दरिद्र और भिखारी बन गये, कुछ को नशे की लत लग गई,

या वे जुआ, अपराध और पागलपन के शिकार हो गये। फिर भी अगर एक व्यक्ति जीवन मे असफल हुआ तो उस के मुकाबले एक दर्जन व्यक्ति सफल भी हुए। सब मिलाकर अमेरिका मे आये आप्रवासी लोग असाधारण सफलता के साथ अमेरिकन बन गये। यदि हम बाजील और न्यू साउथ वेल्स मे आकर बसे जर्मनो की सयुक्त राज्य मे आकर बसे जर्मनो से तुलना करें तो यह बात और भी स्पष्ट हो जाएगी। ब्राजील मे बसे जर्मन अब भी जर्मन भाषा बोलते है, जर्मनो की तरह सोचते है और जर्मन दृष्टि से ही वोट देते हैं। इसी तरह न्यू साउथ-वेल्स मे बसे जर्मन लोग मिसूरी मे बसे जर्मनो से कही अधिक जर्मन हैं, हालाँकि वहाँ अग्रेजी समाज के साथ उनका सम्पर्क कही अधिक है। इसका कारण क्या है ?

जॉन डेफेरारी की कहानी पर जरा विचार कीजिए। नौ वर्ष की बाल्यावस्था मे उसने बोस्टन की गलियो मे फेरी लगा कर फल बेचना शुरू किया था। उसका पिता इटली से अमेरिका मे बसने के लिए आया था। उसे आठ सन्तानो का पालन करना था, जिनमे से जॉन सबसे बडा था। लडका जानता था कि बोस्टन की बहुत-सी बडी फर्मे स्टेट स्ट्रीट मे है। उसने निश्चय किया कि जहाँ धन अधिक है, वही उसके लिए बाजार भी सब से अच्छा है। वहाँ सारे फल बेचकर खाली टोकरी लिए वह घर लौटता और सारे पैसे अपने पिता को दे देता।

आठवी कक्षा के बाद उसने स्कूल छोड दिया, किन्तु अध्ययन जारी रखा। वह जानता था कि उसके ग्राहक स्टेट स्ट्रीट मे पूंजी का विनि-योग कर खूब पैसा कमाते है। उनके व्यापार-व्यवसाय को समझने के लिए उसने सार्वजनिक पुस्तकालय से किताबें ली, लेकिन अपना फल बेचने का काम जारी रखा। सोलह वर्ष की आयु मे उसकी हैसियत एक घोडा-गाडी खरीदने की हो गई। तीन वर्ष बाद उसने फानिल हॉल के पास फलो का थोक व्यापार प्रारम्भ कर दिया। उस समय भी कानूनी

तौर पर वह नाबालिग था, इसलिए उसने दूकान के दरवाजे पर अपने पिता के नाम का बोर्ड लगाया। जल्दी ही उसका व्यापार खूब चल निकला। सन् १८९० मे उसने सार्वजनिक पुस्तकालय के पास बोयल्सटन स्ट्रीट मे एक बडी दूकान खोल दी। रात को वह पुस्तकालय से अपने प्रिय विषयो—फल, पूँजी-विनियोग, स्थावर सम्पत्ति का धन्धा, कानून और सफल व्यवसायियो के जीवन—के बारे मे पुस्तकें लेकर पढता। उसने अनुभव किया कि वह अन्य देशो से डिब्बा बन्द फल मँगा कर और उन्हें होटलो, रेस्तोराँओ, जहाजो और सम्पन्न लोगो के घरो पर बेच कर अच्छा पैसा कमा सकता है।

जब तक उसके पास व्यवसाय मे लगाने के लिए पैसा आया, तब तक अपने अध्ययन से उसने कुछ आधारभूत निष्कर्ष निकाल लिए। एक निष्कर्ष यह था कि पैसा उसी व्यवसाय मे लगाना चाहिए, जिसे ऐसे लोगो ने चलाया हो, जिनका जीवन अर्थतन्त्र की सबसे निचली सीढी से प्रारम्भ हुआ हो। उसका तर्क यह था कि "यदि इन्सान स्वयं अच्छा है तो उसका व्यवसाय भी अच्छा ही होगा। "उसका दूसरा निष्कर्ष यह था कि जमीन और स्थावर सम्पत्ति मे पैसा लगाना सबसे सुरक्षित है। उसने छोटे-छोटे मकान खरीदना और उन्हें नये सिरे से सुधार कर दूसरो को उनमे कमरे किराये पर देना प्रारभ किया।

अस्सी वर्ष की उम्र मे पहुँचते-पहुँचते जॉन डेफेरारी चालीस लाख डालर का आदमी बन गया। यह अनुभव कर कि वह हमेशा जीवित नही रहेगा, उसने यह सोचना आरम्भ किया कि वह इस सम्पत्ति का क्या करे। यह जानने के लिए कि दूसरे लोगो ने क्या किया था, उसने फिर पुस्तकालय की शरण ली। किन्तु इस बार जो कुछ उसने पढा उससे उसकी तसल्ली नही हुई। वह बोस्टन के तरुणो के लिए कुछ कर जाना चाहता था, ऐसे तरुणो के लिए जिनमे उसी की तरह महत्त्वाकाक्षाएँ और काम की स्फूर्ति थी। उसने उन बैंको मे, जहाँ उसने अपना सारा धन बाँटकर जमा कराया हुआ था, सावधानी से पूछताछ शुरू की।

कोई भी व्यक्ति वहाँ यह नही जानता था कि यह सीधा-सादा बूढा लखपति है ।

अन्त मे उसे एक ट्रस्ट का अधिकारी ऐसा मिल गया जो उसे जँचा और उसे उसने अपना अभिप्राय समझा दिया । उसने कहा, "जो कुछ मेरे पास है, वह मुझे बोस्टन से मिला है। इसलिए मैं बोस्टन के गरीब बच्चो के लिए कुछ कर जाना चाहता हूँ । मैं इन्सानो को अपने समय के सदुपयोग के लिए प्रोत्साहन देना चाहता हूँ ।"

जिस पुस्तकालय ने उसे सहायता दी थी, उसे जॉन डेफेरारी ने दस लाख डालर दिये । उसने कहा कि इस धन को व्यवसाय मे लगा कर और बढाया जाए और जब वह बीस लाख डालर बन जाय तो उसका आधा लगाकर उसमे एक जॉन डेफेरारी विंग बना दिया जाए। जब बाकी धन फिर बढ कर बीस लाख डालर हो जाए तब उसकी आय को ट्रस्टी, जैसा उचित समझें, उपयोग करें ।

यह दान करने के बाद, एक आप्रवासी का यह लडका, जो अपने ही प्रयत्न से बडा आदमी बना था, अपने बहुत से मकानो मे से एक के एक छोटे-से कमरे मे अपना शेष जीवन शान्ति से बिताने लगा। इस एकान्त जीवन मे अपने ठिकाने का पता भी उसने किसी को नही बताया ।

जॉन डेफेरारी के जीवन मे कुछ सीमाएँ भी थी और ये सीमाएँ भी उसकी वित्तीय सफलता की भाँति ही, जो उसकी दृष्टि मे किसी मनुष्य के अमेरिकन होने का प्रमाण थी, शिक्षाप्रद थी । अपने माता-पिता और पूर्वजो की मितव्ययिता की वृत्ति को जॉन किसी भी तरह छोड नही सका । उसने कभी एक छदाम भी अनावश्यक रूप से खर्च नही किया । जहाँ वह पैदल जा सकता था, वहाँ वह कभी भाडे की गाडी पर नही गया । अपने मकानो और दुकानो की मरम्मत वह स्वय करता । और अपना हिसाब-किताब भी स्वय रखता । उसने टेलीफोन नही रखा, जहाँ तक होता चिट्ठी-पत्री भी नही करता और

अपना व्यापारिक कामकाज स्वयं व्यक्तिशः जाकर करता। अपना खाना वह स्वय पकाता। उसने अपने आप को जीवन की सुख-सुविधाओ और आराम से वचित रखा और जिन्दगी भर कुँआरा रहा।

अमेरिकनो की सफलता का रहस्य यह था कि अमेरिका मे प्राकृतिक साधनो का अक्षय भडार था और वहाँ व्यापार-वाणिज्य के लिए अवसर भी असीमित थे किन्तु सफलता पाने के लिए किसी अमेरिकन को जो सघर्ष करना पडता था, वह उसकी कठोर श्रम से उपार्जित धन को खर्चने की इच्छा और सामर्थ्य को छीन लेता था। आप्रवासियो के मन मे वेकारी या मन्दी का जो भय बैठा रहता है, उसे दूर करने और सफलता पाने के लिए पैसा खर्च करने की भी आवश्यकता उन्हें अनुभव कराने मे एक पीढी का वक्त अभी लगेगा।

आत्मसात्करण

प्रथम विश्व-युद्ध के बाद अनेक अमेरिकन यह सोचने लगे थे कि यूरोप से लोगो के आव्रजन को रोकने या कम करने का वक्त अव आ गया है। उस समय सयुक्त राज्य की कुल आवादी का आठवाँ भाग विदेशज था। इस आठवें भाग का भी तीन-चौथाई हिस्सा शहरो मे रहता, वल्कि अधिकतर शहरो की भीड भरी गन्दी बस्तियो मे रहता, जहाँ इन लोगो के बच्चे आसानी से अपराधी वन सकते थे।

इसलिए एक ओर अमेरिकन जनता के सामने सामाजिक समस्याओ की चिन्ता थी और दूसरी ओर युद्ध के वाद उसमे उत्कट राष्ट्रवादिता आ गई थी और ससार भर मे लोकतन्त्र की रक्षा के नाम पर लडे गये इस युद्ध के परिणामो से उसे निराशा भी हुई थी। इसके बाद जवर्दस्त मन्दी आ गई। इन सब कारणो से उन्होने यूरोप से लोगो के आव्रजन पर कठोर प्रतिबन्ध लगाने की आवश्यकता महसूस की। सन् १९२१ मे और उसके बाद सन् १९२४ मे काग्रेस ने इस आव्रजन पर कुछ प्रति-बन्ध लगाये। सन् १९२९ मे एक कानून बना कर विभिन्न राष्ट्रो से अमेरिका मे आव्रजन के लिए कोटे निर्धारित कर दिये गये। इसमे

ब्रिटिश द्वीप पुंज और उत्तरी यूरोप के लोगो के साथ रियायत कर उन के लिए आव्रजको के औरो से ऊँचे कोटे नियत किये गये। यद्यपि आव्रजको का कुल कोटा डेढ लाख से कुछ ही अधिक था, तो भी वास्तविक आव्रजन इससे कही अधिक था, क्योकि जो लोग पहले से ही आप्रवासी के रूप मे यहाँ रहते थे, वे अपने बच्चो को इस कोटे के बिना भी बुला सकते थे।

आप्रवासी और अमेरिकन सस्कृति

आप्रवास का अमेरिकन सस्कृति पर शुरू-शुरू मे एक असर यह हुआ कि पुरानी दुनिया के प्रति, जहाँ से ये लोग आये थे, उनकी निष्ठा बनी रही और उस के कारण वे उसके ध्येयो का समर्थन करते थे। किन्तु दूसरी पीढी ने अपने पूर्वजो के देशो के प्रति अपनी निष्ठा का परित्याग कर दिया, लेकिन साथ ही वह उन देशो के साथ लडाई करने का भी विरोध करती थी। यह भावना ही अमेरिका मे भविष्य मे अपनाई जाने वाली पृथक्तावादी नीति के मूल में थी। फिर भी इस आव्रजन और आप्रवास का दीर्घकालिक प्रभाव यह प्रतीत होता है कि आज अमेरिकन लोग विश्व के मामलो मे अपनी बहुत बडी जिम्मेदारी समझते हैं क्योकि वे जानते है कि आज विश्व का जो भाग अपना जीवन-स्तर ऊँचा उठाने और साम्राज्यवादी नियन्त्रण से मुक्त होने के लिए सघर्ष कर रहा है, उसके अधिकतर हिस्सो से आये नर-नारियो ने ही अमेरिका बनाया और आज की शक्तिशाली स्थिति मे पहुँचाया है।

आप्रवासियो के आने से देश को रेलो, नगरो और सडको के निर्माण के लिए जन-शक्ति मिल गई और इस जन-शक्ति की बदौलत ही एक सीधी-सादी अर्थ-व्यवस्था को अत्यधिक उद्योग-सम्पन्न अर्थ-व्यवस्था मे बदला जा सका। नये आप्रवासियो ने पुरानी जमीनें, जिन्हें खेती के लिए बेरहमी से उपयोग कर ऊसर बना दिया गया था, लेकर उन्हें फिर अपने परिश्रम से उर्वर बनाया।

नये अमेरिकनो ने अमेरिका का खाद्य उत्पादन बढाने मे ही योग नही दिया, बल्कि अपने पुराने देशो मे प्रचलित विविध खाद्य पदार्थों और रुचिकर व्यजनो से अमेरिकन पाक-कला को भी समृद्ध बनाया। स्पैगेटी, गूलैश, वील कटलेट (वीनेरश्नित्जेल), चो मीन, करी, शीश-कबाब, स्कैलोपिनी, पिजा, बुइलाबेस, चिली कॉन कार्न और इसी तरह के अन्य सैकडो स्वादिष्ट भोज्य पदार्थ और व्यजन अमेरिका को आप्र-वासियो की ही देन है।

इन आगन्तुक अमेरिकनो ने कला और शिल्प मे भी अमित योगदान किया है। हमारे प्रारम्भिक लेखको मे से अनेक के पूर्वज इग्लैण्ड या अन्य देशो के निवासी थे—जैसे मैलविल, व्हिटमैन, थोरो, फ्रेनो आदि। नीग्रो लोगों ने अमेरिकन सगीत मे मौलिक योगदान किया है और यह योगदान भक्ति सगीत, काम के समय गाये जाने वाले लोक-गीतो, जाज़ सगीत और 'पोर्गी एण्ड बैस' आदि नाट्य सगीत—सभी मे है। हमारे कुछ अत्युत्तम गायक और अनेक अच्छे लेखक नीग्रो हैं। जर्मन और इटालियन अपने साथ अपना संगीत-प्रेम लेकर इस देश मे आये—वे सगीत सुनने के ही शौकीन नही थे, बल्कि उन्होने हमारे आज के वाद्य-वृन्दो और ओपेरा कम्पनियो को कितने ही कुशल गायक और रगमच कलाकार दिये।

और यहूदियो का योगदान तो बहुत व्यापक है। अमेरिका के वस्त्र-व्यापार पर एक तरह से उनका नियन्त्रण है, और सामूहिक प्रचार के साधनो और वैज्ञानिक और कला-सम्बन्धी उपलब्धियो पर भी उनका स्पष्ट प्रभाव है। व्यापार-वाणिज्य मे कुशल होने के कारण यहूदी शहरो और कस्बो मे फैल गये और जगह-जगह उन्होने बने-बनाये कपडो और धातु के बर्तनो और मशीनो की दूकाने खोली, लाडरियाँ स्थापित की और अनेक प्रकार की खुदरा बिक्री की दूकानें खोली। स्ट्रौस, गिम्बेल, गुगेनहाइम, फ्रोमान और रोजेनवाल्ड आदि कितने ही धनी यहूदी अमेरिकन घरानो के पूर्वजो ने गलियो मे फेरी लगा कर सामान बेचते हुए

अपना जीवन प्रारम्भ किया था और आज वे अपने परिश्रम से धनी बन गये। अमेरिकन जीवन को समृद्ध बनाने वाले हजारो यहूदियो मे उच्चतम न्यायालयो के जज, नोबेल पुरस्कार विजेता, रगमच अभिनेता, उच्चकोटि के गायक, लोक-सगीत के रचयिता, नाटककार, फिल्म जगत् के नेता, सरकारी अधिकारी और प्रमुख उद्योगपति आदि शामिल है।

हमारे देश मे नाना देश-देशान्तरो से लोग बसने के लिए आये हैं, इसलिए हमारी सस्कृति मे विविधता और वैचित्र्य का आकर्षण है। आज भी न्यू इग्लैंड और दक्षिण के पर्वतीय क्षेत्र मे कुछ ऐसे छोटे कस्बे हैं, जहाँ के लोग अब तक पुराने ब्रिटिश तौर-तरीको और ढर्रे से चिपटे हुए है, किन्तु इससे ये कस्बे अपने आप में आकर्षण की वस्तु बन गये है क्योकि वे उन पुराने दिनो की याद दिलाते हैं; जिनके अवशेष आज यहाँ दुर्लभ है। न्यू मैक्सिको के इस्पानो-अमेरिकन कस्बो की भाँति चीनियो, इटालियनो और जापानियो की बस्तियाँ भी आज बहुत कम रह गई है। आज ठेठ अमेरिकन नगरो और कस्बो मे हमे एक दर्जन विविध सास्कृतिक पृष्ठभूमियो का सम्मिश्रण दिखाई पडता है।

किसी छोटे-से कस्बे की मुख्य सडक पर दृष्टिपात कीजिए तो उसमें आप को इस विविधता के दर्शन होगे। उदाहरण के लिए बेनिंगटन (वरमौट) मे डिब्बाबन्द फलो, मिठाइयो और केक-बिस्कुट आदि का व्यापार ग्रीक लोगो के हाथो में है। इसी तरह वहाँ नॉर्थ स्ट्रीट के कोने पर दो बढिया रेस्तोरॉ और एक दर्जी की दूकान भी ग्रीक लोगो की है। एक इटालियन परिवार जूतो की मरम्मत की दूकान चलाता है। सिगार की दूकान एक सिसिली-वासी की है। यहूदी लोग कपडे की दूकानें, एक फार्मेसी और एक धातु के सामान और मशीनरी की दूकान चलाते है। इन सब किस्मो के व्यापार मे याकी लोग भी शामिल है। एक अत्युत्तम दूकान का मालिक सीरियन है। फ्रेंच-कनाडियन लोग परचून की दूकाने और पेट्रोल पम्प चलाते है। एक छापाखाना एक ऐसे अमेरिकन के

हाथ में है, जिसके पूर्वज हालैण्ड से आये थे। वकीलो में आपको अगोस्तिनी, लेविन, मोरिसी, बार्बर और होल्डन आदि नाम मिलेंगे जो विविध राष्ट्रीय पूर्वजो की याद दिलाते हैं। इनमें से कितने ही परिवार पीढियो से वरमौट में रहते आये है और कुछ अभी हाल मे ही यहाँ आये हैं। अमेरिका मे आज वे सब लोग परस्पर प्रेम और शान्ति से रह रहे हैं, जो अपने पुराने देशो मे सदियो तक आपस में लडते-झगते रहे हैं। यह कोई छोटी सफलता नही है।

यह समन्वय और सम्मिश्रण स्थापित करने मे हम यह ठीक-ठीक निश्चय नही कर सके कि क्या हमे लोक-पर्वों, विभिन्न जातीय सगठनो, विविध भाषाओ के स्कूलो और विभिन्न जातियो के पृथक् चर्चो को प्रोत्साहन देना चाहिए, या एक सर्व-सामान्य सस्कृति पर वल देना चाहिए। हमारे सामने यह प्रश्न हमेशा रहा है कि क्या हमे पुरानी दुनिया की लोक-प्रथाओ को समुन्नत और प्रोत्साहित करना चाहिए या उन्हे सदा के लिए तिरस्कृत कर देना चाहिए।

सम्भवत अपने बहुत्ववादी और फलवादी दृष्टिकोण से, जो अमेरिकनो की विशेषता है, हमने ये दोनो ही मार्ग अपनाये। हालैण्ड (मिशिगन) और पेला (आयोवा) के कस्बो मे जब ट्यूलिप फूलो का उत्सव मनाया जाता है तब वहाँ के लोग कुछ समय के लिए डच बन जाते हैं परन्तु उत्सव समाप्त होते ही वे फिर अमेरिकन हो जाते है। टारपन स्प्रिंग्स (फ्लोरिडा) मे ग्रीस से आये लोग अपना सागर पूजा उत्सव मनाते हैं, किन्तु जैसे ही क्रास का महासागर की लहरो के बीच से उद्धार कर लिया जाता है, जीवन फिर से सिनेमा, रोटरी और टेलीविजन की दुनिया मे लौट आता है। इटली और पोलैंड से आये अमेरिकनो की यह विशेषता है कि जैसे ही उनकी दूसरी और तीसरी पीढियाँ नगर परिषद् या विभिन्न नागरिक मडलो की सदस्य बनी कि वे अपने पुराने देशो के साथ लगाव छोड कर विशुद्ध अमेरिकन बन जाते हैं। किन्तु भाषा और धर्मशास्त्र के भेद-भाव मिट जाने पर

भी व्यक्तिगत धर्म की मान्यताओ के परम्परागत जीवन-क्षेत्र मे विभिन्न संस्कृतियो मे अन्तर बना ही रहता है। लेकिन यह बात नये आगन्तुको के बारे मे ही नही, पुराने अमेरिकनो के बारे मे भी सही है।

यद्यपि नवागन्तुक आप्रवासी को जीवन मे अपनी राह बनाने के लिए अनेक बाधाओ और विरोधो का सामना करना पडता है, किन्तु ये कठिनाइयाँ उसके मार्ग को अवरुद्ध नही करती, वल्कि सफलता पाने के लिए यह चुनौती उसके उत्साह और साहस को और भी बढाती है। इसका प्रमाण यह है कि आज अमेरिका मे जो लोग सामाजिक जीवन मे शिखर पर पहुँचे हुए हैं, उनमे से कितने ही या तो आप्रवासी थे या आप्रवासियो की सन्तान।

जुलियस लेमान की कहानी इसका एक सुन्दर उदाहरण है। एक तरुण के रूप मे वह बावेरिया से न्यूयार्क आया था, जहाँ उसने काम करते-करते पढ लिख कर शादी की और अपनी तीन पीढियो को फलते-फूलते देखा। वह बहुत सम्पन्न नही हुआ, किन्तु उसने अच्छा जीवन-यापन किया। बानवे वर्ष की आयु मे जब उसकी मृत्यु हुई तो वह अपनी वसीयत मे सिर्फ दो वड़ी रकमो का उल्लेख कर गया: एक थी एक हजार डालर की राशि, जो वह जर्मनी मे अपने माता-पिता की कब्रो की देखभाल के लिए छोड गया और दूसरी थी ६० हजार डालर की रकम, जो वह सयुक्त राज्य की सरकार को दे गया, क्योकि "वह और उसकी पत्नी सयुक्त राज्य के नागरिक होने के नाते अमेरिका मे प्राप्त जीवन के वरदानो के लिए उसके प्रति ऋणी" थे।

—०—

पारिवारिक जीवन

अमेरिका मे पारिवारिक जीवन की एक विशेषता यह है कि यहाँ परिवार बहुत छोटा होता है—पिता, माता और बच्चे। ससार के अनेक भागो मे परिवार बहुत बड़ा होता है। दादा-दादी, उनके लड़के और उनके परिवार सब एक घर मे रहते है। लेकिन अधिकतर पश्चिमी ससार की भाँति संयुक्त राज्य मे विवाह का बन्धन ही परिवार का केन्द्र होता है और हर विवाह से एक नया पृथक् परिवार बन जाता है। व्यक्ति अपने माता पिता के परिवार मे जीवन प्रारम्भ करता है, जिसका वह विवाह करने और अपना पृथक् परिवार स्थापित करने के बाद भी सदस्य रहता है। विवाह के बाद अपनी पत्नी के परिवार के साथ भी उसका सम्बन्ध हो जाता है और अपने साला-साली और सलहजो या ननद-भौजाई आदि के परिवारो के साथ भी उसका दूर का कुछ सम्बन्ध रहता है। इस प्रकार अमेरिकन पुरुष या स्त्री का सम्बन्ध अनेक परिवारो से रहता है। किन्तु एक बार शादी हो जाने के बाद उसके लिए सब से अधिक महत्त्व उसी नये परिवार का होता है जो उसके विवाह से बनता है। उसी के प्रति उसका सब से अधिक दायित्व होता है। किन्तु आम तौर पर अपने माता-पिता के परिवार के साथ भी उसका गहरा लगाव रहता है।

लेकिन माता-पिता यह ध्यान रखते हैं कि वे नये परिवार मे किसी तरह का हस्तक्षेप न करें। माता-पिता मे से जब किसी एक की मृत्यु हो जाती है तो दूसरा या तो अकेला रहता है, या अपनी किसी बहन के पास चला जाता है अथवा बूढो की देखभाल के लिए स्थापित किसी आश्रम मे चला जाता है। अमेरिका मे जीवन की सारी आयोजना यौवन

और चचल गति के लिए होती है, इसलिए आम तौर पर बाल-बच्चो वाले युवा गृहस्थी अपने साथ बूढे विगत-यौवन माता-पिता को बहुत कम रखते हैं। किन्तु इसका अर्थ यह नही है कि माता-पिता और भाई-बहन के साथ उनका सम्बन्ध घनिष्ठता और आन्तरिकता का नही रहता। माता-पिता बच्चो के पास और बच्चे माता-पिता के पास अक्सर आते-जाते हैं और अगर वे एक-दूसरे से बहुत दूर के स्थनो पर रहते हैं तो वे एक हफ्ता-दस दिन एक-दूसरे के यहाँ काट भी आते है।

बहुत से लोग बडे परिवारो पर गर्व अनुभव करते हैं—वे केवल अपने भाइयो और ससुराल वालो को ही नही, चचेरे-ममेरे भाई-बहनो, चाचाओ और मामाओ एवं उनके रिश्तेदारो से भी, जिनके साथ उनका अपना खून का रिश्ता नही होता, अपना सम्बन्ध मानते हैं। खास तौर से भाई-बहनो मे, और दादा-दादी या नाना-नानी का पोता-पोती और नाती-नातिनो से गहरा प्रेम होता है। लोग आम तौर पर अपने नाती-पोतो की भारी सख्या पर गर्व करते हैं और यह अनुभव करते है कि वे एक बडे परिवार के वयोवृद्ध परिपालक हैं। खास कर धन्यवाद दिवस के अवसर पर परिवार का यह बन्धन और मोह और भी बढ जाता है, जब लडके-बाले और नाती-पोते उत्सव-समारोह और पुनर्मिलन के लिए दूर-दूर से अपने 'पारिवारिक गृह, मे एकत्र होते है।

लेकिन कौन-सा पारिवारिक गृह ? अमेरिकन प्रणाली इस मामले मे पक्षपातरहित है। परिवार का नाम पति के नाम पर चलता है, इसलिए पति के परिवार को ही एक तरह से प्राथमिकता मिलती है। किन्तु सभ्यता और सौजन्य का तकाजा है कि पत्नी को भी और उसके द्वारा उसके परिवार को भी सम्मान दिया जाए। दादा-दादी और नाना-नानी दोनो ही नाती-पोती को समान दृष्टि से अपना समझते हैं। इसीलिए इस सौजन्य और शालीनता को भी दोनो मे पक्षपात-रहित होकर बांटा जाता है। यदि बच्चे धन्यवाद दिवस पर

एक के परिवार मे जाते है तो बडे दिन (क्रिसमस) के त्योहार पर दूसरे के परिवार मे। यदि एक बच्चे का नाम पितृ-कुल के नाम पर रखा जाता है तो दूसरे बच्चे का मातृ-कुल के नाम पर (हालाँकि आज-कल माता-पिता वही नाम रखना पसन्द करते है जो बोलने-सुनने मे आसान हो)।

जब सयुक्त राज्य कृषि-प्रधान देश था, उस समय परिवार एक उत्पादक इकाई होता था, और कम-से-कम परिवार का एक लडका अवश्य ही खेती का काम-काज देखने के लिए घर पर रहता था। किन्तु आज परिवार 'उत्पादक इकाई' नही, 'उपभोक्ता इकाई' है। इसलिए एक ही छत के नीचे यानी एक ही घर मे बडे परिवार को रखना तर्कसगत और सम्भव नही रहता। इसके अलावा अविवाहित बुजुर्गो या विधवाओ और विधुरो की समस्या अब भी बनी हुई है और उसे हल करने मे अधिक सफलता नही मिली।

कुछ लोगो का खयाल है कि अमेरिकन परिवार एक कमजोर और शिथिल सगठन है, क्योकि उसमे छोटी-छोटी इकाइयो मे बँट जाने की प्रवृत्ति है या स्कूल, न्यायालय अथवा युवक-सगठन आदि अन्य सस्थाओ और सगठनो ने उसे उसके कुछ कामो से वचित कर दिया है। लेकिन यह खयाल गलत है।

एक व्यावसायिक समाज मे यह देखा गया है कि उसमे परिवार व्यवसाय-व्यापार की अपेक्षा अधिक स्थायी सगठन बना रहता है। जितने व्यापार-व्यवसायो को दीर्घ काल तक टिकते देखा गया है, उससे कही अधिक परिवारो को दीर्घ काल तक टिकते देखा गया है।

इस मे सन्देह नही कि परिवार ही सब से पहले शैशव मे बच्चे को शिक्षा देता है, असहाय अवस्था मे उसे रक्षा और पोषण प्रदान करता है, उसे एक विशेप धर्म मे दीक्षित करता है, उसे सही सस्कृति और व्यवहार की शिक्षा देता है और मनोविनोद और व्यक्ति-व्यक्ति के पारस्परिक सम्बन्धो का सबसे पहला पाठ पढता है। परिवार के

द्वारा ही बच्चा समाज मे अपना पहला स्थान बनाता है, भले ही बडा होने पर वह उस स्थिति से नीचे गिर जाए या और ऊँचा उठ जाए। बच्चे बहुत जल्दी अपने माता-पिता से यह सीख लेते है कि उनकी सामाजिक स्थिति क्या है और सामाजिक स्थिति की इस भावना को वे स्कूल मे भी कायम रखते हैं, जहाँ वह और बद्धमूल होती है। समाज में व्यक्ति की स्थिति एक पेचीदा और अव्यक्त फारमूले पर आधारित रहती है जिसमे पिता का काम-धन्धा, आमदनी, परिवार की पृष्ठभूमि, निवासस्थान, नागरिक क्रिया-कलाप और शहरी व्यवस्था के मामलो मे हिस्सा, धर्म, किसी स्थान पर निवास की अल्पकालिकता या दीर्घ-कालिकता और मूल जाति आदि शामिल हैं।

परिवार मे घर का सामान भी शामिल है—सबसे पहले स्वय घर का स्थान है (हमारे देश मे ५६ प्रतिशत परिवारो के पास अपने निज के घर हैं), और उसके बाद ऐसी चीजो का जिन पर माता-पिता को गर्व होता है, जैसे उनकी कार, घर में काम आने वाली मशीनें और उपकरण और वश-परम्परा से चली आ रही पैतृक वस्तुएँ, जो परिवार को अतीत से बाँधती हैं। इसके अलावा परिवार की कुछ अदृश्य सम्पदाएँ भी होती हैं—जैसे माता-पिता द्वारा बच्चो को सुनाई जाने वाली अपने यौवन के दिनो की कहानियाँ या परिवार के कुछ विशिष्टजनो की कहानियाँ—यानी उस बूढी चाची की कहानी जो पचानवे वर्ष की दीर्घ आयु तक जिन्दा रही और इस बात पर हैरान थी कि उसके सब मित्र और परिचित इतनी छोटी आयु में ही क्यो चल बसे। लेकिन इस सब से अधिक सबल वस्तु है यह ज्ञान और अनुभूति कि परिवार सन्तान-प्रजनन और यौवन सम्बन्ध के रिश्ते की एक अद्भुत और विलक्षण इकाई है और परस्पर एक ऐसे अविच्छेद्य बन्धन में बधी हुई है कि उसके हर एक सदस्य का काम सारे परिवार को प्रभावित करता है।

पारिवारिक जीवन

अमेरिकन परिवार की एकता और अखंडता का एक सुनिश्चित कारण है उसके सब सदस्यों की समानता, हालांकि अनेक विदेशी लोग इसी को अमेरिकन परिवार की कमजोरी का कारण समझते हैं। इसमें सन्देह नही कि अमेरिका में ऐसे अनेक परिवार हैं जिनमें पिता अपनी सन्तानो से बिना किसी आपत्ति या सवाल-जवाब के पूर्ण आज्ञा-पालन चाहता है, जहाँ पत्नी को घरेलू खर्च के मामले में दखल या राय देने का कोई अधिकार नही होता, जहाँ बच्चो की जरा-सी गलती पर ही पिटाई हो जाती है या माँ किसी और बात पर बिगड़ने पर चिड़ चिड़ेपन में अपना गुस्सा उन पर उतारती है। किन्तु सब मिलकर अन्य संस्कृतियो की तुलना में अमेरिकन परिवारो में सब सदस्यो की समानता का अधिक पालन किया जाता है।

यह समानता पति-पत्नी के विवाह से प्रारम्भ होती है। आजकल अधिकतर पति-पत्नी विवाह-बन्धन मे बराबर के साझेदार के रूप मे प्रवेश करते है। आम तौर पर पत्नी तब तक काम करती है, जब तक उसकी पहली सन्तान पैदा नही होती और कभी-कभी बच्चो के बड़े होने और अपना आपा स्वय सँभालने लायक होने के बाद वह फिर कही काम करने लग जाती है। जो भी हो, घर पर वह पूरे दिन भर काम करती ही है, क्योकि केवल धनी लोगो के घर पर ही नोकर होते हैं और घरेलू यान्त्रिक उपकरणो की सहायता से भी पांच-छः व्यक्तियो के परिवार को चलाना और साथ ही अपने नागरिक कर्त्तव्यो को निभाना तब तक सम्भव नही है जब तक पत्नी सारे दिन स्वय काम न करे।

अमेरिकन पति कह सकता है कि अमेरिकन परिवार में एक और किस्म की समानता और सन्तुलन भी है, वह यह कि कमाता वह है और खर्च उसकी पत्नी करती है। स्त्रियो की पत्रिकाएँ और दिन के समय चलने वाले रेडियो और टेलिविजन कार्यक्रम आम तौर पर

वस्तुओ के विज्ञापन और स्त्रियो की रुचि की वस्तुओ पर आधारित होते है और इसी दृष्टि से बनाये जाते है।

नई कार या अमेरिकन उद्योगो में निर्मित कोई दूसरी सुन्दर वस्तु खरीदने के लिए स्त्री को कुछ समय के लिए फिर से काम पर जाना पड सकता है और उसका पहले काम कर चुकना और भविष्य मे उसके पुनः काम पर जाने की सम्भावना ऐसी चीजें है जो विवाह मे समानता को कायम रखने में और भी सहायक होती है।

यह सही है कि परिवार में अब भी पति ही मुखिया होता है। किन्तु पति का नेतृत्व केवल साकेतिक होता है, जब कि पत्नी घर की वास्तविक मुखिया होती है। सम्पत्ति—घर या कार आदि—आम तौर पर पति और पत्नी दोनो के नाम से खरीदी और बनाई जाती है। हिसाब-किताब की जाँच अक्सर दोनो मिलकर करते है और मासिक घरेलू खर्च के बिलो की अदायगी और आय-कर का हिसाब स्त्रियाँ करती हैं।

अमेरिकन विवाह और परिवार की ये विशिष्टताएँ ही स्त्री-पुरुष की समानता स्थापित करती है। विवाह हो जाने के बाद विवाहित जोड़ा एक अलग परिवार बन जाता है जिसमे पति और पत्नी दोनो एक-दूसरे की भावनात्मक आवश्यकताओ का ध्यान रखते हैं। वे पारस्पारिक घनिष्ठता और आन्तरिक सम्बन्ध चाहते है और इस सम्बन्ध और ऐक्य का उपभोग प्रेमी, माता-पिता, साथी, सहकर्मी, सह-उपभोग और जीवन की मजिल के सहयात्रियो के रूप मे बाँट कर करते है। अमेरिकन विवाह की एक समस्या यह है कि उससे बहुत-सी आवश्यकताओ की पूर्ति की आशा की जाती है। यह समझा जाता है कि विवाह तीन बुनियादी आवश्यकताओ—सन्तान प्रजनन, सामाजिक कार्य-कलाप और आपसी मानसिक निभाव—को बिना बाहरी सहायता के पूरा कर सकेगा।

बच्चो का प्रशिक्षण

माता-पिता जिस समानता की भावना के साथ विवाहित जीवन मे प्रवेश करते है, वह उनकी सन्तानो मे भी जाती है। यद्यपि यह स्पष्ट है कि माता-पिता को ही अपनी सन्तानो का मार्ग-दर्शन और नियमन करना होगा, तो भी अमेरिकन लोग यह यत्न करते हैं कि उन्हे जल्दी-से-जल्दी स्वतन्त्र और स्वावलम्बी बना दें। बच्चो को अपने शृगार और प्रसाधन आदि की शिक्षा अमेरिका मे अन्य देशो की अपेक्षा कुछ पहले देनी प्रारम्भ कर दी जाती है, (हालाँकि पहले इससे भी जल्दी प्रारम्भ की जाती थी) और जो बच्चे नहाने-धोने, शारीरिक सफाई और शृगार-प्रसाधन आदि मे जल्दी निपुण हो जाते हैं उनकी प्रशसा की जाती है। माताएँ अन्य बच्चो के साथ अपने बच्चो की तुलना करती है और उन्हें यथा सम्भव अपने पड़ोसियो के बच्चो से जल्दी चलना, बोलना और परिपक्व होना सीखने के लिए प्रोत्साहन देती है। किन्तु मनोवैज्ञानिक अध्ययन से पता चला है कि बच्चो को इतनी तेजी से सब कुछ सीखने के लिए प्रेरित करना अच्छा नही है और पढी-लिखी माताओ पर इस अध्ययन के निष्कर्ष का असर भी पडा है।

शिशु-पालन मे कुछ बातें ऐसी भी हैं जिनसे उनकी वैयक्तिक पृथक्ता, स्वतन्त्रता और समानता को बल मिलता है। उदाहरण के लिए हम बच्चो को आम तौर पर माँ का दूध न पिलाकर बोतल से दूध पिलाते हैं जिस से शिशु एक पृथक् व्यक्ति बन जाता है। इसी तरह से बच्चे का अपना अलग कमरा, अपनी कुर्सी और अपने खिलौने भी उसे एक पृथक् व्यक्ति के रूप मे विकसित करते हैं। यदि घर मे एक से अधिक बच्चे होते है तो उन सबकी अपनी अलग-अलग चीजे होती हैं। घरो को गर्म रखने की व्यवस्था होने से बच्चे को सर्दी से बचने के लिए मोटे और भारी-भरकम कपडो का बोझ नही उठाना पाडता। इससे भी बच्चे हल्के रहते है और आज़ादी अनुभव करते है और उन्हे आजादी

के महत्त्व को समझने और आजादी माँगने मे सहायता मिलती है। यह सम्भव है कि बच्चे के माता-पिता अभी नौजवान हो और यह भी सम्भव है कि बच्चा यौन सम्बन्धो से अनजाने मे ही पैदा न हुआ हो, बल्कि योजनापूर्वक उसका प्रजनन किया गया हो। परिवार मे बच्चो की संख्या अक्सर बाकायदा योजनापूर्वक सीमित रखी जाती है ताकि बहु-सन्तति के परिणामस्वरूप बच्चे अच्छी तालीम, अच्छे कपड़ों, डाक्टरी देख-भाल और मनोरंजन की सुविधाओं से वंचित न हों।

माता-पिता से आशा की जाती है कि वे अपने सब बच्चो को एक ही नजर से देखेंगे और किसी के साथ पक्षपात नही करेंगे, हालाँकि यह सम्भव है कि बच्चे उन्हे निष्पक्ष न समझें। सामान्यतः बच्चे अपने माता-पिता की सम्पत्ति मे समानता का उपभोग करते है।

बचपन से ही उन्हें स्वय सोचने-विचारने और घर के निर्णयो मे हिस्सा बँटाने का प्रोत्साहन दिया जाता है। उन्हें अपने लिए स्वयं मन के अनुकूल चुनाव करने का अवसर दिया जाता है और यदि उनसे कोई ऐसा काम करने को कहा जाता है जिसे वे पसन्द नही करते तो आम तौर पर यह जरूरी समझा जाता है कि उन्हे जबरन आज्ञापालन के लिए मजबूर न किया जाए, बल्कि जो काम करने के लिए उनसे कहा जाता है, उसका कारण उन्हें समझाया जाए। मोटे तौर पर कहा जा सकता है कि अमेरिकन परिवार लोकतन्त्री समाज है, जिसमे हर व्यक्ति के अपने अधिकार और कर्त्तव्य है, जिसमे पिता विधायक (कानून बनाने वाला), माता प्रशासक और बच्चे मतदाता सदस्य हैं। वास्तव मे यह अमेरिकन सस्कृति की विशेषता है कि इसमे पारिवारिक, राजनीतिक, आर्थिक और धार्मिक, सभी पहलू इतने गुँथे हुए हैं कि उन्हें एक-दूसरे से अलग नही किया जा सकता और इसीलिए उन्हें पृथक्-पृथक् रूप मे वर्णन करना भी सम्भव नही है। बच्चे व्यक्तिगत स्वतन्त्रता और लोक-तन्त्र के सिद्धान्तो के बारे मे स्कूल मे जो कुछ सीखते हैं, उन्हें घर पर

भी लागू करना जल्दी ही सीख लेते है। इसी तरह घर मे उन्हे माता-पिता से अपनी समस्याओ और अभिरुचियो मे जो दिलचस्पी मिलती है, उसे वे स्कूलो मे अध्यापको से भी पाने की आशा करते है।

स्कूल और माता-पिता बच्चो मे जो बहुत-से विचार भरने का प्रयत्न करते हैं और जिन्हें बच्चे स्वय जल्दी ही एक-दूसरे को सिखाने लगते हैं, उनमे एक महत्त्वपूर्ण विचार है इन्साफ और ईमानदारी का। यह विचार हमारे बच्चो मे इतनी छोटी उम्र से आ जाता है कि हम उसे गुरुत्वाकर्षण के सिद्धान्त की भाँति स्वाभाविक प्राकृतिक नियम समझने लगते हैं।

इन्साफ और ईमानदारी का तकाजा है कि कमजोर आदमी का खयाल रखा जाए, अपनी टीम के साथ छल न किया जाए, नियमो का पालन किया जाय, अनुचित लाभ न उठाया जाए, खेल मे जीत के लिए वफादारी से पूरी कोशिश की जाए और खिलाडीपन की भावना से हार को भी जीत की तरह मनस्विता से स्वीकार किया जाए और जीत पर गर्व न किया जाए। खेल की समाप्ति पर हारने वाली और जीतने वाली, दोनो टीमे एक दूसरे का हिप-हिप हुर्रे आदि ध्वनियो से अभिनन्दन करती हैं। खेल के मैदान मे सीखी यह भावना हमारे राजनीतिक आन्दोलनो मे भी चलती है, जहाँ हारने वाला अपनी हार को मनस्विता से अगीकार कर विजेता को बधाई देता है और अपने अनुयायियो से विजेता का साथ देने के लिए कहता है।

अगर एक छोटा बच्चा अपने साथी से खिलौना छीनने की कोशिश करता है तो माँ शायद उसे वैसा न करने के लिए कहेगी, "क्योकि उसके पास वह पहले से ही था।" जिसके पास जो वस्तु पहले से है, उस पर उसके स्वामित्व का सम्मान किया ही जाना चाहिए। किन्तु यदि बच्चा बहुत देर तक अपने पास वह खिलौना रखे रहे तो माँ उससे कह सकती है कि "तुम इससे बहुत देर खेल चुके हो, अब यह जॉनी को खेलने को दे दो।" जिसके पास जो वस्तु है, उसे दूसरो के साथ बाँट

कर उसका उपयोग करना चाहिए। इस तरह हमारे बच्चे जीवन के प्रारम्भ मे ही स्वामित्व और साझेदारी, प्रतिस्पर्धा और सहयोग की शिक्षा पा जाते है। हमारी सारी सस्कृति मे इस बात के स्पष्ट चिह्न और लक्षण है कि हम प्रतिस्पर्धा मे कम क्रूर होते जा रहे हैं और स्वेच्छा से सहयोग अधिक करते है और इस प्रकार प्रतिस्पर्धा और सहयोग दोनो का समन्वय करने की चेष्टा करते हैं। इनमे से श्रम-सम्बन्ध आदि कुछ लक्षणो का हम बाद मे वर्णन करेंगे।

ईमानदारी और इन्साफ की भावना मे एक और भी वाछनीय लक्ष्य निहित है और वह है मिलकर काम करने की भावना। एक स्वेच्छया निर्मित समाज में दोनो पक्षो द्वारा स्वीकृत नियमो के अनुसार एक सर्व-सामान्य लक्ष्य को पाने के लिए मिलकर प्रयत्न करना सस्कृति का एक महत्त्वपूर्ण तत्त्व है। इस भावना की शिक्षा खेल के मैदान से प्रारम्भ होती है और उसका अन्त जीवन के ऐसे सहयोगी और सहकारी दलो मे होता है जिनके बल पर हम व्यापार-व्यवसाय, विज्ञान और नागरिक प्रगति आदि के क्षेत्रो मे उन्नति कर सके है; और सामूहिक प्रचार के साधनो मे भी अब व्यक्तिगत सृजन का स्थान कलाकारो के दलो ने ले लिया है।

बाल-प्रशिक्षण मे नैतिकता पर बहुत बल दिया जाता है। घर, स्कूल, गिरजा और युवक सगठन—सभी मे नैतिकता की शिक्षा दी जाती है। स्काउट बनने वाले लडको को यह पाठ कण्ठस्थ करना पडता है कि "स्काउट को विश्वासयोग्य, वफादार, सहायक, मित्रतापूर्ण, सौजन्यशाली, दयालु, आज्ञाकारी, प्रसन्नचित्त, मितव्ययी, बहादुर, साफ-सुथरा और बडो का सम्मान करने वाला होना चाहिए।" पैंतीस वर्ष बाद भी स्काउट यह पाठ बिना रुके ठीक-ठीक लिख सकता है, यह इस बात का प्रमाण है कि इस शिक्षा का उस पर स्थायी असर पडा है। बाइबिल और धर्मग्रन्थो की शिक्षाएँ भी पुराने परम्परागत

ढग से पाले गये बच्चे पर महत्त्वपूर्ण प्रभाव डालती है और उसके मन मे उनकी प्रतिध्वनि होती रहती है।

उचित और अनुचित की धारणाएँ बहुत जल्दी ही बच्चे के मन मे बद्धमूल कर दी जाती है और यदि वह इन धारणाओ की उपेक्षा करता है तो यह बात उसके मन मे स्पष्ट रहती है कि वह पकड़ा जाएगा और उसे सजा दी जायेगी। हो सकता है कि कोई दुष्ट साथी उसे बाइबिल की 'दस शिक्षाओ के बाद यह ग्यारहवी शिक्षा भी दे कि "अपराध करते हुए पकडे मत जाओ।" किन्तु अपवाद रूप मे कुछ मानसिक विकृतियो के अवसरो को छोड कर शेप सब समय बच्चे मे आज्ञाकारिता की आदत इतनी प्रबल होगी कि वह कानून का उल्लघन करेगा ही नही।

अमेरिकन लोग बच्चे के प्रशिक्षण को बहुत महत्त्व देते है और उसमे बडी गम्भीरता से रुचि लेते हैं। इसके लिए वे इस विपय की पत्रिकाएँ और बुलेटिन पढते हैं, लैक्चर सुनते हैं और अन्य माता-पिताओ से विचार-विनिमय करते है। वे बाल-शिक्षण का काम वैज्ञानिक ढग से करना चाहते हैं, किन्तु क्योकि वैज्ञानिको के विचार भी इस बारे मे हमेशा बदलते रहते है, इसलिए उनका ऐसा कर पाना कठिन हो जाता है। एक माँ ने इसीलिए खिन्न होकर एक बार कहा था, "मैंने बालमनोविज्ञान की पुस्तकें पढना छोड दिया है।" किन्तु फिर भी छोटी उम्र की माँ को, जो अपने बुजुर्ग माँ-बाप से दूर है, शिशु और बालक के पालन के बारे मे अपने निज के बालपन की स्मृतियो के सिवाय और कोई ज्ञान नही होता, इसलिए उसे अन्तत. विशेपज्ञो का ही सहारा लेना पडता है।

परिवार मे माँ की भूमिका सबसे बडी होती है। पाँच या छ वर्ष की आयु तक बच्चा एक तरह से दिन के अधिकतर भाग मे माँ की ही अधीनता और देख-रेख मे रहता है, अपने आनन्द और मनोरजन एव अपनी आवश्यकताओ की पूर्ति के लिए उस पर निर्भर रहता है

और उसी के अनुशासन में उसका दिन बीतता है। यदि दादा-दादी नजदीक हो, तो भी माँ-बाप उनका हस्तक्षेप बहुत अधिक पसन्द नही करते, क्योकि अमेरिकन समाज इतना सचल और परिवर्तनशील है कि एक पीढी की परम्पराएँ दूसरी को पुरानी और दकियानूसी प्रतीत होती है, बल्कि कभी-कभी वह उन्हे हानिकर भी समझती है।

यह बात कुछ हद तक बडी कारुणिक है कि अमेरिकन माता-पिता अपने बच्चो को जिस स्वतन्त्रता की शिक्षा देते है, वही एक दिन उन्हे उनसे अलग कर देती है। क्या यह सम्भव है कि यह आने वाली स्वतन्त्रता ही बच्चे के प्रति माँ-बाप के रुख को नर्म कर देती हो और वे यह सोचकर कि एक दिन वह स्वतन्त्र होकर उनसे दूर हो जाएगा, एक व्यक्ति के रूप मे उसका अधिक सम्मान करते हो ?

जो भी हो, अमेरिकन जीवन मे अनेक प्रकार के दबाव ऐसे हैं, जो माता-पिता और सन्तान के सम्बन्ध को कमजोर करते है। उसकी शिक्षा का और काफी हद तक उसके मनोरंजन का भी भार स्कूल अपने ऊपर ले लेता है। वह बच्चे के दाँत, आँख और स्वास्थ्य की परीक्षा कराता है, उसे रोग से बचाने के लिए इंजेक्शन आदि की सिफारिश करता है और यदि माता-पिता उसे चश्मा लगवाने या उसके दाँतो का इलाज कराने मे समर्थ नही होते, तो वह उसकी भी व्यवस्था करता है। जिन बच्चो को विशेष चिकित्सा या परिचर्या की आवश्यकता होती है, उन्हे चिकित्सालयो मे भेज दिया जाता है, जहाँ उनका शारीरिक और मानसिक, दोनो प्रकार का इलाज किया जाता है। बालचर और गर्ल गाइड संगठन एव धार्मिक सम्प्रदायो की सभा-सोसाइटियाँ उन्हे मनोरंजन और सामाजिक मेल-मिलाप का अवसर प्रदान करती है। छुट्टियो के दिनो मे बच्चा अपने घर मे रहकर उसके साथ कुछ ममत्व पैदा कर सकता है, किन्तु उसे यह सुविधा भी अमेरिका मे नहीं मिलती, क्योकि स्कूलो के ग्रीष्म शिविर उन्हे छुट्टियो मे भी घर से दूर खीच ले जाते है। खाली समय मे बच्चे को कुछ अंश कालिक

काम करके पैसा कमाने का अवसर मिल जाता है। इससे भी परिवार पर उसकी निर्भरता कम होती है और उसमे स्वावलम्बी होने की भावना पैदा होती है।

हमारे अर्थतन्त्र मे जो परिवर्तन हुआ है और जिसके फलस्वरूप हमारी अर्थ-व्यवस्था अभाव और अल्पता की अर्थ-व्यवस्था से बाहुल्य की अर्थ-व्यवस्था मे परिणत हो गई है, उसने भी माता-पिता और सन्तान के सम्बन्ध को कमजोर किया है। जब हमारे समाज मे काम कम था और कर्मचारियो को मालिक के शिकजे मे रहना पडता था, उस समय पिता घर पर वैसा ही अनुशासन कायम रखता था, जैसा कि दफ्तर या कारखाने मे मालिक उस पर रखता था। वह बच्चे को माता-पिता या अपने ऊपर वालो की अधीनता मे रहने की शिक्षा देता था ताकि वह सघर्ष मे जीवित रह सके। लेकिन आज बाहुल्यमयी अर्थ-व्यवस्था मे आदमी काम को तलाश नही करता, बल्कि काम ही आदमी को तलाश करता है। इसलिए आज किसी को भी किसी की अधीनता और दबाव स्वीकार करने की जरूरत नही है।

विदेशी लोग यह खयाल कर सकते है कि इस मामले मे हमने उचित सीमा का उल्लघन कर डाला है। वे कह सकते है कि हमारी सस्कृति बच्चे पर केन्द्रित है जिससे हमारी सारी अभिवृत्ति बच्चो जैसी हो गई है, हमने स्वतत्रता देकर बच्चो को बिगाड दिया है; जब उन्हें चुप रहना चाहिए तब हम उन्हें बोलने देते हैं, जब इन्हे आज्ञा-पालन करना चाहिए तब हम उन्हें आदेश के विरुद्ध दलीलें करने से नही रोकते और जब उन्हें गुरुजनो के प्रति नम्रता का बर्त्ताव करना चाहिए तब हम उन्हें उनके साथ उच्छृखलता और धृष्टता का व्यवहार करने देते हैं। खास तौर से शहरो मे, जहाँ कि पति की भाति पत्नी को भी पैसा कमाने के लिए बाहर काम पर जाना पड़ता है, बच्चे पर कोई अकुश और अनुशासन नही रह जाता और उसके परिणामस्वरूप कभी-कभी उसकी आदतें बिगड़ जाती है और वह अपराधी बन जाता है।

यदि हम यह अभियोग स्वीकार भी कर ले, तो भी हम केवल यही उत्तर दे सकते हैं कि सस्कृति एक व्यापक ताना-बाना है और हम अपने बच्चो को स्वतन्त्रता की शिक्षा इसलिए देते है कि भविष्य मे हमारे प्रतियोगितापूर्ण समाज मे उससे स्वतन्त्रता की आशा की जाती है। किन्तु इसका एक कारण और भी है जो हमारी जीवन-पद्धति मे अधिक गहरा बिंधा हुआ है और वह है किशोरावस्था और यौवन के प्रति हमारा प्रेम। हमारा हर काम हमारे इस यौवन-प्रेम की ओर सकेत करता है और उसे दृढतर बनाता है। हमारा सारा कथा-उपन्यास साहित्य युवक-युवतियो के प्रेम पर आधारित है। स्त्रियाँ अपने यौवन को अक्षुण्ण बनाये रखना चाहती हैं, इसलिए वे अपनी सही आयु नही बताती। बूढी दादियाँ और नानियाँ भी मानो खोये हुए यौवन को फिर से लौटा लाने के लिए जी-तोड मेहनत करती हैं, वे युवतियो की तरह छरहरी बनने का यत्न करती है, उन्ही के-से वस्त्र पहनती हैं, वैसा ही शृंगार-प्रसाधन करती है और उन्ही की भाँति चचल सामाजिक जीवन मे सचल रहना चाहती है। पुरुष भी सोचते हैं कि चालीस वर्ष की आयु के बाद अधेड अवस्था मे शायद दफ्तर और कल-कारखाने उन्हें काम पर रखने मे हिचकिचाएँ, इसलिए वे भी खूब बन-ठन कर रहने का प्रयत्न करते हैं ताकि चिर-युवा बने रह सकें।

हम यौवन को इतना मूल्यवान क्यो समझते हैं ?

इसके कारण अनेक और सूक्ष्म हैं। इसमे सन्देह नही कि अमेरिका को बसाने के लिए बहुत कडा परिश्रम करने वाले युवको की आवश्यकता थी। प्रारम्भ मे जो लोग 'तीर्थ-यात्री' बन कर अमेरिका मे आये थे, वे सब बीस से चालीस वर्ष तक की आयु के युवक थे। कप्तान जॉन स्मिथ जब अमेरिका पहुँचा था तब उसकी आयु २७ वर्ष थी। सयुक्त राज्य अमेरिका की स्थापना करने वाले लोगो मे, जिन्होने स्वतन्त्रता की घोषणा पर हस्ताक्षर किये थे, जैफर्सन की आयु ३३, हैनकॉक की ३९ और टामस लिच, जूनियर की आयु केवल २७ वर्ष थी। इस देश

का निर्माण युवको की बलिष्ठ मासपेशियो ने किया था और आज उसके उद्योग जो तरक्की कर रहे है, उसके लिए भी यौवन की स्फूर्ति और बल से सम्पन्न युवकों की ही आवश्यकता है।

हमारा समूचा दृष्टिकोण और विचारधारा भविष्याभिमुख है. हम उस भावी स्वर्ग का निर्माण करने मे जुटे हुए हैं, जिसमे सिर्फ युवक ही पहुँच सकेंगे। इसलिए युवक हमारे राष्ट्रीय जीवन का प्रतीक बन गये हैं और यही कारण है कि अपने राष्ट्रीय जीवन मे हम प्रगति, पूर्णता की चेष्टा अग्रसर होने की प्रवृत्ति, सजीव प्रतिस्पर्धा, फुर्तीले परिपुष्ट युवा खिलाडियो, स्नान की चुस्त पोशाक पहने सुन्दर सुडौल देहवाली युवतियो, बलदायी ओषधियो, यौवन का उभार दिखाने वाली तग अगिया, मोटापा घटाने वाली रेचक दवाओ, और बुढापे को छिपाकर यौवन को उभारने वाली बहु-विज्ञापित पोशाको पर इतना बल देते हैं।

हमारा राष्ट्रीय खेल बेसबॉल भी यौवन, फुर्ती, तीव्र गति और गेंद पर नजर रखने के लिए शरीर और मन की एकाग्रता पर बल देता है। राष्ट्रीय सगीत जाज भी मानो यौवन की अद्‌भुत भाषा है—उसकी लय, ताल-सुर, थाप, थिरकन, आरोह-अवरोह, आवर्त्तन और सबसे बढ कर उसमे भरी उमग, सब के सब यौवन के प्रतीक है। धर्म मे भी पिता की तरह परिपालक बूढे देवता की हम उपासना नही करते, हम आराधना करते हैं शक्ति और ओज से परिपूर्ण नितान्त पार्थिव तरुण देव-पुत्र की, यहाँ तक कि उसके शिशुरूप की भी। ईसा की सूली पर चढी मूर्त्ति हमे उतना आकृष्ट नही करती, जितना उसके शैशव की मूर्त्ति करती है।

नारी का स्थान

आजकल हमारे देश में लडकी तब तक अपनी आजीविका स्वय कमा सकती है, जब तक कि वह विवाह कर पति न पा ले, और उसके बाद आवश्यकता पड़ने पर वह पति का परित्याग कर फिर अपने पाँवो

पर भी खड़ी हो सकती है। पति-परित्याग की यह आशंकित सम्भावना ही नारी को पति से सम्मान दिलाती है। आज हमारे देश में काम करने वाली स्त्रियो में से आधी विवाहित है। इसलिए अमेरिका मे स्त्री कृषि-प्रधान युग की भाँति आज भी परिवार की एक आर्थिक निधि है। इसका परिणाम यह होता है कि पति भी घर के कामकाज मे पत्नी को सहायता देता है और इस प्रकार पुरुष और स्त्री दोनो के काम बहुत-कुछ एक-जैसे हो गये हैं। परिवार में अधिकार और सत्ता दोनो के हाथ में बराबर है और दोनो में से जो दबग और प्रभावशाली होगा चाहे वह स्त्री हो या पुरुष, वही नेतृत्व को अपने हाथ में ले लेगा और यह भी सम्भव है कि नेतृत्व में भी दोनो समान साझेदार हो।

स्त्रियाँ कई महत्त्वपूर्ण दृष्टियो से पुरुषो से आगे हैं। स्त्री मतदाताओ की सख्या पुरुष मतदाताओ से २४,००,००० अधिक है। स्त्रियाँ पुरुषो से अधिक दीर्घजीवी होती हैं। सन् १९५२ में जो लड़की पैदा हुई थी उसकी जीवन की आशा ७३ वर्ष है, जबकि उसी वर्ष उत्पन्न लडके की जीवन की आशा ६७ वर्ष ही है। स्त्रियो को फोडे, हृदय रोग और इसी तरह की अन्य अनेक बीमारियाँ पुरुषो से कम होती है। जो कानून किसी समय स्त्री-पुरुष मे भेद करता था, वही आज दोनो को बराबर अधिकार देता है, बल्कि कुछ मामलो मे वह स्त्रियो को तरजीह देता है। स्त्रियाँ सरकारी पदो के लिए चुनी जा सकती हैं और हाल मे ही वे राजदूत और मन्त्री तक के ऊँचे पदो पर नियुक्त हो चुकी है। पूँजी-विनियोग मे भी वे पुरुषो से कुछ आगे (५१ ६ प्रतिशत) है।

आज भी अनेक मामलो मे पुरुष उनका सम्मान करते है। दरवाजे मे से उन्हें पहले निकलने दिया जाता है, मेज पर उन्हे पहले बैठाया जाता है और खाना भी उन्हे पहले परोसा जाता है। परिवार मे वही सामाजिक निर्णय मे पच होती है, वही यह निर्णय करती है कि किसका घर मे आतिथ्य किया जाए (हालाँकि इसमे वे पुरुष की भी अनुमति

ले लेती हैं), कहाँ रहा जाए और किसी को कोई उपहार दिया जाए या नही।

वे भी उन विश्वविद्यालयो मे जा सकती है जहाँ लडके पढते है और वही विषय पढ सकती है जो पुरुष पढते है। वे अब उन होटलो मे भी जा सकती है, जिनमे पहले केवल पुरुषो को ही प्रवेश की अनुमति थी। वे कोमलागी होने पर भी कठोर परिश्रम वाले खेलो मे हिस्सा ले सकती है, अपने पतियो का चुनाव स्वय कर सकती है और यह भी निर्णय कर सकती है कि कितनी सन्ताने पैदा की जाएँ। आजकल तो वे पोशाक चुनने मे भी स्वतन्त्र है। वे चाहें तो पतलून पहन सकती है और चाहें तो निकर या जाघिया ही पहन सकती है। वे अपने सगठनो और समितियो के द्वारा नागरिक कार्य-कलापो और गति विधियो का निर्देशन कर सकती है—आज ६५ प्रतिशत स्त्रियाँ किसी-न-किसी सेवा सगठन की सदस्य है। क्लबो, व्याख्यानो, सगीत कार्यक्रमो और निजी अध्ययन से आज स्त्रियाँ हमारे साँस्कृतिक जीवन पर छायी हुई है।

विदेशी प्रेक्षक यह खयाल कर सकते है कि स्त्रियो का अमेरिकन समाज पर प्राधान्य या प्रभुत्व है। किन्तु स्त्रियाँ इसका उत्तर यह दे सकती हैं कि अभी तक उद्योग, प्रशासन या शिक्षा के क्षेत्रो मे उनके पास काफी सख्या मे ऊँचे पद नही है; अच्छे वेतन वाले प्राय. सभी काम पुरुषो के हाथ मे है और एक जैसा काम करने पर भी पुरुषो से उन्हें कम वेतन मिलता है और घर से बाहर काम करने पर भी उनसे यह आशा की जाती है कि वही घर का भी कामकाज करे। वे यह भी कह सकती है कि अभी तक किसी ने ऐसी कोई विधि आविष्कृत नही की है जिससे स्त्रियो के बजाय पुरुष बच्चे पैदा कर सके।

पत्नी से आशा की जाती है कि वह खाना बनाएगी, बच्चे पैदा करेगी, सन्तानें पालेगी, घर की सफाई करेगी, परिवार के सामाजिक कामो की देखभाल करेगी, खरीदारी करेगी, बच्चो को स्कूल, सगीत-

शाला और स्काउट समारोहो मे मोटर से पहुँचाएगी और वहाँ से वापस लाएगी, बाग-बगीचा सभालेगी, समाज-सेवा करेगी; क्लब मे जाएगी; अच्छा पड़ोसी-चारा निभाएगी और सबसे बढ़कर पति की सखी, सचिव, सहधर्मिणी और यौन सम्बन्धो की साथिन बनेगी।

नारीत्व का स्वरूप भी तेजी से बदल रहा है। बहुत-सी स्त्रियाँ जब अपने लिए नई आजादियो और नई जिम्मेदारियो को पाने का प्रयत्न करती हैं तो नारीत्व से दूर चली जाती है। इससे कुछ स्त्रियाँ बेचैन हो जाती है और अपनी इस आन्तरिक अशान्ति को छिपाने के लिए दिन-रात अपने आपको काम मे खपाये रखती हैं। किन्तु नारी ने भी वीरान अमेरिका को आबाद करने मे पुरुष के साथ मिलकर योग दिया था, उसने भी जगल काटे थे और पुरुष की बगल मे रहकर लडाई लडी थी। अपनी इस पुरानी शक्ति और दृढता से अब वह अपने नये आधुनिक जीवन के साथ भी ताल-मेल कायम कर रही है।

पुरुप आज भी मुख्यत बाहर जाकर आजीविका उपार्जन करते है और स्त्रियाँ घर को बनाती है। किन्तु धीरे-धीरे अब दोनो के काम मे एकता और समानता आती जा रही है, जिससे समाज मे दोनो वर्ग समान होते जा रहे है। यदि अमेरिकन जीवन मे सजीव विकास का कोई एक सिद्धान्त काम कर रहा है तो वह है समानता की दिशा मे प्रगति, फिर चाहे वह नर-नारी के बीच हो, पिता-पुत्र के बीच हो, वर्ग-वर्ग के, नौकर-मालिक के, अध्यापक-छात्र के, या बेयरा और ग्राहक के बीच हो। कभी-कभी यह समानता इतनी बढ जाती है कि बाहर के लोग होटल मे बेयरा के समानता और सुपरिचय के भाव को उद्‌धतता और टैक्सी,ड्राइवर के आत्मीयता भरे बातूनीपन को उच्छृखलता समझने लगते है। किन्तु हमारे लिए ये उनकी इस भावना के द्योतक सकेत है कि "मैं भी तुमसे उन्नीस नही हूं और सभव है, तुम से इक्कीस ही होऊँ।"

पुराने रूढिवादी कह सकते है कि विवाह और दाम्पत्य मे यह समानता ही अमेरिका मे तलाको की भारी सख्या का कारण है—यहाँ करीब बीस प्रतिशत विवाह तलाक से विच्छिन्न हो जाते हैं। दूसरे लोग इसके लिए उत्तरदायित्व-हीनता या अधार्मिकता को दोषी ठहराते हैं, हालाँकि आज गिरजाघर मे जाने वालो की सख्या पहले हमेशा से अधिक है।

तलाक अल्प आय वाले श्रमजीवी और कर्मचारी वर्ग मे अधिक पाया जाता है, जबकि मध्यवर्ग के लोगो या डाक्टरी, वकालत अथवा इजीनियरिग आदि पेशो मे लगे लोगो मे वह अपेक्षाकृत कम है। छोटे कस्बो की अपेक्षा बडे शहरो मे, दक्षिण और उत्तरपूर्व की अपेक्षा पश्चिम और दक्षिण-पश्चिम मे, और शिक्षितो की अपेक्षा अशिक्षितो मे वह अधिक है।

जो भी हो, यह निश्चित है कि स्त्री-पुरुष इच्छा के विरुद्ध असन्तोषजनक दाम्पत्य सम्बन्ध मे बँधे रहने को तैयार नही हैं। वे दु खमय जीवन बिताने के बजाय तलाक का सामाजिक कलक ओढने के लिए अधिक उद्यत रहते है। तलाक की घटनाएँ आम-फहम हो जाने से अब तलाक देना कलक या लाछन नही समझा जाता। फिर भी सब प्रकार की मनोवैज्ञानिक सहायताएं देने और विवाह को सफल बनाने की सुनिश्चित योजनाएँ बनाने के बावजूद तलाको की सख्या कम क्यो नहीं हो रही ?

कानून से विवाह और तलाक, दोनो को कठिन बनाने का प्रयत्न किया गया है। कानून ने अब सामान्य नियम को बदलकर यह व्यवस्था कर दी है कि यदि पति और पत्नी दोनो ही व्यभिचार जैसे तलाक-योग्य अपराध के दोषी हो तो तलाक की अनुमति नही दी जाएगी। यह अनुमति तभी दी जा सकती है जब कोई एक पक्ष ही इस अपराध का दोषी हो। बत्तीस राज्यो ने यह भी कानून बना दिया है कि केवल पति या पत्नी की गवाही अथवा इकबाली बयान के आधार पर ही तलाक की स्वीकृति नही दी जाएगी। सिर्फ नेवाडा इसका अपवाद है

और यही कारण है कि इतनी अधिक सख्या मे लोग तलाक लेने-देने के लिए रेनो जाते है।

आजकल अधिकतर तलाक विवाह के बाद तीसरे साल लिये जाते हैं और उनमे से दो-तिहाई तलाक लेने वाले निःसन्तान पति-पत्नी होते हैं। इस प्रकार ये लोग विवाह सम्बन्ध को अवश्य तोडते है, पर बने-बनाये परिवार को नही तोडते। इसके अलावा तलाक लेने वालो मे से सत्तर प्रतिशत फिर विवाह कर लेते हैं और यह आशा करते है कि उनका नया विवाह सफल होगा। अमेरिका मे युवक-युवतियाँ अपने लिए जीवन-सगी का चुनाव जिस तरह मनमाने ढग से बिना किसी निश्चित सिद्धान्त के करते है, उससे इतनी बडी सख्या मे तलाको का होना कदापि आश्चर्यजनक नही है। सिर्फ वही तलाक अधिक गम्भीर होते है जिनमे सन्तानो का भी विच्छेद और बिछोह हो जाता है।

अपराधवृत्ति—बाल या वयस्क ?

तलाक के कारण 'टूटे परिवारो के बच्चो मे सुरक्षित और स्थिर परिवारो के बच्चो की अपेक्षा सामाजिक आचार के स्तर के सम्बन्धो मे अधिक सन्देह पैदा होते है और वही इस आचार के विरुद्ध विद्रोह करते है। जिन बच्चो के साथ उनकी जाति या ऊँच-नीच के कारण भेदभाव किया गया है और जो गन्दी बस्तियो मे पले है, उनके लिए जीवन और भी कठोर होता है। ये बच्चे स्कूल और समाज मे दूसरो के साथ किये जाने वाले पक्षपातपूर्ण व्यवहार को बहुत स्पष्टता और गहराई से अनुभव करते है। इसलिए अपने साथ भेदभाव करने वाली सस्थाओ से अलग हो जाते है और फिर उन पर प्रहार करने के लिए परस्पर सगठित हो सकते है। व्यक्तिगत स्वतन्त्रता की प्रशसा सुनने और उसे देशभक्ति का काम बताये जाने के कारण वे उन सस्थाओ के प्रति विद्रोह कर अपनी ओर समाज का ध्यान आकृष्ट करते और उसमे आत्म-सन्तोष अनुभव करते है। सबसे अधिक गम्भीर अपराध वे है, जिन्हे विभिन्न जातीय वर्ग गरीवी, अज्ञान और भेदभाव से प्रताडित

होकर, समाज मे फिर से सन्तुलन स्थापित करने के लिए सिर्फ इन कारण अपनाते हैं कि उनके पास इसके सिवा और कोई मार्ग नही होता।

बच्चो मे अपराध-वृत्ति का फैलना अमेरिकन समाज की एक बहुत बडी कमजोरी और असफलता है। इसके जो कारण ऊपर बताये गये हैं, वास्तविक कारण उनसे बहुत अधिक गहरे और जटिल है। युद्ध और युद्ध के बाद की स्थिति: खराब आवास-व्यवस्था, माता-पिता का मजदूरी करना और काम की खोज मे एक स्थान पर न रह कर इधर-उधर भटकते रहना, गरीबी और झगडालू परिवार की दु खद परिस्थितियो की क्षति-पूर्त्ति के लिए किसी लोम-हर्षक कार्य की आकाक्षा और नित्य बदलते नैतिक पैमानो के कारण नैतिकता की किसी एक सुनिश्चित और स्थिर धारणा का अभाव — ये कुछ ऐसे कारण हैं जो बाल-अपराध-वृत्ति के पोषक है। यह समझना भूल है कि बाल-अपराध बच्चो की सामान्य विकृति है जिसका निवारण साधारण दड से किया जा सकता है। बाल-अपराध के कारणो की जड वास्तव मे समाज के भीतर है। जातीय या वर्गीय भेदभाव, पृथक्करण, गरीबी और अज्ञान को जितना अधिक नियन्त्रित किया जाएगा, बाल-अपराध उतने ही कम होगे। जो नागरिक गन्दी बस्तियो के उन्मूलन और अच्छी आवास-व्यवस्था और मनोरजन के साधनो के विरुद्ध मत देता है और जो समाज मे जाति और वर्ग के आधार पर भेदभाव करता है, वही असल अपराधी है। ऐसे लोग अक्सर यह स्वीकार नही करते कि भेदभाव और असमानता को खत्म करना बाल-अपराधो का इलाज है, बल्कि वे यह तर्क देते हैं कि समाज के दलित और शोषित वर्ग मे चूंकि बाल-अपराध की वृत्ति है, इसलिए उसे भेदभाव के द्वारा अपने से दूर रखना चाहिए।

यद्यपि यह समस्या बहुत गम्भीर है तो भी अमेरिकन लोग विश्वास-पूर्वक कह सकते हैं कि इसका समाधान असम्भव नही है, क्योकि अपने सुदीर्घ इतिहास मे अमेरिकनो ने कितने ही देशो और जातियों के आप्रवासियो को अपने साथ आत्मसात् किया है। जैसे-जैसे लोगो

के आम रहन-सहन का स्तर ऊँचा हो रहा है, इस समस्या के हल मे भी सहायता मिल रही है। इसी तरह सामाजिक विज्ञानो की सहायता से प्रशिक्षित सामाजिक कार्यकर्त्ता भी बाल-अपराध की समस्या का अध्य-कर रहे है। इस दिशा मे एक अन्य कदम बाल-न्यायालयों की स्थापना है, जो अपराधी बालको को अपराधी की तरह दड देने के बजाय सहानु-भूतिपूर्वक उनकी समस्याओ पर विचार कर और आवश्यकतानुसार उनके मानसिक रुझान मे परिवर्त्तन कर, उनको सुधारने का प्रयत्न करते हैं।

देश मे बाल-अपराध की समस्या के सुधार के लिए कितनी ही योजनाओ पर अमल हो रहा है। पेनसिलवेनिया मे बाल-अपराध न्याया-लय के न्यायाधीश ने अपनी रोटरी क्लब को यह प्रेरणा दी कि वह बाल-सुधार के लिए सुधार सघ की स्थापना करे, जो किसी भी प्रकार का आर्थिक लाभ उठाए बिना यह काम करे और इसके लिए धन-सग्रह कर एक सुधार-अधिकारी नियुक्त करे। उसके बाद उसने एक स्वय-सेवक समिति बनाने का सुझाव दिया जिसके सदस्य आवश्यकता पडने पर सुधार-अधिकारी को सहायता दें। इस कार्यक्रम का एक उद्देश्य जनता को यह समझाना था कि बाल-समस्याएँ सारे समाज की सम-स्याएँ है और बाल अपराधो को रोकने के लिए दड से बेहतर यह है कि इन अपराधो के कारण दूर किए जाएँ। यह अमेरिकन जीवन की ही एक विशेषता है कि एक न्यायाधीश ने इस समस्या के हल के लिए सरकार का आश्रय लेने के बजाय जनता के एक स्वेच्छयानिर्मित स्वयसेवी सगठन की सहायता ली। सरकार इस समस्या के हल के लिए मानसिक चिकित्सको या इसी प्रकार के अन्य पेशेवर लोगो की सहायता तो दे सकती है, परन्तु वह समाज को या किसी विशेष सगठन को इस बात के लिए प्रेरित नही कर सकती कि वह सारे समाज के सामान्य कल्याण और हित को दृष्टि मे रखकर पहले अपने सदस्यो की

मदद से, और फिर अन्य लोगो की भी सहायता लेकर इस तरह की समस्याओ के समाधान का उद्योग करे।

सुधार-अधिकारी को यहाँ जिन बहुत-से बच्चो के मामलो को अपने हाथ मे लेना पडा, उनमे से एक बालक फ्रैंक था। यह लडका अक्सर घर और स्कूल से भाग जाता था और अनेक छोटी-मोटी चोरियाँ भी कर चुका था। अधिकारी ने उसके मामले का अध्ययन कर मालूम किया कि फ्रैंक गणित मे होशियार है। उसने उसे स्कूल के समय के बाद करने के लिए एक ऐसा काम दिला दिया, जिसमे वह अपनी गणित की योग्यता का उपयोग कर सकता था। उसने यह भी मालूम किया कि फ्रैंक को पुरानी कारो की मरम्मत का बहुत शौक है। जब इस सुधार सघ को किसी दानी ने १९४० के माडल की एक पुरानी कार दान मे दी तो फ्रैंक के लिए दूसरा महत्त्वपूर्ण कदम भी उठाया गया। फ्रैंक अब इन दोनो कामो मे इतना व्यस्त रहता था कि समाज-व्यवस्था का प्रतिरोध करने या उसे चुनौती देने का वक्त ही उसे नही मिलता था। उसकी जो शक्ति और भावनाएँ उसे गम्भीर अपराधो की ओर ले जा सकती थीं, वही अब अच्छे कामो मे लग गईं।

किशोर वय के बालको को सबसे अधिक आवश्यकता इस अनुभूति की है कि समाज को उनकी आवश्यकता है और वे प्रौढो और वयस्को की दुनियाँ मे कुछ उपयोगी काम कर सकते है। इसलिए समाज मे उपयोगी और लाभकारी काम की उनकी इस आवश्यकता को पूरा करने के लिए सारे देश मे अनेक सफल कार्यक्रम प्रारम्भ किए गए है। इनमे से कुछ काम स्वय किशोरो ने ही चलाए हैं। पैस्काक (न्यू जर्सी) मे एक अस्पताल की बहुत अधिक आवश्यकता अनुभव की जा रही थी, जिसके लिए धन-सग्रह करने को किशोरो का सगठन बनाया गया। इस सगठन ने धन-सग्रह के लिए नृत्य कार्यक्रमो के आयोजन से लेकर डायरेक्टरियाँ बाँटने और एक मकान के मॉडल के प्रदर्शन के टिकट बेचने तक, सभी तरह के काम किए। किशोरो को थोडा-सा पथप्रदर्शन

देकर ही उनकी शक्ति को उपयोगी कामो मे लगाया जा सकता है। इससे किशोरो को परिपक्व होकर समाज के जीवन मे अपना उपयुक्त स्थान बनाने मे भी सहायता मिलती है।

वृद्ध नागरिक

बाल-समस्या के साथ-साथ देश मे वृद्धो की भी समस्या है। दोनो की समस्याओ का कारण एक ही है और वह है उनकी उपेक्षा। हमारा द्रुतगामी, गतिशील और कठोर-परिश्रमी औद्योगिक समाज अभी तक किशोरो और बूढो की शक्ति और योग्यता को उपयोग मे लाने के लिए कोई उपयुक्त रास्ता नही निकाल सका है। किशोरो को ऐसे जिम्मेदारी के काम नही मिलते, जिनमे वे अपनी शक्ति का उपयोग कर सके। इसी तरह बूढे भी अपने उपयुक्त कामो से अपने आपको वचित अनुभव करते है। लोगो से ६५ वर्ष की आयु मे और हो सके तो ६० ही वर्ष की आयु मे कामो से अवकाश ग्रहण कर लेने की आशा की जाती है।

हाल मे ही बूढो की सख्या मे काफी वृद्धि हो जाने से एक नई किस्म की चिकित्सा-प्रणाली—वृद्ध-चिकित्सा—प्रारम्भ हुई है। साथ ही इन वयोवृद्धो को काम मे लगाए रखने के लिए कुछ सामुदायिक कार्यक्रमो की भी शुरुआत हुई है। समाजसेवी सगठनो द्वारा उनके लिए क्लबें बनाई जा रही है और उन्हें अपने लिए खेल, शिल्प, नृत्य, शौकिया काम या पढने के अथवा बैठकर गपशप करने के प्रोग्राम बनाने का प्रोत्साहन दिया जा रहा है।

एक महिला ने अपने बूढे पिता पर इस तरह के कार्यक्रम का प्रभाव देखकर एक बार कहा. "उनकी अब कई तरह के कामो मे दिलचस्पी हो गई है। अब वे बिल्कुल नई किस्म के आदमी हो गए है।"

स्वयं एक बूढ़े ने भी कहा · "यह तो खूब आश्चर्यजनक बात रही। यकीन मानो मेरे लिए तो इससे स्वर्ग ही धरती पर उतर आया है।"

सरकार द्वारा प्रारम्भ किए गए सामाजिक सुरक्षा कार्यक्रम ने भी स्थिति को वहुत वदला है। जो लोग पहले यह समझते थे कि वुढापे मे उन्हे दूसरो पर निर्भर रहना पडेगा, वे अव इस कार्यक्रम के अन्तर्गत पेन्शन आदि मिलने से वहुत सुखी अनुभव कर रहे हैं। यद्यपि यह पेन्शन वहुत मामूली होती है तो भी उससे बूढे पति-पत्नी आसानी से अपना सीधा-सादा निर्वाह कर सकते है, वशर्ते कि उनके पास अपना निज का घर हो और विधुर या विधवा भी वुढापे मे अपने लडके या लडकी के साथ रहते हुए इससे अपना खर्च स्वय दे सकते है। जिन लोगो को वुढापे मे अधिक शारीरिक असमर्थता के कारण देख-रेख और परिचर्या की जरूरत होती है वे गैर-सरकारी सगठनो या व्यक्तियो द्वारा चलाये जाने वाले वृद्ध परिचर्या-गृहो मे रहने जा सकते हैं। ये वृद्ध परिचर्या-गृह यद्यपि हाल मे ही प्रारम्भ किए गये हैं तो भी देश मे ये आम हो गये है। यहाँ चालीस डालर या इससे अधिक प्रति सप्ताह देकर आदमी वुढापे मे मजे से रह सकता है और सव प्रकार की चिकित्सा, सेवा और परिचर्या पा सकता है। बूढो मे सवसे अधिक दयनीय दशा सम्भवत उन लोगो की है जो वडे शहरो मे कमरे किराये पर लेकर रहते हैं, जिनका जीवन अकेलेपन मे वीतता है, जो रेस्तोरॉ मे जाकर अकेले दो-चार गस्से खाकर किसी तरह अपने आपको जीवित रखते है या पार्को मे जाकर कवूतरो को दाना चुगा कर जीवित प्राणियो के साथ सजीव सम्पर्क की अपनी अतृप्त आकाक्षा को पूरा करने का यत्न करते है। किन्तु अव ऐसे बूढो के लिए भी साथी जुटाने की अधिकाधिक व्यवस्था की जा रही है।

डाक्टरी या किसी अन्य पेशे मे लगा व्यक्ति अवकाश ग्रहण करने के वाद वुढापे मे अपने पेशे के ज्ञान से समाज की सेवा भी कर सकता है। सभी नगरो और कस्वो मे ऐसे स्वयसेवी सगठन भरे पडे है, जो नागरिको का स्वास्थ्य सुधारने, उनके मनोरजन की व्यवस्था करने और उनकी आत्मा की तृप्ति के लिए तरह-तरह के आयोजन करते हैं। इन

सभी सगठनो को स्वयसेवी लोगो की आवश्यकता होती है। बूढे नागरिक लोग स्वयसेवक के रूप मे जो काम करते है उससे समाज का जीवन और भी समृद्ध होता है।

सामाजिक विज्ञान-वेत्ताओ का कहना है कि पुरानी पीढी की प्रतिष्ठा और प्रभाव अब पहले जैसा नही रहा और कुछ हद तक यह बात सही भी है। फिर भी बूढे दादा या नाना अपने लडको के सलाहकार और नाती-पोतो के खेल के साथी के रूप मे आज भी परिवार मे महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करते है। अमेरिकन बच्चे दादा-नाना के यहाँ जाने पर या उनके अपने यहाँ आने पर बहुत खुश होते है। बच्चे नानी या दादी के सिलाई और पकवान बनाने के काम को खूब पसन्द करते है और उनके मुँह से पुराने जमाने की कहानियाँ बडे चाव से सुनते है। बूढो को बच्चो के साथ घुलने-मिलने के लिए वक्त निकाल कर बड़ी खुशी होती है, क्योकि दोनो मे एक बडी समानता है, दोनो ही जीवन की तेज गति से घूमने वाली चकरघिन्नी के किनारे पर खडे हैं—बच्चे उसमे प्रवेश करने के लिए और बूढे उससे बाहर निकलने के लिए। बूढो मे बच्चो के लिए एक बडा रोमाचक रहस्य छिपा रहता है—वे उन्हे अनदेखे अतीत का मूर्तिमान इतिहास समझते है। बूढे लोग उस परिवार की, जिस पर बच्चे आश्रित होते हैं, सुरक्षा, स्थायित्व और सतत-प्रवाह की गारटी है। किसी परिवार मे लोगो का सत्तर या अस्सी वर्ष की लम्बी आयु भोगना उसकी प्रतिष्ठा, इज्जत और शक्ति को बढाता है। और यह बात आज भी पहले की भाँति विद्यमान है।

यद्यपि परिवार के बहुत-से काम आज अन्य सस्थाओ ने ले लिए है, फिर भी परिवार ही अपने सदस्यो के भावनात्मक जीवन का केन्द्र है, वही उनकी गहरी निष्ठाओ और वफादारियो का मध्यवर्ती बिन्दु है, उनकी सर्वप्रथम और फलतः सबसे प्रबल अभिवृत्तियो का स्रोत और लोकतन्त्र की शिक्षा का प्रशिक्षण-स्थल है। माता-पिता कभी-कभी अपने अज्ञान या निराशा से उनमे अनेक हानिकर अभिवृत्तियाँ

या स्वयं पैदा कर देते है। फिर भी माता-पिता द्वारा दिए गए इस प्रशिक्षण से, चाहे वह कितना ही दोष-पूर्ण हो, ले-दे की प्रवृत्ति का द्वार खुल जाता है और आदान-प्रदान की यह प्रवृत्ति हर व्यक्ति मे होनी चाहिए। जब यह प्रवृत्ति अपना काम अच्छी तरह करने लगती है तब वह देश मे ऐसे नागरिक तैयार करती है जो अपने परिवार से पाये प्रेम को समूचे मानव समाज के साथ अपने व्यवहार मे उँडेलने के लिए उद्यत रहते हैं।

अध्याय : पाँच

अमेरिकन चरित्र

जिस तरह अँग्रेजो, तुर्को और चीनियो के चरित्र की कोई एक निश्चित बनत नही बताई जा सकती, वैसे ही अमेरिकनो के चरित्र की भी कोई एक बनत नही है। अमेरिका मे व्यक्तित्व किसी एक निश्चित आकार का नही है, बल्कि वह बहुत पेचीदा और विविधतापूर्ण है क्योकि यहाँ नाना जातियो और नाना सस्कृतियो से लोग आये हैं, ससार के सभी भागो से आप्रवासियो की लहरे एक के बाद एक यहाँ आती रही है और यहाँ के विविध प्रदेश भी एक-दूसरे से बहुत भिन्न हैं। फिर यहाँ धार्मिक विश्वास भी अनेक प्रकार के है और उनके अनुयायियो पर उनके असर भी अलग-अलग ढग के हैं। फिर विभिन्न पीढियो ने भी अमेरिकन व्यक्तित्व मे विविधता और वैचित्र्य ला दिया है—पहली पीढी आप्रवासी की थी और दूसरी उसकी सन्तानो की और तीसरी इन सन्तानो की भी सन्तानो की।

यद्यपि लोगो मे इन सभी विभिन्न और विविध अमेरिकनो को एक मे ही मिलाने और गडबडा देने का प्रलोभन रहता है, तो भी जो लोग अधिक गहराई मे जाते है, वे अमेरिकन जीवन मे पायी जाने वाली इस विविधता और आत्म-विरोधो पर हैरान रह जाते है। यह सही है कि अमेरिकन लोग सब मिलाकर काम मे बडे परिश्रमी होते है, किन्तु वे खेल और आत्म-विनोद मे भी कम हिस्सा नही लेते। वे ससार के किसी भी अन्य देश के लोगो की अपेक्षा यात्रा करने, बाहर जाकर छुट्टी मनाने, शिकार खेलने, खेल खेलने, पीने-पिलाने, धूम्रपान करने, सिनेमा और टेलीविजन देखने और पत्र-पत्रिकाएँ पढने मे समय और धन अधिक खर्च करते हैं। लेकिन इसके बावजूद वे गिरजाघरो,

समाज-सेवाओ, अस्पतालो और सभी प्रकार के दान-पुण्य के कामो पर भी अधिक पैसा खर्च करते है। वे हमेशा जल्दी मे रहते हैं, फिर भी दूसरो से अधिक विश्राम करते है। वे व्यक्ति के अधिकारो के प्रति सजग रहते हैं और साथ ही आदतन रूढिवादी भी होते है। वे बडप्पन और महानता की पूजा करते हैं, परन्तु साथ ही छोटे आदमी की भी, चाहे वह व्यापार मे हो या किसी अन्य क्षेत्र मे, इज्जत करते है।

सफलता का लक्ष्य

एक बात जिसे सभी लोग स्वीकार करते है, स्वय अमेरिकन भी, यह है कि अमेरिका के लोग सफलता को बहुत महत्त्व देते है। सफलता का अर्थ भौतिक समृद्धि पाना ही नही है, बल्कि किसी भी प्रकार का बडा सम्मान या इज्जत पाना है। यदि कोई लडका व्यापारी बनने के बजाय धर्म-प्रचारक बनना पसन्द करे तो उसमे कुछ बुराई नही है किन्तु धर्म-प्रचारक बनने के बाद वह जितने बडे चर्च मे और जितने बडे जन-समुदाय के सामने धर्मोपदेश करेगा, उतना ही वह सफल समझा जाएगा।

अमेरिकनो मे सफलता की पूजा की इस भावना के अनेक कारण है। उदाहरण के लिए शुद्धाचारवादियो का यह विश्वास था कि काम करना अपने आप मे तो अच्छा है ही, लेकिन इसलिए वह और भी अच्छा है कि उसका जो पुरस्कार मिलता है, वह ईश्वर के प्रेम का प्रतीक है। दूसरी बात यह है कि अमेरिका एक विशाल देश है और प्राकृतिक सम्पदाओ के विपुल भडार के कारण उसमे बसने और सफलता पाने के अवसर भी असाधारण रहे है। यहाँ कोई ऐसी स्थिर और सुस्थापित समाज-व्यवस्था नही थी जो ऊँच-नीच का वर्ग-भेद करती, इसलिए हर आदमी को अपने प्रयत्न, उद्यम और अध्यवसाय से बड़ा और सफल बनने का अवसर था।

यहाँ आने वाले आप्रवासी इस बात के लिए दृढ-सकल्प थे कि पुरानी दुनिया मे जिन वस्तुओ से वे वचित रहे थे, उन्हे नई दुनिया

मे प्राप्त करके रहेगे और उनकी सन्ताने इस बात के लिए कटिबद्ध थी कि वे और भी सफलता प्राप्त कर और वर्गहीन अस्थिर समाज मे और भी ऊँची सीढी पर चढकर आप्रवासीपन का चिह्न अपने ऊपर से उतार फेकेगी। अमेरिका मे यूरोप की भाँति लडके परिवार के भीतर माता-पिता की विशेष कृपा या प्रेम पाने के लिए प्रयत्न नही करते, बल्कि बाहरी दुनिया मे अपने मन के मुताबिक चुने हुए मार्ग पर चलकर सफलता पाने का उद्योग करते है।

जो समाज प्रतिस्पर्धा को इतना महत्त्व देता है, उसका आक्रामक होना स्वाभाविक है, हालाँकि कानून, उसकी आक्रामकता को एक निश्चित सीमा मे बाँध देते है। उसमे एक प्रकार की कठोरता होती है, जो उसकी अर्थव्यवस्था के लिए तो अच्छी चीज है, किन्तु कुछ व्यक्तियो के लिए वह कष्टकर हो सकती है। जिन दिनो हम लोग निरन्तर आगे बढते हुए अमेरिका को आबाद कर रहे थे, उन दिनो हमारे अस्तित्व को बचाये रखने के लिए यह आक्रामक वृत्ति आवश्यक थी, परन्तु आज वह समाज के लिए खतरनाक हो सकती है। जो कारखाना-मजदूर अपने आगे बढने के रास्ते को बन्द पाता है और वर्षो तक निरन्तर एक ही काम पर लगा रहता है, उसकी आगे बढने की आक्रामक वृत्ति जातीय घृणा या कारखाने के मालिको से झगडे के रूप मे बाहर उभर सकती है और यह भी सम्भव है कि वह शराबी बनकर, दुर्घटनाओ मे लिप्त होने की प्रवृत्ति अपनाकर या रुग्ण-तान्त्रिक व्यवहार करके अपने ही विरुद्ध आक्रामक बन जाये।

सफलता को बहुत अधिक महत्त्व दिया जाने के कारण सफलता के पुरस्कार भी बहुत ऊँचे हैं। सयुक्त राज्य मे लोग धन को सिर्फ धन की खातिर नही चाहते, धन केवल सफलता का प्रतीक या साधन मात्र है। मनुष्य का दर्जा और सामाजिक स्थिति बढने के साथ-साथ उसकी जिम्मेदारियाँ भी बढती जाती है। सैकडो स्वय-सेवक सस्थाएँ उससे उदार दान की आशा करती हैं। ये सस्थाएँ इस दान से समाज

की सेवा करती हैं। प्रतिष्ठित व्यक्तियो के परिचय ग्रन्थ पर एक नजर डालिये तो आपको ऐसे कितने ही प्रतिष्ठित और प्रमुख व्यापारियो के नाम मिल जाएँगे, जिनका सम्बन्ध सार्वजनिक सेवा और कल्याण के लिए सगठित बहुत-सी समितियो और धधो से होगा।

मनोवैज्ञानिको का कहना है कि सफलता और प्रतिष्ठा के लिए प्रयत्न करने की यह वृत्ति असल मे अपने अन्दर विद्यमान भयो और अन्दरूनी खोखलेपन पर विजय पाने का ही एक उपाय है। एक सचल और गतिशील समाज मे एक परिश्रमी और अध्यवसायी व्यक्ति दूसरो के साथ अपनी तुलना या प्रतिस्पर्धा करने और यथासम्भव आगे बढने की प्रवृत्ति से किसी भी तरह बच नही सकता।

इस प्रकार की सामाजिक प्रणाली उन लोगो के लिए अवश्य अच्छी है जिनमे सफल होने की क्षमता और लगन है, किन्तु साधारण किस्म के आदमी के लिए वह अच्छी नही है। ऐसे समाज में असफलता का भय, प्रतिस्पर्धियो का डर और आत्मसम्मान की हानि की आशका साधारण व्यक्ति के लिए दुर्वह बोझ बन सकती हैं। इसलिए ये लोग प्रेम की अत्यधिक आकाक्षा करने लगते है ताकि मन पर पडे इस बोझ और तनाव को कम कर सकें। इस तरह प्रेम और सफलता को वे परस्पर जोड देते है। गोरर का खयाल है कि अधिकाश अमेरिकन वयस्क होने से पूर्व ही यह धारणा बना लेते है कि सफल होने का अर्थ है प्रेम का पात्र होना और प्रेम का पात्र होने के अर्थ है सफल होना। इस धारणा को बनाने मे माताओ का भी हाथ रहता है, क्योकि वे स्कूल मे सफल होने पर बच्चो को प्यार करती हैं और असफल होने पर प्यार नही करती।

बच्चे के लिए एक वर्ग से ऊपर उठकर दूसरे वर्ग मे जाने पर कोई रोक नही है, उसके लिए यह बाधा नही है कि उसे केवल अपने पैतृक व्यवसाय को ही अपनाना पडेगा और न उसकी शिक्षा के लिए कोई सीमा है, इसलिए सिद्धान्तत यह समझा जाता है कि उसके लिए

उपलब्धि और सफलता की भी कोई सीमा नही है। ऐसी दशा मे ऐसी कोई जगह नही है, जहाँ पहुँचकर बच्चा यह कह सके कि मैं अपनी मजिल पर पहुँच गया हूँ और अब मेरा काम सिर्फ इस मजिल पर दृढता से जमे रहना है। सिद्धान्ततः कोई भी लड़का देश का राष्ट्रपति बन सकता है, इसलिए उसका यह नैतिक दायित्व हो जाता है कि वह उसके लिए प्रयत्न करे। मनुष्यो को उनके वर्ग से नही, उनकी उपलब्धि और सफलता से नापा जाता है। धनी या उच्च वर्ग मे पैदा होना कोई गर्व की बात नही है, असली परख और कसौटी यह है कि जिस जगह से मनुष्य प्रारम्भ करता है, वहाँ से वह कितना आगे बढा है।

अमेरिकन काम से प्यार करते है। काम उनके लिए मास और शराब की तरह आवश्यक और प्रिय है। हाल के कुछ वर्षों मे उन्होने खेलना भी सीखा है, परन्तु खेल को भी वे काम बना लेते है। उदाहरण के लिए यदि उन्हें बर्फ पर स्की से फिसलने का खेल खेलना है तो वे उसे भी खेल की तरह नही खेलेगे, बल्कि उसमे इतने जोर से अपने आपको झोक देगे कि उससे एक घोडा भी मर जाए। छुट्टी मनाने के लिए वे यात्रा पर जाएँगे, पर एक-एक दिन मे पाँच-छ सौ मील का सफर कर डालेगे। प्राकृतिक दृश्य का आनन्द लेने जाएँगे तो साठ मील प्रति घटे की चाल से मानो उडते जाएँगे, सिर्फ तभी रुकेगे, जब फोटो खीचना चाहेगे और फिर घर लौटकर इन तस्वीरो को देखकर ही वे यह जान सकेगे कि वे क्या देखने गए थे।

अभी कुछ समय पहले तक इस देश मे करने को बहुत काम पड़ा था। प्रारम्भ मे सभी किस्मो और परिस्थितियो के लोगो को काम करना पडना था। धर्म-प्रचारक को पेड काटने और खेत जोतने पडते थे। अध्यापक, डाक्टर और मजिस्ट्रेट, सभी को अपनी सर्वसामान्य रक्षा के लिए बन्दूक कन्धे पर उठानी पडती थी। किसानो को अपने लिए औजार, घोड़े की जीन और घरेलू सामान बनाना पडता था। वह लुहार, बढई, टीन-डिब्बे वाला, शराब खीचने वाला और पशु

चिकित्सक, सब-कुछ स्वय ही था और उसकी पत्नी भी कत्तक, बुनकर और डाक्टर सभी-कुछ थी।

भौतिकवाद

अमेरिका आने के लिए अपना सर्वस्व बाजी पर लगा देने वाले नर-नारी आम तौर पर गरीब थे। उन्होने बहुत कडी मेहनत की और यहाँ अपना निज का कारोबार खडा करने या फार्म खरीदने के लिए नगे-भूखे रह कर भी पैसा बचाया। जिस स्वतन्त्रता का मोह और आकर्षण उन्हे महासागर के पार यहाँ खीच कर लाया वह वोट देने की स्वतन्त्रता नही थी, बल्कि स्वय अपनी सम्पत्ति का स्वामी बनने की स्वतन्त्रता थी। इसलिए यह स्वाभाविक था कि वे अपने निज के प्रयत्न से अर्जित जमीन और व्यवसाय को इतना महत्त्वपूर्ण और मूल्यवान् समझते।

समुद्र पार से नये आने वाले इन आप्रवासियो की अर्जन और अवाप्ति की इस स्वाभाविक आकाक्षा के बावजूद अमेरिका मे धन के प्रति लोगो का रवैया बिल्कुल भिन्न है। जैसा कि जर्मन मनोविज्ञान-वेत्ता ह्यूगो मुन्स्टरबर्ग ने कहा है, "अमेरिकन जो सोना प्राप्त करता है, उसे वह अपनी योग्यता के प्रमाण के रूप मे ही सम्मान और महत्त्व देता है ··· इसलिए उसे भौतिकवादी कह कर निन्दित करना और उसकी आदर्शवादिता से इन्कार करना बुनियादी तौर पर गलत है ····· अमेरिकन व्यापारी के लिए यह कहना कि वह धन के लिए काम करता है, सिर्फ उतना ही सही है जितना कि किसी चित्रकार की कला की प्रशसा करते हुए यह कहना कि वह पैसे के लिए चित्र बनाता है।"*

धन की प्राप्ति इसलिए महत्त्वपूर्ण है कि वह सफलता का सबसे स्पष्ट प्रमाण है, हालांकि समाज मे प्रमुखता, सार्वजनिक लोगो का ध्यान आकृष्ट होना, अच्छा काम और प्रसिद्धि आदि अन्य प्रमाण भी

---

* अमेरिकन इन पर्सपेक्टिव, पृष्ठ १६८।

है। किन्तु प्राप्त धन को कायम रखना कतई महत्त्वपूर्ण नही है। बल्कि यदि व्यक्ति धन प्राप्त करके भी सिर्फ उसे बनाये रखने की खातिर, कजूसी से रहे, अच्छा जीवन-यापन न करे, उदारता से दान न दे और परिवार के गरीब और जरूरतमन्द सदस्यो की सहायता न करे तो लोग उस धन को हिकारत की नजर से देखेगे।

इस प्रकार यह स्पष्ट है कि बाहर से आने वालो को अमेरिका मे जो भौतिकवादिता दिखाई देती है, वह धन-दौलत को जमा रखने और कृपण की भाँति उसके प्रति प्रेम की भौतिकवादिता नही है। बल्कि यह धन को कमाने और भोगने की भौतिकवादी वृत्ति है। इसके अलावा यह शायद सारे ससार मे ही मध्यम वर्ग की अभिवृत्ति है, और क्योकि अधिकतर अमेरिकन मध्यम वर्ग के हैं, इसीलिए यह उनकी विशेषता प्रतीत होती है।

अमेरिका को प्रकृति से कच्चे माल के असीम भडार का वरदान मिला है। अपनी मन्दी के दिनो मे उसने अनुभव से यह सीखा हे कि यदि कोई देश, चाहे वह कितना ही समृद्ध हो, अपने साधनो और धन-दौलत को अपनी बहुसख्या के लाभ के लिए इस्तेमाल नही करता तो वह गरीब हो जाएगा। इसीलिए अमेरिका अब इस गलती को दोहराना नही चाहता। वह जो कुछ पैदा करता है उसका एक बडा भाग, जिसमे कृषि उत्पादन और मशीनरी, दोनों शामिल है, इस आशा से समुद्र पार भेज दिया जाता है कि इससे ससार के अन्य भागो का जीवन-स्तर भी ऊँचा उठाया जा सकेगा।

इस सत्य से इन्कार नही किया जा सकता कि उत्पादन का स्तर ऊँचा होने मे भौतिक सुखो और आराम का स्तर भी ऊँचा होता है। यह भी नही है कि अमेरिकन लोग नई, चमकदार तडक-भडक वाली, आरामदेह और कम श्रमापेक्षी वस्तुओ को बहुत पसद करते हे। आज अमेरिकनो को डबल रोटी बेकरी से ही कटी-कटाई मिलती है ताकि घर की मालकिन को उसे काटने की तकलीफ न उठानी पडे। पहले

जिस टोस्टर मे डवल रोटी के टोस्ट सेके जाते थे वह एक वार मे टोस्ट का एक ही भाग सेक सकता था, इसलिए उसे पलटना पडता था : इसके बाद ऐसा टोस्टर बनाया गया जो एक साथ टोस्ट को दोनो ओर से सेंक देता था। और अब नया टोस्टर ऐसा है कि उसमे टोस्ट सिक कर स्वय वाहर भी आ जाता है। इससे गृहिणी को उसे टोस्टर मे से निकालने की भी जरूरत नही पडती। जल्दी ही ऐसा टोस्टर बन जाने की आशा है जो टोस्ट को सेक कर मक्खन लगा देगा और काटकर प्लेट मे भी पहुँचा देगा। सम्भवत: ऐसा टोस्टर वन भी गया है।

प्रश्न यह है कि अमेरिकनो ने जब एक ऐसी दुनिया वना ली है जिसमे वे हाथ उठाने या पाँव हिलाने तक की तकलीफ उठाये बिना आराम से रह सकते हैं, तब वे अपने भीतर की रुद्ध भाप को बाहर निकालने के लिए तरीके क्यो खोजते है ? अमेरिका के नगरो मे स्किटल खेलने के मैदानो, गोल्फ क्लवो, टेनिस कोर्टो, मनोरजन की क्लबो, होटलो, चर्चो और सभा-सोसाइटियो की भरमार है जिनमे अमेरिकन लोग जाकर अपने तन और मन की सारी ताकत को उँडेल कर हल्के होते है। अमेरिकन लोग मेहनत और श्रम को बचाने वाली मशीनें और उपकरण बनाते है ताकि समय और शक्ति को बचाकर दूसरी जगह लगा सकें।

सेवा का आदर्श

भौतिकवाद और आराम शब्दो मे स्वार्थ की बू आती है—ऐसा लगता है मानो मनुष्य दूसरे का आराम और सुख छीनकर अपने लिए सुख-सुविधाओ का अर्जन करता है। किन्तु जहाँ तक अमेरिकनो का ताल्लुक है, उनकी और चाहे कितनी ही आलोचना की जाए, उनके घोर-से-घोर आलोचक भी उन्हें इतना श्रेय तो देते ही है कि वे उदार हैं और भौतिक सुख-सुविधाओ से वचित लोगो की सहायता करते है। अमेरिकन लोग ईसाई धर्म के इस उपदेश को अक्सर याद करते हैं कि "दूसरो से जैसा व्यवहार तुम अपने लिए चाहते हो, वैसा ही तुम भी

दूसरो के प्रति करो।" देश मे या विदेश मे कही भी विपत्ति आने पर अमेरिकन लोग पीडितो की सहायता के लिए स्वेच्छया उदारता से दान करते हैं। शुरू मे अमेरिका में नई आबादियाँ बसने पर और बाद मे नये-नये क्षेत्रो मे प्रवेश करने पर पारस्परिक सहायता की जैसी आवश्यकता थी, वैसी आज नही रही, तो भी उस सहायता की भावना आज भी विद्यमान है।

अमेरिकन पत्रिकाएँ माइक कात्सानेवस की-सी कहानियो से भरी रहती है। कात्सानेवस उन्नीस वर्ष की आयु मे १६०६ मे ग्रीस से अमेरिका आया था। वह प्रथम विश्वयुद्ध मे लडा, उसके बाद उसने विवाह किया, किन्तु पत्नी और बच्चा, दोनो को खो बैठा। फिर अपनी माँ के बीमार हो जाने पर वह ग्रीस लौट गया और वहाँ उसने फिर विवाह किया जिससे उसके नौ सन्तानें हुई। दूसरे विश्व-युद्ध ने उसे और उसके परिवार को गरीबी मे ढकेल दिया। माइक ने नाजी पैरा-शूटी सैनिको का मुकाबला किया और पकडा जाने पर तीन वर्ष तक नाजियो के बन्दी शिविर मे सडता रहा। लडाई के बाद जब वह घर लौटा तो उसने अपने परिवार को जीवित नर-ककालो के रूप मे पाया।

अमेरिकन नागरिक होने के कारण परराष्ट्र विभाग द्वारा सयुक्त राज्य मे लौटने के लिए दिये गये अवसर का उसने लाभ उठाया और तीन बडे बच्चो को लेकर वापस अमेरिका आ गया। बाकी परिवार के जहाज भाडे के लिए पैसा बचाना उसके लिए सम्भव नही था। माइक की आयु इस समय ६५ वर्ष थी। जब उसकी कहानी अखबारो मे छपी तो उसे शेष परिवार को अमेरिका लाने के लिए भाडे के रूप मे २६०० डालर की राशि की आवश्यकता थी, उसका दान से तुरन्त प्रबन्ध हो गया। जिस नौसैनिक सप्लाई डिपो मे माइक काम करता था उसके जन-कल्याण निदेशक ने सरकारी लाल-फीताशाही के बावजूद जल्दी ही एक ऐसा छोटा और सादा मकान तलाश कर दिया जिसे माइक खरीद सकता था। रंग-रोगन वालो ने मकान पर मुफ्त रंग-रोगन कर दिया,

फरनीचर की दुकानो ने फरनीचर दे दिया और ग्रीक चर्च की महिलाओ ने कपडे और भाँडे जुटा दिये। और माइक ने अपना परिवार बुलवा लिया। उसने कृतज्ञ होकर कहा, "यह सिर्फ अमेरिका मे ही हो सकता है।"

सेवा का आदर्श अमेरिकन जीवन की अनेक शाखाओ मे फला हुआ है। नगर और समाज की सस्थाओ से अब यह आशा अधिकाधिक की जाती है कि वे नागरिको की आवश्यकताओ को अनुभव करेगी और जीवन को अधिक स्वस्थ, सुखी और समृद्ध बनाएँगी। इसके अलावा व्यवसाय के रूप मे भी जन-सेवा अब अधिकाधिक की जा रही है। सन १८७० मे सेवाओ के उत्पादन मे लगे अनुभवी श्रमिको की सख्या कुल श्रमशक्ति का २५ प्रतिशत थी, किन्तु आज वह ५.३ प्रतिशत है। आपको शिशु के कपडे धुलवाने हो, मोटर की धुलाई-सफाई करानी हो या अपने कुत्ते के बाल कटाने हो, ये सभी सेवाएँ आपको मिल जाएँगी (मोटरो की धुलाई-सफाई तो आजकल अधिकतर मशीनो से होती है और दस-पन्द्रह मिनट मे पूरी हो जाती है)। हर टेलीफोन की किताब के अन्त मे पीले रग के पन्नो मे ऐसी सैकडो व्यावसायिक सेवाओ की सूची रहती है।

सुपर मार्केटो मे अब यह व्यवस्था अधिकाधिक अपनायी जा रही है कि ग्राहको से वस्तुओ की कीमत कुछ कम ली जाए और उसके बदले मे पहले दुकानो के कर्मचारियो द्वारा किये जा रहे कुछ काम अब ग्राहक स्वय-सेवा के रूप मे स्वय कर लें। दूसरी ओर छोटी दुकानें अपने ग्राहको के लिए, खासकर उपनगरो या गाँवो मे दूर रहने वालो के लिए माल घर पर ही पहुँचाने की व्यवस्था कर रही है। परचून का सामान, सब्जी, केक, डबलरोटी, जमे हुए खाद्य पदार्थ और आइसक्रीम बेचने वाले नियमित रूप से दूर-दराज के गाँवो मे अपना माल पहुँचाने प्रतिदिन आते है। इसके अलावा बुरुश, वैक्यूम क्लीनर, पत्रिकाएँ और

मोटरकार आदि बेचने वाले, बीमा एजेंट और चिट्ठियाँ पहुँचाने वाले डाकिये भी देहातो मे आते रहते हैं।

सेवा पर अमेरिका मे जो बल दिया जाता है, वह हमारे राष्ट्रीय चरित्र मे दो परस्पर-विरोधी ताकतो के समन्वय और सम्मिश्रण का प्रयत्न है—एक ताकत है व्यावसायिक सफलता के लिए कठोर परिश्रम की और दूसरी है पर-सेवा की धार्मिक भावना की। दूसरी ओर ये सेवाएँ प्राप्त करने के बाद ग्राहक भी इन सब को लाभ पहुँचाने का प्रयत्न करते है, क्योकि वे अनुभव करते है कि जब वे उन्हे ये सब सेवाएँ प्रदान करने के लिए तकलीफ उठाते है तो उन्हे भी उनको सफल बनाने की कोशिश करनी चाहिए।

आधुनिक माता अपने बच्चो को दूसरो की सेवा करने, दुर्बलो और स्त्रियो का खयाल रखने, इन्साफ और ईमानदारी का बर्त्ताव करने और इसी प्रकार के अन्य वाछनीय नैतिक आचरणो की शिक्षा देती है। मनोवैज्ञानिको का विश्वास है कि अमेरिका मे स्त्रियाँ ही अपने बच्चो को पालती और शिक्षा देती है, इसलिए अमेरिकन लोग सद्व्यवहार को स्त्रैण आचरण समझते है। किन्तु यदि आप अमेरिकनो से बातचीत करें तो अधिकतर अमेरिकन यह स्वीकार करेंगे कि पिता ही अन्तिम निर्णायक और दडदाता होने के कारण बच्चो के मन मे नैतिक नियमो के प्रतिष्ठापक के रूप मे रहता है और इसीलिए अच्छाई और सद्व्यवहार उन्हे पुरुषोचित गुण प्रतीत होते है।

समरूपवादियो का राष्ट्र ?

अधिकतर विदेशी प्रेक्षक यह स्वीकार करते है कि अमेरिकन जीवन मे समरूप वादिता है। अमेरिकनो को इस नये देश मे कुछ परम्पराएँ स्थापित करनी पडी है, उन्हे विविध सस्कृतियो के लाखो या करोडो लोगो को आत्मसात् करना पडा है, इसीलिए वे कुछ बुनियादी बातो के बारे मे समरूपता चाहते हैं। फिर भी विदेशी आगन्तुको को यहाँ जो समरूपता दिखाई देती है, वह केवल बाहरी है और वह भी जितनी दिखाई

देती है, उतनी नही है। अमेरिका के व्यापारी इग्लैण्ड के व्यापारियो की अपेक्षा अपनी वेश-भूषा मे अधिक स्वतन्त्र है। स्त्रियो की पोशाको मे भी बहुत विविधता है। सुपरमार्केटो मे आप उन्हें समूर-लगे कपडो से लेकर बरमूडा की पेंट तक, अनेक किस्म के कपडो मे देख सकते है। मब शहर ऊपर से देखने मे बहुत कुछ एक से लगते है, रात को सभी शहरो मे निम्रोन की रोशनियाँ जगमग करती है, किन्तु जब आप उन्हे अधिक नजदीक से और अधिक अच्छी तरह जानेंगे तो उनमे बहुत विविधता पाएँगे। यद्यपि सिनेमा-घरो मे आप सभी जगह एक-सी फिलमे देखेंगे, किन्तु अधिक गहराई से देखने पर आप हर शहर मे अपने अलग शौकिया सगीतकार, कैमरा-क्लबें और चित्रकला की कक्षाएँ पाएँगे। सत्रह करोड आबादी के एक विशाल राष्ट्र मे रुचियो और स्वभाव की भारी विविधता आपको मिलेगी।

यहाँ नये-नये धार्मिक सम्प्रदाय उभरते हैं, मानवीय सम्बन्धो और लोक-मनोविज्ञान के नये सिद्धान्त प्रस्थापित होते है और आहार विज्ञान के बारे मे नई-नई मान्यताएँ कायम की जाती है और उन सभी को अनुयायी मिल जाते है। नई और असामान्य वस्तु का आकर्षण और उसे अपनाने की प्रवृत्ति अमेरिकनो मे स्वभाव से विद्यमान है।

फिर भी ससार का कोई भी समाज तब तक फल-फूल और पनप नही सकता, जब तक कि उसे एकता के सूत्र में बाँधने वाला एक मूल सिद्धान्त न हो, जब तक कोई ऐसी चीज न हो, जिसका परिपालन समाज के उद्देश्यो को पाने के लिए उसके सब सदस्य ममान रूप से करना चाहते हो। डैविड रीजमैन का पर निर्देशित व्यक्तित्व का सिद्धान्त हमे अमेरिका की रीति-नीति को समझने मे सहायता देता है। रीज़मैन की धारणा है कि अमेरिका मे, खासकर उसके शहरो मे, अन्तर्निर्देशित व्यक्तित्व का स्थान अब पर-निर्देशित व्यक्तित्व लेता जा रहा है। जिस समय अमेरिका मे लोग नये-नये क्षेत्रो मे प्रवेश कर उन्हे आबाद कर रहे थे और उसके बाद जब देश मे औद्योगिक

विकास बडे पैमाने पर हो रहा था, तब अमेरिकनो का व्यक्तित्व अन्तर्निर्देशित अर्थात् अपनी आन्तरिक प्रेरणा से निर्देशित था। लोगो को अपने अन्तस् से स्वत ही नये-नये क्षेत्रो मे आगे बढने या उद्योगो का विकास करने की प्रेरणा और पथ-निर्देशन मिलता था। अन्तर्निर्देशित व्यक्तित्व अपनी शक्ति को उत्पादन बढाने मे लगाता था, परन्तु आज का पर-निर्देशित यानी बाहर से दूसरो द्वारा निर्देशित व्यक्तित्व अपनी सारी शक्ति को उपभोग मे लगाता है। कारण, आज की हमारी बाहुल्य की अर्थ-व्यवस्था मे मुख्य समस्या वस्तुओ को सुरक्षित रखने और बचाने की नही, उनको अधिक-से-अधिक उपभोग और खर्च करने की है ताकि अधिकाधिक खपत से हर आदमी को काम पर लगाए रखा जा सके और अर्थ-व्यवस्था की गाडी चलती रहे।

इस सबसे यह प्रतीत होता है कि पुराने जमाने का कठोर व्यक्ति-वादिता का ढर्रा अब बदल गया है और बदल रहा है। अब हम उस व्यक्ति की प्रशसा नही करते जो अपने प्रतिस्पर्धियो की लाशो पर पाँव रखकर ऊँची चोटी पर पहुँचता है। इसके विपरीत हम यह महसूस करते है कि अपने प्रतिस्पर्धियो के साथ जो व्यक्ति मिलकर चल सकता है, जो अपने कर्मचारियो और सहयोगियो के साथ सद्-व्यवहार करता है और जिसका चरित्र और स्वभाव हमारे प्रेम-पूर्ण, मित्रतायुक्त, आपसी निभाव करने वाले और सहकारी व्यक्तित्व के आदर्श से मेल खाता हैं, वही हमारे लिए अच्छा और वाछनीय है। बम फेकने और बर्र के छत्ते छेडने मे आनन्द लेने वाले टेडी रूजवेल्ट की जगह अब हम सबके साथ मित्रता और समानता का व्यवहार करने वाले और हर वक्त दूसरे को वश मे करने वाली मुस्कान से युक्त चेहरा लिए आइक (आइसनहोवर) को अधिक पसन्द करते है। हम अनुभव करते है कि यदि कोई व्यक्ति कौशल से सब लोगो को साथ लेकर चल सकता है तो वह आइक ही है। और चूँकि कौशलपूर्ण

व्यवहार को हम इतना महत्त्व देते है, इसलिए ग्राहक को हमारा विश्वास प्राप्त है।

यद्यपि आज हमारी बाहुल्यमयी अर्थ-व्यवस्था ने, जिसमे प्रतिस्पर्द्धा का पहले जैसा स्थान नही रहा, अमेरिकनो की व्यक्तिवादिता की प्रवृत्ति को कमजोर कर दिया है तो भी समानता पर बल देने की हमारी परम्परागत प्रवृत्ति उससे मजबूत ही हुई है। अभी कुछ समय पूर्व तक नगर का धनी व्यक्ति या राष्ट्र की दृष्टि मे सार्वजनिक नेता समझा जाने वाला व्यक्ति पोशाक, रग-ढग और बात-चीत मे अपने आपको दूसरो से अलग और कुछ दूरी पर रखता था और स्वय समाज भी उससे यही अपेक्षा रखता था, परन्तु आज चार्ल्स एवन्स ह्यूज जैसा व्यक्ति, जो अपने आपको सर्व सामान्य से दूर रखता था देखने को भी नही मिलेगा। आज ऊँच और नीच के मध्य पहरावे, रग-ढग और शिक्षा का कोई अन्तर नही रहा।

हर अमेरिकन आज यह चाहता है कि उसके बच्चे, उसका हज्जाम, उसका कर्मचारी, उसका सहयोगी या विमान मे उसके साथ की सीट पर बैठा व्यक्ति उसे अच्छा आदमी समझे। उसके लिए इस बात का बहुत महत्त्व है कि लोग उसे एक अच्छे साथी के रूप मे पसन्द करे और यही कारण है कि वह इतनी क्लबें और बिरादरियाँ बनाता है। वह चाहता है कि इन क्लबो और भ्रातृसघो मे वह ऐसे अच्छे और मन के अनुकूल लोगो से घिरा रहे, जो सब साथी होने के कारण एक-दूसरे को चाहते और पसन्द करते हो।

आम तौर पर हर अमेरिकन काम की इज्जत करता है और अपने हाथ से काम करना पसन्द करता है, इसलिए वह अपने और अपनी परिचारिका के बीच और अपने और अपने अधिकारी के बीच वर्ग-भेद नही समझता। विदेशी लोग अक्सर यह देखकर हैरान होते है कि अमेरिका मे नौकर और मालिक एक-दूसरे को आत्मीयता के साथ नाम के पहले अश से पुकारते है। कुछ विदेशी इस आत्मीयता को

पसन्द नही करते। वे समझते है कि इस प्रकार की आत्मीयता सम्मान के अभाव की द्योतक है। लेकिन अमेरिकन लोग दूसरे से सम्मान पाना नही चाहते, वे चाहते है कि दूसरे उन्हे पसन्द करें। किसी को पसन्द करने का अर्थ यह है कि बीच मे जाति या वर्ग की दीवार न रहे, इसी लिए ये दीवारे ढह जाती है।

सचलता

समानता का अर्थ यह नही है कि सब लोग समान स्तर पर एक-जैसे हो। मनुष्यो की योग्यताओ और क्षमताओ मे परस्पर बहुत अन्तर होता है और श्रमिको मे भी विशिष्ट योग्यता के अनुसार अनेक वर्ग होते है, इसलिए यह समानता और समरूपता यदि वाछनीय हो तो भी वह सम्भव नही होगी। इसलिए आदर्श—और काफी हद तक यथार्थता भी—यह है कि सब लोगो को उन्नति का समान अवसर मिले जिससे वे चाहे तो निम्नतम दर्जे से प्रयत्न करते हुए उच्चतम पर पहुँच जाएँ, दिहाडी पर काम करने वाला मजदूर कम्पनी का अध्यक्ष और आप्रवासी का नगण्य लडका कालेज का प्रोफेसर बन सके। और ऐसी घटनाएँ कितनी ही घटी भी है। उनके उदाहरण खोजने के लिए होरेशियो एलगर के-से उपन्यासो और कहानियो को पढने की जरूरत नही, वे सफल व्यक्तियो के जीवन-चरितो मे ही मिल सकते है।

एक जमाना था कि कोई भी व्यक्ति तब तक राष्ट्रपति बनने की आशा नही कर सकता था, जब तक वह यह साबित न कर सके कि वह किसी दीन-हीन लकडी की कुटिया मे पैदा हुआ है। आइजन-होवर के एडलाई स्टीवन्सन को चुनाव मे पराजित करने का एक कारण यह भी था कि उनका जन्म एक गरीब घर मे हुआ था, जबकि स्टीवन्सन एक अमीर घराने मे पैदा हुए थे। समाज-शास्त्रियो का कहना है कि मजदूर या क्लर्क से कम्पनी का अध्यक्ष बनने का रास्ता आज पहले की भाति साफ और खुला नही है। लेकिन फिर भी वास्तविकता

यह है कि हार्लो कर्टिस, जो किसी जमाने मे मुनीम था, आज जनरल मोटर्स का अध्यक्ष है, और डेविड सार्नोफ, जो किसी वक्त सन्देशवाहक चपरासी था, आज रेडियो कार्पोरेशन ऑफ अमेरिका का अध्यक्ष है। इसके अलावा आज एक मजदूर के लडके के लिए कालेज मे जाने की गुंजायश और अवसर पहले से अधिक हैं, इसलिए कालेज से निकल कर और ऊँची सीढी पर चढने का मौका भी उसके लिए पहले से ज्यादा है। साथ ही आज रहन-सहन का स्तर निरन्तर ऊँचा होता जा रहा है, जिससे उद्योगो के मालिक कर्मचारियो के बीच की आर्थिक खाई भी कम होती जा रही है। आज श्रमिक कर्मचारी को कार और टेलीविजन सेट उपलब्ध है और उसकी पत्नी को बिजली का रेफ्रिजरेटर, कपडे धोने की मशीन और वैक्यूम-क्लीनर प्राप्त हैं। उसके बच्चो को स्कूल मे, यहाँ तक कि कालेज मे जाने का अवसर भी प्राप्त है। और यह सब तब है जबकि उसे सिर्फ हफ्ते मे ३५ या ४० घटे काम करने के सिवाय और कुछ नही करना पडता, तमाम चिन्ताएँ और परेशानियाँ मालिक और प्रबन्धक ही अपने सिर पर ढोये फिरते हैं। ऐसी दशा मे इन चिन्ता भरे ऊँचे पदो का आकर्षण सिर्फ उन्ही को रह जाता है, जो बहुत अधिक महत्त्वाकाक्षी है।

मार्क्स की सबसे बडी भूल यह थी कि उसने सामाजिक सचलता को दृष्टि मे नही रखा। विदेशो से आने वाले लोग अक्सर यह देखकर आश्चर्य-चकित होते हैं कि यहाँ कोई भी राजनीतिक दल वर्ग-सघर्ष के आधार पर विकसित नही हुआ है। इसका कारण सीधा-सादा है: हमारे देश मे उस अर्थ मे वर्ग है ही नही जिस अर्थ मे यूरोप मे है, क्योकि यहाँ हर पीढी गतिशील है और समाज मे ऊपर की दिशा मे बढ रही है। यहाँ "उच्च वर्ग" के विरुद्ध सघर्ष करने का अर्थ उस लक्ष्य को ही खत्म कर देना है जिसकी ओर महत्त्वाकाक्षी श्रमिक और कर्मचारी बढ रहा है। आज श्रमिक को कम घटे काम करके अधिक ऊँचा वेतन मिलता है और उसके लिए एक निश्चित वार्षिक वेतन

की गारटी भी है, इसलिए बहुत-से स्वतन्त्र व्यवसायी और डाक्टर आदि स्वतन्त्र पेशे वाले लोग उनसे ईर्ष्या करते है। सामाजिक दर्जे की पुरानी धारणाएँ भी बदल रही है, क्योकि आज नल जोडने वाला एक मजदूर छुट्टी लेकर साल मे एक महीना आराम से फ्लोरिडा मे जाकर बिता सकता है, जबकि एक स्वतन्त्र वकील के लिए यह इस डर से सम्भव नही है कि बाहर चले जाने पर कही उसके हाथ से कोई मुकदमा न निकल जाए।

उद्योगपति को विशुद्ध भौतिकवादी के रूप मे देखना भी आज सम्भव नही रहा। कारण आज वह अपने धन को किसी सास्कृतिक उद्देश्य के लिए उपयोग मे लाने का अधिकाधिक इच्छुक रहता है। एलिस्टेयर कुक* ने शिकागो के एक मास उद्योगपति का उल्लेख किया है जो एक बार एक सग्रहालय मे गया और वहाँ चित्र-कला की सुन्दर कृतियो को देखकर उन पर इतना मुग्ध हुआ कि आज वह फ्रेंच आधुनिक चित्रकला का सर्वाधिक जानकार सग्रहकर्त्ता है। इसी तरह हटिंगटन हार्टफोर्ड ने अपनी दौलत को कलाओ की अभिवृद्धि के लिए अनेक तरह से खर्च किया है। उसने उत्कृष्ट सिनेमा फिल्मो का निर्माण किया है और ऐसा कला मन्दिर बनाया है, जहाँ सृजनात्मक प्रतिभा वाले कलाकार बिना किसी बाधा और व्याघात के कार्य कर सकते है। वह चित्र कला की उत्कृष्ट कृतियो का सग्राहक, न्यूयार्क आर्ट गैलरी का सस्थापक और हॉलीवुड मे एक थियेटर का निर्माता भी है।

अमेरिकनो मे भी अन्य सब देशो के लोगो की भाँति एक सौहार्दपूर्ण घर, प्रेम, सरलता और साथीपन की भूख है। किन्तु अक्सर उन्हें अपने उपयुक्त घर और अपने लिये उपयुक्त प्रेम-पात्र की प्राप्ति बिल्कुल अचानक घूमते-घामते ही होती है। जिस लडकी (या लडके) की उन्हे तलाश होती है, वह हठात् एक दिन विमान मे यात्रा करते हुए, नाच

* वन मैन्स अमेरिका, पृष्ठ २४०।

घर मे नाचते हुए या दफ्तर की किसी पार्टी मे उन्हे मिल जाती है। अपने जीवन के लिए भावी मार्ग और कर्मक्षेत्र का चुनाव भी वे कालेज मे विविध प्रकार के कामो पर परीक्षण करके करते है और उसके वाद अपने लिए सही नौकरी का चुनाव भी वे एक के वाद एक कई कम्पनियो मे भटकने के वाद कर पाते हैं। उनकी उन्नति का द्वार एक ही कम्पनी मे काम करते रहने से नही खुलता, वल्कि एक कम्पनी से दूसरी प्रतिस्पर्धी कम्पनी मे जाने पर ही खुलता है। इस तरह समाज मे स्थिरता की अपेक्षा सचलता का अधिक अच्छा पुरस्कार मिलता है।

इस प्रकार जव वे ऊँचे सोपान पर चढते है तो अपना आवास भी एक मुहल्ले से दूसरे वढिया मुहल्ले में और छोटे घर से वडे घर में ले जाते हैं। वे इस सचलता से घवराते नही, गतिशीलता से प्रेम करते है। नये-नये क्षेत्रो मे अग्रसर होना उनके हाड-मास मे विधा हुआ है और यद्यपि अपने पूर्वजो की तरह पश्चिम की ओर वढना आज भौगोलिक दृष्टि से उनके लिए सम्भव नही है, किन्तु आत्मिक और सहजवृत्तिक दृष्टि से वह अग्रगति उनकी प्रकृति का अग वन गई है। जैसा कि अमेरिकनो के वुनियादी मन्तव्यो मे कहा गया है, वे यह विश्वास करते हैं कि सुख एक ऐसी वस्तु है, जिसके लिए प्रतीक्षा नही की जाती, उसे पीछा करके और प्रयत्न करके पाया जाता है। अमेरिकन लोग अन्वेषण और खोज के लिए, वल्कि उसके लिए आवश्यक अनिर्दिष्ट अविराम गति के लिए भी, आत्मार्पण कर देते है।

जहाँ सभी कुछ परिवर्तमान और अस्थिर होता है, वहाँ किसी-न किसी प्रकार के माप-दड की आवश्यकता होती है। इसीलिए (और खासकर हमारी व्यावहारिक फलवादी मनोवृत्ति के कारण) हमने सख्यात्मक मानदड अपना रखे हैं। स्कूलो मे हम वच्चो को परीक्षा के अको से और रोजगार और कलाकृतियो को डालरो मे मूल्यांकन से नापते हैं और सवसे वडी, सवसे ऊँची, सवसे गर्म, सवसे ठडी और सवसे पहली

वस्तु को हम श्रद्धा और सम्मान की दृष्टि से देखते और पसन्द करते है।

अमेरिकन लोग परिवर्त्तन को पसन्द जरूर करते है, किन्तु उनकी यह पसन्द भी बिल्कुल निराली किस्म की है। वे यह नही चाहते कि परिस्थितियाँ उन्हे परिवर्तित करदें, बल्कि वे स्वय परिस्थितियो को ही परिवर्तित कर देना चाहते हैं। जैसा कि क्लाइड-क्लकहोन ने कहा है, मनुष्य नाजुक सकट की घडी का मुकाबला करने के लिए या तो परिस्थितियो को बदल देते है, या अपने आप को। पूर्व के लोग आम तौर पर अपने आपको परिस्थितियो के अनुसार ढालना पसन्द करते है, किन्तु पश्चिम के लोग इसके विपरीत परिस्थितियो को अपने अनुकूल ढालते है। अमेरिकनो को इस प्रकार के परिवर्त्तनो मे विशेष आन्द आता है—वे टेढी सडक को सीधी करने के लिए पहाड को रास्ते से हटा देते है, रेगिस्तान को नखलिस्तान मे बदलने के लिए नदियो का प्रवाह बदलते है, हाथ की मेहनत को स्वचल यन्त्रो की शक्ति मे परिवर्त्तित करते हैं और फिर लोगो को अधिक अवकाश देने और स्वचल यन्त्रो के उपयोग से बेकार होने वाले लोगो को काम देने के लिए मनोरजन को रचनात्मक उद्योग मे परिणत करते है।

सीमा का प्रभाव

अमेरिकन सस्कृति मे जो विशिष्टता विद्यमान है, उसका मूल कारण यूरोपीय सस्कृति के वैभव और उसके उत्पीडन के बोझ को अपने कन्धो पर उठाकर यहाँ आने वाले लोगो पर पडा अमेरिकन भूमि और जल वायु का प्रभाव है। ये लोग सामन्तवादी बन्धनो से, जो सत्रहवी शताब्दी मे भी जमीन की मिल्कियत से जुडे हुए थे, मुक्त होकर अपनी निज की सम्पत्ति के रूप मे जमीन पाने की आकाँक्षा से यहाँ आये थे। इस जमीन को आवाद करने मे अनेक खतरे और सकट थे। उन्हे यह जमीन समझौते से या लडाई लडकर इडियनो से छीननी पडती थी, बीहड जगलो मे से, जहाँ पगडडियाँ भी नही थी, गुजर कर खेती के लायक जमीन तलाश करनी पड़ती थी; थोडे-से मामूली औजारो से जगल काट

कर घर बनाने और खेत जोतने का काम करना पडता था और कभी-कभी लडते हुए या भूख अथवा कठोर प्रतिकूल मौसम से उनकी जान भी चली जाती थी। इन खतरो और मुसीबतो ने इन आप्रवासी यूरोपियनो को जल्दी ही अमेरिकन बना दिया। इस सघर्ष ने ही वास्तव मे अमेरिकन भावना और चरित्र का निर्माण किया।

नये-नये क्षेत्रो को आबाद करते हुए सीमा को निरन्तर पीछे धकेलते जाने का यह अनुभव इतना प्रबल और शिक्षादायी था कि उसने अमेरिकनो के कुछ नये चरित्र-लक्षणो को उभार दिया। दैनिक जीवन की कठोर परिस्थितियो ने उनके तौर-तरीको को अपरिष्कृत और ग्राम्य बना दिया। अच्छी जमीन (और बाद मे सोना) पाने की प्रतिस्पर्धा, स्वय जीवित रहने के लिए दूसरो को मारने की आवश्यकता और कानून-व्यवस्था के अभाव ने लोगो को कठोर और कभी-कभी क्रूर एव हिंस्र बना दिया। यह आदिम हिंसा-वृत्ति आज भी हमारे युवको मे गुडागर्दी, जातीय उपद्रवो, राजनीतिक भ्रष्टाचार, यूनियनो के षड्यन्त्रो और राजनीतिक हिंसा आदि के रूप मे विद्यमान है।

जीवन के कठोर होने पर भी, इस कठोरता और कष्टो ने लोगो को खूब धन-दौलत उपलब्ध कराई और कभी-कभी तो यह दौलत उन्हे बहुत कम परिश्रम से ही मिल गई। इसीलिए 'झटपट अमीर बन जाने' की विचारधारा को यहाँ प्रश्रय मिला। इस विचारधारा का सार यह था कि अगर आदमी थोड़ी-सी कठोर मेहनत करे और थोडा सा साथ किस्मत दे दे तो यहाँ मिट्टी भी सोना बन सकती है। व्यापारी मामूली-सी चीजे देकर बदले मे इडियनो से बेशकीमती समूर प्राप्त कर लेते थे। पृथ्वी के भीतर से सोना, चाँदी और तेल निकल आते थे, जो जियस द्वारा डैना पर की गई सोने की वर्षा से भी अधिक मूल्यवान थे। इसके बाद वे लुटेरे साहूकार आये जिन्होने रेल कम्पनियाँ खोलकर और उनकी सम्पत्ति और शेयरो मे गडबड करके बेशुमार पैसा बनाया। इसके बाद नम्बर आया शेयर बाजार के सट्टे-फाटके का, जिसने देश के हर

आदमी के जीवन को उस वक्त तक खूब प्रभावित किया जब तक कि १६२६ में उसका एकदम भट्टा ही नही बैठा गया।

किन्तु नये-नये सीमावर्त्ती क्षेत्रो मे प्रवेश ने अमेरिकनो मे कुछ ठोस भावात्मक चरित्र-लक्षण भी पैदा किये। उसने उद्यम और सक्रियता को और हाथो के श्रम की प्रतिष्ठा को प्रोत्साहित किया। उसने स्वतन्त्र और आत्मनिर्भर किसान को एक राष्ट्रीय प्रतीक बनाया, जो आज भी हमारे राष्ट्रीय जीवन को प्रभावित करता है। उसने अमेरिका के लोगो को अधिक सूझ-बूझ-वाला, जिज्ञासु और व्यावहारिक बनाया। उसने उन मे किसी भी प्रकार के काम से न घबराने की वृत्ति पैदा की, जिससे वे अपने आपको छोटे और आसानी से सँभाले जा सकने वाले समुदायो मे रखना अधिक पसन्द करने लगे। सीमावर्त्ती क्षेत्रो के जीवन का ही यह परिणाम है कि अमेरिकन लोग अपने आपको हर नई परिस्थिति के अनुकूल ढाल लेते है, अन्य देशो के लोगो की अपेक्षा उनमे वर्गभेद कम हैं और उस देश के प्रति वे आशावादिता से भरे हुए है, जिसने उनके प्रयत्नो को सार्थक और पुरस्कृत किया है।

ये सब प्रवृत्तियाँ और चरित्र उस जमाने से बराबर चले आ रहे हैं और आज के अमेरिकनो मे भी विद्यमान है। आज भौगोलिक दृष्टि से सीमा का अन्त हो गया है क्योकि सारा महाद्वीप आबाद हो गया है, आज नये-नये भूखण्डो पर अधिकार कर उन्हे अपनी वासभूमि बनने का प्रश्न भी नही रहा, फिर भी नई-नई सीमाओ के अन्वेषण और उनमे प्रवेश की भावना आज भी मौजूद है। यो, सरकार के पास आज भी नये क्षेत्रो को आबाद करने के लिए बाँटने को काफी वासभूमि पडी है और वह उसे चालीस हजार से पचास हजार एकड तक प्रति वर्ष बाँट भी रही है, फिर भी अधिक महत्त्व की बात यह है कि अमेरिकन लोगो की अपने निज के बारे मे जो आशा है, उसमे अग्रणीपन की भावना का स्थान बहुत बडा है।

जिस राष्ट्र को अनगढ जगलो को काटकर गढा गया हो, और जिस राष्ट्र के लोगो को इस निर्माण कार्य मे निरन्तर एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाना और कभी इस ओर कभी उस समूह और वर्ग मे अपने आपको सगठित करना पडा हो, उसकी मित्रता-सम्बन्धी धारणा मे परिवर्तन होना स्वाभाविक है। इस तरह के सचल और नित्य परिवर्तमान समाज मे मनुष्य को अपने साथियो को तुरन्त जांच और परख लेना पडता है और यह परख उसकी पारिवारिक पृष्ठभूमि की कसौटी पर नही, स्वय व्यक्ति के कामो की कसौटी पर ही करनी पडती है। नये समाज और नये स्थान मे आने वाले व्यक्ति को वहाँ निभाने के लिए मित्रो की जरूरत होती है और ये मित्र बनाने के लिए उसे स्वय मैत्रीपूर्ण ढग और व्यवहार अपनाना पडता है।

विदेशी लोग अक्सर अमेरिकनो की इस स्वतःस्फूर्त स्वभावगत मैत्री भावना को गलती से गम्भीरता का अभाव या हल्कापन समझ लेते हैं। लेकिन हम अमेरिकन लोग यह महसूस करते हैं कि सभी सम्बन्धों मे प्रेम और मैत्री का कुछ पुट अवश्य होना चाहिए। हम अन्य देशो की भाँति कुछ थोडे से घनिष्ट मित्रो को शेष सारी दुनिया से बहुत अधिक अलग करके नही देखते। हम यह कोशिश करते है कि हमारे अधिक-से-अधिक मित्र हो, अधिक-से-अधिक लोगो को हम सडक पर या गली मे आत्मीयता से पुकार सकें, बोर्डों और सभा-सोसाइटियो की बैठको मे, गिरजाघर मे या सिनेमाघर मे उनका आत्मीयता से अभिवादन कर सकें। तभी हम अपने आपको इर्द-गिर्द की परिस्थितियो मे अधिक डूबा हुआ और सुरक्षित पाते हैं।

"वह मेरा मित्र है", इस वाक्य का प्रयोग अमेरिकन लोग दो या तीन अन्तरग मित्रो के बारे मे ही नही कहते। इस वाक्य का प्रयोग वे पडोसियो, अपनी क्लबो और सभा-सोसाइटियो के सदस्यो, सहकर्मियों अपनी कार मे पेट्रोल भरने वाले व्यक्ति, भूतपूर्व, अध्यापको, अपने गिरजे के पादरी और अपने दुकानदार आदि सभी के लिए प्रयोग करते

है। जहाँ अन्य सस्कृतियाँ मित्रता को मूल्यवान् समझकर कुछ थोडे-से अन्तरग आत्मीयो तक ही सीमित रखने का प्रयत्न करती हैं, वहाँ हम लोग उसे मूल्यवान समझकर अधिक-से-अधिक लोगो को उसमे साझेदार बनाना चाहते हैं। हमारी भौतिक अर्थ-व्यवस्था हमे सिखाती है कि जितना हम खर्च और उपभोग करेंगे, उतना ही हमे मिलेगा। उसी तरह हमारी मानसिक अर्थ-व्यवस्था भी हमे सिखाती है कि जितनी उदारता से हम मैत्री को बाटेगे, उतना ही हमारा मैत्री का धन बढेगा। अपनी आवश्यकता से अधिक कृषि उत्पादन करके और प्रथम विश्वयुद्ध के बाद अनेक गलतियाँ कर के हमने यह सीख लिया है कि किसी भी वस्तु को कजूस की तरह जमा करके रखने से इन्सान धनी नही बनता, बल्कि दरिद्र बनता है।

मित्र बनाने और नये-नये मित्र खोजने की प्रवृत्ति सिर्फ व्यक्तियो तक ही सीमित नही है वह एक अन्तर्महाद्वीपीय प्रवृत्ति बन गई है। अमेरिकनो की पडोसी देशो के साथ अच्छे पडोसीचारे की नीति, अल्पविकसित देशो की सहायता, भूखे देशो को फालतू अन्न का वितरण और विश्व पडोसी सघ (वर्ल्ड नेबर्स) जैसे गैर-सरकारी सगठनो की स्थापना केवल राजनीतिक औचित्य और आवश्यकता का ही परिणाम नही हैं। इनकी जड अमेरिकनो की दूसरो को प्यार करने और दूसरो से प्यार पाने की सहज प्रवृत्ति में है। अमेरिकन लोगो का यह दृढ विश्वास है कि यदि तुम दूसरो से प्रेम करोगे तो वे भी तुम्हे प्यार करेंगे और तब सब कुछ ठीक हो जाएगा (इस विश्वास के कारण ही रूजवेल्ट ने स्टालिन के साथ प्रेमपूर्ण व्यवहार करके गलती कर डाली थी)। हम लोगो की यह धारणा यदि निरा भोलापन भी हो, तो भी वह अग्राह्य नही है। क्योंकि वह शक्ति से काम निकालने के बजाय प्रेम से समझा-बुझा कर काम निकालने के तरीके को अपनाती है और घृणा का स्थान गलबहियों को देती है।

अमेरिकन विचारधारा

तब वे आदर्श और विश्वास कौन-से है जो अमेरिकन चरित्र को अभिरूपित करते है ?

जॉर्ज सेंटायना ने कहा है : "ये राष्ट्रीय विश्वास और नैतिकता विचार और कल्पना की दृष्टि से अस्पष्ट है, परन्तु भावना की दृष्टि से खूब मजबूत है। वे है कर्म की साधना का मन्त्र और प्रगति मे आस्था।" *

क्लाइड क्लकहोन का कहना है कि अमेरिकन विचारधारा मे ये बातें अन्तर्निहित हैं—वह तर्क-बुद्धि-युक्त बात मे विश्वास करती है, नैतिकतावाद की दृष्टि से हर वस्तु का तर्क और बुद्धि की कसौटी पर कसना आवश्यक समझती है और यह मानकर चलती है कि तर्क-युक्त व्यवहार का महत्त्व है, वह निरर्थक नही है, वह व्यक्ति और उसके अधिकारो मे विश्वास रखती है और जन-साधारण की राजनीतिक बुद्धिमत्ता पर भरोसा करती है, वह परिवर्तन और प्रगति को बहुत कीमती समझती है, और सुख की प्राप्ति को एक कल्याणकारी लक्ष्य के रूप मे साध्य मानती है।+

इसी तरह अमेरिकन लोग अपनी परम्पराओ मे भी गहरी आस्था रखते है। स्वतन्त्रता की घोषणा और हमारा सविधान, दोनो मे स्वशासन के मौलिक सिद्धान्तो का इतनी स्पष्टता और असदिग्धता के साथ वर्णन किया गया है कि हम उन्हें अमेरिकन आविष्कार मानने लगते हैं, कम-से-कम यह तो मानते ही है कि ये सिद्धान्त और अधिकार हमारी विशेषता है। ये पवित्र अभिलेख 'स्वतन्त्रता की घोषणा और सविधान) हमे ऐसे बुनियादी सिद्धान्त प्रदान करते हैं जिन्हें हम ईश्वर की देन समझते हैं और इसीलिए यह मानते है कि उन पर आपत्ति करना या उन्हें किसी तरह विपर्यस्त करना सम्भव और उचित नही

*कैरेक्टर एण्ड ओपीनियन इन दि यूनाइटेड स्टेट्स, पृष्ठ १११।

+ मरर फार मैन, पृष्ठ २३२।

है। इसलिए हमे अपने बुनियादी सिद्धान्तो के साथ छेड़छाड़ करने की जरूरत नही है; वे हमारे सार्वकालिक सिद्धान्त हैं।

विदेशी लोग यह समझते हैं कि हम अमेरिकनो मे विचार-विमर्श की प्रवृत्ति नही है। इसका कारण कुछ हद तक यह है कि हम अपने लक्ष्यों को हमेशा के लिए निर्धारित मान लेते है और उन पर किसी प्रकार के विचार-विमर्श की जरूरत नही समझते। हम सिर्फ यह मानते हैं कि हमे इन लक्ष्यो को पाने के लिए कठोर श्रम करने की जरूरत है। अमेरिकन लोग सृजन और निर्माण मे विश्वास रखते है और उसे प्रशंसा की दृष्टि से देखते हैं, जैसे एक नये खेत को साफ कर जोतने-बोने योग्य बनाना, एक नई खान खोदना, एक नया नागरिक सगठन बनाना और एक नया व्यवसाय स्थापित करना। इसी का वे स्वप्न लेते है। परन्तु सब स्रष्टाओं की तरह वे आलोचना से घबराते हैं।

कुछ इस कारण से, और कुछ इसलिए कि वे स्वय राष्ट्र के कामों में निष्क्रिय प्रेक्षक होने के बजाय सक्रिय भागीदार हैं, वे देश को बाहर की सभी आलोचनाओ से बचाना अपना कर्त्तव्य समझते हैं, भले ही देश के भीतर वे स्वयं उसकी कितनी ही आलोचना करते हो। डि टोकविल सयुक्त राज्य का बहुत प्रशसक था, फिर भी वह अमेरिकनो की इस देशभक्ति से चिढता था। उसका कहना था कि अगर आप अमेरिकनो की प्रशसा करना छोड़ दे तो वे स्वय अपनी प्रशसा करने लगेंगे। किन्तु उसका यह भी कहना है कि 'दूसरो को प्यार करने और दूसरो का प्यार पाने' की नीति 'दूसरो से घृणा करने और उनकी घृणा का पात्र बनने, की नीति से, जिसने मानवीय इतिहास मे बहुत से उलट-फेर किये हैं, कही बेहतर है।

अमेरिकनो की इस विचारधारा मे कुछ बातें उनके नये-नये क्षेत्रो मे अग्रणी बनने के इतिहास की देन हैं, और कुछ बाते उन्हें अपने शुद्धाचारवादी पूर्वजो से विरासत मे मिली है, जिनके विचारो,को वे अपने साथ पश्चिम की ओर ले गये थे। विरासत मे पाये इन विचारो मे से

एक विचार यह था कि हर व्यक्ति भगवान् की सृष्टि है, जिसे उस ने अपनी मूरत के रूप मे गढा है, इसलिए उसका उचित सम्मान होना चाहिए। आपसी समझौते और जनता की सहमति से शासन चलाने का विचार उन्हे प्रारम्भिक तीर्थयात्रियो से और तर्क और विवेक को प्रामाणिक मानने का विचार सत्रहवी शताब्दी के धार्मिक दार्शनिको के जटिल तर्कों से विरासत मे मिला। इसी तरह व्यक्तियो की अपेक्षा सिद्धान्तो के प्रति निष्ठा और वफादारी रखना और धार्मिक विश्वास को ही मानवो पर शासन के लिए सबसे सुदृढ बुनियाद मानना भी शुद्धाचारवादियो की विचारधारा के केन्द्रबिन्दु है।

इस प्रकार अमेरिकनो ने एक ऐसे रगमच पर मानव की शाप-मुक्ति का नाटक खेला है जिसके तख्तो मे कैल्विनवादी नैतिक सिद्धान्तो की मेखें जडी हैं। अगर कभी उन्होने इन नैतिक सिद्धान्तो के नियमो का उल्लघन किया तो हमेशा यह आशा की कि उन्हें इसकी सजा मिलेगी और यदि उनका अपराध छिपा रह गया तो कभी-कभी उन्होने उसके लिए स्वय भी अपने को दडित किया। मनुष्य की माँसल दैहिक वासनाओ को दबाये रखने के लिए उन्होने अपने आपको कठोर श्रम मे डुबाये रखा, और इस प्रकार काम का उनके लिए दोहरा महत्त्व हो गया। आज भी यह स्थिति है कि फ्रॉयड के सिद्धान्तो से दैहिक वासनाओ पर से कलुष और पाप का कलक बहुत कुछ हट जाने के बावजूद, अमेरिकन लोग निरे ऐन्द्रियिक सुखो को कुछ सन्देह की दृष्टि से देखते हैं और कोई भी अमेरिकन तब तक सन्तुष्ट नही होता जब तक वह अपने हिस्से का काम और श्रम न कर ले।

काम को इस प्रकार धर्म का एक अग समझने की प्रवृत्ति का जितना अच्छा उदाहरण कर्नेल अब्राहम डैवनपोर्ट की कहानी मे मिलता है, उतना और किसी मे नही मिलता। सन् १७८० मे एक समय ऐसा था, जब लोगो मे यह विश्वास फैल गया था कि सृष्टि के अन्त का दिन निकट है, जबकि ईश्वर के दरबार मे मनुष्य के भले-बुरे कामो का

फैसला होगा।' उन्ही दिनो एक दिन शाम का 'झुटपुटा होने पर डैवन-पोर्ट ने कनैक्टिकट की प्रतिनिधि सभा मे खडे होकर कहा कि सभा का अधिवेशन स्थगित नही किया जाना चाहिए।

उसने कहा, "आखिरी ईश्वरीय फैसले का दिन या तो नजदीक आ रहा है और या नही आ रहा। अगर वह नही आ रहा है तो अधिवेशन को स्थगित करने की कोई आवश्यकता नही है। और अगर आ रहा है तो मैं यही चाहूँगा कि भगवान् आखिरी दिन मुझे अपना कर्त्तव्य पालन करता हुआ देखे। इसलिए मैं चाहता हूँ कि अधिवेशन को जारी रखने के लिए मोमबत्तियाँ जला दी जाएँ।"

हास्य और व्यंग्य-विनोद

हास्य-विनोद की भावना अक्सर संस्कृति को सबसे अधिक प्रकट करने वाला पहलू होती है। इसमे सन्देह नही कि हास-परिहास को इस सभ्यता मे जितना ऊँचा स्थान दिया गया है, उतना और किसी सभ्यता में नही दिया गया। विल रोजर्स को अमेरिका के सम्बन्ध मे खूब चुभने वाले व्यंग्य करने के कारण ही राष्ट्रीय वीर के रूप मे सम्मानित किया जाता है—उसमे अमेरिकनो को उनकी आँखो मे उगली डालकर यह दिखाने की प्रतिभा है कि उनमे कौन-सी बाते हास्यास्पद हैं। मार्क ट्वेन की भी, जो कई तरह से हमारे देश का सबसे अधिक प्रति-निधि लेखक माना जाता है, प्रशसा इसीलिए उतनी नही की जाती कि वह अमेरिकन जीवन का कुशल चितेरा है, जितनी इसलिए की जाती है कि उसका हास्य और व्यग्य बडा चुटीला है। हमारे दृष्टिकोण मे जो आशावादिता है उसी का यह परिणाम है कि हम सुखान्त और हास्यमय रचना को दुःखान्त और विषादपूर्ण रचना से ज्यादा पसन्द करते है और यही कारण है कि हमारे टेलीविजन पर हास्य अभिनेताओ को सबसे अधिक स्थान और सबसे अधिक वेतन मिलता है।

हास्य मानसिक तनाव को कम करने की औषध है। वह द्रुत गति से चलने वाले हमारे औद्योगिक जीवन की, जिसमे मशीनो की

घरघराहट, यातायात के परिवहनो की तरह-तरह की आवाजें और मिजाज मे गर्मी और तनाव है, भागदौड और गर्जन को कुछ प्रतिसन्तुलित करता है। हास्य और व्यग्य-विनोद साहित्य मे और रगमच पर जीवन की इन्ही चीजो को ऐसे ढग से प्रदर्शित करते है कि हम उन पर हँसते हैं और हँसकर अपने भीतर के धुएँ को वाहर निकाल देते हैं।

हास-परिहास और विनोद किसी भी वस्तु को इस तरह रूपान्तरित करने में नही हिचकता। जो वस्तु हास्य के इस व्यग्यात्मक स्पर्श से ऊपर समझी जाती है उस पर हास्य का और भी अधिक प्रवल आघात और प्रभाव होता है। इसीलिए पादरियो के वारे मे मजाकिया चुटकुले बहुत आमफहम हो गये है। एक चुटकुले मे एक पादरी एक व्यक्ति से कहता है कि "कल मैं हजामत करते समय आज के उपदेश के वारे मे सोचता-सोचता इतना मग्न और विभोर हो गया कि अपनी ठोड़ी ही काट बैठा।" इस पर वह व्यक्ति उसे जवाव देता है कि "यदि आप अपनी दाढी के वारे मे सोचते-सोचते अपने उपदेश को वीच मे ही काट देते तब अधिक अच्छा होता।"

अमेरिकन हास्य सन्तान-प्रजनन और परिवार के महत्त्व, स्त्रियो और बच्चो का ऊँचा दर्जा, जीवन की चपल गति और तनाव—इन सब की पुष्टि करता है और इस सबसे वढकर वह स्वय जीवन को हास-परिहास के रूप मे देखने, उसे धन-दौलत से भी अधिक महत्त्व देने और एक अभिलषित और प्रशसित गुण की भाँति समादृत करने की भावना पैदा करता है। पादरी अपने उपदेशो मे और डाक्टर मरीज के इलाज मे, वकील अपने तर्कों मे और अध्यापक अपने अध्यापन मे इसका उपभोग करता है। किसी आदमी की वुराई और आलोचना करते हुए हम उसकी सबसे अधिक निन्दा यही कहकर कर सकते हैं कि उस मे हँसी-मजाक का माद्दा विल्कुल नही है, क्योंकि हास्य अमेरिकन जीवन-पद्धति का एक अविच्छिन्न अग है।

हास्य समानता पैदा करने मे सहायता देता है और समानता में हमारा गहरा विश्वास है। हास्य अक्सर स्वतन्त्रता का प्रतीक समझा जाता है, क्योकि वह व्यक्ति को अपने नेताओ के बारे मे खुलकर कहने और उन्हें उनकी असलियत दिखाने मे सहायता देता है। जो लोग अपने आप को बहुत बडा समझते हैं, उनकी वह फूँक निकाल देता है। हास्य हमे अपने आप को भी अधिक स्पष्ट रूप में देखने का अवसर देता है, और जब हम अपने आपको सही रोशनी मे देखते है तो अपनी कमजोरियों पर विजय पा सकते है। और अमेरिका जैसे देश मे, जहाँ हमेशा नये-नये सम्पर्क और सम्बन्ध बनते रहते हैं, हास्य-विनोद त्वरित भावनात्मक एकता पैदा करता है। यह हास्य-जन्य भावनात्मक एकता क्षेत्रीय या अप्रत्यक्ष एकता नही होती, बल्कि ऐसी व्यापक एकता होती है कि हम उससे सभी जगह अपनापन अनुभव करने लगते हैं। हास्य आत्म-विश्वास का व्याकरण, आशावादिता का गद्य-गीत और भ्रातृत्व का संगीत है।

अमेरिकन की पहचान

हेनरी जेम्स ने श्रीमती ट्रिस्टरैम के मुँह से एक अमेरिकन को लक्ष्य करके कहलाया है, "मैं आपको अच्छी तरह समझ नही सकती, यह जान नही सकती कि आप बहुत सीधे-सादे है या बहुत गहरे।" यह प्रश्न और दुविधा यूरोपियनो के सामने अक्सर रही है। आम तौर पर वे यह समझते है कि अमेरिकन लोग बिल्कुल बचकाने है। किन्तु सत्य यह है कि विभिन्न समाजो के बारे मे यह ठीक-ठीक नही कहा जा सकता कि अमुक समाज परिपक्व है और अमुक नही। कारण, हर आदमी का अपना-अपना अलग तर्क होता है।

तब एसी कौन-सी चीज है, जिससे अमेरिकन को कही भी आसानी से पहचाना जा सकता है। अमेरिकन पर्यटको का एक वर्ग ऐसा है जो बाहर जाकर खूब शोर-गुल करता है, बड़ी-बडी बातें बघारता है, खूब आलोचनाएँ करता है और पैसा लुटाता है। परन्तु हमारा ख्याल है कि

अमेरिकनों को दूसरो से अलग करने वाली पहचान यह नही है। तब इस वर्ग के पर्यटको के इस आचरण के बारे मे सिर्फ यही सफाई दी जा सकती है कि अपने देश मे उन्हे जिन सामाजिक बन्धनो मे रहना पडता है, उनमें वे ऐसा आचरण कभी न करते, परन्तु देश से बाहर इन बन्धनो से मुक्त होने पर वे इस आजादी का अधिक-से-अधिक उपभोग करना और लाभ उठाना चाहते है।

अमेरिकनो को देखकर मन पर जो छाप पडती है, उसका कारण उनके कपड़े और पोशाक नही है, बल्कि उनका रवैया और दृष्टिकोण है। उनका रवैया तीन चीजो का मिश्रण है—वर्ग-चेतना का अभाव, कुछ आत्मसन्तोषपूर्ण आशावादिता और हर बात मे जिज्ञासा और प्रश्न पूछने की वृत्ति। यह मिश्रण यूरोप के लोगो को बुद्धूपन प्रतीत होता है। इसके अलावा अमेरिकन तथ्यो और आँकडो के शौकीन होते है, उनमे एक सजगता होती है, किन्तु वह बौद्धिक सजगता की अपेक्षा शारीरिक और चाक्षुप सजगता अधिक है। और सबसे बढकर उनमे सबके साथ मित्रता कर लेने की अभिवृत्ति होती है। (यहाँ हमे थोडी देर के लिए अमेरिकनो की च्यूइग गम चूसते रहने, अन्धा-धुन्ध सिगरेट पीने और हर चीज की कन्सास सिटी या केओकुक के साथ तुलना करने की आदतो को भुला देना चाहिए)। सक्षेप मे यह कहा जा सकता है कि अमेरिकनो का चरित्र अत्यधिक प्रतिस्पर्धा की परिस्थितियो और उन्नति के लिए असाधारण अवसरो के प्रति मानव अनुक्रिया की उपज है।

लेकिन इसमे सन्देह नही कि अमेरिकनो का कोई एक ऐसा विशिष्ट चरित्र लक्षण नही है जिसे देख कर किसी के बारे मे यह कहा जा सके कि अमुक व्यक्ति ठेठ अमेरिकन है किन्तु अगर समस्त अमेरिकनो मे पाये जाने वाले लक्षणो को जोड लिया जाए और उसे १७ करोड़ से भाग दिया जाए तब जो कुछ भागफल आएगा वह कुछ हद तक वही होगा जिसे इस अध्याय मे चित्रित और प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया गया है।

अध्याय : छः

सामुदायिक जीवन

पिछले अध्याय मे हमने अमेरिकनो के चरित्र और पारिवारिक जीवन का जो वर्णन किया है, उसके आधार पर अमेरिकन लोग अपने लिए किस ढग के सामुदायिक जीवन का निर्माण करते है ? यह जानने के लिए सबसे पहले किसी छोटे से स्थान पर दृष्टिपात करना आसान होगा। अधिकतर अमेरिकन लोग छोटे-छोटे कस्बो मे रहते हैं। जन-गणना विभाग ने उन सब स्थानो को शहरो मे गिना है जहाँ २,५०० से अधिक लोग रहते हैं। लेकिन २,५०० आबादी के कस्बे आम तौर पर शहर के बजाय गाँव अधिक होते हैं। बल्कि पच्चीस हजार, और शायद पचास हजार, की आबादी तक के कस्बो मे भी लोग गाँवो की तरह यह अनुभव करते है कि उनका दायरा बहुत छोटा है और वे उसे खूब अच्छी तरह जानते है। हमारे २७ प्रतिशत देशवासी देहातो (यानी एक हजार या इससे कम आबादी के समुदायो) मे रहते है, २२ प्रतिशत लोग कस्बो और २५ हजार तक की आबादी के छोटे नगरो मे और शेष ४१ प्रतिशत अधिक बडे नगरो मे रहते है। अधिकतर अमेरिकन लोग अब भी प्रकृत्या छोटे कस्बो या प्रान्तीय नगरो मे रहने के आदी है और जब बडे बहु-जातीय नगरो मे रहने की मजबूरी आ पडती है तब भी उनका झुकाव छोटे कस्बो मे रहने की ओर ही होता है। युद्ध के बाद से बडे नगरो मे रहने वाले लोग भी अधिकाधिक सख्या मे दूर तक फैले उपनगरो मे जाने लगे है। अमेरिकन लोग अपना कारबार और नागरिक प्रशासन स्वय चलाने के शौकीन है, इसलिए वे बड़े नगरो को पसन्द नही करते, क्योकि उनमे स्वशासन चलाना कठिन होता

है । यही कारण है कि वे बड नगर को किसी-न-किसी उपाय से छोटी इकाइयो मे विभक्त करने का प्रयत्न करते हैं ।

कस्बे मे घुसते ही आपको सबसे पहिले क्लब मिलती है, इसलिए किसी जगह पहुँच कर यदि रॉटरी क्लब, किवानीज़ क्लब या लॉयन्स क्लब का बोर्ड मिले तो आप समझ सकते हैं कि आप कस्बे मे प्रवेश कर रहे हैं । इन क्लबो का उद्देश्य समाज की उपयोगी सेवा करना बताया जाता है—जैसे पार्क या अन्य आवश्यक मनोरजन स्थल बनाना, बाल अपराधियो की समस्या को हल करना, बालचरो की सहायता करना, मुफ्त नेत्र-चिकित्सा की व्यवस्था करना और हाई स्कूल के बैंड के लिए वर्दी खरीदना ।

धीरे-धीरे अमेरिका का चेहरा पुनर्यौवन की दीप्ति से चमकता जा रहा है । नये-नये आधुनिक ढग के कारखाने खडे हो रहे हैं जिनमें निरी खिडकियाँ ही खिड़कियाँ हैं और वे भी स्टैनलैस स्टील की, और जगह-जगह नये भव्य किन्तु सादे मकान भी बनते जा रहे है । कुछ स्थानो पर यह परिवर्तन अविश्वसनीय तेजी से हो रहा है, फिर भी अभी तक पुराने मकानो और भवनो की सख्या ही अधिक है । यहा आपको कुछ गन्दी बस्तियाँ भी मिल जायेंगी जिनमें टूटे-फूटे खस्ता मकानो में जिनका रग-रोगन भी उखड गया है, गरीब लोग रहते हैं । आम तौर पर मुख्य सडकें सर्वोत्तम रिहायशी इलाको के पास से गुजरती हैं । इन इलाको में छायादार पेड होते हैं, हरे-भरे घास के मैदान होते है और उनकी खिडकियाँ दीवारो के पीछे छिपी नही रहती, बल्कि चौडी हवादार गलियो में खुलती हैं । अपने आपको चार दीवारी के भीतर घेर कर छिपाना अमेरिकन प्रकृति के विपरीत है । सिर्फ धनी लोग ही चारदीवारी से घिरे विशाल दुर्गो में रहते है और उनकी सख्या भी बहुत अधिक नही है ।

हर कस्बा स्वभावत व्यापार-वाणिज्य का केन्द्र होता है और अमेरिका की मुख्य सडकें इस बात को छिपाने का प्रयत्न नही करती,

इन सड़कों पर बनी दुकानो के सामने व्यापार-वाणिज्य की घोषणा करने वाले नामपट लगे रहते हैं और रात को वे लाल, हरी और नीली रोशनियो से जगमगाते हैं। कुछ भवन-खण्डो में वे सेवाएँ और सस्थाएँ केन्द्रित रहती है जिन पर कस्बा निर्भर रहता है और जो कस्बे पर निर्भर रहती हैं। ये सेवाएँ और सस्थाएँ है बैंक, डाकखाना, टेलीफोन एक्सचेंज, इलैक्ट्रिक कम्पनी, फायर स्टेशन, पुलिस थाना, कचहरी, टाउन हाल, रेलवे स्टेशन, बस का अड्डा, सिनेमा घर और खुदरा बिक्री की दुकानें। इन दुकानो में मुख्यतः कपड़े, खाद्यपदार्थ, बर्तन भाडे और मशीनरी आदि बिकती है, परन्तु बिजली आदि के सामान की दुकाने और लाडरियाँ भी होती है। इसके अलावा दवा की दुकाने भी रहती है, और ये दवा की दुकाने अमेरिका की एक खास चीज है, जिनमे सब तरह को आइसक्रीम-जलपान का सामान, मिठाइया, शृङ्गार सामग्री, किताबे, पत्रिकाएँ, घरेलू उपकरण, सिगरेट, सिगार और खिलौने, यानी दुनिया भर की चीजे मिलती हैं और मजा यह कि इनमे दवाएँ भी मिल जाती है।

दुकानो के ऊपर दूसरी ऐसी सेवाएँ होती हैं जिन पर नागरिक लोग निर्भर करते है—जैसे डाक्टर, वकील, फोटोग्राफर, दन्दानसाज, नाई, हज्जाम, आर्किटैक्ट और बीमा तथा जमीन जायदाद के एजेंट।

मुख्य सडक के पास और कभी-कभी उसी पर, गिरजाघर, सार्वजनिक पुस्तकालय और वाई० एम० सी० ए० भवन होते हैं जो इस बात के प्रतीक है कि कस्बे के जीवन मे धर्म और सबको शिक्षा का समान अवसर और मनोरजन प्रदान करने वाले साधन कितना महत्त्वपूर्ण भाग अदा करते हैं।

इस सबके बीच मे—ऊपर की मजिलो के कमरो मे और व्यापार वाणिज्य के ज्वार से घिरे पुराने भवनो मे—क्लबें और वासे होते है। इन वासो के नाम पशु-पक्षियो के नाम पर ऐल्क्स, ईगल्स, मूज़ या आऊल्स आदि होते है। ऐसा लगता है कि अमेरिकनों ने इनके नाम

रखने के लिए आदिम मानव की तरह पशु-पक्षियो के सकेतो को जितना अपनाया है, उतना ससार के किसी अन्य देश के लोगो ने नही अपनाया। एक ऐसे समाज मे, जो अत्यधिक टुकडो मे बटा हुआ और सचल है, ये क्लबें और बासे एक छोटे और खूब गुंथे हुए समाज की भावना को सुरक्षित रखने मे सहायता देते है। यद्यपि इन क्लबो और बासो का प्रयोजन भ्रातृत्व को बढाना है और उनमे बीमार और अपग लोग भी अपने रहने की व्यवस्था करके तीमारदारी की सुविधा हासिल कर लेते हैं, तो भी दूसरे लोग भी जो घर से दूर, किन्तु आराम से रहना चाहते है, इन बासो मे खूब आनन्द से टिक सकते है। यहाँ मनुष्य को एक ऐसा दुर्ग मिल जाता है जिसमे स्त्रियो का प्रवेश या दखल नही होता फिर भी अनादिकाल से स्त्रियाँ पुरुष की जो सेवा करती आई हैं, उससे यहाँ वह महरूम नही रहता। इन क्लबो और बासो से मैत्री की भावना को भी बढावा मिलता है जिसके फलस्वरूप कभी-कभी लोगो मे व्यापारिक या राजनीतिक समझौते भी हो जाते हैं।

सामूहिक जीवन में व्यक्ति का स्थान

छोटे कस्बे या छोटे नगर का निवासी सैकडो तरह से अपने समुदाय के साथ जुड़ा रहता है। उदाहरण के लिए दस हजार आबादी के न्यू इगलैंड के एक कस्बे मे रहने वाले एक विवाहित युगल जॉन और मेरी को लीजिए। जॉन बिजली के सामान के एक कारखाने मे डिवी-जनल सुपरवाइज़र है। वह और उसकी पत्नी एक ब्रिज क्लब के सदस्य हैं। उनकी यह ब्रिज क्लब कस्बे की क्लब मे जमती है, इसलिए वे उसके भी सदस्य हैं। इन क्लबो का सम्बन्ध सामान्यतः अच्छी स्थिति के लोगो के काफी बडे वर्ग के साथ है। फिर जॉन और मेरी गिरजाघर मे जाते हैं और साथ ही उसकी युवक युगल क्लब की बैठको मे भी हिस्सा लेते हैं।

जॉन का अफसर रॉटरी क्लब का सदस्य है, किन्तु वह स्वयं लॉयन्स क्लब का सदस्य है। सर्विस क्लबो मे भी इसी तरह की क्रम-

व्यवस्था बनी हुई है, हालाँकि अलग-अलग कस्बो मे यह व्यवस्था अलग-अलग किस्म की होती है। जॉन स्कूल बोर्ड का भी सदस्य है, इसलिए वह लॉयन्स क्लब का सदस्य होना अधिक उपयोगी समझता है, क्योकि वहाँ वह स्कूल के सुपरिण्टेण्डेण्ट से बात चीत कर सकता है। वहाँ वह यह जान सकता है कि दूसरे लोग स्कूल के बारे मे क्या सोच रहे हैं और बोर्ड की कुछ समस्याओ के बारे मे उनमे दिलचस्पी भी पैदा कर सकता है।

इसके अलावा वह इन गति विधियो या सगठनो मे भी भाग ले सकता है : उसके कालेज के पुराने छात्रों का सगठन, उसके कालेज का भ्रातृसघ; हाई स्कूल के पुराने छात्रो का सघ, सध्या का समय मनोरजन मे बिताने के लिए किसी नृत्य दल की सदस्यता, रॉड एण्ड गन क्लब; गिरजाघर की सगीत मंडली, कारखाना प्रबन्धको की राष्ट्रीय एसोसिएशन और रिपब्लिकन पार्टी।

मेरी का जीवन उससे कम नही, बल्कि कुछ अधिक ही व्यस्त रहता है। अमेरिका की बहुसख्यक गृहिणियो की भाँति वह अपने घर का सारा कामकाज करती है, यहाँ तक कि कपडे भी स्वय धोती है (जिसके लिए उसके पास बिजली की मशीने है)। वह अपने दिन भर के काम की योजना उसी तरह बनाती है, जैसे सेनापति आक्रमण की योजना बनाता है और उसके बाद उसमे खाना बनाने, सफाई करने, कपड़े सीने, बागबानी करने और साथ ही अपने अन्य कर्त्तव्यो को पूरा करने के लिए समय निर्धारित करती है।

उसकी मेज़ पर किसी-न-किसी कोश-सग्रह के लिए प्रचार-सामग्री भी रहती है, क्योंकि उसका सम्बन्ध ऐसे अनेक आन्दोलनो से रहता है। कल्पना कीजिए कि इस समय वह एक बडे कोश—सामुदायिक कोश—के लिए धन-सग्रह कर रही है। इस कोश के लिए प्रतिवर्ष एक बार अपील की जाती है और उसके वाई० एम० सी० ए० (कस्बा बडा हो तो वाई० डब्ल्यू० सी० ए० भी), बालचर और गर्ल-गाइड, मानसिक

स्वास्थ्य केन्द्र, परिवार सेवा केन्द्र, अस्पताल, पराश्रित बाल केन्द्र और इसी तरह के एक दर्जन और सगठनो को सहायता मिलती है, जो कस्बे के सामुदायिक जीवन के लिए आवश्यक है। साल मे ऐसे ही और भी मौके आते हैं, जब वह रैडक्रास, अपाग बाल केन्द्र, अन्ध विद्यालय, हार्ट फंड या पैसा कोश आदि विभिन्न सेवा सगठनो और कार्यों के लिए पडोसियो से दान सग्रह के लिए जाती है। इनमे से अनेक संगठन ऐसे हैं जिनका सम्बन्ध कस्बे के सामुदायिक कोश से नही रहता, और जिनका सचालन जिले के प्रधान कार्यालय से होता है। इसके अलावा बीच-बीच मे कुछ खास कार्यो, जैसे स्कूल के जलपान-गृह का सुधार, आदि के लिए भी धन-सग्रह की विशेष अपीलें की जाती हैं। यह कहा जा सकता है कि यह ज़िम्मेदारी स्कूल के बोर्ड की है, बल्कि स्वय मेरी भी अपने पति से यह बात कह सकती है। लेकिन वास्तविकता यह है कि स्कूल के बोर्ड का बजट इतना छोटा होता है कि उसमे से ऐसे कामो के लिए गुंजायश नही रहती। इसलिए स्त्रियो को ही उसके लिए स्कूल के मेले मे खाद्य-पदार्थों की बिक्री करके, नीलामियो से अथवा ब्रिज पार्टियो या नृत्य कार्यक्रमो से धन-सग्रह करना पडता है। कस्बे के लोग हर वक्त किसी-न-किसी तरह के धन-सग्रह मे लगे रहते हैं।

सरकार ही इन सेवाओ की देख-भाल क्यो नही करती और वही इनका खर्च चलाने के लिए टैक्स लगाकर धन की व्यवस्था क्यो नही करती? इसका उत्तर यह है कि अमेरिकन हमेशा ही सब काम सरकार पर छोड कर उसे सर्व-शक्तिमान बनाने के विचार के विरोधी रहे है, वे बागडोर को यथासम्भव अपने ही हाथ मे रखने के पक्षपाती हैं। यदि इन सेवाओ के सचालन को सरकार अपने हाथ मे ले ले तो उनका खर्च आज की अपेक्षा कही अधिक होगा और जनता उसे सहज मे चुका नही सकेगी। कुछ छोटे कस्बो मे तो आग बुझाने का काम भी स्वय-सेवक करते हैं। जैसे ही आग की सूचना देने वाला भोपू बजता है, वे अपना-अपना काम छोड कर आग बुझाने के लिए अपनी कारो

मे दौड़ते हैं । अमेरिकन लोग सरकारी दवाखानो से दवा लेने के बजाय स्वैच्छिक स्वास्थ्य बीमा योजनाओ मे शामिल होना पसन्द करते हैं और आज ११ करोड़ व्यक्ति इन योजनाओ का लाभ उठा रहे हैं ।

अपने नियमित कामो के अलावा मेरी को हर समय किसी-न-किसी तरह के संग्रह के लिए विशेष योगदान भी करते रहना पड़ता है । कभी किसी विशेष प्रयोजन के लिए आयोजित 'फेट' के लिए केक देना, कभी गिरजाघर द्वारा विदेशो के गरीबो के लिए किये जा रहे पुराने कपड़ो और हाई स्कूल के पुस्तकालय के लिए पुस्तके देनी पड़ती हैं । इसी तरह कभी पास के कस्बे मे मैच के लिए लड़को को अपनी गाडी मे मुफ्त पहुँचाना, किसी सामाजिक प्रयोजन के लिए आयोजित नीलामी के पोस्टर बनाना और उन्हे दुकानों मे प्रदर्शन के लिए रखना और महिलाओ को अपने बच्चो को शरीर-परीक्षा या चिकित्सा के लिए अपने बच्चे चिकित्सालय मे भेजने के लिए फोन करना—ये सब काम भी उसे बीच-बीच मे करते रहने पडते हैं ।

इस प्रकार के एक मध्यवर्गीय जोडे के नागरिक कार्यों की पूरी तस्वीर पेश करना आसान नही है । वह असख्य तरीको से समाज के साथ बँधा होता है और यह मान कर चलता है कि उसे इस बंधन को निभाना ही है । यह सही है कि ये सामाजिक कार्य उनका बहुत-सा समय खा जाते हैं और इस प्रकार उनके आराम और अवकाश के समय को उतना ही कम कर देते है, परन्तु साथ ही वे उनकी आत्म-गौरव की भावना को भी उसकी सकरी सीमा से बाहर निकाल कर परितृप्ति प्रदान करते हैं और पति-पत्नी अपने आपको समाज का अंग बनाकर यह अनुभव करते है कि उनका व्यक्तित्व अधिक बड़ा और व्यापक है । जो व्यक्ति इस प्रकार के सामुदायिक कार्यों मे भाग लेकर समाज के साथ अपने आपको जोड़ लेता है, उसमे पृथकता और एकाकीपन की भावना नही रहती । वह अनुभव करता है कि वह सारे समाज के साथ गुँथा हुआ है और उसके साथ अनेक रूपों मे उसके

सम्बन्ध है। रॉटरी क्लब का नारा है, "सेवा पहले और आत्महित पीछे।" ईसाई धर्म की शिक्षा है कि "अपने पडोसी से प्यार करो।" यह एक सीधी-सादी विचार-धारा है जिसे जॉन और उसकी पत्नी नगर के सामुदायिक जीवन मे प्रतिदिन अपने अनुभव से हृदयगम करते हैं।

पारस्परिक स्वैच्छिक सेवा एक ऐसा साधन है जिससे सक्रिय नागरिक समाज मे अपनी स्थिति को अनुभव करता है, सफलता और उपलब्धि की अपनी आवश्यकता को पूरा करता है और सुरक्षा और पारस्परिक आदर की भावना अपने भीतर पैदा करता है। ऐसे लोगो मे पार्थक्य, एकाकीपन और असुरक्षा की वह भावना नही होती जिसे अक्सर समाज-विज्ञान-वेत्ता हमारी सभ्यता का एक चिह्न बताते है।

इस स्वैच्छिक सेवा की प्रणाली मे एक गम्भीर खामी यह है कि काफी बडी सख्या मे लोग इस प्रणाली के अन्तर्गत आने से रह जाते हैं, खासकर अल्प-आय वर्ग के लोग। ये लोग इन सेवाओ से लाभ तो उठाते हैं, किन्तु प्राय उनमे सहायता और योगदान नही करते। इसका कारण कुछ तो यह है कि उनके पास इसके लिए पर्याप्त अवकाश नही होता और कुछ यह कि स्वय समाज का काम करने वाले लोग सहायता और योगदान लेने के लिए उनके पास जाते ही नही, वे सिर्फ उन्ही के पास जाते है जिन्हे वे जानते हैं या जिन पर विश्वास करते है। अल्प-आय वर्ग के लोगो मे न तो धन-सग्रह करने या बोर्डो की बैठको मे भाग लेने के लिए उत्साह होता है और न उन्हे समाज-सेवा के लिए पर्याप्त ज्ञान आर आत्म-विश्वास ही होता है। इस समस्या का एकमात्र हल यह है कि शिक्षा का स्तर इतना ऊँचा उठाया जाए कि इस विषय का ज्ञान दूसरो से कम न रहे।

स्वैच्छिक सस्थाएँ

सयुक्त राज्य अमरीका को भली-भाँति समझने के लिए यह आवश्यक है कि पहले उसके किसी छोटे कस्बे का अच्छी तरह अध्ययन किया जाए और उसके बाद उसके स्वैच्छिक सगठनो का।

स्वैच्छिक सगठन उन लोगो के लिए सर्वथा उपयुक्त साधन हैं, जो स्वतन्त्र नागरिक और स्वतन्त्र व्यक्ति रहते हुए भी समाज के साथ बँधे रहना और उस पर प्रभाव डालना चाहते हैं। जैसा कि जैक बार्जन ने कहा है, यह नैतिक फिलासफी का क्रियात्मक रूप है। "हम ईश्वर को अपने ऊपर बोझ और दोष नही लेने देते, उसे हम स्वय अपने ऊपर ले लेते हैं।"*

ये स्वैच्छिक सगठन विभिन्न सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक या जातीय पृष्ठभूमि के लोगो के लिए परस्पर मिलने और एक-दूसरे को समझने के साधन हैं। क्लबो, गिरजाघरो और आन्दोलन के लिए आयोजित प्रीति-भोजो मे एक-साथ बैठकर खाना, बाजारो और नीलामियों मे सामाजिक उद्देश्यो के लिए धन और सेवाओ का आदान-प्रदान करना लोगो को एक-दूसरे के नजदीक लाता है और इससे लोकतन्त्र के उद्देश्य की सिद्धि होती है। सार्वजनिक सेवा मे धन और समय देने से व्यक्ति का अपना दर्जा ऊँचा होता है। इस सेवा मे भाग लेने वाले अनुभव करते है कि वे अपने इर्द-गिर्द की परिस्थितियो के दास होने के बजाय स्वय उनका अपने मन के अनुकूल निर्माण करते हैं (यह सही है कि व्यक्ति को स्वैच्छिक समाज-सेवा मे प्रेरित करने वाली शक्तियाँ भी उसके इर्द-गिर्द की परिस्थितियो मे ही होती है)। इस प्रकार वे यह आत्मविश्वास अनुभव करने लगते है कि वे जो कुछ है और जैसी परिस्थिति में हैं उसका चुनाव उन्होने स्वयं किया है। यह विश्वास अमेरिकनो को बहुत सन्तोष प्रदान करता है, क्योकि वे विचार-विमर्श के बजाय कर्म को और कल्पनाओ के बजाय उनके परिणामो को अधिक महत्त्व देते है।

स्वेच्छया समाज-सेवा के लिए सगठन बनाने की यह आदत, जो सारे समाज मे व्याप्त है, राष्ट्र की तानाशाही के विरुद्ध रक्षक ढाल है। इससे समाज किसी भी वर्ग या समुदाय के अत्याचारो से अपनी

*गाड्स कट्री एण्ड माइन, पृष्ठ १५।

रक्षा कर सकता है। व्यक्ति अपने आप में नितान्त शक्तिहीन है किन्तु एक सगठन का सदस्य बनकर वह शक्तिशाली हो जाता है। ये सगठन संख्या की दृष्टि से इतने अधिक हैं और उद्देश्यो के लिहाज से इतने विविधतापूर्ण है कि वे एक-दूसरे को नियन्त्रित और सन्तुलित करते रहते है। यदि कू क्लक्स क्लैन जैसा एक हास्यास्पद और खतरनाक सगठन है तो उसके मुकाबले मे रचनात्मक काम करने वाले सौ या हजार सगठन भी है।

कुछ सगठन काम के आधार पर बने हैं, जैसे मजदूर यूनियनें और कुछ पेशे के आधार पर, जैसे मैडिकल सोसाइटियाँ और किसान सघ। इसी तरह रोग-निवारण या शिक्षा-सुधार के लिए बने समाज-सेवी अथवा समाज-सुधारक सगठन, धार्मिक समुदाय और अपने या अपने पूर्वजो के पुराने देशो के साथ सम्बन्धो के आधार पर निर्मित विभिन्न राष्ट्रीय समाज भी यहाँ विद्यमान हैं। और भी नाना प्रकार के सगठन यहाँ हैं, जिनमे से डॉटर्स ऑफ दी अमेरिकन रेवोल्यूशन, पुराने कालेज छात्रो के सघ, या भूतपूर्व सैनिक सघ आदि कुछ सगठन ऐसे हैं, जो एक जैसे अनुभव वाले लोगो ने स्थापित किये है। पुराने आदिवासियो द्वारा अपनाए गए पशु-पक्षियो या वनस्पतियो के प्रतीको के नामो पर स्थापित बासे या मेसन आदि प्रतीकात्मक समूह, अथवा मनोरजन या राजनीति के आधार पर बने सगठन या महिला मडल भी अमेरिका मे बड़ी सख्या मे हैं।

ऐंटी-प्रोफेनिटी लीग और हॉर्सशू पिचर्स से लेकर सोसाइटी फॉर प्रिज़र्वेशन ऑफ बार्बर शॉप क्वार्टेट सिंगिंग तक अनेक प्रकार के अजीबो-गरीब सगठन यहाँ है, जिनका सम्बन्ध हर तरह के हितो, अभिरुचियो, शौको, रोगो, खेलो, धन्धो या सिलाई-बुनाई-आदि से है। एक अमेरिकन नगर का सर्वेक्षण करने पर यह मालूम हुआ कि उसकी ४१ प्रतिशत आबादी एक या अधिक सगठनो की सदस्य है। इसके सर्वोच्च सामाजिक-आर्थिक वर्ग मे ७२ प्रतिशत और सब-से निचले वर्ग मे २२

प्रतिशत व्यक्ति विभिन्न सगठनो के सदस्य थे। जैसा कि हमने अभी देखा है, एक व्यक्ति अनेक प्रकार के काम कर सकता है। इस तरह सभी सक्रिय व्यक्तियो के विभिन्न कामो के मिश्रण से समाज-सगठन का एक अत्यधिक जटिल जाल फैल जाता है।

उपयोगी सामाजिक सगठनों के निर्माण का वक्त आने पर स्त्रियाँ वास्तव मे ही पुरुषो से आगे होती है, क्योंकि कस्बे या नगर के सामुदायिक कोश अथवा सामाजिक सेवाओ मे काम करने के साथ-साथ उनका अपना भी एक पूरा का पूरा सगठन होता है। पुरुष मतदाताओ का कही कोई सगठन नही है, किन्तु स्त्री मतदाताओ के सगठन मौजूद हैं और वे स्थानीय स्तर पर ही नही, राष्ट्रीय स्तर पर भी चुनावो के मौके पर महत्त्वपूर्ण प्रश्नो को उठाते और स्त्री मतदाताओ मे उनके बारे मे तथ्यो का प्रचार करते हैं। महिला क्लबो के महासघ (जनरल फेडरेशन ऑफ विमेन्स क्लब्स) ने निःशुल्क पुस्तकालयो और बाल-न्यायालयो की स्थापना, महत्त्वपूर्ण साधन-स्रोतो की रक्षा, प्रौढ-शिक्षा और इसी प्रकार के अन्य जन-कल्याण एव सुधार के कामो मे महत्त्वपूर्ण योग दिया है (देश भर मे ऐसी १५,००० क्लबें, हैं जिनकी सदस्य संख्या १,१०,००,००० है)। इसके अलावा कृषि विभाग की सहायता से गाँवो मे कुछ सगठन ऐसे भी हैं जो लोगो को घरो मे जाकर खान-पान, मकानों को साफ-सुथरा रखने और घरेलू कामो के तरीके सिखाने या कृषि अथवा अन्य विषयो की नई जानकारियाँ देने के लिए क्रियात्मक प्रदर्शन कर के दिखाते हैं। एक फ्रेंच युवती को एक गाँव में इस प्रदर्शनकारी दल के साथ ग्रामीण महिलाओ को शारीरिक पोषण, विदेशी मामलो और राष्ट्रीय नीति आदि पर बहस करते देखकर बहुत आश्चर्य हुआ।

स्वैच्छिक सेवा का आरम्भ

इस समूची स्वैच्छिक और स्वयसेवी गतिविधि को अमेरिका में स्पष्ट देखा जा सकता है और यहाँ के समाज के लिए वह महत्त्वपूर्ण भी बहुत। परन्तु यह प्रवृत्ति आई कहाँ से ?

जब १६०७ मे उन स्त्री-पुरुषो ने, जिन्हें हम 'तीर्थ-यात्रियो' के नाम से जानते हैं, इग्लैड से हॉलैड के लिए प्रस्थान किया था, तभी उन्होने अपने आपको एक समझौते मे बाँध लिया था और उसका नाम रखा था "भगवान् के साथ करार।" उनका विश्वास था कि सच्चा ईसाई सम्प्रदाय वह है जिसमें समान विचार के लोग एक स्वैच्छिक सगठन मे आबद्ध हो। और यह उस जमाने की बात है, जब अँग्रेजो से उसी धर्म को अपनाने के लिए कहा जाता था जिसका पालन उनका राजा करता था और उन्हें यह धमकी दी जाती थी कि यदि वे नियमपूर्वक उस धर्म के गिरजाघरो मे प्रार्थना के लिए नही जाएगे तो उन्हे दण्ड दिया जाएगा।

जब ये लोग फिर हॉलैण्ड से अमेरिका के लिए चले और न्यू इंग्लैड के तट के निकट पहुँचे तो उन्होने यह अनुभव किया कि अब उनके ऊपर न कोई सरकार है और न कोई अधिकारी। उन्होने फिर आत्म-शासन के लिए स्वैच्छिक सघ-निर्माण का ही तरीका अपनाया। अटलांटिक महासागर के पार अमेरिका मे लाने वाले जहाज 'मेफलावर' पर ही उन्होने आपस मे एक समझौता कर लिया और यह स्वीकार किया कि वे लोग अपने लिए जो भी कानून-कायदे बनाएगे, उनका सब लोग निष्ठापूर्वक पालन करेंगे। उन्होने अपने लिए एक गवर्नर चुना और बाद मे जैसी-जैसी आवश्यकता हुई, वैसे-वैसे अन्य अधिकारियो का भी चुनाव किया। जिस राष्ट्र के प्रति उनकी निष्ठा और वफादारी थी, उससे तीन हजार मील दूर रह कर भी उन्होने असाधारण सफलता के साथ अपना शासन चलाया यद्यपि उनकी शासन-व्यवस्था लोकतत्री नही थी, क्योकि उन्होने सब को मताधिकार नही दिया हुआ था, तो भी उन्होने अपनी व्यवस्था बडी बुद्धिमत्ता और दक्षता से चलाई।

इस प्रकार न्यू इग्लैड के अधिवासी उन प्रारम्भिक दिनो से ही अपने स्थानीय शासन को स्वय चलाते रहे है। स्थानीय स्तर पर सरकार स्वय एक स्वैच्छिक सगठन थी। इसलिए यह स्वाभाविक था कि जैसे-जैसे

लोगों की जरूरतें बढ़ती जाएं, वसे-वैसे उनकी पूर्ति के लिए नए संगठन भी बनते जाएं। सबसे पहले गिरजाघर बने, क्योंकि अक्सर अमेरिका में आने वाले या अमेरिका के ही एक स्थान से जाकर दूसरे स्थान मे बसने वाले लोग धर्म के आधार पर संगठित दलों के रूप में थे, जैसे टामस हुकर का प्रसिद्ध दल, जो मैसाचुसेट्स से कनेक्टिकट मे जा बसा था।

प्रोटेस्टैंट लोगो का कहना था कि उनका स्थानीय शासन उनके अपने हाथ में रहना चाहिए। दूसरे, सीमावर्त्ती गैर-आबाद इलाकों का खतरे से भरा जीवन भी उन्हें अपने अस्तित्व की रक्षा और समृद्धि के लिए परस्पर संगठन मे आबद्ध होने के लिए मजबूर करता था। इसलिए स्वभावतः उनमें परस्पर मिलकर स्वेच्छा से समाज-सेवा के लिए सगठन बनाने की प्रवृत्ति उभरी जिसका आज तक अमेरिका के जीवन मे एक महत्त्वपूर्ण स्थान है। अमेरिका में स्वैच्छिक संगठन बनाने की इस प्रवृत्ति के कारण ही लोग नगर या कस्बे की विशालता को पसन्द नही करते और आसानी से एक स्थान छोड़कर दूसरे स्थान पर चले जाते हैं और तुरन्त ही वहाँ नये सम्पर्क और सम्बन्ध स्थापित कर लेते हैं।

न्यू इंग्लैंड मे या न्यू इंग्लैंड के ढग पर निर्मित कोई भी छोटा कस्बा आज भी बाकायदा एक प्रशासनिक सगठन नही है, बल्कि एक स्वैच्छिक सगठन है। उसमे कोई राजनीति नही है, जिसका लाभ उठाने के लिए पारस्परिक प्रतिस्पर्धा हो। लोग बारी-बारी से वहाँ पद पर नियुक्त होते हैं और हालाँकि वे अधिकतर बिना किसी वेतन के ही कस्बे का काम-काज चलाते है, फिर भी उन्हें धन्यवाद के बजाय आलोचना का ही पात्र बनना पड़ता है। चाहे वे व्यापारी हो या किसान, राजनीति मे वे नौसिखिये होते हैं और कर्त्तव्य की भावना से या अपना स्तर ऊँचा उठाने के लिए ही नागरिक प्रशासन का पद ग्रहण करते हैं।

इस प्रकार शासन का काम स्थानीय स्तर से प्रारम्भ हुआ। यह एक ऐसा महत्त्वपूर्ण केन्द्रीय तथ्य है जिसे भुलाया नही जाना चाहिए

क्योकि वह अमेरिकनो के व्यवहार की अनेक पहेलियो और गुत्थियो को सुलझाता है।

अमेरिकन इतिहास के हर सकट में स्वैच्छिक संगठन वनाने की प्रवृत्ति ही निर्णायक सिद्ध हुई। जव १७६५ मे ब्रिटेन ने स्टाम्प ऐक्ट लागू करने का प्रयत्न किया तो सभी कालोनियों मे उसका विरोध करने के लिए सगठन बन गये। ये सगठन अपने आपको सन्स ऑफ लिबर्टी (स्वतन्त्रता के पुत्र) कहते थे। उन्होने ब्रिटिश पार्लमैंट मे प्रतिनिधित्व दिये विना कालोनियो से टैक्स वसूल करने का तीव्र विरोध किया। उन्होने प्रमुख अधिकारियो के पुतले जलाये, स्थान-स्थान पर स्वतन्त्रता-स्तम्भ वनाए और स्वतन्त्रता के नाम पर वृक्ष अर्पित किये, स्टाम्पो की होली जलाई और स्टाम्प विभाग के अधिकारियो को दफ्तरो मे पद ग्रहण करने से रोका। विभिन्न कालोनियो मे इन आन्दोलनकर्त्ताओ को एक सूत्र मे बाँधने और सगठित करने के लिए पत्र-व्यवहार समितियाँ वनाई गईं। इन समितियो ने इस आन्दोलन मे जो अनुभव प्राप्त किया, वह क्रान्ति के समय सव कालोनियो को एक सूत्र मे बाँधने के लिए वहुत काम आया। जॉन ऐडम्स ने इन समितियो के वारे मे कहा था कि "ये समितियाँ ही सारी क्रान्ति को अपने भीतर समेटे हुए थी। दस वर्ष तक इन स्वतन्त्रता के पुत्रो ने स्वतन्त्रता के पक्ष मे जनमत वनाने के लिए अथक परिश्रम किया। ये लोग स्वतन्त्रता के पक्ष मे जो वाते कहते थे, वही बाद में स्वतन्त्रता की घोषणा मे लिपिवद्ध की गई। इन स्वतन्त्रता के पुत्रो ने स्वतन्त्रता के आन्दोलन को वह भावनात्मक सस्कृति प्रदान की जिसके विना वह चल ही नही सकता था।*

गुलामो को स्वतन्त्रता प्रदान करते समय जो वडा सकट आया उसका सामना भी इसी साधन से किया गया। गुलाम प्रथा को समाप्त

---

*अमेरिका में अतीत और वर्त्तमान में इस तथा अन्य प्रयोजनों के लिए वनाये गये स्वैच्छिक सगठनों के वारे में अधिक जानकारी के लिए मैंडफोर्ड स्मिथ की 'ए डेंजरस फ्रीडम' पुस्तक पढ़िये।

करने की पक्षपाती सोसाइटियाँ यह चाहती थी कि इसके लिए कुछ ठोस काम किया जाए। इसके लिए अण्डर ग्राँउड रेल रोड नामक सगठन का निर्माण हुआ। यह अमेरिका के सबसे अधिक रोमाँटिक और असाधारण सगठनो मे से एक था। उसने बहुत जबर्दस्त काम किया। उसने गृह-युद्ध प्रारम्भ होने से काफी पहले ही गुप्त और गैर-कानूनी तरीको से हजारो गुलामो को उनके मालिको के पास से भागने और स्वतन्त्र होने मे सहायता दी।

स्त्रियो ने कानूनी हक और मताधिकार पाने के लिए अपनी लम्बी लड़ाई भी इसी साधन से लडी। मद्यपान के विरुद्ध लडी गई लडाई मे भी स्वैच्छिक सगठन महत्त्वपूर्ण साधन थे। प्रौढ-शिक्षा का अद्‌भुत कार्य-क्रम भी, जो लाइसियम आन्दोलन के नाम से अमेरिका मे चलाया गया, इन स्वैच्छिक स्वयसेवी सगठनो के बल पर ही चला। इस आन्दोलन ने अमेरिका की समूची सार्वजनिक शिक्षा-प्रणाली को बदल डाला। इसी साधन से श्रमिक आन्दोलन और राष्ट्र की समृद्धि मे न्यायपूर्ण समुचित हिस्से की माँग का किसानो का आन्दोलन भी चलाया गया।

इन सब परीक्षाओ और कसौटियो मे, जो राजनीति और सामुदायिक सेवा के क्षेत्र मे आजमायी गई, स्वैच्छिक सगठन का साधन सफल रहा और अधिकाधिक मजबूत होता गया। हर नये क्षेत्र मे इसके उपयोग और विस्तार ने उसे अमेरिका की जटिल औद्योगिक सभ्यता मे अपनाने के योग्य बनाया।

इस स्वैच्छिक सगठन-निर्माण का आधार नैतिक और धार्मिक था, यह बात उसकी प्रगति में बहुत महत्त्वपूर्ण रही। जब स्त्रियो ने समानाधिकार पाने, शराब के खत्म करने या अच्छे घर और बगीचे बनाने के लिए आन्दोलन किये तो वे यह भली-भाँति अनुभव करती थी कि उनके इन आन्दोलनो मे आधारभूत प्रयोजन नैतिक है। किसान और मजदूर भी यह अनुभव करते थे कि उन्हे राष्ट्र की दौलत मे अधिक हिस्सा पाने का नैतिक अधिकार है।

अमेरिकन लोग नैतिकता के स्वीकृत सिद्धान्तो और ईसाई धर्म को एक ही मानते थे, इसलिए उनकी दृष्टि मे शासन और सरकार भी ईसाई धर्म के ही उपोत्पादन थे। स्वतन्त्रता की घोषणा मे कहा गया था कि सभी मानवो को उनके स्रष्टा ने कुछ ऐसे अधिकारो से युक्त पैदा किया है, जिनका अपहरण नही किया जा सकता। अमेरिकन लोग ईश्वर को अपने अधिकारो का मूलोद्गम मानते थे, इसलिए इन अधिकारो की रक्षा को अपना राजनीतिक, और साथ ही धार्मिक, कर्त्तव्य मानना उनके लिए स्वभाविक ही था। इसके अलावा अमेरिकन अपने छोटे-से इतिहास मे भी यह देख चुके थे कि धार्मिक और राजनीतिक स्वतन्त्रताएँ एक-दूसरी के साथ मिली हुई है। इन दोनो प्रकार की स्वतन्त्रताओ की अविच्छिन्नता के कारण ही उन्हें अपनी धार्मिक स्वतन्त्रता और इच्छानुसार पूजा के अधिकार को पाने के लिए अलग बस्तियाँ बसानी पड़ी थी और उस अधिकार के आधार पर ही उन्होने उनमे स्वशासन कायम किया था।

उनके लिए पूजा की स्वतन्त्रता का अर्थ था शासन की स्वतन्त्रता और शासन की स्वतन्त्रता का अर्थ था पूजा की स्वतन्त्रता। जो व्यक्ति अपने नागरिक कर्त्तव्यो का पालन नही करता था उसे अपने नैतिक कर्त्तव्यो से च्युत समझा जाता था। इसके विपरीत जो व्यक्ति अपने नागरिक कर्त्तव्यो का पालन करता था वह आदर का पात्र समझा जाता था। समुदाय और नगर के काम-काज मे भाग लेना ही व्यक्ति के नैतिक मूल्य की कसौटी था और अब भी है।

किन्तु इस मामले मे एक विचित्र विरोधाभास भी है और वह यह कि जहाँ एक ओर धर्म और राजनीति को परस्पर मिलाने की प्रवृत्ति मौजूद है, वहाँ दूसरी ओर चर्च ओर राज्य को अलग-अलग रखने का दृढ संकल्प भी विद्यमान है। हम यह चाहते है कि हमारे नेता धार्मिक हो, अर्थात् उनको ईश्वर मे विश्वास हो, जिसने सब मानवो को समान बनाया है और जिसके नैतिक नियमो और कानूनो से ब्रह्माण्ड का शासन

चलता है—किन्तु हम यह भी चाहते हैं कि वे चर्च और राज्य के मामलों को एक-दूसरे से अलग-अलग रखें। इसी कारण हममे विभागीकरण की, यानी हर काम या आवश्यकता के लिए पृथक्-पृथक् सगठन बनाने की आदत पड़ी है। जब भी हमारे सामने कोई नई समस्या पैदा होती है, (चाहे वह शिशु पक्षाघात की हो, या प्राकृतिक सम्पदाओं के अपव्यय की, या समाज मे अच्छे सगीत के प्रचार की) हम उसके हल के लिए एक नया सगठन बनाते है। हम मे से हर आदमी का व्यक्तित्व मिश्रित है; एक ओर हम किसी सगठन के सदस्य है, तो दूसरी ओर किसी समिति या कोश से भी हमारा सम्बन्ध है। इस प्रकार इस अत्यन्त जटिल और पेचीदा ससार मे हम अनेक छोटे-बडे संगठनो के सदस्य बनकर और उस सदस्यता के द्वारा रू-ब-रू एक-दूसरे के सम्पर्क मे आ कर एक समाज की भावना और अनुभूति को बनाये रखते हैं।

धर्म

ससार मे और कही भी धर्म इतना उर्वर और स्वत स्फूर्त नही पाया गया और न ही किसी अन्य आधुनिक राज्य मे उसने इतना सक्रिय भाग अदा किया है, जितना अमेरिका मे। यहाँ २५० से अधिक धर्म और मतमतान्तर है। इनमे से कुछ के अनुयायी लाखो मे हैं और कुछ के मुट्ठीभर। युनिटेरियन आदि कुछ धार्मिक सम्प्रदाय बुद्धिवादी है और बाकी महज शोर-गुल मचा कर और शारीरिक कसरत कर के ही अपने धार्मिक विश्वास का प्रमाण देते है।

सभी धार्मिक विश्वासो के चर्चो की सदस्य सख्या दस करोड के लगभग है। हमारे समूचे इतिहास मे कुल आबादी की तुलना मे चर्च के सदस्यो का अनुपात हमेशा बढता रहा है और अभी हाल के वर्षो मे यह अनुपात पहले की अपेक्षा भी अधिक तेजी से बढा है। सन् १९५० और १९५४ के बीच चर्च की प्रार्थनाओ मे भाग लेने वालो की सख्या मे ९० लाख की वृद्धि हुई है। मजदूरो की अपेक्षा दफ्तरो मे काम करने

वाले बाबू और कालेजों में न जाने वालो की अपेक्षा कालेजो में जाने वाले गिरजाघरो में अधिक नियमित रूप से जाते हैं।

कुछ उग्रतम धार्मिक विश्वास, जैसे मॉर्मन (चर्च ऑफ जीसस क्राइस्ट लेटर डे सेंट्स) और क्रिश्चियन साइटिस्ट, विशुद्ध अमेरिका की उपज हैं। कुछ अन्य धर्म, जैसे बैप्टिस्ट और कांग्रिगेशनलिस्ट अमेरिका की उपज न होने पर भी यहाँ एक विशेष ढंग से विकसित हुए है। रोमन कैथलिक, लूथरन, एपिस्कोपेलियन और यहूदी धर्म यूरोप से ही बने-बनाये रूप मे अमेरिका में आये हैं, किन्तु उनके आप्तो की व्याख्याओ के अनुसार उनमें प्रचलित स्वैच्छिक सगठनो के अनुकूल परिवर्तन होता रहा है।

धार्मिक विश्वासो और आचरणो की विविधता से सामाजिक जीवन में विविधता और वैचित्र्य आता है और साथ ही उससे धार्मिक सहिष्णुता की भावना भी पैदा होती है। यह एक विचित्र बात है कि जहाँ धर्मों में इतनी विविधता होती है, वहाँ धार्मिक विश्वासो के तर्क और कर्मकांडो का महत्त्व अधिक नही रहता। यही कारण है कि हर धर्म की खास-खास बातो को लेकर तरह-तरह के मजाक और चुटकुले बने हुए है (जैसे बैप्टिस्टो के सिर तक पानी मे गोता लगाने, कैथलिको के मछली-भक्षण वाले शुक्रवार और यहूदियो के खतने को लेकर अनेक मजाक प्रचलित हैं)। इन धार्मिक मजाको का नतीजा यह है कि धार्मिक मतभेद विनोद मे डूब कर अपना महत्त्व खो देते हैं। अगर कभी मतभेद और तनाव पैदा होते भी है तो वे धार्मिक विश्वासो की भिन्नता के कारण नही, बल्कि इस भय से पैदा होते है कि कही एक धार्मिक वर्ग राजनीतिक नियन्त्रण प्राप्त कर दूसरो पर हावी न हो जाए।

अमेरिका मे मोटे-तौर पर ७ करोड अमेरिकन ऐसे हैं, जिनका किसी चर्च से सम्बन्ध नही है। लेकिन यूरोप की तरह अमेरिका मे चर्च के सदस्यो और चर्च से सम्बन्ध न रखने वालो मे कोई भारी भेद नही है। बहुत-से लोग पहले किसी समय चर्चो के सदस्य थे, परन्तु बाद मे

वे उनसे अलग हो गये। बहुत-से लोग बड़े शहरो मे रहते है, इसलिए उनके अपने अलग छोटे समाज नही बन पाते, और इसका परिणाम यह होता है कि उनके सम्बन्धो मे वैयक्तिकता नही हो पाती। कुछ व्यक्ति चर्चो की शिक्षाओ और कर्मकाँडो के विरोधी है और उनकी बहुत सी बातो को पाखण्ड समझते है। कुछ का यह विश्वास है कि धर्म का विज्ञान के साथ किसी भी तरह तालमेल नही हो सकता। कुछ यह कहते है कि जब मुक्ति के इतने अधिक मार्ग है तो यह चुनाव कैसे किया जा सकता है कि अमुक मार्ग ही सही है। कुछ लोग व्यक्तिवादिता को इतनी दूर तक खीच ले जाते है कि वे किसी भी धर्म या किसी भी सगठन मे शामिल नही होते—उनका यह विचार अमेरिकन लोकतन्त्र की अत्यन्त दु खद और गलत व्याख्या है। अधिकतर लोग इस मामले मे बिल्कुल उदासीन और तटस्थ है। उनका न धर्म से विरोध है और न धर्म के प्रति आस्था; वे उससे सिर्फ इसलिए अलग रहते है कि झझट मे पडना उनके बस का नही है।

हमने इस बात को बहुत अधिक महत्त्व दिया है कि धर्म हमारी राष्ट्रीय एकता मे दखल न दे। इसीलिए हमने धर्मो की विविधता के विभेदक और विभाजक परिणामो पर बल न देकर धर्म की ऐक्य-स्थापक प्रकृति पर ही बल दिया है। सब मनुष्य भाई-भाई है और ईश्वर सब का पिता है, यह विश्वास धर्मो मे समान रूप से विद्यमान है। हम धर्म का वह उदार व्यापक रूप पसन्द करते हैं जो सबको स्वीकार हो, हमे धार्मिक तर्कों के वे विविध और परस्पर-विरोधी रूप पसन्द नही है, जो अन्त मे हमे छोटे-छोटे टुकडो मे बाँट देंगे। अपने इतिहास के परिणामस्वरूप हमारी यह स्वाभाविक प्रवृत्ति हो गई है। पहले हमारे देश मे तेरह कालोनियाँ थीं, जो सब अलग-अलग थी और बाद मे उन के एक हो जाने के उपरान्त भी हमारे यहा गृह-युद्ध छिड गया, जिससे देश के दो हिस्सो मे बँटने की आशका पैदा हो गई। यही कारण है

कि अब आपसी झगडो और विवादो की उपेक्षा कर मतैक्य स्थापित करने की प्रवृत्ति हममें पैदा हो गई है।

इसका परिणाम यह है कि अन्य देशो से आने वाले लोग यह अनुभव करते हैं कि शायद हमारे पास अपने निज के कोई पृथक् विचार नही है और न हममे चिन्तन की बौद्धिक क्षमता है। परन्तु वास्तविकता यह है कि हमारे इस निरन्तर प्रयत्न ने कि सभी विचारो, सभी धर्मो और सभी सस्कृतियो को अपने यहाँ स्थान दिया जाए, हमे बहुत अधिक सहिष्णु बना दिया है। अब हम छोटे-छोटे झगडो और विवादो को बर्दाश्त नही कर पाते और अधिक व्यापक सौहार्द और सौमनस्य के लिए उत्सुक रहते है। हमारे लिए आखिर कौन-सी चीज अधिक महत्त्वपूर्ण है ? क्या यह मान्यता कि प्रार्थना करते समय शराब खून बन गई या यह कि एक भगवान् की सब सन्ताने भाई-भाई है ? दर-असल चर्च जब ह्रास की ओर जाता है तो उसकी प्रार्थनाओ और सभाओ मे शामिल होना भी धार्मिकता का एक प्रदर्शन और आडम्बर मात्र रह जाता है—लोग तब सच्ची धार्मिक प्रेरणा पाने के बजाय सामाजिक दबावो के कारण समाज मे लाभ प्राप्त करने के लिए ही चर्च मे जाते है।

अमेरिकन लोग अन्य सब चीजो की भाँति धर्म को भी उसके परिणामो से नापते है। यदि धर्म इन्सानो को अधिक अच्छे इन्सान बनाता है, यदि धर्म की प्रेरणा से वे अच्छे कर्म, अच्छे विचार और सदाचरण मे प्रवृत्त होते हैं, तो वह समर्थनीय धर्म होता है। धर्म को भी कुछ करके दिखाना है। यह जरूरी है कि उससे समाज मे नैतिकता, शान्ति और व्यवस्था कायम हो और वैयक्तिक दृष्टि से भी लोग जीवन मे अधिक सफल हो। और वह अपने इस लक्ष्य को पूरा करता भी है।

सर्वेक्षणो से मालूम हुआ है कि जो विवाहित दम्पति गिरजाघर मे नियमित रूप से जाते है, उनका दाम्पत्य-जीवन अधिक सुखी और सफल होने की आशा रहती है। जो लोग किसी धर्म से सम्बन्ध नही

रखते, उनमे धार्मिक प्रकृति के लोगों की अपेक्षा गृहस्थ-जीवन की असफलता और तलाक की घटनाएँ तीन गुनी अधिक होती है।

सामाजिक सुधार की प्रेरणा भी चर्चों से ही प्राप्त होती है। नई आबाद बस्तियो मे सामाजिक सर्वेक्षण और समाज-सेवा को पेशा बनाने की प्रवृत्ति मुख्यतः धार्मिक प्रेरणा का ही परिणाम थी, हालाँकि उसके मूल मे कुछ अन्य कारण भी थे। यह सम्भव है कि ऊपर-ऊपर से सरसरी तौर पर देखने वाले व्यक्ति को किसी बडे स्वास्थ्य केन्द्र मे, जैसा कि ईस्ट हार्लेम (न्यूयार्क) मे है, कोई धार्मिक तत्त्व या पृष्ठभूमि नज़र न आये, परन्तु यह केन्द्र एक लाख से अधिक व्यक्तियो को शिक्षा, रोग-निदान, रोग-निवारण, स्वास्थ्य की देखभाल आदि की सुविधाएँ प्रदान करता है और तेईस विभिन्न सगठनो की प्रवृत्तियो का समन्वय करता है। रोग और ताप को दूर करना और लोगो को स्वस्थ और समाज के योग्य बनाना अपने आप मे नैतिक दृष्टि से एक मूल्यवान और महत्त्वपूर्ण कार्य है। सयुक्त राज्य मे, जहाँ धर्म भी फल और परिणामों की कसौटी पर कसा जाता है, सच्चा धर्म वह नही होगा, जिसमे दार्शनिक तर्क बहुत ऊँचे और सबल है, बल्कि सच्चा धर्म वह होगा जो लोगो मे नैतिकता और सदाचरण पैदा करता है।

कर्म का सिद्धान्त यह मानता है कि मनुष्य स्वय प्रयत्न करके अपनी परिस्थितियो और भाग्य को सुधार सकता है और ऐसा करना नैतिकता के विरुद्ध नही है। इस प्रकार धर्म अपने प्रभाव से अमेरिकन आशा-वादिता और पूर्णतावाद को दृढतर बनाता है। यद्यपि कैल्विनवादी दृष्टिकोण मे एक प्रकार की निराशावादिता है और राइनहोल्ड नीबूर जैसे धर्मशास्त्रकारो ने मानवीय परिस्थितियो को पापपूर्ण और दुःखमय बताने का प्रयत्न किया है, तो भी चर्चों ने हमेशा यह स्वीकार किया है कि मनुष्य मे पूर्णत्व प्राप्त करने की क्षमता है और इसीलिए उन्होंने सामाजिक और वैयक्तिक जनकल्याण के कार्यक्रमो पर बल दिया है।

क्या संयुक्त राज्यमें वर्ग-भेद है ?

हर समाजशास्त्री इस प्रश्न का अपने-अपने ढग से उत्तर देता है। मार्गरेट मीड का कहना है कि अमेरिकन प्रणाली का वर्णन विना वर्गों के भी किया जा सकता है, क्योकि यहाँ वास्तव मे वर्ग-प्रणाली नही है। लॉयड वार्नर और पॉल लुट ने याकी नगर का विस्तृत वर्णन करते हुए उसमे ऊँच-नीच के क्रम से छः वर्ग बताये हैं। इसी प्रकार परिवार, गुट, सघ, आर्थिक स्थिति, स्कूल, चर्च और राजनीतिक दलीय निष्ठा, इन सात भेदो की दृष्टि से उन्होने अमेरिका मे व्यक्ति की ८९ स्थितियो का वर्णन किया है। किन्तु ऊपर जिन छः वर्गों का उल्लेख किया गया है, वे अपने साथ के वर्ग से ऐसे मिले और गुँथे हुए है कि उनके बीच में कोई स्पष्ट विभाजक रेखा नही खीची जा सकती और एक वर्ग का व्यक्ति कभी ऊपर के वर्ग में और कभी नीचे के वर्ग में चला जाता है। इसलिए यह कहना अधिक बेहतर होगा कि अमेरिकन समाज एक तरह की सर्पिल सीढी है जिसमें बहुत-से सोपान है और इन सोपानो पर हर वक्त स्त्री-पुरुष ऊपर-नीचे आ-जा रहे है और एक-दूसरे मे घुल-मिल रहे हैं।

अमेरिका के अधिकतर नागरिक और सक्रिय सामाजिक नेता उच्च-मध्य वर्ग में आते हैं। यही वर्ग अमेरिकन समाज का असली मध्यवर्त्ती मेरुदण्ड है। इस वर्ग से ऊपर कुछ धनी लोग है, जिन्होने विरासत में या स्वय परिश्रम से उपार्जन कर धन प्राप्त किया है। ये लोग अच्छे कार्यो के लिए अपना धन या अपना नाम देते है, किन्तु समाज में अधिक मिलते-जुलते नही हैं। उच्च-मध्य वर्ग से नीचे के समाज मे अनेक वर्ग आते है। सबसे नीचे का वर्ग वह है जिसके सदस्य समाज के जीवन मे कोई हिस्सा नही लेते, अक्सर बेरोजगार और कानून की पकड में रहते हैं, गन्दे मकानो में अपने दिन काटते है, अनपढ और अशिक्षित हैं और जिनका पारिवारिक जीवन बहुत अस्थिर रहता है। ये सब अयोग्यताएँ और असमर्थताएँ अन्य वर्गो के प्रति उस में चिढ का भाव

पैदा करती है और इनसे उत्पन्न भेद-भाव उसे अन्य वर्गों से और भी दूर और पृथक् करता है। जो वर्ग समाज के इस क्रम में ऊँचा है, वह नीचे के वर्ग के लोगो को अपने भीतर नही आने देता। यहाँ तक कि गिरजाघर और स्कूल में भी समानता नाममात्र की है। गरीब और निम्न वर्गों के बच्चो को स्कूल में जल्दी ही यह मालूम हो जाता है कि उनके परिवार नीचे समझे जाते है, इसलिए वे स्वय भी नीचे है। इस स्थिति के प्रति उनके मन मे बहुत तीखी और कडवी प्रतिक्रिया होती है और वह उनमें अपराधी वृत्ति पैदा कर देती है।

किसी भी सामाजिक प्रणाली के बारे में एक विशिष्ट तथ्य यह है कि उसके लिए सब व्यक्तियो की समानता भी जरूरी है और हर व्यक्ति का अलग-अलग दर्जा होना भी आवश्यक है, लेकिन आवश्यक होने पर भी ये दोनो चीजें प्रकृत्या परस्पर-विरोधी है। हमारे आदर्श उन सब साधनो मे अन्तर्निहित है जो समाज मे समानता लाते हैं। किन्तु इसके बावजूद यदि समाज मे व्यक्तियो के ऊँचे दर्जे न हो तो लोगो को प्रयत्न और उन्नति करने की प्रेरणा कभी मिले ही नही। अमेरिका का भविष्य का स्वप्न समानता और ऊँचे-नीचे दर्जे के आदर्शो मे समन्वय स्थापित करता है। इस समन्वय से ही उसने हमे लिंकन जैसा व्यक्ति दिया, जिसका जन्म बहुत साधारण घर मे हुआ, किन्तु जो अपने परिश्रम से राष्ट्र के उच्चतम पद पर पहुँच गया।

यद्यपि विवाह लोग अपनी समान स्थिति के लोगो मे करते है, परन्तु कुछ लोग अपने वर्ग से बाहर भी शादी करते है जिससे समाज के विभिन्न वर्गों मे सचलता बनी रहती है। एक सर्वेक्षण मे यह पाया गया कि जितने लोगो से पूछताछ की गई, उनमे से आधे छोटे व्यवसायी थे, जिन्होने उच्च-आय वर्गो मे शादिया की थी, किन्तु चालीस प्रतिशत व्यक्ति ऐसे भी पाये गये, जिन्होने वेतन-भोगी लोगो की लडकियो से विवाह किये थे। नवयुवक आम तौर पर समाज मे बहुत उठते-बैठते और

मिलते-जुलते हैं, इसलिए जो युवक-युवतियाँ एक-दूसरे के प्रणय मे बंध कर विवाह का वचन दे देते हैं, उनके परिवार सहज मे यह अनुमान नही लगा सकते कि उनके दामाद या पुत्र-वधू के परिवार सामाजिक स्थिति की दृष्टि से किस दर्जे मे आते है।

इसके अलावा कुछ अन्य बातें भी है जो इस वर्ग-भेद को मिटाने या कम करने मे सहायता देती हैं।

हो सकता है कि एक व्यक्ति व्यवसाय या धन्धे की दृष्टि से निचले दर्जे मे आता हो, किन्तु उसकी यह कमी नगर या समाज के मामलो मे उनके महत्त्वपूर्ण भाग लेने के कारण पूरी हो सकती है।

नगरो के बडे होने और लोगो के निरन्तर सचल रहने से यह ठीक-ठीक हिसाब लगाना असम्भव है कि किसी व्यक्ति का दर्जा क्या है।

बेसवाल के खिलाडियो, श्रमिक नेताओ, पुरस्कार के लिए प्रतियोगिताओ मे भाग लेने वालो और जनता का मनोरजन करने वाले गायको, वादको एव नर्तको को बडे-बडे वेतन देना यह स्पष्ट कर देता है कि समाज सिर्फ उन्ही लोगो को पुरस्कृत नही करता जो ऊँचे घरानो में पैदा हुए हैं या उच्च शिक्षा-प्राप्त हैं।

पहरावा, तौर-तरीके, बोलचाल का ढग और मनोरजन सारे देश मे और सब वर्गों मे एक जैसे होते जा रहे है।

सार्वजनिक शिक्षा, मनोरजन की सुविधाएँ, मतदान, सैनिक सेवा, जूरी का कर्त्तव्य, सार्वजनिक पदो के लिए चुनाव, पुलिस का सरक्षण और कानून, इन सभी महत्त्वपूर्ण क्षेत्रो मे सब लोगो को समान अधिकार प्राप्त हैं।

इन सब कारणो से सयुक्त राज्य मे वैसा वर्ग-भेद प्राय नही है जैसा कि मार्क्स समझता था। यहाँ श्रमिको को प्रबन्धको और उच्च अधिकारियो के प्रति रोष और विरोध प्रकट करने का अधिकार है। यदि उनके लिए और आगे उन्नति के द्वार खुले न हो तो वे

निराशा की भावना अनुभव कर विरोध प्रकट कर सकते हैं। गरीबी, बेरोजगारी, अप्रिय काम या अस्थिर पारिवारिक जीवन भी हमारी सामाजिक तस्वीर मे मौजूद है और लोगो को प्राप्त अवसरो और विशेषाधिकारो मे भी काफी अन्तर है। परन्तु इस सब के बावजूद यहाँ बिल्कुल स्पष्ट और कट्टर वर्गभेद नही है।

किन्तु एक बात मे अमेरिकन समाज बहुत असफल रहा है और वह यह है कि नीग्रो लोगो को वह समान अवसर नही दे सका है। जिस समय ये नीग्रो लोग अपने ही सजातीयो द्वारा अफ्रीका मे गुलामो के रूप मे बेचे गये थे, उस समय से लेकर अमेरिका के दक्षिणी राज्यो मे उनके साथ स्वतन्त्र होने पर भी भेदभाव किये जाने और उन्हे दूसरे दर्जे की नागरिकता दिये जाने तक का सारा इतिहास दुनिया को ज्ञात है। किन्तु इस बात की ओर लोगो का उतना ध्यान नही गया जितना जाना चाहिए, कि हाल के कुछ वर्षों में इस दिशा में भी सुधार हुआ है।

उदाहरण के लिए नीग्रो लोगो मे निरक्षरता बहुत कम हो गई है। सन् १८६० मे जहाँ ९७ प्रतिशत नीग्रो निरक्षर थे, वहाँ १९५२ मे दस प्रतिशत से भी कम निरक्षर रह गये।

सयुक्त राज्य मे १,२८,००० नीग्रो कालेजो मे पढते है। यह सख्या जर्मनी के कालेजो मे पढने वाले जर्मनो की कुल सख्या से भी अधिक है।

सयुक्त राज्य मे नीग्रो लोगो के पास उससे अधिक कारें हैं, जितनी कि २१ करोड ६० लाख आबादी के सारे रूस मे है या अफ्रीका मे रहने वाली कुल १९ करोड ३० लाख नीग्रो आबादी के पास है।

सेना में गोरे और नीग्रो अमेरिकनो मे कोई भेदभाव नही किया जाता।

सन् १९४० के बाद नीग्रो लोगो के वेतन ४०० प्रतिशत बढे हैं जबकि गोरो के वेतन कुल २५० प्रतिशत ही बढ पाये हैं।

सन् १६३० के वाद कालेजो में पढने वाले नीग्रो लोगो की संख्या २५ गुनी हो गई है। सन् १६०० के वाद गोरे छात्रो की सख्या में हुई वृद्धि की अपेक्षा नीग्रो छात्रो की सख्या में हुई वृद्धि छ गुनी रही है।

उच्चतम न्यायालय ने आदेश दिया है कि सार्वजनिक स्कूलों में नीग्रो लोगो की भरती में भेदभाव बिल्कुल खत्म कर दिया जाय और सार्वजनिक वाहनो में उनके लिए अलग सीटो की व्यवस्था भी समाप्त कर दी जाए।

लगभग दो लाख नीग्रो लोगो के पास औसतन ७८ एकड़ के अपने निज के फार्म हैं।

सन् १६०० में केवल १ प्रतिशत नीग्रो उद्योगो में काम करते थे, परन्तु आज उनकी सख्या ३० प्रतिशत से भी अधिक (१५ लाख) है। देश की श्रमिक यूनियनो की कुल सदस्य सख्या १ करोड़ ६० लाख है जिसमे से १२,५०,००० नीग्रो है।

इस समय ६३ सरकारी कमीशन और ३४५ अर्ध-सरकारी सस्थाए जातीय सम्बन्धो को सुधारने में लगी हुई हैं।

दक्षिणी राज्यो मे अनेक नीग्रो गोरे मतदाताओ के मतो से नगर परिखदो में चुने गये हैं। नीग्रो लोग राज्यो के विधान-मडल और काँग्रेस, दोनो के सदस्य हैं। नीग्रो नेता राल्फ वच सयुक्त राष्ट्र सघ में अवर सचिव के पद पर है। वडी-वडी दुकानें, टेलीफोन विभाग, सघीय सरकार और अन्य अनेक सस्थाए और सगठन विना किसी भेदभाव के नीग्रो लोगो को भी अपने यहाँ काम पर रखते हैं। मैरियन ऐंडरसन और लुई आर्मस्ट्रौग जैसे नीग्रो कलाकार और सार्वजनिक मनोरजनकर्त्ता राष्ट्र के जीवन को समृद्ध बना रहे है और सारे ससार मे विख्यात हैं। नीग्रो मतदाताओ की उपेक्षा करके आज कोई भी राजनीतिक दल सत्तारूढ नही रह सकता।

आत्मीयजनो के प्रति पक्षपात और वेगानो के साथ भेदभाव का रोग सारे ससार मे विद्यमान है और उस आदिम युग से चला आ रहा

है, जब लोग यह समझते थे कि बाहर से आने वाले लोग अपने साथ रोग और बुराइयाँ लेकर आते है और सारे समाज को खराब कर सकते हैं। इसलिए नाना देशो, नाना जातियो और नाना संस्कृतियो से अमेरिका मे आये तमाम लोगो को एक बन्धन मे बाँधना एक बहुत बड़ी सफलता है। किन्तु दुर्भाग्य से कुछ लोगों मे सफलता, सम्मान और मैत्री अर्जित करने मे कामयाब न होने के कारण एक तरह की विद्वेष और घुटन की भावना पैदा हो जाती है और उस दबी हुई भावना का गुबार वे अपने से भिन्न लोगो पर निकालने लगते हैं।

ससार मे सर्वत्र पायी जाने वाली यह मनोवैज्ञानिक विकृति अमेरिका मे नीग्रो लोगो को गोरो का शिकार बनाती है। किन्तु अभी कुछ समय से नीग्रो लोग कारखानो की यन्त्र-जन्य सम्पदा और प्राकृतिक लोकतन्त्री समानता से लाभान्वित होने लगे है। दोनो विश्व युद्धो के दिनों मे, और उनके मध्यवर्त्ती काल मे भी, बडे पैमाने पर नीग्रो लोगो के उत्तर की ओर जाने से ही यह बात सम्भव हो सकी है (१६१०और १६४५ के बीच तीस लाख नीग्रो दक्षिण से उत्तर मे गए हैं)। दक्षिण मे यद्यपि औद्योगिक विकास बहुत देरी से प्रारम्भ हुआ है, परन्तु अब उसकी रफ़्तार मे जो तेजी आई है, वह भी अन्ततः इस भेदभाव को मिटाकर समानता लाने मे सहायक होगी।

आज भी दक्षिणी राज्यो मे अनेक नीग्रो गोरो से आगे हैं। जातीय सम्बन्धो मे एक महत्त्वपूर्ण तत्त्व आज नीग्रो लोगो के एक उच्च-मध्य वर्ग का उदय है। यह वर्ग सम्पन्न भी है और उच्च-शिक्षित भी। इस वर्ग की उपस्थिति ही पुराने अशिक्षित, कुण्ठित और महत्त्वाकाक्षाहीन नीग्रो वर्ग को धीरे-धीरे खत्म कर देगी। और यह नया नीग्रो उच्च-मध्यवर्ग नीग्रो लोगो के समानाधिकार के सघर्ष मे बुद्धिमत्तापूर्ण नेतृत्व भी प्रदान कर सकेगा।

अच्छा सामुदायिक जीवन

नागरिक समाज मे कानून और सरकार का क्या स्थान है, इसका विस्तृत विवरण करने की गु जायश यहाँ नही है। इस बारे मे हम काफी

सकेत दे चुके हैं कि अधिकतर नागरिक स्वशासन स्वैच्छिक होता है, यानी लोग बहुत कम वेतन लेकर या बिल्कुल वेतन लिये बिना नागरिक शासन चलाते है। ये लोग पेशेवर प्रशासक नही होते। नागरिक स्व-शासन सम्बन्धी निर्णयों का उत्तरदायित्व किसी एक व्यक्ति को देने के बजाय अक्सर कुछ लोगो के एक बोर्ड को दिया जाता है और न्यू इग्लैंड मे तो निर्णय सारे कस्बे की जनता के मतो से ही किया जाता है। प्रयत्न यह किया जाता है कि किसी व्यक्ति को भी इस ढग से अधिकार न सौंपा जाए कि वह बहुत शक्तिशाली हो जाए। साथ ही किसी भी पद के काम को इतना बडा नही होने दिया जाता कि उसे आदमी अपने खाली समय मे न सभाल सके। आम तौर पर २५ हजार तक की आबादी का मेयर अशकालिक अधिकारी होता है। यदि किसी को उससे काम के घटो मे मिलना हो तो उसे दवाओ की दुकान मे या बीमा कम्पनी के दफ्तर मे जाना होगा, जहाँ मेयर काम करता है।

सयुक्त राज्य मे स्थानीय स्वशासन की १,१७,००० इकाइयाँ है। इनमे से आधी से अधिक इकाइयाँ शैक्षणिक जिलो के रूप मे हैं। इतनी बडी सख्या से यह जाहिर है कि अमेरिकन लोग स्थानीय स्वशासन को कितना महत्त्व देते हैं।

पाँच हजार से कम आबादी के अनेक कस्बो मे स्थानीय पुलिस नही है, उन्हे, इसकी जरूरत ही नही है। अपराधो को रोकने या अपराधियो को दण्डित करने की समस्या पैदा ही तब होती है जब कस्बा बडा हो जाता है। छोटे कस्बो मे हर आदमी एक-दूसरे को जानता है, इसलिए वहाँ सामाजिक नियन्त्रण स्वय बना रहता है। बडे नगरो मे यह बात नही होती। एकाकीपन एव समाज मे अच्छी स्थिति और मान्यता क अभाव ही अक्सर अपराध की भावना पैदा करते है। गन्दे और गरीबी से भरे घर, अज्ञानी और अशिक्षित माता-पिता, गन्दगी और बीमारी युवको मे अपराधी वृत्ति का कारण होते है। इसलिए गन्दी बस्तियों का उन्मूलन और रहन-सहन के स्तर को ऊँचा उठाना इस समस्या के

सर्वोत्तम हल समझे जाते हैं। दूसरा हल है ऐसे सामाजिक सगठनों का निर्माण जो परिवारो को अच्छी सलाह दे सके और इस तरह की समस्या को खतरे की सीमा तक पहुँचने से पहले ही पकडकर नियन्त्रित कर सके। एक तीसरा उपाय भी है और वह यह है कि कुछ स्वयसेवक दल तैयार किये जाएँ जो मैत्रीपूर्ण तरीको से दलित और शोषित वर्ग के लोगो को समझा-बुझाकर सही रास्ते पर ला सके।

आदमी का अपना गृह-नगर (होम-टाउन) अमेरिकन जीवन का एक विशेष महत्त्वपूर्ण प्रतीक है। आम तौर पर आदमी जहाँ रहता और काम करता है, वह उसका गृह-नगर नही होता, गृह-नगर वह होता है जहाँ का कोई आदमी असली निवासी होता है। इसका कारण यह है कि सामान्यतः अमेरिका मे लोग जिस नगर के निवासी होते है, वहाँ से कही बाहर बडे नगर मे जाकर काम करते है। गृह-नगर केवल आदमी के रहने का ही स्थान नही होता, वह व्यक्ति का परिवार होता है, उसके नेता उसके पिता की तरह होते है, उसके निवासी विभिन्न सभा-सोसाइटियो और स्वैच्छिक सगठनो के द्वारा उसके साथ भ्रातृत्व के बन्धन मे बधे होते है और वह नगर ही उनका पोषण और रक्षा करने के कारण उनके लिए मातृ-स्थानीय होता है। वह उन मे एक "समुदाय और समाज की भावना" और एक स्थानीय गर्व पैदा करता है।

समाज, समुदाय या नगर कोई अमूर्त्त वस्तु नही है, वह एक सजीव वस्तु है। वह वैयक्तिक और सामाजिक आवश्यकताओ मे समन्वय स्थापित करता है और व्यक्ति के व्यक्तित्व का उन समूहो मे, जहाँ वह उठता-बैठता, मिलता-जुलता या काम करता है, विस्तार कर उसे ऊँचा और बड़ा बनाता है। नृतत्त्व-विशारद राल्फ लिटन का कहना है: "अधिक-तर लोगो को ऐसी सामाजिक इकाई मे जीवन सन्तोपजनक लगता है, जो न इतनी छोटी हो कि उसके पारस्परिक व्यक्तिगत सम्बन्धो मे विविधता

न आ सके और न इतनी बडी हो कि उसके अधिकतर सदस्यो के साथ व्यक्तिगत सम्पर्क और परिचय सम्भव न हो।"*

यही बात अधिकतर अमेरिकनो के बारे मे है, जो अपने परिवार, चर्च, नगर, सहपाठियो, पड़ोसियो, हम-पेशा लोगो, सहकर्मियो, सामाजिक क्लब, राज्य, क्षेत्र और राष्ट्र के साथ अनेक तरह से भावनात्मक सम्बन्धों और कर्त्तव्य के बन्धनो मे बधे रहते है।

उनकी यह धारणा है कि एक लोकतन्त्री समाज मे सही अर्थों मे सौहार्द एकता से नही, बल्कि विविधता से, पारस्परिक सगठनो की बहुलता से, और देश को अनेक स्वशासित इकाइयो मे बाटकर उन्हें सत्ता देने से, स्थापित हो सकता है। इस प्रकार की प्रणाली और व्यवस्था का तरह-तरह के तनावो, खिचावो, मतभेदो और सघर्षो से भरी रहना स्वाभाविक है। किन्तु ऐसा लोकतन्त्री समाज गतिशील होता है। निरन्तर गति के कारण वह शक्तिशाली होता है, सब तरह के दबावो और खिचावो के प्रति सवेदनशील, और परिवर्तन की आवश्यकता के प्रति सजग रहता है। वह आत्म-नियमन और आत्म-नियन्त्रण करता है और जब किसी सगठन को भविष्य के लिए अनावश्यक समझता है, तो उसे खत्म भी कर देता है।

यह सामाजिक व्यवस्था सरकार की प्रतीक्षा नही करती, बल्कि अपने ही भीतर से शक्ति पैदा करती है। अगर यह दिखाई दिया कि किसी अमेरिकन नगर मे गन्दी बस्तियाँ उठ खडी हुई हैं और सामाजिक जीवन को खतरा पहुँचा रही है तो तुरन्त ही उनके उन्मूलन या सुधार के लिए "हमारे पडोस को सुधारने के लिए अमेरिकन समिति" नाम का एक सगठन स्थापित हो गया। अगर बाल अपराध की समस्या विकराल रूप धारण करती दिखाई दी तो नगर ने उसके समाधान के लिए अपने सब धार्मिक, सामाजिक, मनोरजन सम्बन्धी और शैक्षणिक

---

*दि स्टडी ऑफ मैन, पृष्ठ २१८।

साधनो को एकत्र किया, अपने विविध सगठनो के प्रतिनिधियो को बुलाया और एक कार्यक्रम तैयार कर डाला।

समाज और समुदाय की भावना, एक मानवीय समूह के सम्बद्ध होने की अनुभूति अमेरिकन व्यक्तित्व मे बहुत गहरी बैठी हुई है और उसकी जड अमेरिका के इतिहास और मनोवृत्ति मे निहित है। सयुक्त राज्य को तब तक पूरी तरह नही समझा जा सकता, जब तक उसके स्थानीय समाज—नगर या ग्राम के समाज—की जटिल रचना को भली-भाँति न समझ लिया जाए।

शिक्षा

अमेरिकन जीवन मे अन्य बहुत-सी अभिवृत्तियो और सस्थाओ की भाँति शिक्षा सस्थाओ का जन्म भी धर्म से हुआ है। यद्यपि गवर्नर बर्कले सत्रहवी शताब्दी मे यह गर्व कर सकता था कि उसके राज्य वर्जीनिया मे कोई सार्वजनिक स्कूल नही है, इसलिए यहाँ के युवको का मन खतरनाक शिक्षा से भ्रष्ट होने की कोई आशका नही है, तथापि न्यू इग्लैंड ने १६४७ मे ही स्कूलो मे पढना बच्चो के लिए अनिवार्य कर दिया था जिसका उद्देश्य पुराने दिमागी शैतान के कुचक्रो को रोकना और गिरजाघरो के लिए विद्वान पादरी तैयार करना था। जब समूचे न्यू इग्लैड मे और उससे परे के पश्चिमी क्षेत्र मे नई बस्तियाँ बसाने के लिए अनुदान के रूप मे जमीने दी गई तब उनका कुछ भाग स्कूलो का खर्च निकालने के लिए अलग कर लिया गया। शुरू-शुरू मे स्कूल बहुत साधारण किस्म के थे, उनमे सिर्फ भाषा और गणित की बुनियादी बाते ही सिखाई जाती थी और वे साल मे कुछ ही महीने खुले रहते थे। किन्तु उन्होने इस सिद्धान्त की स्थापना अवश्य की कि हर व्यक्ति को शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार है। इन स्कूलो ने ही विश्व को सार्वभौम सार्वजनिक शिक्षा का सिद्धान्त देकर नेतृत्व प्रदान किया। (सार्वजनिक पुस्तकालयो और स्त्रियो के लिए उच्च शिक्षा का भी सयुक्त राज्य मे ही सबसे पहले आरम्भ हुआ)।

सुसस्कृत यूरोप मे सस्कृति और विद्या से वचित रहने के कारण इन दोनो की भूख ही बहुत-से लोगो को अमेरिका मे खीच लायी थी। संस्कृति और विद्या की इस दरिद्रता ने अमेरिकन समाज पर, खासकर उसकी शिक्षा-प्रणाली पर भारी बोझ डाला। इसीलिए अमेरिका मे

अभिजात वग का सस्कृति से विल्कुल भिन्न लोक-सस्कृति के कुछ नये लक्षण पैदा हुए, जिन्हे आज के अभिजातवर्गीय यूरोपीय लोग नापसन्द करते है।

सयुक्त राज्य मे शिक्षा एक निश्चित प्रणाली के रूप मे नही है और न सघीय सरकार का उस पर कोई नियन्त्रण है। यद्यपि यह हमारे लोकतन्त्र का सबसे शक्तिशाली साधन है, फिर भी इसमे न कोई नियन्त्रण करने वाली उच्च सत्ता है, न मार्ग-दर्शन के लिए शिक्षा-शास्त्रियो की कोई परिषद्, न कोई सार्वदेशीय पाठ्यक्रम है, न अध्यापको को प्रशिक्षण के प्रमाण-पत्र देने की कोई विधि; न ग्रेजुएटो के लिए शिक्षा का कोई सामान्य स्तर निर्धारित है और न ही कोई निश्चित पाठ्य-पुस्तके। अमेरिका मे शिक्षा के क्षेत्र मे विविधता को बहुत मूल्य-वान समझा जाता है। हर स्थानीय स्कूल, हर छोटे से छोटे कालेज और हर बडे विश्वविद्यालय को अपने लक्ष्य स्वय निर्धारित करने का अधिकार है।

अमेरिकन प्रणाली का केन्द्र-बिन्दु इसका यह विश्वास है कि शिक्षा एक महत्त्वपूर्ण और प्रभावकारी साधन है। आज अमेरिका मे शिक्षा तीन वर्ष की आयु मे या इससे भी पहले प्रारम्भ हो जाती है और प्रौढ-शिक्षा के रूप मे जीवन के अन्त तक चलती है। जो लोग अपने जीवन के अन्तिम दर्शको मे होते हैं उनके लिए शिक्षा के और भी नये-नये कार्यक्रम बनाये जाते है।

स्कूल और घर

शिक्षा का आज सबसे स्वस्थ और अच्छा लक्षण यह है कि लोग स्कूलो मे अधिकाधिक दिलचस्पी लेने लगे है। यह दिलचस्पी अक्सर स्कूलो की शिक्षा-प्रणाली की उग्र आलोचना का रूप धारण कर लेती है और उससे जबर्दस्त विवाद उठ खडे होते है। एक पक्ष का कहना है कि स्कूलो मे हमारे बच्चो को यह शिक्षा दी जानी चाहिए कि लोकतन्त्र मे इन्सान को कैसे रहना चाहिए। दूसरा पक्ष इसे बेहूदगी बताता है।

उसका मत है कि बच्चो को सिर्फ बुनियादी चीज़ो की शिक्षा दी जानी चाहिए—यानी पढना और सोचना। बस इतना ही काफी है।

माता-पिता सोचते हैं कि स्कूलो की शिक्षा मे जरूर कोई खराबी है और अध्यापक भी समाज के असन्तोष को जानकर बेचैन है। इसलिए अमेरिका मे निरन्तर परीक्षण चलते रहते हैं—कुछ मूर्खतापूर्ण और कुछ समझदारी के—और इन परीक्षणो से हम अपनी शिक्षा-प्रणाली का निर्माण और पुनर्निर्माण करते रहते है। परन्तु यह प्रणाली हमारे गतिशील समाज की आवश्यकताओ को अविकल रूप मे पूरा नही कर पाती।

शिक्षा के बारे में कुछ परस्पर-विरोधी विचार और दृष्टिकोण विशुद्ध रूप से टैकनीकल है—मसलन यह कि बच्चो को पढना सिखाने का सबसे अच्छा तरीका क्या है। विचारो और दृष्टिकोणो का दूसरा संघर्ष बुनियादी सास्कृतिक सघर्षो के कारण होता है, क्योकि व्यवसायी वर्ग, श्रमिक सस्थाएँ, चर्च, स्त्रियो की क्लबे, भूतपूर्व सैनिको के सगठन और नागरिक अधिकारो के लिए लडने वाली सस्थाएँ अपने-अपने विचारो को, जो अक्सर एक-दूसरे से मेल नही खाते, स्कूलो के पाठ्य-क्रमो पर थोपने का प्रयत्न करती हैं। लोकतन्त्री और बहुत्ववादी प्रणाली मे इस तरह की खीच-तान अनिवार्य है। शिक्षा को एक ऐसा साधन माना जाता है, जो अनपढ अबोध बच्चो के मन को इस ढग से गढता है कि वे समाज में अपना उचित कर्त्तृत्व निभा सकें। इसलिए हर वर्ग स्कूल को अपने विचार के अनुसार परिवर्त्तित करने और मोड देने का प्रयत्न करता है। अभी हाल में ही 'एक दिन न्यूयार्क स्टॉक एक्सचेंज मे आर० सी० ए० (रेडियो कार्पोरेशन ऑफ अमेरिका) के शेयरो के भाव बोर्ड पर प्रदर्शित किये जाने पर नजदीक के एक छज्जे से खूब जोर की हर्षध्वनि उठी जिससे सारा एक्सचेंज चकित हो गया। यह ध्वनि एक स्कूल के ग्यारह-वर्षीय बच्चो की कक्षा से उठी थी, जिन्होने अभी-अभी शेयर बाजार का पाठ पढा था और उसका क्रियात्मक

अनुभव पाने के लिए थोडे-थोड़े पैसे डालकर आर० सी० ए० के एक शेयर का आर्डर दिया था।

शिक्षक लोग स्वभावतः स्कूल पर चारो ओर से प्रभाव डालने वाली सामाजिक ताकतो की अपेक्षा अधिक उदार होते है, इसलिए स्कूल और शेष समाज के बीच खिचाव रहना अनिवार्य है। शिक्षा शास्त्री और शिक्षक लोग अपने कर्त्तव्य को बहुत गम्भीर भाव से ग्रहण करते है, वे अपने सामने क्षितिज को निरन्तर विस्तृत होता देखते हैं और बच्चों को एक ऐसे युग के लिए तैयार करना अपना कर्त्तव्य समझते हैं, जिसमे मनुष्य की जिम्मेदारियाँ भी बढ रही हैं और उसका अवकाश का खाली समय भी पहले से बढ रहा है, इसलिए स्वभावतः यथास्थिति कायम रखने के पक्षपाती अभिभावको के साथ उनका सघर्ष और टक्कर अनिवार्य है।

उन्हे इन बातो मे समन्वय करके चलना पडता है। वे जानते हैं कि एक ओर अमेरिकन लोगो का शिक्षा की शक्ति मे गहरा विश्वास है और दूसरी ओर वे बौद्धिक जीवन का, यानी बेतरतीब लम्बे बाल बढाए और हर समय अन्यमनस्क रहने वाले प्रोफेसर का मजाक भी उडाते है। यह आदर और उपहास दोनो साथ-साथ कैसे चल सकते हैं? शिक्षा के प्रति आदर की भावना हमारी शुद्धाचारवादी और आप्रवासकालीन परम्पराओ का परिणाम है और उपहास की भावना पश्चिम की ओर बढने और नये-नये क्षेत्रो को आबाद करने के प्रारम्भिक जमाने की स्वावलम्बन और केवल व्यवहार्य और क्रियात्मक वस्तु को ही मूल्यवान् समझने की प्रवृत्ति का अवशेप है।

अमेरिकन लोग किसी भी वर्ग की श्रेष्ठता की भावना का सहन नही करते और जहाँ किसी वर्ग मे ऐसे चिह्न नजर आये, कि वे उसका वरोध करने लगते है। जो लोग विद्वान का उसकी विद्वत्ता के कारण आदर करते है वे इस बात से डरते भी है कि कही वह उच्चशिक्षित लोगो का एक अलग और दूसरो से ऊँचा वर्ग न बना दे, या उच्चशिक्षा

और विद्वत्ता कही अल्पशिक्षित वर्ग द्वारा कठिनाई से अर्जित अधिकारों और सामाजिक स्थिति को खतरे मे न डाल दे या उसके नये-नये और बारीकियो से भरे पेचीदा विचारो और कल्पनाओ के कारण टैक्सो मे वृद्धि अथवा किसी अन्य रूप मे नई मुसीवत न खडी हो जाए। माता-पिता अध्यापक-अध्यापिका के प्रभाव को इसलिए नापसन्द करते हैं कि जब वे घर मे बच्चो पर अनुशासन कायम करने का या उनके तौर-तरीको अथवा व्याकरण को सुधारने का प्रयत्न करते हैं तो बच्चे अध्यापक-अध्यापिका का हवाला देकर उसका विरोध करते हैं। माँ जब बच्चे को पहले-पहल शिक्षा के लिए अध्यापक या अध्यापिका को सौपती है, तो एक ओर वह सन्तोष और चैन की सास लेती है और दूसरी ओर उसके मन मे यह भय भी रहता है कि बच्चा अध्यापक-अध्यापिका को उसकी अपेक्षा अधिक शिक्षित और समझदार पाएगा। अक्सर होता यही है कि बच्चे को घर मे जो कुछ नही मिलता, उसे वह अध्यापक मे मिल जाता है और इस प्रकार माँ के इस भय की पुष्टि हो जाती है। इससे भी बुरी बात यह है कि लडका स्कूल के दिनो मे नही, तो कम-से-कम कालेज के दिनो मे अवश्य ही गिरजाघर मे जाना छोड देता है, सिगरेट और शराब पीने लगता है और बहुत-बहुत देर तक घर से बाहर रहने लगता है—और वयस्कता के इन सब लक्षणो के लिए दोषी अध्यापक को ठहराया जाता है।

माता-पिता अपने बच्चो को स्कूल मे इसलिए भेजते हैं कि उन्हे उस भविष्य के लायक बनाया जा सके जिसकी ओर अमेरिकन जीवन सदा अभिमुख रहा है। इसलिए स्कूली शिक्षा से बच्चे मे परिवर्तन होना आवश्यक है। इस तरह स्कूल दो पीढियो को विभाजित करने वाली शक्ति का प्रतीक है। यह शक्ति वास्तव मे उन्नति और सचलता के विचारो से, जो हमारी सस्कृति में बद्धमूल है, पैदा होती है। स्कूल वास्तव मे जितना काम कर सकता है, उससे कही अधिक आशा उससे की जाती है और जब यौन-शिक्षा, स्वास्थ्य और सफाई एव शिष्टाचार के

तरीको का ज्ञान तथा नर्सरी ट्रेनिग आदि काम, जो साधारणत, परिवार को स्वय करने चाहिएँ, स्कूल को सौपे जाते है, तो माता-पिता इस बात के लिए अपने आपको अपराधी अनुभव करते है कि उन्होने अपने ये काम और अधिकार सिर्फ त्यागे ही नही, बल्कि उन्हे त्याग कर बेफिक्री और चैन भी महसूस किया। इसलिए अपने इस अपराध का सारा गुबार वे अध्यापक पर निकालते है और उसी को हर बात के लिए दोषी ठहराते है।

समाज मे अध्यापक-अध्यापिका का जो स्थान है, उसे भी वे सन्देह की दृष्टि से देखने लगते हैं। अध्यापिका स्वय माता-पिता की अपेक्षा कही अधिक नियत्रित और नियमित जीवन व्यतीत करती है, फिर भी उसे समाज मे इसके अनुरूप ऊँचा दर्जा नही मिलता। उससे यह आशा की जाती है कि वह स्कूल मे सब बच्चो के साथ समान व्यवहार करेगी, फिर भी उच्च वर्ग के लोग चाहते है कि उनके बच्चो के साथ विशेष पक्षपात का व्यवहार किया जाए (और उसमे वे अक्सर सफल भी हो जाते है), जिसका परिणाम यह होता है कि निम्न वर्ग के लोगो के बच्चे अपने आपको अवाच्छनीय और उपेक्षित समझने लगते है। किन्तु अध्यापको की सफाई मे यह कहा जा सकता है कि उनमे से बहुतो ने इस भेदभाव को रोकने के लिए विशेष रूप से कोशिश की है और जिन लोगो को उन्होने आशा और प्रेरणा प्रदान की है वे उन्हे जीवन भर याद रखते है।

स्कूल मे सभी तरह की स्थितियो के और दोनो लिंगो के बच्चो का एक साथ पढना समाज मे लोकतन्त्र लाने वाली सबसे बडी ताकत है। बच्चे स्कूलो मे एक-दूसरे के सम्पर्क के अभ्यस्त हो जाते है और कभी-कभी एक-दूसरे की सामाजिक-आर्थिक स्थिति का ख्याल किये बिना परस्पर मैत्री स्थापित कर एक-दूसरे के साथ निभाव करने की आदत डाल लेते हैं, जो बडे होने पर उनके प्रौढ जीवन की बुनियाद बन जाती है। खेल और अध्ययन समानता स्थापित करने के सबसे बडे साधन है। स्कूल

प्रतिभाशाली और वलिष्ठ लडको को अपने से ऊँचे वर्ग के लडको से भी आगे वढने का अवसर प्रदान करता है। खासकर खेलो के क्षेत्र मे आप्रवासियो के वच्चे सामाजिक सीढी पर अधिक तेजी से चढ सके है।

लोकतन्त्र और शिक्षा

जिस दिन वच्चा पहले-पहल एक नन्हें शिशु के रूप मे अपनी नीली जीन या ताजे इस्त्री किये हुए कपडे पहनकर नर्सरी स्कूल मे प्रवेश करता है, उस दिन से उस समय तक, जवकि १८ वर्ष वाद वह सभामच पर खडा होकर सैकडो व्यक्तियो के मध्य अपना कालेज का डिप्लोमा प्राप्त करता है, स्कूल ही उसके जीवन का सवसे वडा सत्य होता है और महत्त्व की दृष्टि से परिवार के वाद उसी का सवसे प्रमुख स्थान होता है। अपने अध्यापको का व्यक्तित्व उसके मन पर इतना गहरा अकित हो जाता है कि वर्षों वाद भी उसे उनके चहरे, तौर-तरीके उनकी दयालुता और अधीरता की याद ज्यो की त्यो रहती है।

वच्चो को जिन विपयो का अध्ययन करने के लिए स्कूल मे भेजा जाता है, उनके साथ-साथ वे एक-दूसरे के साथ व्यवहार करने का तरीका भी सीखते है। नर्सरी स्कूल का वच्चा जल्दी ही यह सीख लेता है कि दूसरे का खिलौना छीनना या किसी के साथ विगडना-झगडना अच्छा नही है, क्योकि ऐसा करने से वह अपना अहित करेगा। वह लडका-लडकी के सम्वन्धो को समझ लेता है। वह जान जाता है कि लडकी के साथ लडके की अपेक्षा अधिक लिहाज और भद्रता का व्यवहार करना चाहिए क्योकि वह अधिक सुकोमल और कमजोर होती है। लेकिन वह यह भी जानता है कि सुकोमल और कमजोर होने पर भी कभी-कभी वह स्कूल के काम या खेलो मे उसे हरा सकती है। दूसरी ओर लडकी को स्कूल मे जो सबक मिलता है, वह और भी कठिन होता है, क्योकि उसे यह सीखना होता है कि उसे अपनी सफलताओ को इतना आगे नही बढा देना चाहिए कि वह लडको से बहुत दूर चली

जाए और इस प्रकार स्त्री के रूप मे अपने यौवन और प्रजनन सम्बन्धी कर्त्तव्य और दायित्व पूरे करने के अवसर से वंचित हो जाए ।

आज अधिकाधिक स्कूल बच्चो को सामूहिक रूप मे काम करना और खिलाना सिखा रहे है । काम, अध्ययन और खेल मे प्रतिस्पर्धा का तत्त्व अब पहले से कम किया जा रहा है। पहले बच्चे मनोरजन के लिए मिल कर खेलते थे, अब वे मिलकर रचनात्मक काम करते हैं । बच्चो से मिलकर किसी एक विषय पर काम करने को कहा जाता है । उदाहरण के लिए यदि उनसे अफ्रीका के बारे मे काम करने को कहा जाए तो वे मिलकर उसके चित्र सग्रह करेंगे, नक्शे बनाएगे, उसके बारे मे कहानिया सुनाएगे और उसके विषय मे खेल खेलेगे । अध्यापक अब छडी से उन पर शासन नही करता । वह उन्हें हाँकने के बजाय रास्ता दिखाता है । यही शिक्षा का असली अर्थ है । अध्यापक या अध्यापिका बच्चो का पथ-प्रदर्शन करते है, और बच्चे उनसे मिलकर अध्ययन की योजना बनाते हैं, उस पर उनसे बहस करते है और इस सम्बन्ध मे सामूहिक निश्चय करते हैं कि क्या पढा जाए और कैसे पढा जाए ।

जैसा कि हर आदमी आज जानता है, प्रगतिशील विकासोन्मुख शिक्षा की दार्शनिक विचारधारा जॉन ड्यूई (१८५९-१९५२) ने दी थी, जिनका जन्म वरमौट मे हुआ था। वे ग्रामो के सहकारितापूर्ण सामूहिक जीवन से और काम को हाथ से स्वय करके सीखने की पद्धति से खूब परिचित थे । इस पद्धति को उन्होने शिक्षा के क्षेत्र मे भी आजमाया और उसके जो परिणाम हुए उनसे ससार चकित हो गया । ड्यूई की मान्यता यह थी कि स्कूल जीवन की तैयारी ही नही है, वह जीवन का एक महत्त्वपूर्ण अविच्छिन्न अग है । स्कूल एक तरह से समाज का ही एक लघु रूप है । बच्चो को उसमे अपना पाठ सुनाने के बजाय कुछ काम करने के लिए प्रोत्साहन दिया जाना चाहिए । उन्हे अध्ययन की प्रक्रिया मे स्वय सक्रिय भाग लेना चाहिए । उससे वे अनुभव के द्वारा जीवन की शिक्षा ले सकेंगे, स्वय काम करके कुछ सीख सकेंगे ।

स्कूल अब केवल कक्षा भवन तक ही सीमित नही रहा है। छात्रों को फायर स्टेशन या डाकखाने का काम-काज का तरीका दिखाना, प्राकृतिक स्थानो का भ्रमण कराना और जिस ससार मे वे रहते हैं, उसका अनुभव कराने के लिए उन्हें यात्राओ पर ले जाना आज शिक्षा का ही एक भाग बन गया है। सबसे बडी बात यह हैं कि शिक्षक के लिए चिन्ता का केन्द्र बच्चा होता है न कि अध्ययन का विषय। उनकी आवश्यकताएँ पूरी करना और उसे लोकतन्त्र मे अपना कर्त्तव्य पालन करने के योग्य बनाना ही स्कूल का मुख्य काम है। स्कूल का काम उसे कुछ घटे प्रतिदिन पढना-लिखना या गणित सिखाना ही नही है।

इसमे सन्देह नही कि कुछ शिक्षको ने, जिनका स्तर और समझ बूझ जॉन ड्यूई के बराबर नही थे, पाठ्यक्रम के बजाय बच्चे के विकास पर अधिक बल देने की इस प्रवृत्ति को कुछ विकृत कर दिया और प्रगतिशील और विकासोन्मुख शिक्षा के नाम पर कुछ बेहूदा काम किये। किन्तु यदि ड्यूई के सिद्धान्तो से इन बेहूदगियो को अलग कर दिया जाए तो ड्यूई असन्दिग्ध रूप से सतत प्रगतिशील लोकतन्त्र को साकार करने की दिशा मे एक बडी मुक्तिदाता शक्ति रहा है।

यह तथ्य अब सिद्ध हो गया है कि यदि बालको और युवको के साथ सही अर्थो मे लोकतन्त्री ढग का सम्बन्ध न रखा जाए तो उनम अपराध, गैरजिम्मेदारी, घमण्ड, शेखी और अनैतिक प्रतिस्पर्धा की प्रवृत्तियाँ पैदा हो जाती है। इसलिए यदि स्कूल मे लोकतन्त्रीकरण के विरुद्ध प्रबल शक्तिशाली तत्त्व न हो, तो सामान्यतः लोकतन्त्रीकरण का परिणाम स्वस्थ सामुदायिक और सामाजिक जीवन का विकास ही होना चाहिए।

ड्यूई ने जिन महत्त्वपूर्ण बातो पर बल दिया था, उनमे से एक यह थी कि शिक्षा समस्याएँ सुलझाने की एक प्रक्रिया है। जैसा कि उसने सिद्ध किया, विचार और चिन्तन तत्त्वतः एक समस्या का मुका-बला करना और उसे हल करना है। इसलिए उसका कहना था कि

बच्चो को उन समस्याओ के हल के लिए, जो उनके लिए, कुछ अर्थ रखती है, प्रोत्साहन दिया जाना चाहिए। उदाहरण के लिए यदि बच्चे यह प्रश्न उठाएँ कि उनके नगर को पानी कैसे मुहैया किया जाता है तो प्रगतिशील अध्यापक कुछ शब्दो मे उसका उत्तर देने के बजाय सारी कक्षा से पूछेगा कि क्या वे जलोपलब्धि के बारे मे एक अध्ययन परियोजना पसन्द करेंगे ? यदि वे इसके लिए राजी हो जाएँ तो बाकायदा एक परियोजना तैयार कर उसके अन्तर्गत उन्हे शहर के जलोपलब्धि सयन्त्र और जलाशय की यात्रा कराई जाएगी, उन्हें नमी और जल-वाष्पो के सघनन के परीक्षण कराए जाएँगे, मौसम और वर्षा की प्रक्रिया समझाई जाएगी, पानी के उपयोग और सग्रह का हिसाब-किताब समझाया जाएगा, वर्षा, नदी और झील विषयक कविताएँ पढाई जाएँगी और विश्व की प्रमुख नदी-प्रणालियो का ज्ञान कराया जाएगा। इसके लिए दृश्य साधनो—मूवी फिल्म, चित्रमय पुस्तकें, स्लाइड और नक्शे आदि—का भी यथोचित उपयोग किया जाएगा।

इस तरह बच्चा समस्याओ के समाधान का तरीका सीखेगा। वह यह जानेगा कि कैसे समुचित प्रश्न पूछे जाने चाहिएं और कैसे स्वय उनका उत्तर खोजना चाहिए। पुरानी पद्धति मे यह माना जाता था कि अध्यापक द्वारा पूछे जाने वाले हर प्रश्न का एक सही उत्तर है। किन्तु नई पद्धति यह मानकर चलती है कि कुछ प्रश्न ऐसे भी हो सकते हैं जिनका एक नपा-तुला सही उत्तर न हो, और जिनके उत्तर को खोजने के लिए हमे स्वयं समस्याओ के बीच रहना और ज्वार पर विजय पाने की सब आशाओ का त्यागकर लहरो और उनके उफान के साथ सघर्ष करना पडे। हमारे युग के लिए यह निःसन्देह एक अच्छी और उपयोगी शिक्षा-प्रणाली है।

सार्वजनिक स्कूल निम्न बातो का भी प्रयत्न करता है.

बच्चेको मनोरजन और सृजनात्मक प्रवृत्तियो मे दिलचस्पी लेने के लिए प्रोत्साहन देना।

उसे अपनी क्षमता और योग्यता के अनुसार प्रगति करने देना।

बच्चे के स्वास्थ्य की ओर ध्यान देना, उसकी सब आवश्यकताओ और कमजोरियो की ओर माता-पिता का ध्यान खीचना और यदि माता-पिता मे बच्चे की उन आवश्यकताओ को पूरा करने की सामर्थ्य न हो तो उसके लिए बाहर से सहायता प्राप्त करना।

खेल-कूद और व्यायाम से और स्वास्थ्य एव स्वच्छता की उचित शिक्षा देकर बच्चे के शरीर का विकास करना।

बच्चे मे अपने इर्द-गिर्द की भौतिक और सामाजिक परिस्थितियो के ज्ञान को विकसित करना।

उसे लोकतन्त्र का, खासकर अमेरिकन लोकतन्त्र का, ज्ञान देना और उसके लिए उत्साह पैदा करना।

उसमे ऐसी सामाजिक चेतना पैदा करना, जो वयस्क होने के बाद भी उसमे रहे और जिससे वह समाज के कामो मे निःस्वार्थ और ठोस रुचि ले और उसकी सेवा के लिए स्वेच्छया कार्य करे।

उद्योग और कृषि के लिए आवश्यक तकनीकी दक्षता प्रदान करना।

हर छात्र और उसकी आवश्यकताओ पर व्यक्तिगत रूप से ध्यान देना।

स्कूल को नगर के समाज का एक अविच्छिन्न अग और सामाजिक जीवन का केन्द्र-बिन्दु बनाना।

माता-पिता को आधुनिक शिक्षा के उद्देश्यो को समझने मे सहायता देना।

इस के अलावा स्कूल का काम बच्चे को पढना-लिखना, गणित, इतिहास, भूगोल, विज्ञान, कला और भाषा आदि की शिक्षा देना तो है ही। ऐसी दशा मे यदि स्कूल अपने उद्देश्यो को पूरा करने मे पिछड़ जाए तो कोई आश्चर्य की बात नही होगी।

स्कूल का संचालक कौन ?

ससार का कोई भी अन्य समाज शिक्षा के लिए अमेरिका के बराबर धन और शक्ति व्यय नही करता। यहाँ की आबादी का एक-चौथाई भाग शिक्षा की प्रक्रिया मे सीधा लगा हुआ है। अमेरिका मे १,६५,००० से ज्यादा स्कूल हैं जिनमे ३,७०,००,००० से अधिक छात्र शिक्षा ग्रहण करते हैं। शिक्षको की सख्या दस लाख से अधिक है और स्कूलो पर कुल वार्षिक खर्च नौ अरब डालर से भी ज्यादा होता है। स्कूलो मे छात्रो की सख्या बढने का कारण सिर्फ यही नही है कि यहाँ की आबादी बढ रही है, बल्कि इसका कारण यह भी है कि अब अधिकाधिक छात्र हाई-स्कूलों, कालेजो और ग्रेजुएट स्कूलो मे जाने लगे है। सयुक्त राज्य मे आज १४ और १७ वर्ष के बीच की आयु के ७५ प्रतिशत से अधिक लडके-लडकिया हाई स्कूलो में है। इतनी बडी सख्या न किसी अन्य देश में कही है और न स्वय सयुक्त राज्य मे ही इससे पहले कभी रही है। हाई स्कूल पास करने वाले छात्र-छात्राओ में से ४० प्रतिशत कालेजो में उच्च-शिक्षा के लिए भरती होते है। शिक्षा आम तौर पर १६ वर्ष की आयु तक अनिवार्य और नि·शुल्क है।

प्राथमिक और माध्यमिक कक्षाओ के १२ प्रतिशत के लगभग छात्र प्राइवेट स्कूलो मे जाते हैं जिनमे से बहुत से चर्चो द्वारा सचालित हैं। फिर भी अमेरिका मे हाई स्कूल तक की शिक्षा की व्यवस्था प्रधानतः और बहुत बडे पैमाने पर सार्वजनिक (सरकारी) है। इस शिक्षा का नियन्त्रण और प्रबन्ध कैसे किया जाता है ?

यह नियन्त्रण और प्रबन्ध सघीय सरकार नही करती। इस विशाल कार्य का समन्वय करने के लिए कोई राष्ट्रीय शिक्षा मत्रालय नही है। सयुक्त राज्य का शिक्षा विभाग स्वास्थ्य, शिक्षा और जनकल्याण विभाग का एक अग मात्र है। वह राज्यो को शिक्षा के लिए सघीय अनुदान देता है और शिक्षा सम्बन्धी अनुसन्धान कार्यक्रमो का सचालन करता

है। सार्वजनिक शिक्षा पर व्यय की जाने वाली धन राशि का चार प्रतिशत से भी कम अश सघीय सरकार देती है।

सयुक्त राज्य मे शिक्षा की एक प्रणाली नही है, बल्कि पचास विभिन्न प्रणालियाँ हैं (और यदि कोलम्बिया के जिले को भी शामिल कर लिया जाए तो ५१ प्रणालियाँ है), क्योकि सविधान ने शिक्षा राज्यो के, "या जनता के" हाथो मे सौंप दी है। बल्कि यह कहना अधिक उपयुक्त होगा कि सयुक्त राज्य मे ६०,००० शिक्षा-प्रणालियाँ है, क्योकि यहाँ ६०,००० शिक्षा-जिले है। कारण यह है कि यद्यपि राज्य सरकारें शिक्षा पर विभिन्न मात्राओ मे नियन्त्रण रखती है, परन्तु अधिकतर सत्ता और अधिकार वे माता-पिता पर, (और अन्य स्थानीय मत-दाताओ पर) छोड देती हैं, जो स्कूलो के प्रबन्धक मडलो का चुनाव करते है। वे स्कूलो के सचालन के लिए कर भी लगाते है। वे अभि-भावक-अध्यापक संघ चलाते है जो घर और स्कूल के बीच सघर्ष और मतभेदो को दूर करते है और स्कूलो के लिए अतिरिक्त धन-सग्रह करते हैं। सब मिलाकर औसतन ६० प्रतिशत धन स्थानीय करो से प्राप्त होता है और शेष ४० प्रतिशत राज्य सरकारो से मिलता है, जो आय-कर, मद्य-कर, पेट्रोल-कर आदि के जरिये धन-सग्रह करती हैं।

यह चालीस प्रतिशत योगदान राज्य के शिक्षा विभाग के हाथ मे लगाम थमा देता है और उस लगाम से वे स्थानीय बोर्डों का नियन्त्रण करते हैं। फिर भी अधिकतर राज्यो की शिक्षा व्यवस्था अत्यधिक विकेन्द्रित है और उसमे हर कस्बे या नगर को स्वय अपनी आवश्यकताओ का निर्धारण करने का उत्तरदायित्व दे दिया जाता है। स्थानीय स्कूल बोर्डो के सदस्य स्थानीय जनता के प्रतिनिधि होते है। देहाती स्कूलो के बोर्डो मे स्वभावतः किसान और शहरी स्कूलो के बोर्डो मे व्यापारी या पेशेवर लोग चुने जाते है। और अभी हाल मे कुछ समय से शहरी स्कूल बोर्डो मे श्रमिको के प्रतिनिधि भी चुने जाने लगे है। स्त्रियाँ भी अक्सर इन बोर्डो मे चुनी जाती हैं। बोर्डो के सदस्य स्थानीय जनता के

विचारो का प्रतिनिधित्व करते हैं, इसीलिए वे स्कूलों मे सुधार करने के लिए नया टैक्स लगाने मे या स्कूल बनाने के लिए बॉड जारी करने मे हिचकिचाएँगे। किन्तु उन्हे स्थानीय जनता के हितो का भी ध्यान रखना है, इसलिए वे स्वेच्छया लोगो के पास जा-जाकर स्कूल की नई इमारत बनाने या अध्यापको के वेतन बढाने के लिए धन-सग्रह की अपील करते है।

राज्य का शिक्षा कमिश्नर बोर्ड को किसी काम के लिए आदेश देने के बजाय उसे सलाह-मशविरा देने या समझाने-बुझाने का तरीका अपनाता है। किन्तु दैनन्दिन कामो मे और अध्यापको के प्रशिक्षण और पथ-प्रदर्शन आदि के विशिष्ट कार्यों मे आम तौर पर बोर्ड राज्य के किसी अधीक्षक की देखरेख में काम करने के लिए खुशी से तैयार हो जाता है।

यह कहा जा सकता है कि स्थानीय बोर्ड को इतने अधिक अधिकार दे देने से शिक्षा को पूर्णतः आधुनिक और नवीनतम स्तर पर नही लाया जा सकता। किन्तु स्थानीय स्कूल की प्रणाली उस जमाने से चली आ रही है, जबकि हमारा देश एक राष्ट्र के रूप मे नही था, बल्कि राज्य भी नही थे। यही नही, अमेरिकन लोग भी अपने बच्चो के लिए शिक्षा-प्रणाली निर्धारित करने का अधिकार स्थानीय समाज के हाथ मे ही रखने के लक्ष्य के समर्थक हैं। आखिर शिक्षा की कौन-सी प्रणाली अच्छी है ?—क्या वह, जो उस अध्यापक-कालेज मे विकसित की गई है जिस मे शिक्षा कमिश्नर ने अध्ययन किया था, या वह, जिसे स्थानीय समाज अपनी और अपने बच्चो की आवश्यकताओ को पूरा करने के लिए उपयुक्त समझता है ?

आजकल माता-पिताओ को उन समितियो मे सम्मिलित होने के लिए प्रोत्साहन दिया जाता है जो पाठ्यक्रमो और पाठ्य-पुस्तको पर एव स्कूलो की अन्य समस्याओ पर विचार करती है और उनसे अन्तिम निर्णयो मे सहायता देने के लिए कहा जाता है। हर स्थानीय समाज का इन

समस्याओ के बारे मे अपना अलग-अलग उत्तर होगा। स्कार्सडेल (न्यूयार्क) मे, जहाँ अधिकतर लडके स्कूल की पढाई खत्म कर कालेजो मे जाते हैं, स्कूलो का कार्यक्रम और पढाई ऐसी होनी चाहिए कि छात्र कालेज के लिए तैयार हो सके। देहाती इलाको मे जहाँ अधिकतर लडको को स्कूल की पढाई खत्म कर कृषि मे लगना होता है, यह आवश्यक होगा कि उन्हें वैज्ञानिक कृषि की मोटी-मोटी बातें सिखाई जाए और साथ ही जिस दुनिया मे वे रहते है, उसका ज्ञान कराया जाए। इसी तरह लडकियो को शरीर-पोषण, शिशु-परिचर्या और घरेलू कामो की शिक्षा देना जरूरी है।

व्यावसायिक प्रशिक्षण

अमेरिकन लोग अक्सर व्यावहारिक होते है, इसलिए वे व्यावसायिक प्रशिक्षण पर हमेशा बल देते रहे है। पहले जहाँ हाई स्कूल केवल छात्रों को कालेज के लिए तैयार करते थे, वहाँ अब वे लकडी और धातु का काम, स्टेनोग्राफी और मुनीमी, पत्रकारिता और गृह-अर्थशास्त्र एव कृषि के पाठ्यक्रम भी चलाते हैं। सघीय सरकार भी हाई स्कूलो के जरिये १४ वर्ष से अधिक आयु के युवको और युवतियो को, जो किसी खास धन्धे मे लगे है या लगना चाहते है, व्यावसायिक प्रशिक्षण देने के कार्यक्रम चलाती है।

एक लडके ने ऐसे ही एक हाई स्कूल मे कृषि का व्यावसायिक प्रशिक्षण पाने के बाद उसका लाभ इस प्रकार उठाया। उसने अपने घर के फार्म का बारीकी से अध्ययन कर उसकी क्षमता का हिसाब लगाया, उसके बाद बाजार की माँग का विश्लेषण कर यह निश्चित किया कि वह सूअर पालन का व्यवसाय करेगा। चार वर्ष तक वह प्रतिवर्ष एक टन सूअर उत्पादन करता रहा—इतने सूअर कि छ मास बाद उनका वजन दो हजार पौंड हो जाए। इसके बाद उसने मक्का की खेती शुरु की और उसके बाद फार्म और बाजार की परिस्थितियो के अनुकूल और

भी काम प्रारम्भ किये। अन्त मे उसने अपनी निज की जमीन खरीदी और अपने पिता के साथ साझा कर लिया।

इस प्रकार व्यावसायिक कृषि की शिक्षा पाने वाले छात्रो का 'फ्यूचर फार्मर्स ऑफ अमेरिका' के नाम से एक राष्ट्रीय सगठन बनाया गया है जिसमे वे मितव्ययिता और सार्वजनिक सेवा की आदतें भी सीखते है। ये आदतें उन्हे देहाती समाज के नेतृत्व के योग्य बनाती है।

व्यावसायिक प्रशिक्षण छात्रो की बीच मे ही शिक्षा को छोड कर अलग हो जाने की समस्या का आशिक समाधान है। यद्यपि सयुक्त राज्य मे हाई स्कूलो मे छात्रो की उपस्थिति सबसे अधिक है, तो भी उनके एक चौथाई छात्र उपस्थिति के नियमो मे शिथिलता और घटिया मनोवृत्ति के कारण स्कूलो से अनुपस्थित रहते है। बहुत-से छात्र पढाई से ऊब जाते है और उनके मन मे यह प्रलोभन रहता है कि यदि वे कोई नौकरी करने लग जाए तो उन्हे हर सप्ताह वेतन का चैक मिलेगा और वे आजादी से जीवन बिता सकेंगे, नये कपडे खरीद सकेगे और अपनी कार रख सकेगे। इसलिए वे बीच मे ही पढाई छोड देते है।

सफलता के मार्गों को खुला रखने के लिए अनेक उपाय किये जा रहे है। इसके लिए अनेक पथ-प्रदर्शन कार्यक्रम चलाये जाते हैं जो कम हैसियत वाले, किन्तु प्रतिभाशाली बच्चो को स्कूल मे पढाई जारी रखने के लिए प्रोत्साहन देते हैं। इसके अलावा कर्मचारियो को सेवा मे रहते हुए प्रशिक्षण प्राप्त करने की सुविधाए भी प्रदान की जाती है ताकि वे अपनी योग्यता बढा सकें। जिस कम्पनी मे इस तरह के प्रशिक्षण कार्य-क्रम की व्यवस्था रहती है, उसके कर्मचारी को यह भरोसा रहता है कि आर्थिक प्रणाली उसकी आकाँक्षाओ की प्राप्ति के अनुकूल है।

उच्च-शिक्षा

यद्यपि सार्वजनिक स्कूल बहुत हद तक अपना नियन्त्रण और सचा-लन स्वय करते हैं, तो भी वे राज्यो के शिक्षा विभागो, अध्यापन-कालेजो और स्थानीय स्तर से लेकर राष्ट्रीय स्तर तक होने वाले विविध

शिक्षा सम्मेलनो के जरिये एक बधी हुई सुव्यवस्थित प्रणाली का अंग बन जाते हैं। किन्तु उच्च-शिक्षा के क्षेत्र मे हर बडा विश्वविद्यालय और हर देहाती कालेज अपने लिए पाठ्यक्रम और सिद्धान्त स्वय निर्धारित करता है और उनका सचालन भी स्वय करता है। इन विश्वविद्यालयो और कालेजो मे अच्छे-अच्छे छात्रो के लिए प्रतिस्पर्धा चलती है, इसलिए वे समय-समय पर अपने कार्यक्रम बदलते रहते है, शिक्षा का कोई नया सिद्धान्त निकालते है, या कोई नई अतिरिक्त सेवा प्रारम्भ करते है या कोई नई विशिष्टता अपनाते है जो उन्हें उनके प्रतिस्पर्धियो मे विशिष्ट स्थान दिला सके। एक कालेज यह मानता है कि ज्ञान-प्राप्ति का सबसे अच्छा मार्ग एक निश्चित प्राचीन साहित्य का अध्ययन है। दूसरा यह समझता है कि पढाई के बीच-बीच मे कुछ समय क लिए छात्रो को कही रोजगार भी दिया जाना चाहिए। कुछ सस्थाएँ ऐसी हैं जो अपनी प्रसिद्धि के लिए यह दावा करती हैं कि उनकी फुटबाल की टीमे बहुत अच्छी है।

फिर भी अमेरिका मे कोई ऐसा कालेज या विश्वविद्यालय नही है जिसे ठेठ अमेरिकन कहा जा सके। सयुक्त राज्य मे उच्च शिक्षा की करीब दो हजार सस्थाएँ है और सभी एक-दूसरे से भिन्न हैं। इन सस्थाओ मे इस समय करीब ३० लाख छात्र हैं। राष्ट्रपति द्वारा नियुक्त कमीशन का यह ख्याल है कि देश की करीब एक-तिहाई आबादी मे उच्च-शिक्षा को पूर्ण करने के योग्य मानसिक क्षमता है, अत उसने १९६० मे कालेजो और विश्वविद्यालयो मे शिक्षा के लिए ४६ लाख छात्रो की भरती का लक्ष्य रखा था। इस समय भी ससार भर मे सब से अधिक प्रतिशत कालेज-छात्र सयुक्त राज्य मे ही है। यहाँ हाई स्कूल पास करने वाले हर चार छात्रो मे से एक कालेज जाता है, जबकि यूरोप मे हर बीस मे से एक कालेज मे पढता है।

यह समझना भूल है, जैसा कि आम तौर पर विदेशो मे समझा जाता है, कि दो या तीन विश्वविद्यालयो के पाठ्यक्रम अन्य विश्व-

विद्यालयो के पाठ्यक्रमो से वेहतर हैं । सयुक्त राज्य एक विशाल देश है, अनेक राज्यो और प्रदेशो मे वँटा हुआ है और विविधता मे विश्वास रखता है, इसलिए उसमे विद्या के अनेक वडे केन्द्र है । ऐसा भी होता है कि शहर से वहुत दूर किसी देहाती कालेज मे शिक्षा अधिक अच्छी हो। हाल के सर्वेक्षणो से मालूम हुआ है कि वैज्ञानिक प्रशिक्षण देने वाली पचास चोटी की सस्थाओ मे से ३९ छोटे कालेज है। सर्वेक्षण से यह भी ज्ञात हुआ है कि देश के उच्चपदस्थ व्यक्तियो मे से ८८ प्रतिशत कालेजो के ग्रेजुएट हैं और उनमे से भी ७१ प्रतिशत छोटे कालेजो मे पढे हैं।

अनेक सुधारवादी स्कूल, प्राइवेट संस्थाओ द्वारा चलाए जाते है। उदाहरण के लिए जॉन हॉपकिन्स स्कूल, जिसने ग्रेजुएट के स्तर तक अध्ययन की यूरोप की प्रणाली को सबसे पहले अमेरिका मे लागू किया, या स्वार्थमोर स्कूल, जिसने इग्लैड की ऑनर्स की प्रणाली को कुछ परिवर्त्तित रूप मे प्रारम्भ किया, या ऐण्टियोक स्कूल, जिसमे छात्रो को पढाने के साथ उनसे काम भी कराया जाता है और उसका पारिश्रमिक उन्हे दिया जाता है। इसी तरह वेनिगटन और सारा लॉरेन्स स्कूल भी जहाँ कालेज स्तर तक जॉन ड्यूई की शिक्षा सम्बन्धी विचारधारा को अमल मे लाया गया, प्राइवेट हैं ।

दो-तिहाई के लगभग शिक्षा-संस्थाएँ प्राइवेट हैं, जो दान या ट्रस्टो के धन से चलती है। बाकी सस्थाएँ राज्य सरकारो या नागरिक प्रशासनो द्वारा चलाई जाती हैं । इनके लिए धन अधिकतर कर लगाकर सग्रह किया जाता है, इसलिये ये सस्थाएँ अपने कम फीस के आकर्षण से अधिक बच्चो को आकृष्ट करती है, जबकि प्राइवेट स्कूलो की फीसें खर्च मे वृद्धि के कारण निरन्तर वढ रही हैं। साइराक्यूज या कॉर्नेल जैसी कुछ सस्थाएँ अशतः राजकीय और अशत, प्राइवेट हैं। यद्यपि कुछ सस्थाएं कुछ खास विषय ही पढाती हैं, किन्तु अधिकतर सस्थाओ मे सभी विषयो की शिक्षा दी जाती है । अमेरिकी विश्वविद्यालयो को दर्शन, चिकित्सा के शास्त्र और प्राचीन साहित्य की शिक्षा

के साथ-साथ पशु-चिकित्सा और नर्स-प्रशिक्षण के पाठ्यक्रम भी अपने यहाँ रखने मे कोई अजीब बात नही लगती। अमेरिकन शिक्षा सस्थाएँ सभी पेशो और व्यवसायो की शिक्षा को एक ही जैसा सर्व-सामान्य परिवेश प्रदान करती हैं, ताकि समाज मे उन्नति करने के लिए एक सर्व-सामान्य सामाजिक सोपान बन जाए, जिस पर चढने का सभी अमेरिकनो को समान अधिकार है।

किसी भी अन्य देश या समाज की तरह अमेरिका मे भी कालेजो और विश्वविद्यालयो पर आम तौर पर सबसे प्रमुख सामाजिक आर्थिक वर्ग का नियन्त्रण रहता है। दान पर निर्भर रहने वाले प्राइवेट कालेज अपने प्रबन्धक मडलो मे ऐसे लोगो को लेते हैं, जिनके जरिये उन्हे अधिक दान मिलता रह सके। राजकीय सस्थाओ पर राजनीतिक दृष्टि से शक्ति-शाली वर्ग नियत्रण स्थापित करने का प्रयत्न करते है। किन्तु प्राइवेट और सरकारी दोनो ही सस्थाएँ अपने भूतपूर्व छात्रो की सहायता और समर्थन पर निर्भर करती हैं, जो फुटबाल के खेल या अन्य प्रतियोगिताओ के भावनात्मक बन्धन से इन सस्थाओ से बाँधे रहते हैं।

अमेरिकन कालेजो की शिक्षा-प्रणाली और पाठ्यक्रम मे मुख्य-मुख्य बातें ये होती हैं: उनमे व्याख्यानो के बजाय व्यक्तिगत शिक्षा और सामूहिक विचार-विनिमय पर बल दिया जाता है, छात्रो को अर्थ-व्यवस्था, शासन, और अन्तर्राष्ट्रीय जगत् के बारे मे काफी जानकारी दी जाती है ताकि वे इस पेचीदा और जटिल ससार मे अपना प्रौढ-जीवन अच्छे ढग से व्यतीत कर सके, कलाओं पर और सन्तुलित जीवन मे उनके समुचित स्थान पर अधिकाधिक ध्यान दिया जाता है, और लडको को रोजगार के लिए तैयार किया जाता है और लडकियो को रोजगार के साथ-साथ मातृत्व और सन्तान-पालन के कर्त्तव्यो के लिए भी तैयार किया जाता है।

इतनी विविधतापूर्ण शिक्षा-प्रणाली को एकता के सूत्र मे बाँधने के लिए किसी अज्ञात प्रतिभाशाली व्यक्ति ने छात्रो को अक देने की

प्रणाली निकाली है। प्रति सप्ताह कक्षा मे एक घटे की पढाई का एक अंक छात्र को सत्र के अन्त मे दिया जाता है। तीन घटे की पढ़ाई वाले पाँच पाठ्यक्रमो के प्रति-सत्र १५ अंक होते है। इस प्रकार ग्रेजुएट बनने के लिए १२० अक होते है। कितनी सरल है यह प्रणाली! गणित के इस हिसाब से यह मान लिया जाता है कि हार्वर्ड विश्वविद्यालय मे समाज-शास्त्र का पाठ्यक्रम पोडक मे ऊन-सग्रह के पाठ्यक्रम के बराबर है और छात्र इच्छानुसार इस पाठ्यक्रम से उस पाठ्यक्रम मे आ-जा सकते है।

इसमे सन्देह नही कि विभिन्न पाठ्यक्रमो मे इस समानता पर कोई भी कभी विश्वास नही करता, लेकिन इससे तालीमी अक-प्रणाली अवश्य बहुत आसान हो गई है और बहुत-से छात्रो के लिए एक पाठ्यक्रम से दूसरे पाठ्यक्रम मे या एक सस्था से दूसरी सस्था मे जाना और अपनी लाज बचाना बहुत आसान हो गया है। यदि कोई दूसरी सस्था इस अक-प्रणाली के बजाय छात्रो के मूल्याँकन के लिए दूसरी पद्धति अपनाए और किसी अन्य सस्था से आने वाले छात्रो को अपने स्टैंडर्ड के अनुसार नाप कर उनके पूर्व-अर्जित अको मे कमी कर दे अथवा अत्युत्तम छात्र को 'ए', उत्तम को 'बी', सामान्य को 'सी', पुनः परीक्षा योग्य छात्र को 'डी', और असफल छात्र को 'ई', या 'एफ' वर्ग मे रखने की प्रणाली अपनाए तो भी छात्रो के लिए सस्था बदलना कठिन नही है। यदि कोई छात्र बार-बार 'डी' या 'ई' या 'एफ' वर्ग मे आए तो उसे छुट्टी के दिनो मे ग्रीष्मकालीन विद्यालय मे पढने की भी अनुमति दे दी जाती है, ताकि वह अपनी कमी पूरी कर सके। ऐसे छात्रो के लिए ही नही, बल्कि एक ही वर्ष मे दो कक्षाए पास करने के या कालेज की शिक्षा को चार वर्ष के बजाय तीन वर्ष मे पूरा करने के इच्छुक छात्रो के लाभ के लिए भी अनेक विश्वविद्यालयो मे इस प्रकार के ग्रीष्मकालीन स्कूल चलते है।

छात्र को शिक्षा देने और मार्ग-प्रदर्शन करने के लिए अध्यापक तो होते ही है, साथ ही बहुत-से ऐसे विशेषज्ञ भी होते हैं, जो उसके हित और कल्याण का ध्यान रखते हैं। अमेरिका मे एक मामूली कालेज छात्र पर जितना ध्यान दिया जाता है, उतना मध्ययुग मे किसी राजकुमार पर भी नही दिया जाता था। सबसे पहले कालेज का डीन होता है जो एक तरह से सारी सस्था का पिता होता है और उसे उसकी सख्ती और नर्मी के लिए आदर्श बनाया जाता है। जब लडके शहर के लोगो के साथ कोई शरारत या शैतानी करते है तो डीन लडको को कडी सजा देता है (छोटे शहरो मे कालेज छात्रो और शहरी लोगो मे कुछ न कुछ झगडा होता ही रहता है)। लेकिन इस सजा से अपराधी छात्रो को खूब डराकर भी वह दड को अन्त मे बहुत कठोर प्रतीत नही होने देता, बल्कि कभी-कभी उन्हे कडी चेतावनी देते हुए भी विनोद से यह कह कर उसकी कठोरता को कम कर देता है कि वह स्वय भी किसी समय कालेज का शैतान लडका था, और उस जमाने से वह स्वय बदल कर काफी गम्भीर हो गया है, किन्तु शहर के लोग अब भी नही बदले और बडे होने पर छात्र जीवन की इन शरारतो को याद कर छात्रो को खूब हँसी आती है। चेतावनी के साथ इस हल्के विनोद का असर यह होता है कि छात्र अपने डीन को प्यार करते है और उन्हें यह पता नही चलता कि जिस आदर्श पिता को वे खोजते रहे है उसे शरारत करके ही उन्होने पाया है और अपना पौरुष अर्जित और सिद्ध करने के लिए उन्हें उसी के विरुद्ध विद्रोह करना पडता है।

उद्योगो मे जैसे एक प्रबन्ध-क्रान्ति आई है और प्रबन्धको के एक नये वर्ग ने उन पर नियन्त्रण स्थापित कर लिया है, उसी तरह विश्व-विद्यालयो मे भी एक प्रबन्धकीय क्रान्ति आई है। उद्योगो मे उत्पादक और उपभोक्ता के बीच मे और विश्वविद्यालयो मे प्रोफेसर और छात्र के बीच मे विशेषज्ञो का एक बडा वर्ग आ गया है जो छात्र की मुक्ति के लिए आवश्यक समझी जाने वाली सेवाए प्रदान करता है। ये सेवाए

शायद आवश्यक है भी, किन्तु इन सेवाओ ने उनके कार्य को एक विशिष्ट कार्य मे परिणत कर दिया है, जबकि पहले यह कार्य कही अधिक सरल और सीधा सादा था, भले ही वह उतना कौशलपूर्ण नही था।

अमेरिकन जीवन के अन्य सभी क्षेत्रो और विभागो की भाति शिक्षा के मामले मे भी एक बड़ी कठिनाई है और वह यह है कि कालजो ने बहुत अधिक कार्य करने का प्रयत्न किया है। कालेज के आदर्श बहुत अच्छे है, परन्तु उन्हें जिस मानवीय मिट्टी को लेकर गढना पड़ता है वह असानी से काबू मे नही आती और सरलता से गढी नही जा सकती। दसियो वर्षो तक शिक्षा-शास्त्री इस पुराने आदर्श को दोहराते रहे है कि 'स्वस्थ शरीर मे ही स्वस्थ मन रह सकता है', और इसके आधार पर ही वे छात्रो के लिए खेल-कूद के कार्यक्रमो का औचित्य सिद्ध करते रहे है। किन्तु आज स्वस्थ और सबल शरीर के लिए खेल-कूद के अलावा और भी बहुत-सी चीजो की आवश्यकता है, जैसे एक अच्छा और महगा अस्पताल, जिसमें सुयोग्य डाक्टर और नर्से हो और दुर्बल छात्रो के लिए एक आवास-गृह, जिसमे बचपन मे उत्पन्न रोगो के लिए उनकी चिकित्सा और परिचर्या की जा सके। अब मन और शरीर को स्त्री और पुरुष या रात और दिन की भाँति एक-दूसरे से अलग नही किया जा सकता। इसीलिए एक मानसिक चिकित्सा विशेषज्ञ की भी आवश्यकता होती है। कुछ सामाजिक गति विधियो और समारोहो की भी आवश्यकता होती है। कालेजो मे लडके और लडकियो की सहशिक्षा के कारण यह स्वाभाविक है कि उनमे कुछ यौन सम्बन्ध हो लेकिन यह आशा की जाती है कि उनसे उन्हे कोई नुकसान नही पहुचना चाहिए। इस लिए इन सम्बन्धो मे सभावित विस्फोटक परिस्थितियो को रोकने की भी कुछ व्यवस्था करनी पडती है। इस मामले मे परीक्षण और अनुभव से सीखने का सिद्धान्त खतरनाक सिद्ध हो सकता है।

यह धारणा आम तौर पर लोगो मे हमेशा रही है कि हर आदमी हर चीज सीख सकता है और यदि हर चीज मे सन्तुलन रखा जाए, चाहे वह भोजन, काम और खेल हो, व्यक्ति और समाज हो; गाव और शहर हो; यौन सम्बन्ध और धर्म हो, तीव्र गति और आराम हो, गम्भीरता और हास्य-विनोद हो और चाहे मन और शरीर हो, तो मनुष्य सुख और सफलता प्राप्त कर सकता है। इसलिए कालेज के जीवन मे अनेक चीजो का मिश्रण और सन्तुलन करने का प्रयत्न किया जाता है—जिसमे कुछ पढाई होती है, कुछ खेल-कूद, कुछ सपारिश्रमिक काम, कुछ प्रोफेसरो के साथ मिलना-जुलना, कुछ भिन्न लिंग के छात्र-छात्राओ का परस्पर मिलना, कुछ अपने ही समान लिंग के सहपाठियो के साथ उठना-बैठना और कुछ अपना पौरुष सिद्ध करने के लिए लड़को का शरारतें करना। इसके अलावा "छात्रीय गति विधियाँ" तो काफी मात्रा मे उसमे होती ही हैं। छात्रीय गति विधियो मे समाचार-पत्र (दैनिक या साप्ताहिक) का सम्पादन, स्कूल की वार्षिक या अन्य पत्रिकाए निकालना, वाद-विवाद, दर्जन भर खेलो के लिए बाहर जाना, टीमे बनाना और उनका प्रबन्ध करना, कक्षा अधिकारियो के रूप में काम करना, नाच या अन्य सामाजिक-समारोहो की योजना बनाना, नाटको मे अभिनय करना या नेपथ्य में कार्य करना, क्लबो मे गाना, बैंड या वाद्य-वृन्द मे बाजा बजाना, साहित्यिक, वैज्ञानिक या शौकिया क्लबो मे हिस्सा लेना, फ्रेंच या जर्मन या स्पेनिश क्लबो आदि मे शामिल होना, किसी भ्रातृसघ मे सम्मिलित होना और फिर एक अफसर के रूप मे काम करना या छात्रावास को ठीक ढग से चलाना आदि काम शामिल हैं।

ये सब विविध प्रकार की गति विधियाँ और उनमे प्रदर्शित उत्साह देखकर हमारे देश मे बाहर से आने वाले चकित रह जाते है। किन्तु जब हम कालेज से बाहर के जीवन के साथ उसका तालमेल बैठाते हैं तो उसका औचित्य स्पष्ट हो जाता है। जो छात्र अपने साथी

से यह कहता है कि तुम अपने भ्रातृसघ से छात्र शासन परिपद् के अध्यक्ष पद के लिये हमारे उम्मीदवार ल्यू बेकर को वोट दिलाओ और उसके बदले मे हम तुम्हारे आदमी को फुटवाल टीम के मैनेजर पद के लिये वोट देंगे, वह एक तरह से व्यापारिक और राजनीतिक जीवन मे ले-दे कर सबक सीखता है ।

सम्भवत. सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण शिक्षा लोगो के साथ व्यवहार की शिक्षा है, जो बहुत जरूरी समझी जाती है और जिसका फल भी बहुत अच्छा होता है । कालेज का छात्र यह सीखता है कि व्यवसाय के साथ-साथ मन को हल्का रखने का समन्वय करना एक बडी कला है —वह अपने साथियो के साथ बैठकर आराम से खाता-पीता है, उनके साथ छात्रावास के बिछौनो पर लेट कर गप-शप करता है, उनके साथ खेलता है और इस प्रकार उनकी शक्ति और कमजोरी का अन्दाज लगाता है और जब वास्तव मे वह कोई लडाई जीत लेता है तब भी यह दिखाता है कि मानो उसने हार मान ली है। यह मनस्विता या इसी तरह की अन्य चीजें अगर तालीमी दृष्टि से कला नही भी हैं, तो भी समाज ही कला के रूप मे उन्हे मूल्यवान समझता है और कालेज का छात्र ये कलाएँ भी सीखता है । यदि विदेशी लोगो को ऐसा लगे कि अमेरिकन छात्र बौद्धिक ज्ञान की दृष्टि से पीछे है तो यह आश्चर्य की बात नही है । वास्तव मे वे विद्वत्ता हासिल करने के लिए कालेज मे नही आते, बल्कि समन्वय और सन्तुलन का जादूई मन्त्र सीखने के लिए आते है जो उन्हे भावी जीवन के योग्य बनाता है ।

स्त्रियाँ और अध्ययन

स्त्रियाँ कालेज के जीवन का एक निश्चित और अविच्छिन्न अग हैं । पूर्व को छोडकर बाकी सभी जगह कालेजो मे सहशिक्षा है । लडके-लडकियाँ एक ही कक्षा मे बैठते हैं, एक ही मेज पर खाना खाते हैं, एक ही पुस्तकें पढते है, एक ही जैसे मनोरजन के साधनो मे आनन्दोच्छ्वास पाते हैं, हरी घास पर लेटकर 'लाइफ' पत्रिका पर बहस करते है और

एक-दूसरे से एकान्त मे मिलते है। कालेज का एक महत्त्वपूर्ण काम यह है कि वह लडके-लड़कियो को परस्पर मिलाता है जिससे वे भावी जीवन के लिए अपने सगियो का चुनाव कर सके और वह लडकियो को अपने समान आयु की लड़कियो के और लडको को अपने समवयस्क लडको के सम्पर्क मे भी लाता है जिससे वे एक-दूसरे के साथ बातचीत और विचार-विनिमय कर के अपने मन के मुताबिक लडके या लडकी के बारे मे धारणा बना सकते है। ऐक ऐसे समाज मे जो यह तो चाहता है कि लोग अपनी जात-बिरादरी से बाहर विवाह करे, किन्तु इसमे उन्हें सहायता कोई नही देता, यह काम और भी महत्त्वपूर्ण हो जाता है।

आज इसीलिए युवक-युवतियो के कालेज मे छात्र के रूप मे रहते हुए ही विवाहित हो जाने की बहुत घटनाएँ घटती रहती है। मन को विचलित करने वाले तनावो-खिचावो से मुक्त रहकर वे वह जीवनयापन कर सकते है जिसके लिए वे जीव-विज्ञान की दृष्टि से तैयार हो चुके है। युद्ध के परिणामस्वरूप हमारे शिक्षा-क्षेत्र मे एक परिवर्तन आया था और वह यह कि पहले जिस आयु मे छात्र कालेज मे भरती होते थे, उससे चार या पाँच वर्ष अधिक की आयु मे वे भरती होने लगे। यह प्रवृत्ति अब भी बहुत हद तक चली आ रही है। इसी का परिणाम है कि आज हमारे कालेजो मे १६ प्रतिशत छात्र विवाहित होते हैं। किन्तु कुछ कालेज और कुछ अभिभावक इस विचार को अब भी बहुत नापसन्द करते है।

जहाँ तक लडकियो का सम्बन्ध है, उन्हे अपने लिए उपयुक्त विषय का चुनाव स्वय सोचकर और अनेक दृष्टियो से करना पडता है। बहुत सी लडकियाँ कालेज की शिक्षा समाप्त कर विवाह करने के बाद कुछ काम कर लेती हैं और इस प्रकार अपने पति की डाक्टरी या वकालत की पढाई का खर्च उठाकर उसे शिक्षा पूरी करने मे सहायता देती है। जब उनका पति कमाने लगता है तो वे नौकरी छोड कर शेष जीवन पत्नी और माता का कर्त्तव्य निभाने या समाज-सेवा करने मे व्यतीत करती

हैं। इस प्रकार उन्हें अपने पति की आर्थिक सहायता करने और अपने स्त्रीत्व के कर्त्तव्य पूरे करने के लिए दो प्रकार की शिक्षा ग्रहण करनी पडती है,। वे किसी पेशे या व्यवसाय की जो शिक्षा लेती हैं वही उनका दहेज और बीमापालिसी होती है। कारण, अच्छी शिक्षित होने पर उन्हे पति अच्छा मिलता है और यदि दुर्भाग्य से वे पति न पा सकें या अच्छा पति न तलाश कर सके तो इस शिक्षा के बल पर वे अभावग्रस्त और पराश्रित होने से बच जाती हैं क्योकि उन्हें कोई अच्छा रोजगार मिल जाता है।

इसलिए जब लडकी यह निश्चित कर लेती है कि उसे भावी जीवन मे कौन-सी नौकरी या व्यवसाय अपनाना है तो वह उसके अनुसार ही विषय का अध्ययन करती है। प्रायः स्त्रियाँ अध्यापिका बनने की ट्रेनिंग लेती है, क्योकि सार्वजनिक स्कूलो मे अध्यापको की अपेक्षा अध्यापिकाओ की सख्या तिगुनी रहती है। किन्तु वे और कोई व्यवसाय या दिशा भी चुन सकती है, क्योकि स्त्रियो के लिए कोई भी मार्ग और दिशा बन्द नही है, हालाँकि उनके लिए उसमे उन्नति के शिखर पर पहुँचना बहुत कठिन होता हे और उन्हें वेतन भी पुरुषो के बराबर नही मिलता। किन्तु लडकी को माता बनना होता है, इसलिए वह बाल मनोविज्ञान और बाल-शिक्षण का पाठ्यक्रम अधिक लेती है और पारिवारिक अर्थशास्त्र का भी अध्ययन करती है (हालाँकि कुछ अधिक बौद्धिक कालेज इसे अपने पाठ्य विषयो मे सम्मिलित नही करते)। वह कालेज की राजनीति मे भी लडको की भाँति ही सक्रिय भाग लेती है, क्योकि उसे भी भविष्य मे मित्र बनाने और चुनावो को प्रभावित करने की आवश्यकता पड सकती है।

विश्वविद्यालय का अध्ययन

अडरग्रेजुएट कालेज से विश्वविद्यालय के किसी ग्रेजुएट स्कूल मे जाना हाई स्कूल से कालेज मे जाने की भाँति एका-एक होने वाला एक बड़ा परिवर्त्तन है। देश के २,७८,००० ग्रेजुएट छात्र अपने आपको

कानून, डाक्टरी, फिलासफी या प्रशासन के अत्यधिक प्रतिस्पर्धापूर्ण ज्ञान-क्षेत्र के लिए गम्भीरतापूर्वक तैयार कर रहे हैं। उन्हें ग्रेजुएट स्कूल मे भरती के लिए प्रतियोगिता करनी पडी है और वे जानते हैं कि यदि उन्होने परिश्रम नही किया तो वे असफल हो जाएगे।

ग्रेजुएट स्कूल मे पहुँच जाने के बाद अब उनके पास विश्वविद्यालय छात्र सघ की राजनीति, शौकिया कलाओ, खेल-कूद या रात्रिकालीन वाद-विवाद आदि के लिए समय नही रहता। एक वर्ष पूर्व उन्होने इन चीजो को जितनी उत्सुकता और आग्रह से अपनाया था, उतनी ही तत्परता से वे अब उनका परित्याग कर देते हैं। ग्रेजुएट छात्र छात्रावास मे कई साथियो वाले बडे कमरे मे रहने के बजाय अपने अकेले के लिए एक कमरा चाहता है। जब उसे किसी सेमिनार या कक्षा के व्याख्यान मे नही जाना पडता, तब वह अपना अधिकतर समय पुस्तकालय या प्रयोगशाला मे व्यतीत करता है या अपने ही कमरे मे काफी रात गये तक कीमती पाठ्य पुस्तको का अध्ययन करता है। बीच-बीच मे वह सिनेमा या सगीत के लिए, अथवा टेनिस के खेल के लिए या किसी मित्र लडकी से मिलने के लिए भी समय निकालता रहता है। लेकिन उसका मुख्य काम अध्ययन होता है।

विदेशो से आने वाले लोग यह देखकर हैरान होते है कि ग्रेजुएट स्कूलो के प्रोफेसर छात्रो से बहुत अधिक पढाई कराते है, उन्हे स्कूलो मे बहुत अधिक उपस्थिति के लिए मजबूर करते हैं, उनकी बहुत अधिक परीक्षाए और टेस्ट लेते हैं और उनसे बहुत लम्बे और भारी भरकम निबन्ध लिखाते हैं। वे यह देखकर भी चकित होते है कि इन ग्रेजुएट स्कूलो के सेमिनारो का स्तर बहुत ऊँचा है।

इतने मनोयोगपूर्ण अध्ययन के बाद एक वर्ष मे या कभी-कभी दो वर्षों मे छात्र को मास्टर की डिग्री मिलती है। पीएच० डी० की डिग्री पाने के लिए कम-से-कम तीन वर्ष चाहिए और बहुत से छात्र तो इस डिग्री के लिए अत्यावश्यक निबन्ध तैयार करने मे कई साल लगा देते हैं।

मेडिकल छात्रो को कई साल तक कक्षा भवनो मे लैक्चर सुनने और प्रयोगशालाओ मे क्रियात्मक प्रयोग करने के बाद फिर कई वर्ष तक इटर्नशिप या रेजिडेट चिकित्सक के रूप मे काम करना पड़ता है।

यह जानना बहुत दिलचस्प होगा कि अमेरिकन शिक्षा-प्रणाली इस ढग से क्यो आयोजित की गई है कि उसमे छात्र को हाई स्कूल से एकदम कालेज के और कालेज से ग्रेजुएट स्कूल के ऊँचे स्तर पर जाना पड़ता है। ऐसा लगता है, मानो हर स्तर पर हमारी शिक्षा-प्रणाली यह अनुभव करती है कि उसने छात्र को एक ही दिशा मे बहुत लम्बे अर्से तक और बहुत अधिक घिसा है, इसलिए उसकी क्षतिपूर्ति के लिए वह उसे एकदम भिन्न दिशा मे उछाल कर आगे ले जाती है। पहली मजिल मे वह छात्र को एकदम सामाजिक स्वतत्रता दे देती है, यहाँ तक कि परिवार के नियन्त्रण से भी मुक्त कर देती है और दूसरी मजिल मे उसे एकाएक बौद्धिक स्वतन्त्रता ही प्रदान नही करती, बल्कि उसके सामने डूबने या तैरने की अथवा जीवित रहने या मर जाने की चुनौती भी फेंक देती है यानी उसे डार्विन से एकदम स्पेन्सर बना देती है।

ग्रेजुएट स्कूल मे भी कुछ कमिया है। उसमे एक निश्चित क्षेत्र मे समय से पूर्व या अत्यधिक विशेषीकरण कराने का प्रयत्न किया जाता है, मशीनी ढग का अनुसन्धान कराया जाता है और बुद्धि और कल्पना से रहित निबन्ध तैयार कराये जाते है जिनमे अन्तर्दृष्टि कम और मशीन की भाँति मोटी-मोटी पुस्तको से उद्धरण अधिक रहते है। छात्र को यदि भविष्य मे प्रोफेसर बनना हो तो उसके लिए पीएच० डी० की डिग्री प्राप्त करना अत्यावश्यक है, तथापि पीएच० डी० की पढाई का अध्यापन कला से कोई सम्बन्ध नही है, बल्कि वह छात्र को अध्ययन के व्यवसाय से हटा कर अनुसन्धान की ओर अधिक आकृष्ट करती है। इसलिए यदि पीएच० डी० करने के बाद अमेरिका मे अध्यापक तैयार होते हैं तो उस का कारण पीएच० डी० की पढाई की विशेषता नही है।

लोक-शिक्षा

राष्ट्रपति के कमीशन ने यह मत प्रकट किया है कि विश्वविद्यालय शिक्षा के क्षेत्र मे इससे भी बडी भूमिका अदा करे—यानी वे ऐसे साधन का काम करें जिससे देश की सारी जनता ही अपनी क्षमता के अनुसार शिक्षित की जा सके।

अमेरिका के बडे विश्वविद्यालयो ने इस लक्ष्य की ओर कदम बढाना प्रारम्भ कर भी दिया है। वे टेलीविजन पर डाक से, या राज्य के विभिन्न भागो मे विस्तार कक्षाएं चला कर और अध्ययन-मचो, वाद-विवादो और अध्ययन, मडलो को प्रोत्साहन देकर शिक्षा का अधिकाधिक विस्तार कर रहे हैं। करीब आठ लाख प्रौढो को विश्वविद्यालय प्रागण से दूर रहते हुए ही शिक्षा दी जाती है और यदि टेलीविजन और डाक से शिक्षा पाने वाले भी शामिल कर लिये जाए तो यह शिक्षा पाने वालो की सख्या तीन करोड तक पहुच जाएगी।

इस बीच प्रौढ-शिक्षा का आन्दोलन भी सारे देश मे वटवृक्ष की तरह फैल गया है। सन् १८२६ से ही, जबकि जोसिया होलब्रुक ने मैसाचुसेट्स मे लाइसियम आन्दोलन प्रारम्भ किया था, शिक्षा को जीवन भर चलती रहने वाली एक सतत प्रक्रिया के रूप मे स्वीकार किया जाता रहा है। सन् १८७४ मे शोतोका आन्दोलन प्रारम्भ हुआ और १९०४ मे इस आन्दोलन की ओर से लोक-शिक्षण के लिए घुमक्कड कम्पनियो का एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाने का सिलसिला शुरू किया गया। ये घुमक्कड कम्पनियाँ इस नगर से उस नगर मे जाती और रातो-रात किसी खाली स्थान पर एक बडा शामियाना तान देती और सप्ताह भर व्याख्यानो, सगीत कक्षाओ और यात्रा के ज्ञानवर्धक रोचक किस्सो से वहा के लोगो का मनोरजन करती और उन्हें शिक्षा भी देती।

आज सार्वजनिक स्कूलो मे रात्रिकालीन कक्षाएं लगा कर आम लोगो को प्रौढ-शिक्षा दी जाती है। इन सान्ध्य या रात्रिकालीन कक्षाओं

मे तीस लाख से अधिक प्रौढ शिक्षा पाते है। इनमे गिटार वादन से लेकर गणित तक और धातु की नक्काशी के काम से स्पेनिश भाषा तक सभी चीजो की शिक्षा दी जाती है।

वाई० एम० सी० ए० और वाई० डब्ल्यू०सी०ए०, यूनियने, कृषक दल, अथवा व्याख्यान, कथाए या अन्तर्राष्ट्रीय मामलो के वाद-विवादो का आयोजन करने वाले सगठन—अर्थात् नाना प्रकार की सस्थाए ये विशेष अध्ययन-अध्यापन कार्यक्रम चलाती है। कृषि विभाग की विस्तार सेवा के जरिये करीब ७० लाख ग्रामीण कृषि सम्बन्धी मुद्रित साहित्य प्राप्त करते हैं, क्रियात्मक प्रदर्शनो का लाभ उठाते है, सभाओ मे भाग लेते हैं या फोर-एच क्लबो (जहाँ हाथ, हृदय, घर और स्वास्थ्य के विकास का प्रशिक्षण मिलता है) शामिल होते है। इससे ग्रामीण लडके-लड़कियो को मनोरजन के साथ-साथ कृषि और पशुपालन अथवा अच्छे ग्रामीण जीवन की शिक्षा मिलती है। देहातो मे चलते-फिरते पुस्तकालय भी जाते है जिनसे ग्रामीणो तक आधुनिक और प्राचीन दोनो प्रकार के साहित्य की पुस्तके पहुचती हैं।

सार्वजनिक पुस्तकालय अपने आप मे एक शिक्षा सस्था है (अमेरिका मे सात हजार सार्वजनिक पुस्तकालय हैं)। इसमे लोगो को सिर्फ घर ले जाकर पढने के लिए पुस्तकें ही नही मिलती, बल्कि पाठक को अपने मन के अनुकूल पुस्तक या वाछित विषय की पाठ्य-सामग्री खोजने के लिए सलाह-मशविरा भी दिया जाता है। ये पुस्तकालय विभिन्न किताबों पर व्याख्यान कराते हैं, बच्चो को कहानियाँ सुनाने के लिए चौपालें लगाते हैं, वाद-विवाद कराते हैं, ग्रामोफोन के रिकार्डो, सिनेमा फिल्मो, प्रदर्शनियो और क्लबो आदि के द्वारा मनोरजन और शिक्षा प्रदान करते है। इनमे अन्धो के लिए ब्रेल लिपि की पुस्तके भी होती है। इनके सभा भवनो का उपयोग सास्कृतिक कार्यक्रमो के लिए किया जाता है और इनमे स्थानीय इतिहास, स्थानीय व्यक्तियो की वशावलि और

ललित कला आदि विशेष रुचि की चीजो का विशिष्ट सग्रह भी रहता है।

अमेरिका मे जब यूरोप से आप्रवासियो के आगमन की विशाल लहर प्रारम्भ हुई तभी से प्रौढ-शिक्षा आन्दोलन का एक महत्त्वपूर्ण अग अमेरिकीकरण कार्यक्रम रहा है। इसका उद्देश्य नये आप्रवासियों को अमेरिकन सस्कृति का ज्ञान प्रदान कर उन्हें अमेरिकन नागरिक बनने के लिए तैयार करना रहा है। ये लोग सार्वजनिक स्कूलो की सान्ध्य कक्षाओ मे जाते हैं और वहाँ अग्रेजी भाषा, अमेरिकन इतिहास भूगोल और प्रशासन की शिक्षा ग्रहण करते हैं। यद्यपि ये कक्षाएं स्वैच्छिक है, तो भी इनमे बहुत-से लोगो को स्कूली शिक्षा का पहली बार आस्वादन मिला है। इससे उन्होने यह भी अनुभव किया है कि लोकतन्त्र का अर्थ सबके लिए ज्ञान और शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार है।

सयुक्त राज्य शिक्षा के लाकतन्त्रीकरण मे असफल दो बातो में रहा है। पहली यह कि हर राज्य मे शिक्षा की व्यवस्था और सुविधाएं समान नही हैं, कुछ मे स्कूल अधिक अच्छे है और कुछ मे कम। दूसरी यह कि दक्षिण मे नीग्रो लोगो को शिक्षा की पूर्ण सुविधा नही रही है। सन् १९५४ और १९५५ के उच्चतम न्यायालय के निर्णयो से पूर्व दक्षिणी राज्यो मे नीग्रो और गोरे लोगो के लिए स्कूल अलग-अलग थे। आज यद्यपि इन निर्णयो के कारण यह पृथकता कानून के विरुद्ध घोषित कर दी गई है तो भी इस पृथकता के पूर्ण उन्मूलन और निवारण के लिए अभी बहुत अधिक परिश्रम करना होगा।

शिक्षा और स्वतन्त्र विश्व

हाल की एक सर्वाधिक उत्साहवर्धक घटना है द्वितीय विश्व-युद्ध के बाद अन्तर्राष्ट्रीय छात्रो की सख्या मे भारी वृद्धि। आज ३५ हजार विदेशी छात्र और १५ हजार विशेषज्ञ सयुक्त राज्य मे शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं और करीब दस हजार अमेरिकन छात्र अन्य देशो मे पढ रहे

हैं । फुलब्राइट अधिनियम, स्मिथ-मुण्ट अधिनियम, शिक्षा आदान-प्रदान अधिनियम और इसी तरह के अन्य अनेक कार्यक्रमो के फलस्वरूप अमेरिकन सरकार अन्तर्राष्ट्रीय शिक्षा का एक विशाल कार्यक्रम चला रही है। विश्व के इतिहास मे इससे पहले इतना बडा कोई कार्यक्रम कभी नही चलाया गया। इन्स्टीट्यूट ऑफ इटरनेशनल एजूकेशन नामक एक गैर-सरकारी स्वैच्छिक सस्था अमेरिकन और विदेशी छात्रो को अन्तर्राष्ट्रीय शिक्षा की योजनाओ मे सहायता देती है। कालेज या विश्वविद्यालय अक्सर छात्रवृतियाँ दे देते हैं जिससे पढाई का खर्च निकल आता है।

कालेजो और विश्वविद्यालयो के छात्र और प्रोफेसर ही नही बल्कि हाई स्कूलो के लडके, श्रमिक सगठनो, उद्योगो और कृषि-क्षेत्र के प्रतिनिधि और टैकनिकल विशेषज्ञ भी सस्कृतियो के इस आदान-प्रदान मे हिस्सा लेते हैं । सघीय शिक्षा विभाग अध्यापको, नेताओ और विशेषज्ञों के लिए विशेष कार्यक्रमो का आयोजन करता है जिससे करीब आठ हजार व्यक्ति लाभान्वित होते है। अन्य देशो के साथ अध्यापको के आदान-प्रदान के कार्यक्रम मे प्रतिवर्ष तीन हजार के लगभग अध्यापको का विनिमय होता है। शिक्षा विभाग अध्यापको और छात्रो के आदान-प्रदान मे सहायता देने के लिए उनकी योग्यता के मूल्याँकन आदि की सेवा भी प्रदान करता है। वह विदेशो की शिक्षा सम्बन्धी प्रवृत्तियो और रुझानो के बारे मे महत्त्वपूर्ण सूचनाए भी देता है।

जहाँ कही किसी कालेज या विश्वविद्यालय मे विदेशी छात्र होते हैं, वहा उनके इर्द-गिर्द और आस-पास रहने वाले नागरिक उनकी उपस्थिति का लाभ उठा कर उनके देशो के बारे मे अधिक जानकारी पाने का प्रयत्न करते है। इससे देश के अनेक नगरो का, जो बहुत दूर अन्दरूनी भागो मे स्थित है, अन्य राष्ट्रो के साथ अप्रत्यक्ष सम्पर्क हो गया है । इस तरह इन कालेजो और विश्वविद्यालयो के छात्रो को विदेश मे एक दूसरा आत्मीयतापूर्ण घर मिल गया है।

विदेशी छात्रो के लिए विशेष ग्रीष्मकालीन पाठ्यक्रम आयोजित किये जाते हैं ताकि उन्हे अपनी अग्रेजी भाषा को अमेरिका मे उपयोग के लायक परिष्कृत करने मे सहायता मिले, अमेरिकन जीवन की झांकी मिले और वे अमेरिकन छात्रो के साथ विचारो का आदान-प्रदान कर सकें और अपने इर्द-गिर्द के नागरिक जीवन मे भाग ले सकें।

आन्तरिक मामलो की भाँति अन्तर्राष्ट्रीय मामलो मे भी सयुक्त राज्य शिक्षा पर बहुत भरोसा करता है। वह मनुष्य की भले-बुरे को जानने और उनके अनुसार आचरण करने की आकाक्षा को बहुत महत्त्व देता है। वह ज्ञान की शक्ति को बहुत मूल्यवान समझता है, जिससे वह समस्याओ को जान और हल कर सकता है और उन बाधाओ पर विजय पा सकता है, जो उसे एक अच्छा और सुखी नागरिक बनने मे रोके हुए हैं। अमेरिकन स्कूल प्रणाली मे निरन्तर प्रयोग चलते रहते हैं और साथ ही उन पर बाहर के नियन्त्रण के बजाय नगर का अपना ही नियन्त्रण होता है, इसलिए अमेरिका स्वभावत यह मानता है कि अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र मे भी हम बिना नियन्त्रण के सहयोग कर सकते है और अनेकता से एकता पैदा कर सकते हैं। किन्तु अनेकता और एकता दोनो को एक साथ रखने के लिए विचारो का निरन्तर आदान-प्रदान अत्यावश्यक है। यह आदान-प्रदान शिक्षा के क्षेत्र मे नये अन्तर्राष्ट्रीयवाद से सभव है।

सयुक्त राज्य आज एक सास्कृतिक पुनर्जागरण के मध्य मे है, भले ही बाहर से देखने पर इसके विपरीत बात प्रतीत होती हो। यह सास्कृतिक पुनर्जागरण इतिहास का एक महत्त्वपूर्ण युग होता है। लेकिन अमेरिका के इस सास्कृतिक पुनर्जागरण की यह विशेपता है कि इसमे अतीत की भाँति सस्कृति केवल उच्च सम्भ्रान्त वर्गों तक ही सीमित नही है। आज सस्कृति सभी को समान रूप से प्रदान की जा रही है।

अमेरिकन लोग "बौद्धिक" (इटलैक्चुअल) शब्द से हमेशा भडकते रहे हैं। इस शब्द को मार्क्स ने समाज को वर्ग-सघर्ष की रणस्थली के

रूप मे प्रस्तुत करने की अपनी विकृत और अधूरी विचारधारा मे प्रयोग किया था। इस शब्द से यह भी प्रतीत होता है कि एक वर्ग अन्य वर्गों से श्रेष्ठ है। अमेरिकन लोग इस मान्यता को स्वीकार नही कर सकते। इसके वावजूद आज नये विचार और नई कल्पनाएँ देने वाले आदमी का पहले से वहुत अधिक सम्मान है। प्रशासन मे भी नये-नये विचार और नई कल्पनाएँ देने वाले मनीषी लोग, अर्थशास्त्री, साँख्यिकी वेत्ता और समाजशास्त्री वाकायदा एक राजनीति-विज्ञान का निर्माण कर रहे हैं। इन लोगो की वजह से अब पहले की भाति सिर्फ अटकल से ही काम नही होता, वल्कि योजनावद्ध रीति से काम होता हैं। इसके परिणामो से प्रभावित होकर अब अमेरिकन लोग, जिनमे वहुसख्या मध्यवर्ग की है, अच्छे जीवन के लिए ज्ञान और वैज्ञानिक पद्धति का एक आवश्यक तत्व के रूप मे सम्मान करने लगे है। ज्ञान ही शक्ति है, और आज, जवकि वह एक ऐसी शक्ति के उच्च-स्तर पर पहुँच गया है जो सारी मानव-जाति का विनाश कर सकती है, उसे और भी वढाकर मानव समाज की रक्षक शक्ति मे परिवर्त्तित करने की आवश्यकता है।

अमेरिकन लोग ससार को जिस व्यापक और विशाल दृष्टि से देखते रहे हैं, उसमे क्षितिज का अन्त कही नही है। इस अन्तहीन ससार की ओर अव विज्ञान और टैक्नोलॉजी ने द्वार खोल दिया है। आज अमेरिकन इस वात से कुछ चकित और रोमाचित है कि अपरिसीम ससार मे प्रवेश का स्वप्न उनकी अपनी पीढी मे ही पूरा होने जा रहा है, इसलिए वे इस द्वार की चौखट तक फूँक-फूँक कर कदम रखते हुए वढ़ रहे हैं। इसके लिए पथ-प्रदर्शन पाने को वे शिक्षक, वैज्ञानिक और कलाकार का सहारा ले रहे हैं। स्कूलो मे छात्रो की वाढ चली आ रही है और भय है कि कही यह वाढ उनकी वुनियाद को न हिला दे। किन्तु इस प्रक्रिया मे सारा समाज ही शिक्षा के एक ऐसे अनुभव मे से गुजरेगा जहाँ से वापस लौटने की राह नही है।

राजनीति

अमेरिका की राजनीति और राजनीतिक दल विचारधाराओ पर नही, बल्कि हितो पर आधारित है। यहाँ के मुख्य राजनीतिक दलो को उदार या अनुदार कहना भ्रामक है। वे उदार भी हैं और अनुदार भी और साथ ही न उदार है और न अनुदार। राजनीति शास्त्र की प्रचलित परिभाषा के अनुसार वे दल नही है, बल्कि वे विभिन्न हितो का सम्मिश्रण और गठबन्धन हैं जो निरन्तर टूटते और फिर बनते रहते हैं। यह सोचना गलत है कि "उद्योग" और "श्रम" एक-दूसरे के विरुद्ध हैं, क्योकि उद्योग सचालक और श्रमिक वर्ग, दोनो ही अनेक समूहो और वर्गो के सम्मिश्रण हैं। इसीलिए कभी-कभी किसी बड़े उद्योग का छोटे उद्योग के साथ सघर्ष हो जाता है। किसी उद्योग के लिए कम तटकर लाभकारी होता है और किसी के लिए अधिक तटकर। उद्योग और श्रमिक दोनो ही इस बात पर एकमत है कि रोजगार और उत्पादन का स्तर ऊँचा रहे, किन्तु श्रमिक कानूनो के बारे मे दोनो में मतैक्य नही है।

इसका परिणाम यह है कि उद्योगपतियो और श्रमिको को मिलाकर उद्योगो का जो सगठन बनता है, वह बहुत पेचीदा है और तरह-तरह के सघर्षो से भरा हुआ है। सघर्षो का निरन्तर जारी रहना हमे बहुत कठोर और उद्दण्ड बना देता है—हम शक्ति और गति का प्रदर्श न करने और दूसरे पक्ष को ठगने मे कुशल हो जाते हैं, हममे दूसरे पक्ष के साथ झुककर समझौता करने, काम मे विलम्ब करने, हल्ला-गुल्ला मचाने की योग्यता आ जाती है और जब हमारी बेहूदा मागो मे जरा भी कमी कर दी जाती है तो हम यह दिखावा करते हैं कि हमने बहुत बड़ी

कुर्बानी की है, हालांकि इस कटौती के बावजूद हम घाटे मे नही होते। जैसा कि सेम्युअल ल्युवेल ने कहा है, लोकतन्त्र की शक्ति इस बात मे निहित है कि हम संघर्ष करके परस्पर एकता के सूत्र मे बधते है। अनुभव यह बताता है कि अमेरिकन प्रणाली से अधिकाधिक लोगो के लाभो मे अधिकाधिक वृद्धि हो रही है।

राजनीतिक नेता का काम यह है कि वह इन सब परस्पर-विरोधी दावो को जांचे और परखे और सब हितो को मिलाकर एक ऐसा सम्मिश्रण और गठबन्धन तैयार करे जिसमे किसी को किसी दूसरे के सम्मुख अनुचित बलिदान न करना पडे और सभी सन्तुष्ट रहें। विदेशी लोग यह महसूस करते है कि हमारी राजनीति मे आदर्शवाद या विचारधारा का अभाव है। इसका कारण यह है कि वे राजनीति मे निश्चित विचारधाराओ को अपनाने के अभ्यस्त हैं—वे यह मानते हैं कि राजनीति की समस्याएँ कुछ पूर्व-निर्धारित और पूर्व-स्वीकृत सिद्धान्तो और मान्यताओ के आधार पर ही हल की जा सकती हैं। इसके विपरीत अमेरिकनो का यह विश्वास है कि हर समस्या अपने आप मे अलग है और उसे पृथक् रूप मे हल किया जा सकता है। वे यह मानते हैं कि हर समस्या के भीतर ही उसके हल का बीज निहित है और यदि उसे कौशल और सावधानी से हल करने का प्रयत्न किया जाए तो उसके परिणाम सन्तोषजनक हो सकते हैं।

अमेरिका की राजनीतिक प्रणाली मे ऊपर से अवश्य विचारधारा का अभाव नजर आता है, किन्तु उसकी पृष्ठ भूमि मे कुछ बुनियादी सिद्धान्त हैं जिन्हें हर व्यक्ति मानकर चलता है। ये सिद्धान्त है :

१. सयुक्त राज्य मे जनता के लिए जनता द्वारा जनता का शासन है। शासन को अपने अधिकार और सत्ता की प्राप्ति जनता से होती है और यह सत्ता अन्तत जनता के हाथ मे ही रहती है, जिससे वह समय-समय पर चुनावो के द्वारा इसे विभिन्न नेताओ के हाथो मे

सौंपती रहती है और उनके कानूनों और नियमो को अपने सशोधन के अधिकार से सशोधित भी करती रहती है।

२. यह सत्ता और अधिकार किसी पुरानी अपरिवर्त्तनीय परम्परा या प्रथा का परिणाम नहीं है, वह मानवीय तर्कबुद्धि पर आवृत है, जो किसी खास विचारधारा या वाद के साथ बधने के बजाय नई परिस्थितियो के अनुसार अपने आप को बदलती रहती है। अमेरिकन लोग यह शिकायत करते है कि हमारे यहां "समाजवाद चुपके-चुपके घुसा चला आ रहा है", किन्तु वास्तविकता यह है कि वे हर समस्या को अलग-अलग ढग से निबटाते है, किसी समस्या के बारे मे वे 'समाजवादी' दृष्टिकोण अपनाते हैं, किसी के बारे मे 'पूंजीवादी', किसी के बारे मे 'सहकारितावादी, और किसी के बारे मे 'तानाशाही'।

३. सार्वजनिक मामलो से सब से अधिक विश्वसनीय पथ-प्रदर्शक जनता का नैतिक विवेक है। यद्यपि यह मान्यता आदर्शवादी विचारधारा की मान्यता है- किन्तु हाल मे किये गये जनमत-सग्रहो ने अक्सर यह सिद्ध किया है कि जनता कांग्रेस मे अपने प्रतिनिधियो से भी काफी आगे रहती है।

४ शासन एक आवश्यक और अनिवार्य बुराई है। वह हमेशा अपने अधिकार को फैलाने का प्रयत्न करता रहता है और यह जरूरी होता है कि उसका निरन्तर मुकाबला किया जाता रहे और उसे अनियन्त्रित न होने दिया जाए। हम जितना अधिक काम अपने स्वैच्छिक प्रयत्न से या स्थानीय स्तर पर करेंगे सरकार उतनी ही कम शक्तिशाली और खतरनाक होगी। टॉम पेन का यह कहना सही था कि समाज इन्सानो की अच्छाइयो से पैदा होता है और सरकार उनकी बुराइयो से। इसलिए जिस वस्तु के राजनीति के भवर मे पड जाने की आशका है, उसे समाज के ही हाथो मे बनाये रखने के लिए यह जरूरी है कि उसे स्वैच्छिक और स्थानीय आधार पर सम्पन्न किया जाए।

५ परम्पराओ का पालन हमें बहुत सन्तोष और आनन्द प्रदान करता है, किन्तु हम विद्रोह करके हमेशा नई परम्पराओ को जन्म देते रहते है। सरकार की प्रायः हरेक प्रवृत्ति, जिसे अब हम अपरिहार्य समझने है, किसी न किसी समय बहुत उग्र समझी जाती थी। बाल श्रम निवारक कानून, क्रमिक आयकर, कम्पनी-गुट विरोधी कानून और बेरोजगारी बीमा आदि इसके उदाहरण है। राष्ट्रपति थियोडोर रूजवेल्ट स्ट्रीटकार (ट्राम-बस आदि) चालक के लिए प्रतिदिन अधिक-से-अधिक बारह घटे के काम का कानून बनाने के प्रस्ताव को भी उग्र समाजवादी प्रस्ताव समझते थे। किसी विशिष्ट राजनीतिक विचारधारा या वाद के साथ बंधे न होने के कारण हम ऐसे हर कार्य-क्रम को अपना लेते है जो हमे अपनी वर्त्तमान आवश्यकताओ के अनुकूल प्रतीत होता है फिर चाहे वह उद्योग, श्रमिक, कृपि-आय, काम के घटे और मजदूरी, मुद्रा-स्फीति या अन्तर्राष्ट्रीय गठबन्धन आदि किसी भी वस्तु के नियमन के लिए हो।

६. स्वतन्त्रता की घोषणा मे सभी नागरिको को जन्म से बराबर माना गया है और हमारे सविधान मे भी इस समानता को मान्यता दी गई है, इसलिए अमेरिकनो को कभी भी वर्ग-सघर्ष नही करना पड़ा। उनकी दार्शनिक विचारधारा मे वर्गभेद जैसी किसी चीज़ का अस्तित्व नही है। यदि वे किसी वर्ग को कुछ विशेष अधिकारो का उपभोग करते देखते हैं तो उसे वे अपने लिए खतरा नही समझते, बल्कि चुनौती मानते है। किसी धनी को विशाल ऐश्वर्यपूर्ण महल मे रहते देखते हैं तो वे सोचते हैं कि उसे ध्वस्त क्यो किया जाये, हो सकता है कि किसी दिन वे स्वय उस पर दखल कर सकें। इसलिए अमेरिकन सुधार आन्दोलन मे शक्तिशालियो को विशेप अधिकारो और लाभो से वचित करने के बजाय वे विशेप अधिकार और लाभ सभी लोगो को दिलाने का प्रयत्न किया जाता है। हमने सामाजिक क्रान्ति के बजाय सामा-जिक उत्थान और अभ्युदय को अपनाया है और यह हमारे लिए कुछ

तो हमारी विशाल मानवीय और प्राकृतिक साधन-सम्पदा के कारण सम्भव हुआ है और कुछ इस कारण कि हमारी मनोवृत्ति सौभाग्य से उसके अनुकूल है। हममे स्वैच्छिक सगठन वनाने की प्रवृत्ति है और इतनी ऊर्जा और शक्ति है कि उसके बल पर हम वर्त्तमान को छार-क्षार करके उसके अवशेषो पर नव-निर्माण करने के वजाय, वर्त्तमान को कायम रखते हुए उसके शिखर पर सामाजिक उन्नति की नई मजिल खडी करते हैं।

इसलिए विग्रहो और तनाव-खिचाव के वावजूद मैत्री की एक भावना हमारे राजनीतिक जीवन के मूल मे रहती है। राज्य का गवर्नर हमारे कस्बे मे आकर जव भाषण देता है और कहता है कि "हम आपके और मेरे जैसे साधारण लोगो के लिए सुख-सुविधा की व्यवस्था करना चाहते हैं", तव उसका अभिप्राय सचमुच यही होता है। और ऐसा हो भी क्यो न, जवकि यह गवर्नर किसी अन्य देश मे उत्पन्न होकर आप्रवासी के रूप मे यहाँ आया और अपने अध्यवसाय से आर्थिक सोपान की ऊँची सीढी पर और उसके बाद राजनीति की सीढी पर चढ सका ?

हमारे सघर्षों और मतभेदो मे भी परस्पर-विरोधी पक्षो मे कुछ वातो पर मतैक्य है। दोनो ही पक्ष यह स्वीकार करते है कि हम समान है, सवाल सिर्फ यह रह जाता है कि यह समानता कितनी है ? यह वात हम पर पूर्णतः स्पष्ट हो गई है कि मार्क्स जिस वर्ग-सघर्ष की वात करता है, वह निरा मानसिक विभ्रम है। हमारी समझ मे ही यह वात नही आती कि कोई भी विवेकशील व्यक्ति वर्ग-संघर्ष की मिथ्या कल्पना को ही समाज-व्यवस्था का सच्चा विवरण कैसे मान लेता है। यह समझना भी हमारे लिए उतना ही कठिन है कि दूसरे लोग हमारी प्रणाली को, जिसमे सव व्यक्तियो को समान माना जाता है और निरन्तर सघर्ष और अध्यवसाय करके विद्यमान असमानता को दूर

करने का प्रयत्न किया जाता है, क्यों स्वीकार नही करते, जबकि यह प्रणाली बिल्कुल सही और तर्कयुक्त प्रतीत होती है।

७. अधिकार और सत्ता खतरनाक चीज है इसलिए वह स्थानीय शासन, जिला प्रशासन, राज्य, सघीय सरकार, स्वैच्छिक सगठन और राजनीतिक दल आदि अनेक भागो मे बांट दी जाती है। जहां सम्भव और व्यवहार्य होता है, यह प्रयत्न किया जाता है कि अधिकारी व्यक्ति स्वेच्छया काम करने वाला हो और उसे उसके लिए कोई वेतन न दिया जाए। सरकारी प्रशासन के भीतर भी सत्ता और अधिक विभाजित कर दी जाती है और उसे नियन्त्रित और सन्तुलित रखा जाता है।

शासन के सम्बन्ध मे लिंकन के ये शब्द सम्भवत अमेरिकन जनता के रुख को सबसे अच्छे ढग से अभिव्यक्त करते हैं : "शासन का युक्तियुक्त उद्देश्य किसी स्थान की जनता के लिए वह कार्य करना है, जिसे करना वह जरूरी तो समझती है, किन्तु अपनी पृथक् या वैयक्तिक क्षमता मे कर नही सकती अथवा अच्छी तरह नही कर सकती।"

राजनीतिक दल

सविधान मे राजनीतिक दलो की कोई व्यवस्था नही है, इसलिए उन्हे राज्यो द्वारा बनाये गये कानूनो को दृष्टि मे रख कर अपने लिए स्वय नियम बनाने पडते हैं (सघीय कानूनो का भी, जो राष्ट्रीय चुनावो के विनियमन के लिए बनाये गये हैं, राजनीतिक दलो पर असर पडता है, हालांकि उतना नही)। किन्तु दलीय प्रणाली बहुत शिथिल बन्धन मे बधी होती है। उदाहरण के लिए दलो के सदस्यो को लीजिए यद्यपि। सत्तर प्रतिशत मतदाता दलो के सदस्यो के रूप मे दर्ज होते हैं, परन्तु इनमे से अधिकतर सदस्य प्रारम्भिक चुनावो या असली आम चुनावो मे मतदान करने के सिवाय दल के किसी भी काम मे कोई हिस्सा नही लेते या अधिक-से-अधिक स्थानीय पदो के उम्मीदवारो के चुनाव की बैठक मे या राष्ट्रपति पद के चुनाव-आन्दोलन के समय राजनीतिक सभाओ और प्रदर्शनो मे शक्ल दिखा जाते हैं।

सरकारी तन्त्र की भाँति राजनीतिक दलो का सगठन भी ऊपर से नीचे की ओर होने के बजाय नीचे से ऊपर की ओर होता है। दल की हर स्थानीय इकाई स्वय अपना सगठन करती है, और वही यह निश्चय करती है कि उसकी समिति की सदस्य सख्या कितनी हो। वह स्थानीय पदो के लिए अपने उम्मीदवारो का चयन स्वय करती है और उन्हे चुनाव मे सफल बनाने का प्रयत्न भी खुद ही करती है।

हर स्तर पर दल ऊपर से किसी भी तरह के आदेश या निर्देश पाये बिना अपना काम और प्रबन्ध स्वय चलाता है। हर राज्य की दलीय शाखा अपने राज्य के गवर्नर पद के लिए स्वय उम्मीदवार छाँटती और काग्रेस के लिए या अन्य पदो के लिए भी अपने उम्मीदवारो का चयन खुद ही करती है। उसके नियम भी अपने लिए स्वय बनाये हुए होते है। राजनीतिक दल की राष्ट्रीय समिति को राज्यो की दलीय शाखाओं पर अनुशासन करने का कोई अधिकार नही होता। राष्ट्रपति को भी यह अधिकार नही होता कि वह काग्रेसी (ससद्) मे अपने मन के अनुकूल उम्मीदवार चुनवा सके। राष्ट्रपति रूजवेल्ट ने १९३८ से दल के शुद्धीकरण का जो प्रयत्न किया था, वह इसीलिए असफल हो गया था। राष्ट्रपति की नीतियो से मतभेद और विरोध रखने वाले व्यक्ति भी, स्वय राष्ट्रपति के दल से चुनाव मे खडे हो सकते है और जीत भी सकते है।

अमेरिका मे कोई व्यक्ति दल से निकाला नही जाता। अमेरिकन राजनीतिक दलो की विशेषता यह है कि किसी भी व्यक्ति को दल से निकाला न जाए और सब के साथ निभाव किया जाए। हर राजनीतिक दल विभिन्न और परस्पर-विरोधी हितो का मिश्रण और गठबन्धन होता है। ये हित चुनाव जीतने के लिए आपस मे मिल जाते है और इस चुनाव प्रतिस्पर्धा का सबसे बडा पुरस्कार राष्ट्रपति पद होता है। हर बडा राजनीतिक दल हर तरह के मतदाताओ मे से कुछ को अवश्य अपनी तरफ आकृष्ट करता है—चाहे वह श्रमिक हो या किसान,

कैथलिक हो या प्रोटेस्टैंट, नीग्रो हो या किसी अन्य अल्पसंख्यक जाति का सदस्य, उत्तर का हो या दक्षिण का, मध्यपश्चिम का हो या सुदूर पश्चिम का, व्यापारी हो या किसी खास पेशे का, धनी हो या गरीब, उदार हो या अनुदार, अन्तर्राष्ट्रीयतावादी हो या राष्ट्रीयतावादी।

हर दल यह वचन देता है कि वह देश को युद्ध से बचाए रखेगा, परन्तु लड़ाई जीतने के लिए तैयारी करता रहेगा, मतदाताओं को अधिकाधिक लाभ पहुँचाएगा, कर घटाएगा, अर्थ-व्यवस्था को ऊँचा उठाए रखेगा, किन्तु मुद्रास्फीति और महगाई नही बढने देगा, खाद्य-पदार्थ के मूल्यो को काबू मे रखते हुए भी कृषको की आमदनी कम नही होने देगा, कम्युनिज्म और आन्तरिक षड्यन्त्रो को रोकेगा, किन्तु नागरिक अधिकार और आजादी पर हाथ नही डालेगा और दूसरे दल से हर काम अधिक अच्छा करेगा।

किसी भी दल के बारे मे यह कहना, कि वह श्रमिको के हितो का समर्थक है, गलत होगा, हालाँकि अल्प आय वाले मतदाता डेमोक्रेटिक पार्टी की ओर अधिक झुकते हैं। किन्तु यह भी देखा गया है कि जब श्रमिक सगठन अपने सदस्यो से किसी एक पार्टी का समर्थन करने के लिए कहते हैं, तब परिणाम इससे भिन्न स्थिति को सूचित करते हैं, क्योंकि श्रमिको मे अपने सगठनो के आदेश के बावजूद, सामूहिक रूप से मत देने की प्रवृत्ति अन्य आर्थिक वर्गो से अधिक नही होती। इसलिए श्रमिको ने यह महसूस कर लिया है कि अधिक अच्छी नीति यही है कि दोनो ही दलो को उनके मत जीतने के लिए हाथ-पाँव मारने दिया जाए।

मतदाता आम तौर पर यह अनुभव करते है कि डेमोक्रेटिक पार्टी अधिक सरकारी नियन्त्रण और खर्च के पक्ष मे है, जबकि रिपब्लिकन पार्टी कम नियन्त्रण और अधिक मितव्ययिता की समर्थक है। लेकिन हाल के बजटो ने यह सिद्ध कर दिया है कि दोनो दलो मे किया जाने वाला यह भेद भी सही नही है। लेकिन इस धारणा का परिणाम यह

होता है कि जब मन्दी का भय होता है तो मतदाता डेमोक्रेटिक पार्टी के अधिक पक्ष मे हो जाते है और अच्छा जमाना रिपब्लिकन पार्टी के लिए अधिक अनुकूल रहता है। यह बात हर तरह के मतदाता के बारे मे सही है, चाहे वह श्रमिक हो या व्यवसायी, किसान हो या किसी पेशे मे काम करता हो। रिपब्लिकन लोग आम तौर पर दौलत के उत्पादन पर बल देते हैं, जबकि डेमोक्रेट उसके वितरण पर। फिर भी दोनो दलो को राष्ट्रीय चुनाव जीतने के लिए मध्यवर्ग और अल्प आय वर्ग दोनो की बहुसख्या के मत पाने के लिए प्रयत्न करना पडता है। इस प्रकार यह स्पष्ट है कि दोनो दलो मे सिद्धान्त का भेद नही है, भेद बारीकियो का है। दोनो दलो मे उदार वर्ग का आज प्राधान्य है, इसलिए दोनो ही 'नई नीति' (न्यू डील) के ढग के कानूनो के समर्थक है।

अमेरिकन राजनीतिक दलो की स्थिरता का कारण यह है कि वहाँ राजनीतिक आदर्शवाद या विचारधारा जैसी कोई स्थायी चीज नही है। और इसी कारण से दक्षिण के अनुदार लोग और उत्तर के उदार लोग, दोनो एक ही डेमोक्रेटिक पार्टी के सदस्य रहते है और फिर भी कॉग्रेस मे कुछ मामलो पर मत देते समय दक्षिण के अनुदार लोग अपनी पार्टी के उत्तरी उदारपथियो के बजाय रिपब्लिकन पार्टी के अनुदार लोगो के साथ मिल जाते है। इसके अलावा अमेरिकन पद्धति यह है कि अपनी विभिन्नताओ मे भी ऐक्य और समन्वय स्थापित किया जाए। आदर्शवादी विचारधाराए मध्ययुग के किलो या आधुनिक युग की मैजिनो लाइन की भाँति है। इनके द्वारा रणस्थल मे अच्छे ठिकानो को जीतने और उन पर जमे रहने की कोशिश की जाती है। लेकिन इसके विपरीत अमेरिकन दलीय प्रणाली मे सचलता है, वह हमेशा बदलती रहती है और अपने इर्द-गिर्द के समाज मे होने वाले परिवर्त्तनो के अनुरूप अपने मे परिवर्तन करती रहती है। वह एक आदर्श ससार के सम्बन्ध मे किसी दार्शनिक का स्वप्न नही है, बल्कि जनता की आकाक्षाओ को प्रतिबिम्बित करने वाला एक दर्पण है।

अमेरिकन राजनीति मे उग्र वामपक्ष या दक्षिण पक्ष क्यो नही है ? इसका सीधा-सादा उत्तर यह है कि यहाँ मतदाता भी उग्र वाम-पक्षी या उग्र दक्षिण पक्षी विचारो के नही है और यदि है भी तो उन की सख्या नगण्य है । दूसरी बात यह है कि सामाजिक क्षेत्र मे अमेरिका ने वर्ग-भेद को खत्म या उपेक्षित करने का प्रयत्न किया है और तीसरी यह कि यहाँ की अर्थ-व्यवस्था अपने लाभ अधिकाधिक लोगो मे बाँटने और फैलाने का प्रयत्न करती है ।

राष्ट्रपति पद के उम्मीदवार का चयन

राष्ट्रपति पद के लिए दलीय उम्मीदवारो का चयन करने के लिए जो राष्ट्रीय महासम्मेलन आयोजित किये जाते है, पहले वे रहस्य के आवरण मे छिपे रहते थे और आम जनता से दूर होते थे, परन्तु आज टेलीविजन के द्वारा उनका सम्बन्ध हर घर से हो गया है । इसका असर जनता और महासम्मेलन, दोनो पर पडता है । जब राजनीति लोगो के घरो की बैठको मे घुस जाती है और जब हर मतदाता प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से उम्मीदवार के चयन मे भाग लेता है तब राजनीतिक दृष्टि से क्या उचित और आवश्यक है, इस पर जनता की पसन्द या नापसन्द का असर पडना स्वाभाविक है । यदि जनता को राजनीतिक प्रक्रिया का अच्छा ज्ञान हो तो मतदान भी वह अधिक उद्‌बुद्ध होकर करेगी ।

जिस सर्कस को हम महासम्मेलन कहते है वह एक अजीब चीज है । उसमे आधुनिक मशीनरी और आदिमयुगीन सामरिक नृत्य का, आमोद-प्रमोदमय मैत्री और कटु विवादो का, भारी भरकम लैक्चर-बाजी और कूटनीतिक चालो का और उबा देने वाली नीरसता और भारी उत्तेजना का सम्मिश्रण होता है । क्या महासम्मेलन मे होने वाले इस शोर-गुल और हलचल का वास्तव मे कुछ औचित्य है ?

पिछले रिपब्लिकन महासम्मेलन मे १३२३ प्रतिनिधियो ने और डेमोक्रेटिक महासम्मेलन मे २७४४ प्रतिनिधियो ने (इनमे से हरेक का

वोट आधा था) भाग लिया था। इसके अलावा इन सम्मेलनो मे वैकल्पिक प्रतिनिधि भी काफी बडी सख्या मे होते है। ये लोग एक-दूसरे से अपरिचित होते है और यह अनुभव करते हैं कि उन्हे परस्पर परिचित होना है। इसलिए परिचय-प्राप्ति की खातिर वे अजीव-अजीव बातें करते है और परस्पर अपरिचित बच्चो की तरह एक-दूसरे के सामने खूब दिखावा करते और दूसरो का ध्यान आकृष्ट करते हैं। वे वेढगे हैट पहनते हैं और बडे-बडे बिल्ले लगाते है, अजीव-अजीव बाजो से तरह-तरह की आवाजें निकालते हैं; बडे-बडे प्रदर्शन-पट उठाकर चलते हैं जिन पर उनके उम्मीदवारो के चित्र लगे होते हैं। वे जुलूस निकालते और नारे लगाते है ताकि अपने जैसे अन्य अपरिचित प्रतिनिधियो मे से कुछ का ध्यान आकृष्ट कर सके और उनसे एकता स्थापित कर सकें। इस एकता के आभाव और उसकी आवश्यकता के कारण ही ये लोग दूसरो की भावनाओ को उभाडने की चेष्टा करते हैं ताकि उन्हे अपनी ओर खीच सकें।

यह उपाय काम कर जाता है और उससे एक ऐसे उम्मीदवार के पक्ष मे जिससे दल को एकता मे बाँधने और चुनाव जीतने की आशा की जाती है, जनता का समर्थन पाने के लिए एक अच्छा नाटक हो जाता है। गुप्त राजनीतिक सौदेबाजी के बावजूद, यह महासम्मेलन जनता की इच्छा को व्यर्थ नही कर सकता। उसे ऐसा ही उम्मीदवार छाटना पडता है जिसे जनता पसन्द करती है अन्यथा उसके हार जाने का भय रहता है। आम तौर पर यह उम्मीदवार किसी ऐसे राज्य का होता है जिसकी आबादी काफी बडी हो क्योकि इससे अपने प्रतिद्वन्द्वी से आगे रहने मे उसे मदद मिलती है। प्रायः राष्ट्रपति पद के लिए ऐसे उम्मीदवार का चयन किया जाता है, जो किसी राज्य का गवर्नर रह चुका हो, क्योकि वह गवर्नर के रूप मे उन समस्याओ का कुछ हद तक सामना करने का अनुभव पा चुका होता है, जो राष्ट्रपति के रूप मे उसे सुलझानी होती हैं। अब तक राष्ट्रपति

पद के चुनाव मे जितने भी उम्मीदवार सफल हुए है वे सभी उत्तरी यूरोपीय मूल के प्रोटेस्टेट पुरुप ही रहे है। लेकिन अब पूर्वी और दक्षिणी यूरोपीय मूल के कैथलिक धर्मावलम्बी पुरुष भी गवर्नर पदो पर पहुचने लगे है और यह सम्भव है कि इन पदो से वे अन्तत ह्वाइट हाउस मे भी प्रवेश कर सकें।

अमेरिका मे राष्ट्रपति पद पाना ही सबसे बडा पुरस्कार है, इस लिए महासम्मेलन की सारी शान, भव्यता और व्याख्यानबाजी का उद्देश्य राष्ट्रपति पद के लिए दल के उम्मीदवार का चयन करना होता है। उसके साथी उप-राष्ट्रपति पद के उम्मीदवार का चयन सम्मेलन के अन्त मे किया जाता है, जबकि सब लोग थक चुके होते हैं और घर लौटने की तैयारी करने लगते हैं। इसलिए उसका चयन जल्दबाजी मे किया जाता है, लेकिन उसमे भी यह ध्यान रखा जाता है कि दल की एकता को आँच न आए। यदि राष्ट्रपति पद का उम्मीदवार उदार हो तो उप-राष्ट्रपति पद के लिए अनुदार अथवा अनुदारपथियो द्वारा समर्थित उम्मीदवार छाँटा जा सकता है। यह इसलिए किया जाता है कि दल के दोनो वर्ग सन्तुष्ट रहे और जिस वर्ग का उम्मीदवार उप-राष्ट्रपति पद के लिए छाँटा जाता है उसे यह भी भरोसा रहता है कि यदि राष्ट्रपति की अचानक मृत्यु हो जाए तो उसका उम्मीदवार शेप अवधि तक राष्ट्रपति पद का वहन करने का अवसर पा जाएगा।

महासम्मेलन चुनाव प्रचार के लिए घोपणापत्र भी स्वीकार करता है। यह घोपणा-पत्र सम्मेलन की प्रस्ताव समिति तैयार करती है। इस घोपणा-पत्र पर भी दल क विभिन्न वर्गो मे अच्छी टक्कर होती है और परिणाम यह होता कि यह घोपणापत्र सबको सन्तुप्ट करने की दृष्टि से बिल्कुल निर्दोप बनाया जाता है।

आज के जमाने मे राष्ट्रपति पद का उम्मीदवार ऐसा व्यक्ति होना चाहिए जो अच्छा परखा हुआ राजनीतिज्ञ हो, राजनीतिक मामलो का कुशल खिलाड़ी हो और अपने दल को एकता के बन्धन मे बाँधने मे

निपुण हो। वह आत्म-विश्वासी भी हो और नम्र भी, मधुर स्वभाव का हो और शानदार व्यक्तित्व वाला भी, गम्भीर हो और नीतिकुशल भी। लेकिन सुविज्ञ होने पर भी वह बहुत बुद्धिजीवी नही होना चाहिए, सहानुभूतिपूर्ण होने पर भी बहुत नर्म नही होना चाहिए। उसमे ससार के उच्चतम पद के लिए गर्व नही होना चाहिए और देश के सामान्य नागरिको के बीच रहते हुए उसे हीनता भी अनुभव नही करनी चाहिए।

आन्दोलन और चुनाव

राष्ट्रपति पद का चुनाव ही एकमात्र ऐसा राजनीतिक चयन है जिसमे सभी अमेरिकन हिस्सा लेते है। यह चुनाव राष्ट्रीय प्रश्नो को सामने लाता है और एक नया गठबन्धन तैयार करता है, एक नया सर्व-सामान्य जनमत बनाता है जिससे निरन्तर सघर्ष और उसके बाद आपसी निभाव से अगले चार वर्ष तक देश को एकता मे बाँधे रखा जा सके। अमेरिका की चुनाव प्रणाली मे यह व्यवस्था है कि जो उम्मीदवार किसी राज्य के अधिक लोक-मत (पॉपुलर वोट) जीत लेता है उसी को उस राज्य के सब निर्वाचक मत (इलेक्टोरल वोट) मिल जाते है। इसका परिणाम यह है कि बडे राज्य ही इस चुनाव दगल का मुख्य अखाडा होते ह। इसलिए हर उम्मीदवार को कम-से-कम बडे शहरो मे अवश्य ही मतदाताओ से अपील करनी पडती है ताकि वह ५३१ निर्वाचक मतो मे से बहुसख्यक मत प्राप्त कर सके। (सीनेट और प्रतिनिधि सभा के हर सदस्य पर एक निर्वाचक मत होता है। इसी से न्यूयार्क के निर्वाचक मत ४५ है और नेवाड जैसे छोटे राज्य के कुल तीन)।

राष्ट्रपति पद के चुनाव मे एक से अधिक उम्मीदवार हो सकते हैं, इसलिए राजनीतिक दलो को सभी स्तरो पर चुनाव अभियान मे सक्रिय रहना पडता है और स्वय उम्मीदवारो को भी देश का दौरा कर वोट के लिए अपील करनी पडती है। ये उम्मीदवार घर-घर जाकर वोट माँगते हैं, नन्हे बच्चो को गोद मे उठाकर चूमते और आत्मीयता दिखाते

हैं, स्कूलों के दीक्षान्त समारोहो, क्लबो, सभाओ और रैलियो मे भाषण देते है।

लोग उस उम्मीदवार को देखना और उससे मिलना चाहते है जिसे वोट देने की उनसे आशा की जाती है। अगर वे मतदान के बारे मे अभी तक अनिश्चय की स्थिति मे होते है तो जो उम्मीदवार उनके पास पहुँच कर उनसे हाथ मिलाता है, उसी को वे वोट दे डालते है। लोग आपस मे जो बाते करते है, उसका भी गहरा असर पड़ता है। किन्तु इससे भी ज्यादा महत्त्वपूर्ण चीज है मतदाता की सामाजिक और आर्थिक पृष्ठभूमि।

उत्तरी राज्यो मे पुराने यूरोपीय मूल के प्रोटेस्टैंट लोग अधिकतर रिपब्लिकन उम्मीदवार के पक्ष मे और कैथलिक एव हाल के आप्रवासी या उनकी सन्ताने डेमोक्रेटिक उम्मीदवार के पक्ष मे मत देते हैं (दक्षिणी राज्यो मे स्थिति इमसे उल्टी ही है)। नीग्रो मतदाता परम्परा से रिपब्लिकन रहे है, किन्तु रूजवेल्ट प्रोग्राम के फलस्वरूप वे डेमोक्रेटिक पार्टी के समर्थक हो गये थे। बाद मे आइजनहोवर प्रशासन मे नागरिक अधिकार पाने के कारण कुछ हद तक वे फिर रिपब्लिकन समर्थक हो गये है। आज दोनो बडी पार्टियाँ लगभग बराबरी की स्थिति मे है और स्वतन्त्र या ढुलमुल मतदाताओ की सख्या भी बहुत बडी है, इसलिए नीग्रो लोगो के वोट चुनाव मे काफी निर्णायक सिद्ध हो सकते है।

आप्रवासियो की सन्ताने जैसे-जैसे सामाजिक सीढी पर ऊपर चढती है, वैसे-वैसे वे गन्दी बस्तियो को छोडकर साफ-सुथरे उपनगरो मे रहने लगती है, व्यापार या विशिष्ट पेशो मे जाने लगती है और अल्प आय वर्ग से मध्य वर्ग मे आ जाती है। ये लोग मार्क्स के इस सिद्धान्त को झुठला देते है, कि पूंजीवादी समाज मे गरीब और भी गरीब हो जाएगा। वे अच्छे घरो मे रहने लगते है, अधिक आय का उपभोग करते है, और अपने बच्चो को बेहतर शिक्षा दिला सकते है। पूर्वी नगरो की राजनीति पर वे अधिकाधिक हावी होने लगे है और बाद

मे राज्य की राजनीति मे भी हिस्सा ले रहे है। रूजवेल्ट के शासन मे वे महत्त्वपूर्ण सघीय पदो पर भी पहुँचने लग गये थे।

दक्षिणी राज्य परम्परा से डेमोक्रेटिक पार्टी के समर्थक रहे है, परन्तु अब वहाँ रिपब्लिकन पार्टी के समर्थक भी बढ रहे है और यह सम्भव है कि कुछ समय बाद राजनीतिक दृष्टि से दक्षिणी राज्यो की स्थिति भी वही हो जाए, जो बाकी सारे देश की है। पश्चिम और उत्तर के कृषको के वोट परम्परा से रिपब्लिकन पार्टी की ओर रहे है, परन्तु नई नीति (न्यू डील) के जमाने मे वे डेमोक्रेटिक पार्टी की ओर झुक गये थे। अब ये वोट दोनो मे बँट गये है और बहुत कुछ अनिश्चित स्थिति मे है, हालाँकि वे दोनो पार्टियो मे सन्तुलन स्थापित करने का प्रयत्न करते है।

मजदूरो को डेमोक्रेटिक पार्टी के शासन मे बहुत लाभ पहुँचा है, इसलिए वे उसके प्रति कृतज्ञ है, किन्तु इन लाभो से आज उनकी स्थिति इतनी अच्छी हो गई है कि वे भी मध्य वर्ग के लोगो की भाँति मध्य-मार्ग अपनाने लगे है। बहुत से श्रमिक अपने नेताओ के निर्देशो की अवहेलना करके भी रिपब्लिकन पार्टी के पक्ष मे मत देते हैं। उनकी समृद्धि ने राजनीतिक दृष्टि से उन्हें जागरूक बना दिया है और बहुत-से श्रमिको को यह डर भी अब लगने लगा है कि कही उनकी यूनियनें राजनीति मे बहुत शक्तिशाली न हो जाए।

इस बात के प्रमाण हर जगह मौजूद है कि वेतन और मजदूरी मे वृद्धि से श्रमिको और उनके मालिको के बीच का अन्तर कम होता जा रहा है। आज अधिकाधिक सख्या मे लोग समृद्ध होकर मध्य वर्ग मे शामिल हो रहे है। आधुनिक राजमार्गो की भाति आज सारा मार्ग ही उसके मध्यभाग के समान अच्छा और सुन्दर हो गया है। अब इस सामाजिक मार्ग मे गन्दे नाले प्रायः कही नही रहे, आवश्यकता सिर्फ इस बात की रह गई है कि किनारे की नर्म मिट्टी से जरा बच कर चला जाए।

अब मतदाता अपने मत के बारे में निर्णय कैसे करता है ?

कुछ हद तक वह परम्परा के अनुसार निर्णय करता है, उसका पिता जिस पक्ष मे वोट देता रहा है, उसे वह ध्यान मे रखता है। वह जिस सामाजिक या जातीय वर्ग का सदस्य होता है, वह भी उसके निर्णय पर प्रभाव डालता है। उसके मित्रो और पडोसियो की बातें और चर्चाए और कभी-कभी स्वय उम्मीदवारो के कथन और काम भी उसे निर्णय मे सहायता देते हैं। वह अपनी आमदनी को देखता है और यह विचार करता है कि उम्मीदवार की नीतियो से उसकी आय बढेगी या घटेगी। जहाँ वह रहता है, वह जगह गन्दी बस्ती है या साफ उपनगर, गाव है या शहर, यह बात भी उसके निश्चय को प्रभावित करती है। वह यह देखता है कि उसके मन मे नेता की जो कल्पना है, उम्मीदवार उससे मेल खाता है या नही—वह उच्च वर्गो के विशेषाधिकारी और भेद-भाव का विरोधी है या यथास्थिति कायम रखने का समर्थक, आदर्श पिता की भाँति वत्सल है या मालिक और अफसर की तरह रोब गालिब करने वाला। मतदाता के मन मे उम्मीदवार के किसी कार्यक्रम जैसे वन-सम्पदा की रक्षा, नागरिक अधिकार और कम्युनिज्म का विरोध आदि, के प्रति उत्साह या विरोध का भाव हो तो वह भी उसके निर्णय पर असर डालता है। यदि वह बडे व्यापारियो का, बडे श्रमिक सगठनो का और ऊचे टैक्सो का विरोधी है या सरकारी कुप्रशासन और कौशलहीनता के प्रति अपना विरोध प्रकट करना चाहता है तो उसी को दृष्टि मे रखकर उम्मीदवार का चुनाव करता है।

और शायद अन्त मे सब उम्मीदवारो को टेलीविजन के पर्दे पर देखने और अखबारो मे उनके भाषणो को पढने के बाद थक कर वह अनिश्चय की दशा मे सोचता हुआ मतदान केन्द्र मे घुसता है और हमेशा की भाँति डेमोक्रेटिक या रिपब्लिकन पार्टी मे से किसी एक को वोट देकर यह सोचता हुआ बाहर निकलता है कि उसने वोट ठीक ही दिया है।

दोनो राजनीतिक दल हमारे इतिहास, हमारे जातीय मूल, धार्मिक विश्वासो, काम-धन्धे और हमारी भौगोलिक स्थिति की उपज हैं और उन गम्भीर मूल्यो के, जो हमारे विश्वासो मे बद्धमूल हो गये है, झंडा-बरदार हैं। हर चार वर्ष बाद होने वाली इस प्रतिद्वन्द्विता और संघर्ष का सबसे बडा मूल्य शायद यह है कि इससे हमें याद आ जाता है कि हमारे बीच मे चाहे कितने भी वर्गीय, जातीय या व्यावसायिक भेद हों, बुनियादी बातो पर हम मे पूर्ण मतैक्य है। इस संघर्ष की विशालता हमे यह भान कराती है कि हम तर्क करने और दूसरो के साथ मतभेद रखने मे स्वतन्त्र हैं। संघर्ष की व्यापकता हमे यह स्मरण कराती है कि हम महान् हैं और हममे भांति-भांति के लोग है। इस संघर्ष में जो गर्मी और तेजी रहती है, वह यह सिद्ध करती है कि हम मे संघर्ष करने की शक्ति और प्रतिकूल आदर्शो और विचारो को चुनौती देने और पराजित करने की क्षमता है। हर पार्टी दूसरी के विरुद्ध इस तरह संघर्ष करती है, मानो वह उसकी शत्रु हो और उसने अमेरिकन गणराज्य की बुनियाद को ही खतरा हो। इस प्रकार यह संघर्ष हमे यह भरोसा दिला जाता है कि यदि कभी आवश्यकता पड़ी तो हम अपनी जीवन-पद्धति को दी जाने वाली चुनौती का खुलकर मुकाबला कर सकेंगे।

किन्तु जब आन्दोलन खत्म हो जाता है और इतने मत गिन लिये जाते है कि विजेता का पता लग सके, तब पराजित उम्मीदवार राष्ट्र के सम्मुख घोषणा करता है कि वह विजयी उम्मीदवार को पूरी तरह सहायता और साथ देगा। अब वह उसके लिए आक्रमणकारी शत्रु नही रहता, बल्कि उसी तरह एकाएक अमेरिकन विश्वासो और मान्यताओ का रक्षक बन जाता है, जैसे मध्ययुग की कहानियो का दैत्य सुन्दरी राजकुमारी (बहुमत) के चुम्बन से एक कमनीय राजकुमार बन गया था।

एडलाई स्टीवन्सन ने सन् १९५६ मे कहा था, "हमे विभाजित करने वाले तत्त्वो की अपेक्षा हमे मिलाने और संयुक्त करने वाले तत्त्व

अधिक गहरे है। आज हम रिपब्लिकन या डेमोक्रेट नही हैं, बल्कि अमेरिकन है।" इस प्रकार सघर्ष खत्म हो जाने के बाद हम सब एक हो जाते है, अपने घावो की चिकित्सा करते है, युद्ध के ध्वसावशेषो को हटाते है और फिर से काम मे जुट जाते हैं।

राज्य और सविधान

सघीय सरकार की स्थापना से पूर्व अमेरिका मे चौदह राज्य थे (सघ के प्रारम्भिक तेरह सदस्य राज्य और वरमौट)। वरमौंट, टेक्सास और कैलिफोर्निया सघ के सदस्य बनने से पूर्व स्वतन्त्र गणराज्य थे। प्रारम्भ के तेरह राज्यो का इतिहास सविधान बनने से १८० वर्ष पहले प्रारम्भ होता है। इन १८० वर्षों मे प्रान्तीय विधान सभाओ के द्वारा वे अपना शासन चलाते रहे थे। कभी-कभी उनका ब्रिटिश राजकुल द्वारा नियुक्त गवर्नर से जबर्दस्त सघर्ष होता और कभी-कभी ब्रिटेन उनके मामलो मे कोई हस्तक्षेप न करता।

इस युग मे उन्होने शासन की कला को खूब अच्छी तरह सीख लिया था जिसका प्रमाण जैफर्सन, पैट्रिक हेनरी, जॉन ऐडम्स और मैडिसन जैसे कुशल प्रशासक है।

इन राज्यो ने ही सघीय सरकार का निर्माण किया। वह इन्ही की कृति थी। जिस तरह माता-पिता अपने बढते हुए बच्चे को, जो यह नही जानता कि उसे अपनी शक्ति का उपयोग कैसे करना चाहिए, प्रहार करते हुए देखकर घबरा उठते है, उसी तरह ये राज्य भी अपने हाथो से गढी इस संघीय सरकार को कुछ भय और कुछ रोष की दृष्टि से देखते थे। बच्चा जब देह के आकार और बल मे अपने माता-पिता से भी बढ जाता है, तब ऐसा लगता है, मानो वह उनका सम्मान नही करता। वह उन पर उपहारो की वर्षा कर देता है किन्तु चाहता यह है कि वे करे वही जो वह कहता है।

बाद मे कुछ तो शक्तिशाली सघीय सरकार ने और कुछ बडे नगरों ने राज्य का महत्त्व छीन लिया। इससे राज्य पहले जैसे महत्त्वपूर्ण नहीं

रह गये। फिर भी सविधान मे विदित ऐसे अधिकारो से, जो संघीय सरकार को दिये गये हैं, भिन्न सभी अधिकार अभी तक राज्यो के हाथ मे ही है। राज्य ही अपने नागरिको को मत देने का अधिकार प्रदान करता है, राष्ट्र (सघीय सरकार) नही। राज्यो के सविधान मे विहित शासन अधिकारो का मूल उद्गम भी स्वय राज्य ही है, राष्ट्र नही।

नागरिक से जो वफादारियाँ अनुभव करने की आशा की जाती है, उनमे से एक वफादारी राज्य के प्रति भी है। यह वफादारी की भावना और भी अधिक सबल हो सकती है, क्योंकि व्यक्ति जिस राज्य मे पैदा होता है, जहाँ से उसकी पारिवारिक परम्पराएँ बनती है, या जिसे वह अपने राज्य के रूप मे अपना लेता है और अन्य राज्यो से ज्यादा पसन्द करता है या जिसके मामलो मे दिलचस्पी लेता है, उसके प्रति उसका लगाव होना स्वाभाविक है।

अनेक राज्यो मे परस्पर-विरोधी परिस्थितियाँ पायी जाती है। उदाहरण के लिए न्यूयार्क राज्य मे न्यूयार्क नगर और शेष देहाती भाग एक-दूसरे से बिल्कुल भिन्न हैं। इसी तरह वाशिंगटन और ओरेगन राज्यो को भी पहाडो ने बीचो-बीच से बाँट दिया है, जिससे उनका पश्चिमी भाग उद्योग-सम्पन्न और पूर्वी भाग कृषि-प्रधान रह गया है। फिर भी हर राज्य के सभी भाग आपस मे एक बुनियादी भावात्मक सस्कृति से बधे हुए हैं, जो तमाम जातीय, भौगोलिक और व्यावसायिक भेदो के बावजूद एकता कायम रखती है।

राज्यो के विधानमण्डलो की बैठकें हर दो वर्ष बाद कुछ महीनो के लिए होती हैं, इसलिए स्वभावत उनके सदस्य ऐसे व्यक्ति होते हैं जो अपनी आजीविका दूसरे कामो से चलाते है और विधानमण्डल के सदस्य के रूप मे उन्हे सिर्फ उतना ही पैसा दिया जाता है कि उनका खर्च निकल सके। इस प्रणाली से भ्रष्टाचार को प्रोत्साहन मिलता है, क्योंकि विधानमण्डल का कोई भी सदस्य विधानमण्डल मे कोई ऐसा विधेयक पेश कर सकता है, जो किसी उद्योग के लिए हानिकर सिद्ध

हो और फिर उस उद्योग से मोटी रिश्वत लेकर उसे वापस ले सकता है। लेकिन राज्यो की खबरो के काफी विस्तृत प्रकाशन से और आन्तरिक आय निर्देशक को आय का पूरा विवरण देने की कानूनी अनिवार्यता से भ्रष्टाचार की ये घटनाएँ नही होती, कम-से-कम खुल्लमखुल्ला तौर पर तो नही होती।

राज्य सरकारें और भी कई महत्त्वपूर्ण कार्य करती है। वे स्कूलो के लिए स्टैंडर्ड निर्धारित करती है, सडके बनाती है, अदालतो, जेलो, अपराधी-सुधार गृहो, अन्धो की सस्थाओ, पागलखानो और विकलाँग लोगो के पालन-गृहो का सचालन करती है, बेरोजगारो और बूढो को आर्थिक सहायता देती है, रोजगार के दफ्तर चलाती है, पुलिस और मार्ग-रक्षक दलो की व्यवस्था करती है, पार्कों, विश्वविद्यालयो और पुस्तकालयो की स्थापना और देखभाल करती है, राज्य मे पर्यटको और नये उद्योगो को आकृष्ट करती है, मूल्यो पर नियन्त्रण रखती है, बिजली वितरण आदि सेवाएँ चलाती है और इसी तरह के अन्य अनेक काम करती है। न्यूयार्क जैसे बडे राज्य का बजट तो कई स्वतन्त्र राष्ट्रो के बजट मे भी बडा होता है और उसकी सरकार विदेशी मामलो को छोड कर जनता की सेवा के शेष काम इन राष्ट्रो से भी कही बडे पैमाने पर करती है।

सविधान ने सघीय सरकार और राज्यो के बीच सघर्ष की सम्भावना को दूर करने के लिए कुछ अधिकार सघीय सरकार के लिए निर्दिष्ट कर दिए थे और यह व्यवस्था कर दी थी कि शेष सब अधिकार राज्यो के या जनता के हाथो मे रहेगे। इस फार्मूले को कोई भी बदलना नही चाहता। कारण यह कि यद्यपि सविधान मे जो कुछ कहा गया है, वह बिल्कुल साफ है, तथापि उसकी व्याख्याएँ रोचकीली की जा सकती है। सविधान के निर्माताओ को इस बात की कोई कल्पना नही थी कि सघीय सरकार को क्या-क्या काम करने पड सकते है, फिर

भी आज रेलो के नियमन से लेकर देश व्यापी पेन्शन योजना तक प्राय सभी काम उसके व्यापक छत्र के नीचे आ गये है।

अमेरिकन लोगो का विश्वास है कि सविधान के निर्माताओ ने भविष्य की सभी सम्भावनाओ के लिए सविधान मे व्यवस्था कर दी थी और यदि उसकी व्याख्या कुछ लचकीलेपन से की जाए तो उसमे सशोधन किए बिना या कभी-कभार मामूली-से सशोधन मे ही हमारी सब आवश्यकताएँ पूरी हो सकती है। इस सविधान को रद्द कर नया सविधान बनाने की बात निरा पागलपन या कुफ्र समझी जाएगी। हम यह मानते है कि हमारा सविधान राजनीतिक विचक्षणता की दृष्टि से पूर्णत निर्दोष है और उसमे कोई परिवर्तन या परिवर्द्धन नही हो सकता।

अपने सविधान का हम इतना आदर क्यो करते है?

इसका उत्तर यह है कि हमारा सविधान बिल्कुल स्पष्ट और लिखित है जिसे कोई भी पढ सकता है। वह लचकीला है और हर तरह की नई परिस्थितियो मे उसे बैठाया जा सकता है। वह निर्विघ्न और अबाध रूप मे चल सकता है, जैसा कि पिछले १७० वर्षो के अनुभव ने सिद्ध किया है। उसमे अनेकता मे एकता स्थापित करने की जादुई शक्ति है। विशेषाधिकारो के लिए लडने वाला टोरी इस सविधान की दुहाई देता है और तोड-फोड के अभियोग मे मुकद्दमा चलाये जाने पर कम्युनिस्ट भी इसी का आश्रय लेता है। छात्र उसे अपनी स्वतन्त्रता का मूल स्रोत समझता है और आप्रवासी उसे अपने लिए एक ऐसा अधिकार-पत्र मानता है, जो अन्तत: उसे नागरिकता के सब अधिकार प्रदान कराएगा। खिचाव-तनाव और उथल-पुथल से भरी दुनिया मे हम उसके ऊपर पाँव टिकाकर दृढता से अविचल खडे रह सके है। उसने हमे वे अपरिहार्य अधिकार प्रदान किए है जिन्हे राज्य छीन नही सकता और जिन्हें अन्य अनेक आधुनिक राज्य—कम्युनिस्ट और फासिस्ट अपनी प्रजा से छीनते रहे है। हमारे सविधान मे यह गारण्टी की गई

है कि जब तक वह कायम है तब तक ये अधिकार अपरिहार्य और अनिवार्य बने रहेगे। उसमे ऐसे नियन्त्रणो की व्यवस्था कर दी गई है कि शासन के तीनो विभागो मे परस्पर सतुलन बना रहता है और स्वतन्त्रता और कानून-व्यवस्था के बीच समन्वय की समस्या, जो अन्य अनेक देशो मे हमेशा उठती आई है, यहाँ पैदा ही नही होती और होती है तो उसका तुरन्त उचित समाधान हो जाता है। इसी तरह न्यायिक निर्णयो पर पुनर्विचार का अधिकार भी सविधान मे लिपिबद्ध कर दिया गया है और उसमे यह विधान कर दिया गया है कि पुनर्विचार के समय न्यायाधीश कानून के बजाय सविधान के आधार पर अपना निर्णय देगे।

एक राजनीतिक साधन के रूप मे सविधान की सबसे बडी विशेषता यह है कि उसमे सघीय सरकार को समस्त नागरिको पर अधिकार प्रदान किया गया है। यह अधिकार राज्यो के अधिकार के समानान्तर किन्तु उससे सर्वथा स्वतन्त्र है। इसके अलावा उसने उच्चतम न्यायालय के रूप मे एक ऐसी व्यवस्था की स्थापना की है जिससे सभी प्रकार के मतभेदो को निबटाया और सुलझाया जा सकता है।

न्यायालय और नागरिक अधिकार

अमेरिकन प्रणाली की एक विशेषता यह भी है कि उसने राज्यीय न्यायालयो से बिलकुल स्वतन्त्र रूप मे सघीय न्यायालयो की स्थापना की है, जो सघीय कानून और सविधान के प्रश्नो से उत्पन्न मामलो को सुनते है। हर व्यक्ति इन दोनो प्रकार के न्यायालयो के अधीन रहता है और उनका यथोचित आश्रय ले सकता है।

सघीय न्याय-व्यवस्था मे एक उच्चतम न्यायालय, दस अपीलीय सर्किट न्यायालय और लगभग सौ जिला अदालते है। सघीय उच्चतम न्यायालय मे एक मुख्य न्यायाधीश और आठ सहकारी न्यायाधीश होते है और वह वाशिंगटन मे अवस्थित रहता है। यदि दो राज्यो मे कोई मतभेद या विवाद उठ खडा हो या एक राज्य का कोई नागरिक किसी अन्य राज्य के नागरिक के विरुद्ध मुकद्दमा चलाना चाहता हो तो मामला

संघीय न्यायालयों में ले जाया जा सकता है। संघीय न्यायालय संघीय कानूनों की व्याख्या करने और उन्हें लागू करने के महत्त्वपूर्ण साधन हैं और वे यह निर्णय भी देते हैं कि शासन के विधायक पक्ष या कार्यपालक पक्ष ने किसी मामले में संविधान में निहित अपनी मर्यादाओं का उल्लंघन तो नहीं किया।

उच्चतम न्यायालय का सबसे महत्त्वपूर्ण काम शायद संविधान की ऐसी लचकीली व्याख्या करना है जिससे वह बदलते हुए जमाने की बदलती परिस्थितियों के साथ चल सके। इससे हम अपने उस पवित्र अभिलेख का सम्मान करते रह सकते हैं, जिसकी बदौलत हमारी सरकारें असाधारण रूप से स्थिर रहती हैं और साथ ही जो अपने मूल से उच्छिन्न हुए बिना हर नई परिस्थिति की जरूरत को पूरा करता है। मौजूदा शताब्दी में उच्चतम न्यायालय ने जो निर्णय दिए हैं उनका सम्मान सरकार की अधिकाधिक व्यापक सामाजिक जिम्मेदारियों और मानव-अधिकारों के पक्ष में रहा है।

इसका सबसे अच्छा प्रमाण हाल के वे निर्णय हैं जिनमें स्कूलों और सार्वजनिक वाहनों में नीग्रो और गोरे लोगों के बीच भेद-भाव को खत्म करने का आदेश दिया गया है।

उच्चतम न्यायालय ने १९५४ में अपने एक फैसले में कहा था, "सार्वजनिक शिक्षा के क्षेत्र में किसी भी व्यक्ति को 'अलग किन्तु बराबर' मानने का सिद्धान्त नहीं चल सकता। अलग-अलग शिक्षा की व्यवस्था का अर्थ ही है असमानता।" यद्यपि कुछ स्कूलों में एकीकरण के प्रश्न को लेकर संघर्ष हुए हैं और उनका बहुत अधिक प्रचार हुआ है, तो भी सैकड़ों स्कूल ऐसे हैं, जिन्होंने बिना किसी अप्रिय घटना या संघर्ष के इस रंगभेद को खत्म कर एकीकरण कर दिया। कुछ राज्यों द्वारा एकीकरण से बचने के लिए कानूनी चालें खेली जाने के बावजूद प्रवृत्ति एकीकरण की तरफ ही है।

पिछले दो वर्षों के सम्बन्ध में किए गये हाल के एक सर्वेक्षण से मालूम हुआ है कि जीवन के सभी क्षेत्रो मे एक हजार से अधिक मामलो मे जाति-भेद की बाधाओ को हटाया गया है। जिस दक्षिणवासी ने यह अध्ययन किया था, उसने कहा है, "अब दक्षिण को पूर्णतः जाति-भेद का सुदृढ और ठोस गढ नही कहा जा सकता ······अध्ययन से यह आम धारणा निर्मूल सिद्ध हुई है कि जातीय एकीकरण सफल नही हो सकता ।"

जाति-भेद की समाप्ति और एकीकरण के उदाहरण आवास, सार्वजनिक स्वास्थ्य, गैर-सरकारी उद्योग, सार्वजनिक परिवहन और स्कूल, कालेज एव होटल आदि सभी क्षेत्रो मे मिलते है । देश के १६४ कालेजों और विश्वविद्यालयो ने नीग्रो लोगो के लिए अपने द्वार खोले है और बहुत-से नीग्रो उच्च सरकारी पदो पर चुने या नियुक्त किए गये है ।

जिमक्रो गाडियाँ (रेलो मे नीग्रो लोगो के लिए पृथक् डिब्बे), जो बीसवी शताब्दी मे ही प्रारम्भ हुई थी, उससे पहले नही, जैसा कि बहुत से लोग समझते हैं, अब धीरे-धीरे खत्म हो रही है । दक्षिण के उदार-मना लोग अब यह अनुभव करने लगे है कि कोई भी समाज अपने एक अश को अलग नही रख सकता और यदि वह रखेगा तो उससे सारे समाज का ही नुक्सान होगा ।

अकेले लुइसियाना राज्य मे ही नीग्रो मतदाताओ की सख्या मे भारी वृद्धि हुई है । जहाँ सन् १६४८ मे लुइसियाना मे नीग्रो मतदाता १६७२ थे, वहाँ १६५२ मे उनकी सख्या १,०८,७२४ हो गई । अन्य राज्यो मे भी इसी तरह नीग्रो मतदाताओ की सख्या बढी है ।

इस दिशा मे सबसे अधिक आश्चर्यजनक और उत्साहवर्द्धक बात यह है कि फ्लोरिडा राज्य के कू क्लक्स क्लैन नामक नीग्रो-विरोधी सगठन ने भी यह घोषणा कर दी है कि नीग्रो लोगो को उसकी सदस्यता का अधिकार है ।

आज आखिर वह वक्त आ गया है जबकि गरीबी, अज्ञान, रोग और उन्नति के अवसर के अभाव के दुष्चक्र पर प्रहार किया जा रहा है। इस दुश्चक्र ने ही नीग्रो लोगो को कुचला और अवनति के गर्त मे धकेला हुआ था। बहुत से गोरे लोग अपने आपको जान-बूझकर इस भ्रम मे रखे हुए थे कि नीग्रो लोगो की अवनति का कारण काली जाति मे पैदा होने से उनके रक्त मे ही कमजोरी होना है। वे यह नही मानते थे कि इसका कारण उन्हें अवसर न मिलना और अत्यन्त हीन और अभाव की परिस्थितियो मे उनका रहना है। इन परिस्थितियो के कारण वे बीमारी और अपराध-वृत्ति के शिकार हो जाते है। बहुत-से गरीब गोरे अपनी गरीबी की जिम्मेदारी किसी दूसरे पर टालने के लिए नीग्रो लोगो को बलि का बकरा बनाते थे और उन्हे गरीब देखकर अपनी गरीबी पर सन्तोष कर लेते थे। अनेक राजनीतिज्ञ भी उनके वोट पाने के लिए इन गोरो की इस भावना का लाभ उठाने की चेष्टा करते थे। ऐसी घटनाएँ भी बहुत घटती रही है कि पुलिस और अदालतें नीग्रो लोगो को डराती और व्यापारी उनसे अनुचित फायदा उठाते। समाचार-पत्र भी उनके दैन्य और अभावग्रस्त परिस्थितियो पर कोई रोशनी नही डालते थे।

फिर भी समाचार-पत्रो ने सार्वजनिक रूप से और गैर-कानूनी तौर पर लोगो को अपराधी ठहराकर, और पीट-पीटकर या कुचल कर मार डालने की बर्बरता का बहुत जोरो से विरोध किया है। यह क्रूर प्रथा उस जमाने की कठोर परिस्थितियो मे शुरू हुई थी, जब अमेरिकन लोग कष्टो और मुसीबतो को झेलते हुए नए-नए क्षेत्रो को आबाद करने मे लगे हुए थे। इस प्रथा का शिकार नीग्रो लोगो को ही नही, गोरो को भी होना पडता था। यह प्रथा अब १९५१ से प्रायः खत्म हो गई है, किन्तु अन्य रूपो मे लोगो को डराने, धमकाने और नृशस यातनाएँ देने की प्रथा अब भी कायम है।

नागरिक अधिकारो और आजादी के मामले का एक पहलू और भी है, जिसका आरम्भ साम्राज्यवादी और तानाशाही कम्युनिज्म के खतरे के कारण हुआ। यह पहलू है तथाकथित वफादारी कार्यक्रम। इस कार्य-क्रम के अन्तर्गत अमेरिका मे कम्युनिज्म के षड्यन्त्रो के खतरे को रोकने के उद्देश्य से तोड-फोड की कार्रवाइयो के नियन्त्रण के लिए एक बोर्ड बनाया गया जिसे बहुत व्यापक अधिकार दिये गये। यह बोर्ड अपने अधिकारो का दुरुपयोग कर चाहे जिस सरकारी कर्मचारी को रोजगार से वचित कर सकता था और किसी दूसरी जगह रोजगार पाने के उसके अवसर भी नष्ट कर सकता था। इस कानून का एक खतरा यह भी था कि लोग स्वैच्छिक सगठनो मे शामिल होने से कतराते थे, क्योकि उन्हे डर रहता था कि बाद मे कम्युनिस्ट कहकर उस सगठन की वफादारी पर सन्देह न किया जाने लगे और उसकी जॉच न की जाए। इस प्रणाली को पाँच साल तक अमल मे लाने का परिणाम यह हुआ है कि तोड-फोड और साजिश करने वाले सगठनो के विरुद्ध चालीस हजार पृष्ठो से अधिक की गवाहियाँ और प्रमाण सग्रह हो गये हैं, किन्तु अन्तिम कार्रवाई कोई नही की गई। यदि हमारे देश की सुरक्षा पर सचमुच कोई खतरा है तो यह प्रणाली पूरी कोशिश करके भी उसका पता लगाने मे असफल रही है।

कम्युनिस्टो के आन्तरिक षड्यन्त्र का खतरा और भय अब टल गया है, क्योकि अधिकतर नागरिक अब यह बात भली-भाँति जान गये है कि हमारा देश खूब सगठित है, खतरनाक कम्युनिस्टो की सख्या हमारे यहाँ बहुत कम है और सजग रहते हुए भी हमे अपने नागरिक अधिकारो की पूर्णतः रक्षा करनी चाहिए, तभी हम ससार मे अपनी शक्ति और नैतिक नेतृत्व बनाये रख सकते हैं और अन्य देशो मे तानाशाही शासनो के विरुद्ध सघर्ष कर सकते है। इन अधिकारो की रक्षा के लिए फिर अमेरिकन लोग स्वैच्छिक सगठनो का निर्माण करते है। नागरिक आजादी और अधिकारो की रक्षा के लिए बने सगठनो मे सबसे अधिक

प्रसिद्ध सिविल लिबर्टीज यूनियन है। ये सगठन उन लोगो के विरुद्ध संघर्ष करते है जो अपने साथ मतभेद रखने वालो को वाणी और अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता से वचित करते है, अल्पसख्यको को रोजगार या मताधिकार देने से इन्कार करते है, या श्रमिको का सगठन का अधिकार छीनते हैं। कानूनी सहायता समितिया सारे देश मे फैली है और जो लोग कानूनी परामर्श पाने के लिए पैसा नही खर्च कर सकते, उन्हे मुफ्त सलाह देती है। इसका परिणाम यह है कि आज कोई भी व्यक्ति कानूनी सलाह न मिलने के कारण मुकद्दमा नही हारता।

अमेरिकन लोकतन्त्र

तब सयुक्त राज्य मे लोकतन्त्री प्रशासन की विशेषताएँ और लक्षण क्या है ?

सबसे पहली विशेषता यह कि उसमे नागरिको को अपना स्थानीय प्रशासन स्वय चलाने का अधिकार दिया जाता है। जहाँ तक जनता को अपना शासन अपने ही हाथ मे रखने का अवसर देने का सम्बन्ध है, यह बहुत अच्छी बात है, परन्तु अन्तर्राष्ट्रीय सकट के समय वह एक खतरा भी बन सकती है, क्योकि यह आशका रहती है कि कही स्थानीय मामले अन्तर्राष्ट्रीय मामलो पर हावी न हो जाए।

दूसरी विशेषता यह कि इसमे स्वैच्छिक सगठनो को बहुत महत्त्व दिया जाता है और वे प्रशासनिक प्रक्रिया मे प्रेरक और पथ-प्रदर्शक का काम करते हैं। ये सगठन कानूनो और कानून-निर्माताओ पर प्रभाव डालते है, सरकारी विभागो के साथ मिलकर काम करते है और ऐसे अनेक काम करते है जो दूसरे देशो मे सामान्यत सरकारे करती है। एक ऐसे युग मे, जहाँ राजनीतिक निश्चय औसत आदमी की क्षमता से बाहर होते हैं और जहाँ अनेक निश्चयो का दायित्व राजनीतिक क्षेत्र से हटाकर प्रशासन को सौप दिया गया है, ये स्वैच्छिक सगठन एक सन्तुलन का काम करते हैं। वे न नौकरशाही को हावी होने

देते है और न सरकार को अपनी विशालता और पेचीदा जटिल जाल के कारण जनता से दूर हटने देते हैं।

तीसरी विशेषता यह कि समाचार-पत्र, प्रमुख व्यक्ति, आम जनता, काग्रेस (ससद्) के सदस्य, स्वैच्छिक सगठन और अन्य देशो से आने वाले व्यक्ति भी सरकार की और उसके कार्यों की निरन्तर कटु आलोचना करते रहते हैं।

सयुक्त राज्य ससार का पहला राष्ट्र था जिसमे समस्त वयस्को को (केवल पुरुषो को और इनमे भी गुलाम शामिल नही) मताधिकार दिया गया। सयुक्त राज्य ही समाचार-पत्रो को स्वतन्त्रता देने, चर्च को राज्य से अलग करने, क्रूर दड को खत्म करने, मुफ्त सार्वजनिक शिक्षा व्यवस्था करने, जेलो मे सुधार करने और मुफ्त पुस्तकालय सेवा प्रारम्भ करने मे अग्रणी था।

चौथी विशेषता यह कि सयुक्त राज्य का शासन किसी विशिष्ट अधिकार प्राप्त वर्ग के लिए नही, बल्कि प्रधानत' आम जनता के लिए है। जैसा कि डि टोकविल ने कहा है, इससे अमेरिका मे जिस समाज का निर्माण हुआ है, वह शायद बहुत ऊँची किस्म का न हो, परन्तु अधिक न्याययुक्त अवश्य है।

पाँचवी बात यह कि सयुक्त राज्य का शासन जनता की आकाँक्षाओ को पूर्ण करने की अपनी क्षमता पर आधारित है। यद्यपि उसकी प्रक्रिया कभी-कभी कुछ धीमी रहती है क्योकि जनता की आकाँक्षा अनेक पृथक् और परस्पर, विरोधी आकाँक्षाओ का मिश्रण होती है तो भी अन्ततः वह अपना उद्देश्य पूरा कर लेती है। अमेरिकन लोग एक साथ बहुत बड़ी-बडी योजनाए नही बनाते, क्योकि वे उन्हे सन्देह की दृष्टि से देखते हैं और यह मानते है कि उनमे कठोर नियन्त्रण और ताना-शाही की प्रवृत्ति रहती है। इसलिए वे अपना विकास धीरे-धीरे आवश्यकता के अनुसार उपयोगिता को दृष्टि मे रखकर योजनाए बनाते हुए करते हैं।

और छठी बात यह कि अमेरिका का शासन व्यवसाय और वाणिज्य पर आधारित है। आम तौर पर यह बात इस ढग से कही जाती है, मानो सयुक्त राज्य की यह कोई विशिष्ट बुराई हो। किन्तु वास्तविकता यह है कि यहाँ हर बडा नागरिक एक ठोस आर्थिक आधार पर आत्म-निर्माण करके खडा है। और (लूट के सिवाय) आत्म-निर्माण का और उपाय भी क्या हो सकता है? तानाशाही प्रणालियाँ किसी-न-किसी किस्म की लूट पर आधारित है। वे गुलामो से बेगार कराती हैं, विजित देशो से पूरे के पूरे कारखाने उखाड कर ले जाती है और जिस वर्ग को बलि का बकरा बनाना चाहती हैं, उसकी सारी सम्पत्ति छीन लेती हैं। लोकतन्त्री प्रणाली मे सम्पत्ति को एक रक्षणीय अधिकार माना जाता है। इस प्रणाली मे ऊँची आमदनियो और मुनाफो पर भारी टैक्स अवश्य लगाए जाते हैं, परन्तु पू जीगत मूल आधार को नष्ट नही किया जाता जिस पर इन मुनाफो का भवन खडा होता है। कारण, लोकतन्त्री प्रणाली धन-दौलत को बुरी चीज नही समझती, बल्कि वह उसे ऐसी शक्ति का स्रोत समझती है, जिससे अन्य सभी लाभ प्राप्त किये जा सकते है। एक समृद्ध और उत्पादक देश ही अपने नागरिकोको वे सब लाभ प्रदान कर सकता है, जो लोकतन्त्री प्रणाली मे अनिवार्य समझे जाते है।

इस तरह सयुक्त राज्य मे अर्थ-व्यवस्था और राजनीति एक-दूसरे मे गु थे-हुए है। हर बडा आर्थिक वर्ग सरकार द्वारा नियन्त्रण या भारी टैक्स लागू किये जाने पर खूब शोर-गुल मचाता है, किन्तु साथ ही वह हर वक्त सरकार से सेवाओ और सरक्षण की माँग करता रहता है।

तब प्रश्न यह उठता है कि सयुक्त राज्य की यह अर्थ-व्यवस्था चलती किस ढग से है?

अध्याय : नौ

प्राचुर्यमय जीवन

आज हम क्रान्ति के युग मे रह रहे है। इस युग पर व्यापक दृष्टिपात किया जाए तो हम देखेंगे कि आज हम उत्पादक और उपभोग के एक नये दौर मे प्रविष्ट हुए है और आर्थिक लोकतन्त्र के सिद्धान्त आज उसी तरह गहरे और बद्धमूल हो गए है, जैसे कि हमारी पहली क्रान्ति से राजनीतिक लोकतन्त्र सुरक्षित हो गया था (हालाकि वह पूर्णतः स्थापित नही हो सका था)।

सयुक्त राज्य की आबादी ससार की आबादी का कुल ७ प्रतिशत है, फिर भी वह ससार की कुल सेवाओ और सामग्री का ४० प्रतिशत उत्पादन करता है। यदि उसके राष्ट्रीय उत्पादन को आबादी से विभक्त किया जाए तो प्रति व्यक्ति उत्पादन यूरोप के अनेक अत्यधिक उत्पादक राष्ट्रो से दुगुना होगा और इडोनेशिया से तो वह दस गुना बैठता है। सन् १८९० की अपेक्षा १९४० मे सयुक्त राज्य का वास्तविक कुल राष्ट्रीय उत्पादन पाँच गुना था और वृद्धि की यह गति अब भी जारी है जिससे देश मे सेवाओ और वस्तुओ की उपलब्धि और उनको खरीदने की शक्ति दोनो मे निरन्तर वृद्धि हो रही है। पिछले अस्सी वर्षो से उत्पादन प्रति श्रम इकाई पर दो प्रतिशत वार्षिक की दर से बढ रहा है।

सन् १८२० और १९३० के बीच देश मे शक्ति (बिजली) की प्रति व्यक्ति उपलब्धि चालीस गुनी बढ गई। सन् १९१० मे देश की कुल श्रम-शक्ति मे मजदूरो की सख्या २१ प्रतिशत थी, किन्तु १९४० मे उनकी सख्या ११ प्रतिशत ही रह गई। इसका अर्थ यह है कि आज

कम-से-कम मानवीय श्रम को खर्च करके अधिक-से-अधिक वस्तुओ और सेवाओ का उत्पादन किया जा रहा है।

युद्ध के बाद भी देश के निर्माण उद्योगो की क्षमता दुगुनी हो गई है। इन उद्योगो मे २३३ अरब डालर की पूजी लगी हुई है। इस्पात और बिजली के उत्पादक जनता की निरन्तर बढ रही आवश्यकताए पूरी करने के लिए अपना उत्पादन बराबर बढा रहे है। कृषि मे भी उत्पादकता मे आश्चर्यजनक वृद्धि हुई है। सन् १८२० मे देश के ७२ प्रतिशत लोग खेती मे लगे हुए थे और तब कही वे देश का पेट भर सकते थे। किन्तु १६५० मे कुल ११ प्रतिशत व्यक्ति ही खेती मे रह गये, जो अपना और शेप सारे देशवासियो का पेट बखूबी भर सकते थे।

उद्योगविद्या (टैकनोलॉजी) मे हुई क्रान्ति ने भूमि, श्रम और पूजी की उत्पादकता बढा कर और सन्तति-निरोध के सरल और प्रमाण-कारी उपाय निकाल कर माल्थस की निराशापूर्ण भविष्यवाणियो को गलत सिद्ध कर दिया है। इतिहास मे आज पहला मौका है, जबकि भुखमरी और बीमारी पर विजय पाने के उपाय मानव की पकड़ मे आ गये है।

किसी भी देश की अर्थ-व्यवस्था तीन चीजो पर निर्भर है—प्राकृतिक साधन, श्रम और पूजी। आम तौर पर यह माना जाता है कि सयुक्त राज्य की समृद्धि का कारण उसके प्राकृतिक साधनो की प्रचुरता है। किन्तु वास्तविकता यह है कि आबादी की दृष्टि से यदि तुलना की जाए तो सोवियत सघ के प्राकृतिक साधन हम से कम नही है और पश्चिमी यूरोपीय देशो और उनके उपनिवेशो के सयुक्त साधनो के बारे मे भी यही बात कही जा सकती है। इसके अलावा आज हमारे प्राकृतिक साधन १६३० के दशक की अपेक्षा अधिक नही है, फिर भी आज हम खूब समृद्ध है जबकि १६३० के दशक मे हम अल्पोत्पादन और भयकर अभाव एव दैन्य के शिकार थे।

नही रखना चाहिए । अनुभव ने उन्हे सिखा दिया है कि पूजीपति और श्रमिक आपस मे लडने के बजाय यदि मिलकर सहयोग से काम करे तो अपनी परिस्थितियो से ज्यादा लाभ उठा सकते है। हमने जब जैसी आवश्यकता हुई अर्थ-व्यवस्था को ठीक रखने के लिए कानून बनाये। एकाधिकार को निरुत्साहित करने के लिए शरमन कानून पास किया, मूल्यो मे भयकर गिरावट को रोकने के लिए कमाडिटी क्रेडिट कार्पोरेशन कानून बनाया, श्रमिको को संगठित होने के लिए प्रोत्साहन देने के उद्देश्य से वैगनर कानून बनाया और श्रमिको की ताकत पर अकुश लगाने के लिए टैफ्ट-हार्टले कानून भी पास किया । हमने टेनेसी घाटी परि-योजना का सरकारी प्रशासन के अन्तर्गत निर्माण किया और डाकखानो के सचालन का काम भी सरकार को ही सौपा, किन्तु दूसरी ओर लाखो एकड जमीन प्राइवेट उद्योगो को रेलो का जाल बिछाने के लिए दे डाली । एकाधिकार के विरोधी होने के कारण हमने टेलीफोन और टेलीग्राफ सेवाओ का विकास प्राइवेट कम्पनियो के हाथो मे सौप दिया, किन्तु साथ ही सार्वजनिक हित को दृष्टि मे रखकर उनके नियमन का उत्तर-दायित्व सरकार को दे दिया । इसी तरह रेल कम्पनियो और हवाई यातायात कम्पनियो का नियमन भी सरकार के हाथो मे दे दिया गया ।

आज अमेरिकन अर्थ-व्यवस्था को ऐडम स्मिथ और रिकार्डो के जमाने की पुराने ढर्रे की अर्थ-व्यवस्था बताना एक फैशन हो गया है। परन्तु फ्रेडरिक लुई ऐलन का कहना है कि हमारी अर्थ-व्यवस्था अब समाजवाद से भी बढकर एक ऐसी प्रणाली मे परिणत हो गई है जिसमे सरकारी नियन्त्रण और निजी व्यक्तिगत उद्यम, दोनो का समन्वय है। यह समन्वय इन दोनो की पृथक्-पृथक् लाभकारिता से कही ज्यादा लाभकारी है। हमने पूजी का सामाजिकीकरण करने के बजाय मज-दूरिया और वेतन बढाकर और ऊँची आमदनियो पर भारी टैक्स लगा कर वितरण का सामाजिकीकरण किया है। हमारा समाजवाद यह

नही कहता कि सोने के अण्डे देने वाली मुर्गी को मारकर खा जाओ, वह कहता है कि मुर्गी को और भी अधिक अडे देने के लिए पुष्ट और प्रेरित करो।

अमेरिका की व्यापार-व्यवसाय की प्रणाली ने व्यापार का एक नया सिद्धान्त निकाला है और वह है प्रतिस्पर्धात्मक सहयोग का। एक ही क्षेत्र के उत्पादक और निर्माता परस्पर मिलकर मूल्यवान विचारो, व्यापारिक रहस्यो और आविष्कारो का आदान-प्रदान करते है। इसके बाद वे ग्राहको को खीचने के लिए परस्पर प्रतिस्पर्धा करते है। किन्तु इस प्रणाली ने अनेक छोटे और स्वतन्त्र उत्पादको को उत्पादन-क्षेत्र से बाहर निकाल दिया है।

हम यह मानकर चलते है कि अर्थ-व्यवस्था को अच्छी तरह सफलता से चलाने के लिए कुछ चीजे अनिवार्य है। उदाहरण के लिए नागरिको का कानून-पालक होना और सरकार का कानूनो का परिपालन करना अत्यावश्यक है, क्योकि इनके बिना यह आशका रहती है कि कही लोग व्यापार-व्यवसाय मे किये गये करारो से मुकर न जाएँ, मुद्रा और बैंकिंग की सुदृढ प्रणाली भी आवश्यक है ताकि धन को हस्तान्तरित करने या उधार आदि लेने मे कठिनाई न हो, श्रमिको मे अनुशासन और नियम-पालन की प्रवृत्ति का होना भी अत्यावश्यक है। ये सब वस्तुए हमे उपलब्ध है, किन्तु ससार के अन्य भागो मे भी इनकी उपलब्धि हो ही, यह आवश्यक नही है।

एली व्हिटने ने जिस समय ऐसी मशीन का पहले पहल आविष्कार किया था, जिसके पुर्जे और हिस्से बदले जा सकते थे, उसी समय से बडे पैमाने पर सामूहिक उत्पादन के लाभ लोगो को ज्ञात हो गये थे, किन्तु बडे पैमाने पर सामूहिक उत्पादन की प्रणाली को सर्वप्रथम क्रियान्वित करने का श्रेय हेनरी फोर्ड को है। उसने इस प्रणाली को एक पूर्ण आर्थिक चक्र के रूप मे विकसित किया। बडे पैमाने पर वस्तुओ का उत्पादन करने से उनकी लागत कम पड़ती है और लागत कम होने से

उनकी बिक्री खूब होती है; बिक्री अधिक होने से मुनाफा बढता और मजदूरो की मजदूरी मे वृद्धि होती है और इस वृद्धि से उनकी क्रय-शक्ति बढने पर उनकी बिक्री मे फिर वृद्धि होती है—इस प्रकार आर्थिक प्राचुर्य का चक्र चलता जाता है।

लेकिन इस प्रणाली का एक अनिवार्य परिणाम था विशाल कम्पनियो का निर्माण। इससे मूल्यो की प्रतिस्पर्धा के बजाय वस्तु की किस्म की प्रतिस्पर्धा होती। फोर्ड, शैवरोलेट और प्लाइमाउथ मोटरो की कीमतो मे बहुत मामूली अन्तर है। ग्राहक इनमे से किसी एक का चुनाव करते हुए सिर्फ उनकी यान्त्रिक विशेषताओ को या अपनी पत्नी को रग और ऊपरी सजावट की पसन्द को ध्यान मे रखता है। विशाल उद्योगो मे आपस मे खूब प्रतिद्वन्द्विता चलती है। ऐल्युमीनियम उद्योग स्टेनलैस स्टील के उद्योग से प्रतिस्पर्धा करता है,. जनरल मोटर्स कम्पनी धमकी देती है कि यदि स्टेनलैस स्टील की कीमतो को बढने से रोका नही गया तो वह स्वय स्टील का उत्पादन प्रारम्भ कर देगी; और बड़े शृ खला भडार यह धमकी देते है कि यदि डिब्बाबन्द खाद्य-पदार्थो का मूल्य स्थिर नही रखा गया तो वे स्वय उनका उत्पादन करने लगेंगे।

प्रश्न यह है कि क्या इस प्रतिस्पर्धा का अन्त एकाधिकार के रूप मे होगा ?

इतिहास इसका उत्तर देता है—नही। एकाधिकार की कल्पना और विचार ही सयुक्त राज्य के लोगो को नैतिक दृष्टि से अप्रिय लगता है। यूनाइटेड स्टेट्स स्टील कार्पोरेशन और स्टैंडर्ड ऑयल कम्पनी की ओर से एकाधिकार का जो खतरा किसी समय पैदा हुआ था, वह बहुत पहले ही खत्म हो चुका है। यही नही, आज बड़ी कम्पनियाँ खुद ही एकाधिकार को पसन्द नही करेगी, चाहे उन्हे हम स्वय इसका अवसर प्रदान करें। कारण, प्रतिस्पर्धा ही उनका सबसे प्रेरक प्रलोभन और प्रोत्साहन है। वही उन्हें आगे बढाती रहती हैं। यदि एकाधिकार

स्थापित हो जाए तो स्वभावतः उस पर सरकार का नियन्त्रण हो जायेगा और अमेरिकन लोग जानते हैं कि अर्थ-व्यवस्था पर सरकार के कठोर नियन्त्रण और निर्देशन से यह कही अच्छा है कि अर्थ-व्यवस्था मे ६८ हजार ऐसे केन्द्र हो, जो अपने उद्यम, साहस और स्वतन्त्र सूझ-बूझ से आपसी प्रतिस्पर्धा के द्वारा उसे सप्राण बनाएँ।

यद्यपि मुख्य उद्योगो—मोटर, तेल और इस्पात—पर चार से आठ तक बडी कम्पनियो का प्रभुत्व है, तथापि इन उद्योगो मे छोटी फर्मों के भी पनपने की काफी गुंजायश है। इस्पात उद्योग मे, उदाहरण के लिए चार बडी कम्पनियाँ हैं, किन्तु उनके हाथ मे दो-तिहाई व्यापार है, शेप एक-तिहाई व्यापार के लिए ८० छोटी फर्मो मे प्रतिस्पर्धा चलती है। इसी तरह तेल उद्योग मे पाँच बडी फर्मे है जिनके हाथ मे इस उद्योग का ६० प्रतिशत व्यापार है। शेप ४० प्रतिशत व्यापार अन्य ५०० छोटी कम्पनियो के हाथ मे है।

इस तरह जैसा कि जॉन कैनेथ गालब्रेथ ने कहा है, बडी दैत्याकार कम्पनियो को बाजार को हडपने से रोकने के लिए हर व्यवसाय मे कुछ न कुछ प्रतिसन्तुलनकारी ताकते भी मौजूद है। उत्पादको के मूल्यो को बढने से रोकने के लिए प्रतिसन्तुलनकारी शक्ति के रूप मे बडे शृंखला भडार है। इसी प्रकार बडी कम्पनियो की शक्ति को प्रति-सन्तुलित करने के लिए बडी श्रमिक यूनियनें भी मौजूद हैं जो अपनी शक्ति के बल पर उनसे टक्कर लेकर सौदेबाजी कर सकती है। ये यूनियने न होती तो इन कम्पनियो की शक्ति के कारण श्रमिको को मालिको की दया पर निर्भर रहना पडता।

यद्यपि बहुत से आलोचक बडी कम्पनियो की परवाह नही करते, तो भी इसमे सन्देह नही कि ये कम्पनियाँ अमेरिकन जीवन मे महत्त्व-पूर्ण बुनियादी सस्थाएँ हैं। इन कम्पनियो ने अच्छी किस्म की वस्तुएँ कम मूल्य पर और विशाल मात्रा मे जनता को मुहैया करने मे अपनी श्रेष्ठता असन्दिग्ध रूप से साबित कर दी है। उनके पास वस्तुओ की

किस्म सुधारने और उत्पादकता मे वृद्धि करने के लिए अनुसन्धान के सर्वोत्तम साधन हैं। कर्मचारियो को लाभ पहुँचाने और उनके साथ सम्बन्धो को सुधारने की दिशा मे भी छोटी कम्पनियो की अपेक्षा बडी कम्पनियाँ ही अग्रणी रहती है।

हमारी समाज-व्यवस्था की भाँति हमारी अर्थ-व्यवस्था की भी कोई सीधी-सादी व्याख्या नही की जा सकती क्योकि उसमे बहुत विविधता है, तरह-तरह के परीक्षण किये जाते है और व्यावहारिकता और उपयोगिता को दृष्टि मे रखा जाता है। यद्यपि हम सभी उच्च स्वर से निजी व्यापार-व्यवसाय का समर्थन करते है, किन्तु हम मे से हर कोई किसी-न-किसी तरह का नियन्त्रण चाहता है। कोई उधार और ऋण की व्यवस्था पर, कोई एकाधिकार पर, कोई उद्योगव्यापी यूनियनों पर और कोई कृषि-जिन्सो के मूल्यो पर नियन्त्रण की माँग करता है। परस्पर-विरोध और सघर्ष की इन सब स्थितियो मे सरकार को मध्यस्थता करनी पडती है और कभी किसी बात के पक्ष मे और कभी विपक्ष मे रुख अपनाना पडता है। उद्देश्य यह रहता है कि देश की अर्थ-व्यवस्था किसी-न-किसी रूप मे सबके अनुकूल रहे, एक शक्ति दूसरी को प्रतिसन्तुलित करती रहे और सभी अधिकतम उत्पादन के लक्ष्य को पाने के लिए प्रयत्न करें ताकि उपभोग के लिए ज्यादा से ज्यादा सेवाएँ और वस्तुएँ उपलब्ध हो सकें।

उत्पादकता

सयुक्त राज्य को एक बहुत बडा लाभ यह है कि उसका आन्तरिक बाजार बहुत बडा और उन्मुक्त है। विदेशी आयात पर तटकर लगाये जाने से उसे बाहरी प्रतिस्पर्धा से सरक्षण प्राप्त है और साथ ही अन्य देशो से माल लाने मे भाडा इतना लग जाता है कि विदेशी सामग्री देशी उत्पादन का मुकाबला आसानी मे नही कर सकती। देश के भीतर एक राज्य से दूसरे राज्य मे माल ले जाने पर कोई सीमा कर नही देना पडता और, दूसरे, सारे देश मे परिवहन के मार्गो और साधनो का जाल बिछा

होने से परिवहन भी बहुत आसान है। इससे अमेरिकन निर्माता देश के आन्तरिक बाजार के लिए बड़ी मात्रा में सामान तैयार कर सकते हैं और कार्यकुशलता की दृष्टि से हर काम मे विशिष्टता प्राप्त कर कीमतें इतने नीचे स्तर पर ला सकते हैं कि आम जनता बिना किसी कठिनाई के उपभोग्य वस्तुएँ खरीद सके।

यद्यपि अमेरिकनो ने हमेशा यह घोषणा की है कि वे स्वतन्त्र व्यवसाय के पक्षपाती हैं, किन्तु उनकी यह घोषणा तथ्य के बजाय भावना पर अधिक आधारित होती है। यही कारण है कि वे व्यापार पर ऐसे नियन्त्रण की भी माँग करते रहे हैं जिससे कि समाज के विभिन्न अगो की माँगो को सन्तुलित किया जा सके। देश के उद्योगो को विदेशी प्रतिस्पर्धा से बचाने के लिए तटकर, श्रमिकों को सरक्षण प्रदान करने के लिए सामाजिक बीमा और न्यूनतम वेतन के कानून, किसानो को राहत देने के लिए अनुपूर्तियाँ, उपभोक्ताओ की रक्षा के लिए खाद्य-पदार्थों और दवाओ मे मिलावट को रोकने के कानून, महगाई और मुद्रास्फीति को रोकने के लिए ऋण-नियन्त्रण, सारे देश को सरक्षण और लाभ प्रदान करने वाले सघीय कार्यक्रमो के लिए धन जुटाने को क्रमिक आयकर, श्रमिक यूनियनो के सदस्यो एव नेताओ को सरक्षण देने के लिए सामूहिक सौदेबाजी, सार्वजनिक उपयोग की सेवाओ और रेलभाड़ो का नियमन, हवाई लहरो और हवाई कम्पनियो पर नियन्त्रण, निवेशको को सरक्षण देने के लिए शेयर-बाजार का नियमन—ये कुछ ऐसी चीजें हैं जिन्हें जनमत ने या तो स्वय माँगा है या जिन पर अनुमति दी है, ताकि सरकार उद्योगो और बाजार का नियमन कर सके। इन नियन्त्रणो और प्रतिबन्धों ने अनेक तरह से देश की अर्थ-व्यवस्था को मजबूत किया है। तब भी यह प्रश्न अभी तक बना हुआ है कि अमेरिकन प्रणाली मे उत्पादकता इतनी कैसे बढी है।

जैसा कि टॉनी और अन्य अनेक विद्वानो ने कहा है, प्रोटेस्टैंट आचार शास्त्र ने लोगो को कठोर परिश्रम करने के लिए प्रेरित किया और

यह उपदेश दिया कि उत्पादकता बढाना एक ईश्वरीय वरदान है। डि टोकविल का कहना है कि अमेरिका मे सबके लिए परिस्थितियो की समानता और वर्गभेद के अभाव का यह परिणाम था कि लोग खूब उत्साह से व्यापार और उद्योग मे जुट गये। ग्रेटब्रिटेन से स्वतन्त्र होने पर अमेरिका के निर्माताओ और उत्पादको को और भी अधिक प्रोत्साहन मिला। पश्चिम की ओर नये-नये क्षेत्रो मे प्रवेश के लिए विशाल पैमाने पर प्रसार और आबादी मे भारी वृद्धि ने वस्तुओ की माग को खूब बढाया और उसने उत्पादन को प्रोत्साहन दिया।

कार्यकुशलता और उत्पादकता मे वृद्धि का आन्दोलन एक लहर की तरह देश भर मे फैला गया। विशेषज्ञ लोग झुण्ड के झुण्ड कारखानो मे घूम कर काम देखते, घडियाँ हाथ मे लेकर श्रमिको और मशीनो का समय नापते, श्रमिको की जगहें तब्दील करते, एक स्थान से दूसरे स्थान पर सामान पहुचाने के लिए कन्वेयर बैल्टे लगवाते और हर श्रमिक के काम को कम कराते। ये विशेषज्ञ उत्पादकता और कार्यकुशलता बढाने और मानवीय श्रम को कम करने की झोक मे इतना आगे बढ गये कि अब वहाँ से उल्टी दिशा की ओर गति प्रारम्भ हो गई है। अब श्रमिक को उत्पादन मे अधिक-से-अधिक हिस्सा लेने का मौका दिया जा रहा है, ताकि वह यह अनुभव कर सके कि उसने भी कुछ किया है। किन्तु इन विशेषज्ञो ने यह अवश्य सिद्ध कर दिया कि काम के समय, काम के प्रवाह और काम के तरीके की अच्छी व्यवस्था न होने के कारण बहुत सा प्रयत्न और उद्योग व्यर्थ नष्ट हो रहा था।

उत्पादनो के आकार और शक्ल के निश्चित प्रतिमान निर्धारित कर दिये गये, जिससे अरबो डालर की बचत हो गई। पहले जहाँ अस्पतालो के लिए चालीस से अधिक तरह के पलग बनते थे, वहाँ अब प्रतिमान निर्धारित कर दिये जाने से सिर्फ एक या दो ही तरह के बनने लगे। मोटर-निर्माताओ ने भी कुछ निश्चित बुनियादी टाइपो, फ्रेमो और इंजनो का निर्माण करना सीख लिया ताकि सब कारखानो मे मामूली-

से ऊपरी परिवर्त्तनो से ही मोटरो के निर्माण में इनका उपयोग किया जा सके ।

लागत का हिसाब लगाना, सांख्यिकी अनुसन्धान, विभिन्न कामो का विश्लेषण, वैज्ञानिक गवेषणा, व्यापारिक भविष्यवाणी, कारखानो मे प्रयुक्त वस्तुओ का नियन्त्रण, गोदामो की उचित व्यवस्था, और उत्पादनो का द्रुत परिवहन—इन सब कामो के लिए विशेषज्ञ रखे जाने लगे और उनसे उत्पादन मे कौशल लाने मे बहुत मदद मिली ।

अमेरिकन निर्माताओ ने यह भी सीखा कि मजदूरी मे वृद्धि करके भी कैसे उत्पादन की लागत घटाई जा सकती है । यह निश्चित रूप से उनकी कार्यकुशलता का एक चिह्न था । कार्यकुशलता की एक पहचान और भी है और वह यह कि सोवियत रूस मे जहाँ चार कारखाना मजदूरो पर एक दफ्तरी क्लर्क की आवश्यकता पडती है वहाँ अमेरिका मे सात मजदूरो पर एक दफ्तरी बाबू होता है ।

पुरानी प्रणाली मे श्रमिक को अपनी कार्यकुशलता बढाने के लिए अधिक तेजी से काम करने के लिए प्रेरित किया जाता था, किन्तु नई प्रणाली मे उसे अपना उत्पादन बढाने के लिए अधिक सुखी और सन्तुष्ट अनुभव कराया जाता है । मजदूरो के मनोरजन के लिए कारखानो मे सगीत का प्रबन्ध किया गया है । इसके लिए एक विशिष्ट सेवा प्रारम्भ की गई जो काम के समय, स्थान और श्रमिको के मानसिक रुझान के अनुसार उचित सगीत का चुनाव करती थी । परिणाम यह हुआ कि श्रमिको के मन पर तनाव कम हो गया और उन्हे अपना काम पहले की भाँति नीरस नही लगता था । इससे सामान और मशीनो में टूट-फूट और दुर्घटनाओ मे कमी हो गई । मालिको को भी अपने आय-व्यय और सम्पत्ति के लेखे मे यह फर्क स्पष्ट नजर आने लगा । अकेला एक सगीत कार्यक्रम ही इतने विशाल पैमाने पर आयोजित किया गया कि उसके श्रोताओ की सख्या पाँच करोड थी ।

इस बीच औद्योगिक अनुसन्धान, जिस पर प्रतिवर्ष २·६ अरब डालर खर्च होते है, उत्पादन के नये-नये आश्चर्यजनक तरीको को जन्म दे रहा है। जनरल मोटर्स के कारखाने मे स्वचालित यन्त्रो से उत्पादन की एक लम्बी श्रृ खला है जो हर घटे मे मोटरो के दो हजार पिस्टन तैयार करती है। काँच का सामान बनाने वाली एक कम्पनी के काँच को फुलाने वाले चौदह यन्त्र इतने विशाल और दैत्याकार हैं कि उनसे बिजली के बल्बो और रेडियो बल्वो की देश की कुल आवश्यकता का ९० प्रतिशत भाग पूरा हो जाता है। हालाँकि इनमे से हरेक मशीन के लिए केवल एक आपरेटर की आवश्यकता होती है, फिर भी इस कम्पनी ने चालीस वर्ष पूर्व की अपेक्षा आज डेढ गुने कर्मचारी काम पर रखे हुए हैं।

वैज्ञानिक गवेषणा के फलस्वरूप आज सैकड़ो तरह के ऐसे कृत्रिम कपड़ो, धुलाई के मसालो और मशीनो का निर्माण होने लगा है, जो खेतो और जगलो मे पैदा होने वाली प्राकृतिक वस्तुओ की जगह काम में लाये जा सकते है। इससे प्राकृतिक साधनो पर मानव की निर्भरता मे एक बडी क्रान्ति आ गई है। आज रासायनिक पदार्थ तैयार करने वाले ऐसे विशाल सयन्त्र बन गये हैं कि उनसे रासायनिक उर्वरक, नकली रबड, छापाखाने की स्याही और प्लास्टिक उद्योग के लिए कच्चे माल की एक लम्बी धारा निरन्तर ऐसे बहती हुई गिरती है, मानो पुराने जमाने के किसी काल्पनिक वैज्ञानिक उपन्यास का स्वप्न साकार हो रहा हो। प्लास्टिक ने तो न जाने कितनी किस्म के नये उद्योग खड़े कर दिये हैं।

यद्यपि रसायनशास्त्रियो और भौतिक विज्ञानवेत्ताओ ने पहले ही बहुत-से आश्चर्यों की सृष्टि कर दी है, तो भी ऐसा लगता है कि रसायनशास्त्री और भौतिक-विज्ञानवेत्ता जीवविज्ञान-वेत्ताओ के साथ मिल कर शायद और भी नई-नई किस्मो की वस्तुओ और उद्योगो को जन्म दे सकेंगे जिससे प्रकाश, वायु और जल से कृत्रिम रूप से उसी तरह के

खाद्य-पदार्थ भी कारखानो मे बनने लगेंगे, जैसे स्वय प्रकृति इन तत्वों से बनाती है।

नये-नये आविष्कारो से दफ्तरो के कामो मे भी क्रान्ति हो रही है। एक सार्वजनिक सेवा कम्पनी ने, जो २० लाख ग्राहको की सेवा करती है, अपने यहाँ इलैक्ट्रानिक गणना यन्त्र लगा रखे हैं। इन यन्त्रो से २७० व्यक्ति दो दिन मे उतना काम कर लेते हैं, जितना पहले ५०० क्लर्क एक सप्ताह मे करते थे। एक मशीन ऐसी भी है जिसमे पच किये हुए कार्ड डालने से उन पर अकित प्रायः हर प्रकार के प्रश्नो और शिकायतो के उत्तर मिल जाते हैं।

कारखानो मे आज जो मशीनें इस्तेमाल की जाती है, वे कच्चे माल को स्वय अन्दर ले जाती हैं, तैयार माल जब पेचीदा यन्त्रो से निकल कर बाहर आता है तो उसकी गलतियो पर नजर रखती हैं, कोई गलती हो तो उसे सुधार देती है, खुद रुक जाती हैं और चल पडती हैं, तैयार माल की जाँच करती हैं, खराब माल को अलग कर देती हैं, उत्पादित वस्तुओ की गिनती कर देती हैं और उनके इलैक्ट्रानिक "मस्तिष्क" मे जो बातें भरी जाती हैं, उन्हें अकित कर याद रखती हैं।

स्वचालित यन्त्रो के उपयोग से उत्पादन की विधियो ने अनेक उद्योगो में आमूलचूल परिवर्त्तन कर दिया है, फिर भी स्वचालित यन्त्रो के उपयोग का युग अभी प्रारम्भ ही हुआ है। इन स्वचल यन्त्रो के प्रयोग के कारण बिजली की लागत आज भी उतनी ही है, जितनी कि १९३९ मे थी, हालाँकि वैसे सब मिलकर जीवन-व्यय ९३ प्रतिशत बढ गया है।

कुछ लोग स्वचालित यन्त्रो के इस आविष्कार को खतरनाक समझते हैं क्योंकि इससे डिक्टेट और टाइप करने वाली मशीनें स्टेनोग्राफरो को, हिसाब-किताब की मशीनें गणको और बही-खाता रखने वालो को और काँच को फुलाने और लोहे की आलमारियाँ बनाने वाली मशीनें यह काम करने वाले कारीगरो को बेकार कर रही हैं। दूसरी ओर ऐसे

लोग भी है जो इंजीनीयरो और टैकनीशियनो की माँग कर रहे है ताकि वे ऐसी मशीनो का आविष्कार कर सकें जो कमर-तोड़ मेहनत-मजदूरी का और तरह-तरह की बीमारिया पैदा करने वाले धन्धो का अन्त कर सकें, मजदूरो के काम के घटे घटा सके और उन्हे अधिक अवकाश देकर उनके साँस्कृतिक स्तर को ऊँचा उठा सके।

कम्पनियाँ

इस जीवन्त अर्थ-व्यवस्था का उत्तरदायी केन्द्र कम्पनी है। कम्पनी (कार्पोरेशन) शब्द आज भी लोगो को, यहाँ तक कि अमेरिकनो को भी एक अशुभ का द्योतक लगता है, क्योकि इससे हमे उन दिनो की याद आ जाती है जब अनियन्त्रित और लोभी कम्पनियाँ एकाधिकार स्थापित कर अर्थ-व्यवस्था को अपनी मुट्ठी मे कर लेती थी, विशाल सम्पत्ति बटोर कर लोगो को गरीब बना देती थी, वित्तीय मामलो मे धोखाधड़ी के सौदे करती थी और राजनीतिक भ्रष्टाचार को प्रश्रय देती थी।

पर आज जमाना कितना बदल गया है! आज कम्पनियाँ अपनी प्रतिष्ठा की रक्षा के लिए कितनी व्यग्र और बेचैन रहती हैं, जनसम्पर्क अधिकारी नियुक्त कर जनता के सामने अपना अच्छा चित्र उपस्थित करती हैं, जो लोग उसके कारखाने देखना चाहते है उनका स्वागत करती हैं, शेयर होल्डर या स्कूलो के बच्चे, सबके प्रश्नो का भद्रता और सौजन्य से उत्तर देती है और अपने आदमियो को नागरिक गतिविधियो मे उपयोगी ढग से हिस्सा लेने के लिए प्रोत्साहन देती है।

अधिकतर कर्म-नियोजक,[1] जिनमे कम्पनियाँ भी शामिल है, अभी तक अपेक्षाकृत छोटे है। कुल कर्म-नियोजको मे से ९० प्रतिशत ऐसे है जिनके यहाँ ३१ से कम कर्मचारी काम करते है। किन्तु सर्वोच्च वर्ग के पाँच प्रतिशत कर्म-नियोजक ऐसे है जो देश के कुल कर्मचारियो मे से ७० प्रतिशत को काम पर लगाए हुए है। इस समय २० लाख व्यक्ति व्यक्तिगत रूप मे या साझेदारी मे व्यापार-व्यवसाय मे लगे हुए हैं किन्तु कम्पनियो की सख्या केवल पाँच लाख के लगभग है। लेकिन

इन कम्पनियो मे से दो सौ के लगभग ऐसी है जिनके हाथ मे करीब आधा व्यवसाय है। ऐसा प्रतीत होता है कि ये कम्पनियाँ एक-दूसरी के साथ विलय करके या डायरेक्टरो और शेयरो का गठजोड करके अधिकाधिक विराट् आकर धारण करती जा रही है।

ये सगठन स्कूल और चर्च की भांति सामाजिक सगठन है। स्कूलो और गिरजाघरो की भाँति लोगो के रहन-सहन और रवैये पर इनका भी गहरा असर पडता है। वास्तव मे स्कूलो मे जो शिक्षा दी जाती है और गिरजाघरो मे जो उपदेश दिये जाते है उन्हें भी ये सस्थाएँ बहुत कुछ प्रभावित करती हैं क्योकि व्यापार-जगत् का, खासकर बडी कम्पनियो का, मानसिक रुझान ही सारे समाज का रुझान बना हुआ है।

इन विशाल दैत्याकार कम्पनियो का मालिक कौन है, उन पर नियन्त्रण किसका है और उनसे लाभ कौन उठाता है ?

अधिकतर मामलो मे कम्पनियो का स्वामित्व बहुत व्यापक होता है। अक्सर ऐसा होता है कि किसी कम्पनी मे कर्मचारियो की जितनी सख्या होती है, उससे ज्यादा सख्या उसके शेयर-होल्डरो की होती है। ड्यूपाट कम्पनी के शेयर होल्डरो की सख्या १,६६,००० है, जबकि उसके कर्मचारी कुल ८६,००० है। जनरल मोटर्स के शेयर होल्डर ६,५६,००० और कर्मचारी ५,१४,००० है (विदेशो मे भी इसके ८८,००० कर्मचारी है)। जनरल इलैक्ट्रिक के शेयर होल्डरो की सख्या २,६६,००० और कर्मचारियो की २,१०,००० है। अस्सी से नव्वे लाख तक अमेरिकन विभिन्न कम्पनियो के शेयर होल्डर है और इनमे से अधिकतर आज भी 'पू जीपति' नही पुराने जमाने की भाँति साधारण लोग ही हैं।

इस तरह एक बडी कम्पनी के मालिक आज देश भर मे फैले होते हैं और कम्पनी पर उनका कोई प्रभावकारी नियन्त्रण नही होता नियन्त्रण उच्च प्रबन्धको और डायरेक्टर मडल के हाथ मे रहता है। फिर भी शेयर होल्डर कम्पनियो की वार्षिक बैठको मे शोर मचा सकते है और

मचाते भी है, इसलिए कम्पनियो के उच्च अधिकारी शेयर होल्डर के हितो के प्रति सजग रहते है। आर्थिक लोकतन्त्र के निरन्तर प्रसार के इस युग मे मैनेजर यह जानते हैं कि उन्हे समाज-व्यवस्था के प्रति भी उत्तरदायी रुख अपनाना पडेगा, अन्यथा सरकार उन पर शिकजा कसेगी। इसलिए उन्हें पाच प्रकार का उत्तरदायित्व अपने ऊपर लेना पडता है। उन्हें शेयर होल्डरो को उचित डिविडेड और मजदूरो को उचित वेतन देना पड़ता हैं ताकि उन्हें उत्पादन बढाने को प्रोत्साहन मिले। जनता उनसे यह आशा करती है कि उसे कम-से-कम कीमत पर बेहतर किस्म का सामान मिलेगा और सरकार भी उनके मुनाफो मे से जनकल्याण के कामो के लिए उचित हिस्सा चाहती है। उनका पाँचवा उत्तरदायित्व है पुरानी मशीनो को बदलने या कारखाने का विस्तार करने के लिए मुनाफे मे से हिस्सा निकालना। यह पाँचवाँ हिस्सा पहले चारो दावेदारो को लाभ पहुँचाता है क्योकि इससे कारखाने की उत्पादन-क्षमता बढ़ती है।

बडी फर्में अनचाहे और बिना कोई प्रयत्न किये ही आर्थिक सगठन की भाँति राजनीतिक और सामाजिक सगठन भी बन गई है। बडी कम्पनियाँ सरकार की तरह ही अधिकाधिक सोचने और काम करने लगी हैं। अपने आकार-प्रकार, पेचीदगी, समन्वय की समस्याओ और समाज पर अपने निर्णयो के प्रभाव की दृष्टि से कम्पनियाँ एक तरह की छोटी सरकार बन गई है, लेकिन बहुत छोटी भी नही।

बडापन किसी को अच्छा लगता है और किसी को उससे भय होता है। डेविड लिलियन्थाल ने, जो देश के एक प्रतिष्ठित नेता थे, यह मत प्रकट किया है कि बड़ी निजी कम्पनियो को बुरा समझना भूल है। उनका कहना है कि कम्पनियो का बड़ा होना अनिवार्य है, क्योकि उससे उत्पादकता बढती है, उपभोक्ता को कम मूल्य पर अच्छी और तरह-तरह की वस्तुए मिलती है और ये दैत्याकार कम्पनियाँ आपसी प्रतिस्पर्धा और बड़ी श्रमिक यूनियनो और सरकार द्वारा लगाम खीची जाती रहने से काबू मे भी रहती हैं। सी० राइट मिल्स ने इसके विपरीत यह

आशका प्रकट की है कि कम्पनियां समाज पर हावी होती जा रही है और शोषण के द्वारा नही, वल्कि विज्ञापन आदि के द्वारा हमारे मन पर प्रभाव डाल कर और जो कुछ उनके पास है उसे खरीदने के लिए उकसा कर अपनी इच्छा को हम पर लाद रही हैं। किन्तु उन्होने यह विचार व्यक्त करते हुए इस तथ्य को भुला दिया है कि कम्पनियो के इस प्रभाव को निरस्त करने के लिए यूनियन, चर्च और इसी तरह के अन्य सगठनो के रूप मे कुछ प्रतिसन्तुलनकारी ताकतें भी मौजूद हैं।

निराशावादी लोग आज की वडी कम्पनियो की तुलना उन्नीसवी शताब्दी के आखिरी वर्षो की उन कम्पनियो से तो करते नही, जो नितान्त उत्तरदायित्व-हीनता से लूटमार करती थी, वे सिर्फ यही रट लगाए जाते हैं कि वडी कम्पनियाँ छोटी कम्पनियो और व्यवसायियो को खाती जा रही हैं या अपनी विशाल आर्थिक शक्ति के वल पर उन्हें नुक्सान पहुचा रही है।

वास्तविकता यह है कि आज भी लाखो छोटे व्यवसायो के लिए अमेरिकन अर्थ-व्यवस्था मे काफी स्थान है। छोटे या मध्यम दर्जे के कस्बे के जीवन मे अब भी विभिन्न पेशो के लोगो, दुकानदारो, सेवाएँ उपलब्ध करने वाले व्यापारियो, छोटे पैमाने के कारखानेदारो आदि का वहुत वडा स्थान है। ये लोग और इनकी पत्नियाँ व्यापार व्यवसाय के साथ-साथ ऐसे स्वैच्छिक सगठनो की प्रवृत्तियो मे हिस्सा लेते रहते है, जो नगर के स्वास्थ्य और जन-कल्याण के लिए आवश्यक हैं। इन छोटे नगरो मे नेतृत्व इन छोटे व्यपारियो और व्यवसायियो के हाथ मे ही रहता है, कारण वडी फर्मो की जो शाखाएँ इन नगरो मे होती भी हैं, उनके मैनेजर स्थायी नही होते, वल्कि वदलते रहते है। यह ठीक है कि इन छोटे व्यापारियो और व्यवसायियो पर वडी फर्मो के लोगो की प्रतिष्ठा और उनके जीवन-यापन और उपभोग के तरीको का असर पड़ता है, परन्तु ये वडी फर्मों के अधिकारी भी स्थानीय समाज मे अपना स्थान

बनाने के लिए स्थानीय भद्र वर्ग पर निर्भर करते हैं। इस तरह ये दोनो शक्तियाँ एक-दूसरे पर प्रभाव डालती रहती है।

ड्यूपौंट कम्पनी के क्रॉफोर्ड ग्रीनवाल्ट का कहना है कि "कोई भी व्यवसाय तब तक पनप नही सकता, जब तक कि वह जनता के हितो को सभी ओर से पूरा न कर सके। जैसे-जैसे एक व्यवसाय बडा होता जाएगा और उसमे नीति-निर्धारण का काम अधिकाधिक लोगो को सौंपा जाने लगेगा वैसे-वैसे वह व्यवसाय उस स्थान या काल के जनहित को अधिकाधिक व्यापक रूप मे प्रतिबिम्बित करने लगेगा।"

यद्यपि क्रॉफोर्ड ग्रीनवाल्ट की फर्म के बहुत बडी होने के कारण रासायनिक उद्योग पर हावी होने से, उसके विरुद्ध अनेक बार कम्पनी गुट विरोधी कानून के अन्तर्गत कारवाई की जाती रही है, तो भी सचाई यह है कि इस फर्म ने अपने प्रतिद्वन्द्वियो को व्यापार मे लाने की बहुत कोशिश की है। यही नही, उसने यहाँ तक किया है कि अपने प्रतिद्वन्द्वियो को व्यापार मे लाने के लिए उन्हें कारखाने खडे कर के दिये और टैक्नीकल सहायता भी दी। यह कदम एकाधिकार की ओर नही, बल्कि एकाधिकार से विपरीत दिशा मे है।

हाल मे ही बडी कम्पनियो मे एक प्रवृत्ति और भी नजर आई है और वह है नये नये उद्योग प्रारम्भ कर विविध प्रकार की वस्तुओ या सेवाओ का उत्पादन करना अथवा छोटी कम्पनियो को अपने भीतर विलीन कर लेना। उदाहरण के लिए जनरल इलैक्ट्रिक कम्पनी बिजली के सभी प्रकार के सामान का निर्माण तो करती ही थी, अब वह जेट इजिन और एयर कण्डीशनिंग (वातानुकूलन) उपकरण भी बनाने लगी है और अणु शक्ति के क्षेत्र मे भी प्रविष्ट हो गई है। आज कम्पनियाँ एक साथ थोडे समय के लिए बहुत बड़ा मुनाफा कमाने के बजाय दीर्घकाल तक थोडा-थोडा मुनाफा कमाते रहना पसन्द करती है ताकि व्यवसाय मे वे जम जाएँ और अपना सुरक्षित स्थान बना लें।

इसलिए आज वे चार प्रतिशत से भी कम मुनाफा कमाने की आशा करती है।

सघीय सरकार द्वारा मुनाफे पर भारी कर लगा दिये जाने के कारण अनेक बड़ी कम्पनियाँ यह पसन्द करती है कि मुनाफा दिखाकर सरकार को टैक्स भरने के बजाय जन-सेवा के कामो के लिए स्वैच्छिक सगठनो को दान दे दें। बड़े उद्योग विश्वविद्यालयो और कालेजो को भी उदारता से दान देने लगे हैं, क्योकि वे अनुभव करते हैं कि व्यापार व्यवसाय और उद्योग क्षेत्र के नेता भविष्य मे उच्च शिक्षा की इन सस्थाओ से ही मिलेंगे।

बडी कम्पनियो के इन कार्यों के पीछे एक ओर स्वार्थ की भावना विद्यमान है, और दूसरी ओर यह चिन्ता भी निहित है कि आम जनता उनके बारे मे अच्छी धारणा बनाये। इसलिए जनता के मन पर वे यह छाप डालना चाहती हैं कि वे बडी सेवाभावी, परोपकारी और जन-हितकारी सस्थाएँ है और साथ ही जनता को उसकी आवश्यकता की वस्तुएँ मुहैया कर और मजदूरो को मजदूरी देकर राष्ट्र की समृद्धि मे योग देती हैं।

पुराने जमाने की और आज की कम्पनियो मे जो भारी अन्तर है उसकी सबसे अच्छी मिसाल शायद हेनरी फोर्ड और उनका पोता हेनरी द्वितीय हैं। हेनरी फोर्ड अपने विशाल उद्योग को अपने परिवार मे ही सीमित रखते थे। वे अपने कर्मचारियो के लिए वेतन-मान निर्धारित करते थे, किन्तु लोगो को बार-बार नौकरी से बर्खास्त कर उनकी तरक्कियाँ रोक कर या पदावनति कर उन्हें वेतन-मान की उच्चतम सीमा पर नही पहुँचने देते थे। वे हर समय अपने साथ अगरक्षक रखते थे और अपने कर्म-चारियो मे साजिश के बीज बोकर या उनमे पारस्परिक ईर्ष्या-द्वेष और प्रतिस्पर्धा पैदा कर अपने व्यवसाय की रक्षा करते थे। लेकिन हेनरी फार्ड के अपने श्रमिको के साथ जितने खराब सम्बन्ध थे, हेनरी द्वितीय के सम्बन्ध उतने ही मधुर और शान्ति पूर्ण हैं। उन्होने व्यापार के साथ-साथ जन-

सेवा का भी कार्य किया और सयुक्त राष्ट्रसंघ मे अपने देश का प्रतिनिधित्व किया। उनके दादा फोर्ड प्रतिष्ठान के लिए जो धन छोड गये थे, उससे उन्होने सामाजिक अनुसन्धान के व्यापक कार्यक्रमो को प्रोत्साहन दिया।

किन्तु हेनरी फोर्ड द्वितीय एक अपवाद मात्र हैं, क्योकि उनका जन्म ऐश्वर्य और वैभव के बीच मे हुआ था। औद्योगिक जगत् के नौ हजार विशिष्ट व्यक्तियो और नेताओ के जीवन का अध्ययन करने से प्रतीत होता है कि एक नौजवान के लिए, जिसके पास अपनी योग्ता के सिवाय कोई पूँजी नही है, उच्चतम पद पर पहुँचने के अवसर अपने दादा की अपेक्षा कही अधिक हैं। और यदि वह बडी कम्पनी मे हो तो ये अवसर और भी अधिक रहते है। पिछले पचास वर्षो मे कम्पनियो के प्रबन्ध विभागो मे श्रमिको के लड़को का अनुपात दुगुना हो गया है। किन्तु व्यापार-व्यवसाय मे सफलता पाने और उच्च पद पर पहुँचने के लिए आज मालिक की लडकी से शादी करने की अपेक्षा भी अधिक अच्छा और सुनिश्चित मार्ग कालेज की ऊँची डिग्री लेना है।

कोई भी व्यक्ति व्यापार-व्यवसाय मे क्यो और कैसे सफल होता है? पहली बात यह है कि व्यापार-व्यवसाय मे आ जाने पर वह यह अनुभव करता है कि वह भावनात्मक दृष्टि से स्वतन्त्र है। माता-पिता पर उसकी निर्भरता समाप्त हो जाती है। वह असफलता से डरता है और इसीलिए उससे बचने का प्रयत्न करता है। वह अपने उच्च अधिकारियो की भावनाओ और इच्छाओ को ध्यान मे रखता है। वह अपने मे ही सीमित और सिमटा नही रहता दूसरो के साथ काम करके आनन्द अनुभव करता है। वह जानता है कि दूसरो को खुश रखते हुए उनसे काम कराने का क्या तरीका है। वह कम्पनी के लिए और उसके उत्पादनो और नीतियो के लिए अपनी सृजनात्मक योग्यता का योगदान करता है। वह बुद्धिजीवी की अपेक्षा प्रतिभाशाली अधिक है।

मार्क्स ने पूंजीवाद के बारे मे जितनी भी अशुभ भविष्यवाणियाँ

की थी, वे सभी गलत सिद्ध हुई हैं। कर्मचारियो और श्रमिको का जीवन-स्तर ऊँचा हुआ है, उनके काम के घटे कम हुए हैं, और राष्ट्र की आय का वितरण अधिक समान और न्यायोचित हुआ है। मार्क्स की आशा और भविष्यवाणी के विपरीत औपनिवेशिक साम्राज्य विघटित हो रहे हैं या स्वेच्छा से छोडे जा रहे है और कृषको का शोषण होने के बजाय राज्य उन्हें सहायता दे रहा है।

काम के घटो मे कमी करने से जो क्षति होती है उसकी पूर्ति मशीनों की उत्पादकता मे वृद्धि से हो जाती है। इसके अलावा काम के घटे कम होने से श्रमिको को थकान कम होती है और वे अधिक काम कर सकते है और उसमे गलती भी कम होती है।

एक ओर जहाँ काम के घटे कम हो रहे है, वहाँ मजदूरी और वेतनो मे वृद्धि हो रही हैं। सयुक्त राज्य मे पूरे समय काम करने वाले पुरुषो की औसत वार्षिक आमदनी ४,२०० डालर और स्त्रियो की २,७०० डालर है। ये सख्याए कम आश्चर्यजनक नही हैं। राष्ट्रीय आय का जो भाग कर्मचारियो को मिलता है, उसमे भी निरन्तर वृद्धि हो रही है। प्रति मानव घटा उत्पादन में २ प्रतिशत वृद्धि हो रही है और उतनी ही वृद्धि प्रति व्यक्ति क्रय-शक्ति मे भी हो रही है। इस क्रय-शक्ति का लाभ भी अब पहले की अपेक्षा अधिक व्यापक क्षेत्र को मिल रहा है।

श्रमिको को अपने उत्पादन का न्यायपूर्ण हिस्सा प्राप्त करने के लिए समझौते की बातचीत करने मे सहायता देने के उद्देश्य से सरकार ने अनेक कानून बनाये हैं। इन कानूनो से यूनियनें श्रमिको की ओर से सामूहिक सौदेबाजी कर सकती हैं, स्त्रियो और बच्चो की अनुचित श्रम और शोषण से रक्षा की जा सकती है, काम के घटे नियत किये जा सकते हैं, न्यूनतम वेतन निर्धारित किया जा सकता है, अवकाश-प्राप्त श्रमिको और उनके आश्रितो को पेन्शन देने की व्यवस्था की जा सकती है, बेरोजगारो को सहायता दी जा सकती है, श्रमिको को व्यावसायिक व शिल्पिक प्रशिक्षण दिया जा सकता है, कारखानो मे मजदूरों की सुरक्षा

का प्रबन्ध किया जा सकता है और काम करते हुए घायल होने या शारीरिक क्षति होने पर मजदूर को मुनाफा दिलाया जा सकता है।

इनमे से अनेक लाभो और श्रमिको के हित-सवर्धन का श्रेय विश्व के सबसे बडे ट्रेड यूनियन आन्दोलन को है। संयुक्त राज्य के १ करोड़ ८० लाख नर-नारी, यानी कृषि-भिन्न श्रमिको का एक-तिहाई भाग, यूनियनो के सदस्य है। किसी जमाने मे मालिको और श्रमिको के बीच जमकर सघर्ष होता था, पर आज उनमे बराबरी के स्तर पर बातचीत होती है और यदि दोनो पक्ष अपनी-अपनी बात पर अडे रहते हैं तो भी उनमे सौहार्द बना रहता है। स्थानीय आधार होने पर भी ये वार्त्ताए प्राय समूचे उद्योग के लिए होती है।

सन् १६५५ मे अमेरिकन मजदूर संघ (अमेरिकन फेडरेशन ऑफ लेबर) और औद्योगिक सगठन कॉंग्रेस (कॉंग्रेस ऑफ इडस्ट्रियल आर्गे-नाइजेशन्स) का विलय हो जाने के बाद यूनियनो के अधिकतर सदस्य समान नेताओ के अधीन सगठित हो गये हैं। सामान्यत. हर मजदूर अपने विशिष्ट व्यवसाय की राष्ट्रीय यूनियन की स्थानीय शाखा का सदस्य होता है। उदाहरण के लिए यूनाइटेड ओटोमोबील वर्कर्स अथवा लिथोग्राफर्स नामक श्रमिक सगठन राष्ट्रीय सगठन हैं, किन्तु जिन व्यव-सायो के श्रमिको की ये यूनियने है उनके सदस्य इन यूनियनो की अपने शहर की शाखाओ के सदस्य है। देश भर मे इन स्थानीय यूनियनो की सख्या ७० हजार से भी अधिक है। इन स्थानीय यूनियनो को मिलाकर राष्ट्रीय यूनियनें बनती हैं जो हमारे सघीय शासन के घटक राज्यो या राज्यीय राजनीतिक दलो की भाँति स्वशासित और स्वतन्त्र सगठन हैं। सघवाद और केन्द्रीय नियन्त्रण का विरोध केवल राजनीतिक क्षेत्र तक ही सीमित नही है, वल्कि वे श्रमिक क्षेत्र मे भी व्यापक हैं।

सामूहिक सौदेबाजी यूनियन का सबसे महत्त्वपूर्ण कार्य है। यह सौदेबाजी और वार्त्ता मुख्यत इन विषयो पर होती है (१) समझौते का स्वरूप और अवधि एव अवधि बढाने की व्यवस्था तथा हड़तालो

और तालाबन्दियो को रोकने की व्यवस्था, (२) यूनियनो और प्रवन्धको के अधिकार, यूनियनो की मान्यता एव मजदूरो की नियुक्ति मे उनकी भूमिका, (३) मुआवजा, वेतन और मजदूरी और उनमे वृद्धि की दरें एव पेन्शन, स्वास्थ्य कोष और सवेतन छुट्टी आदि अन्य लाभ; (४) श्रमिको की नियुक्ति, स्थायित्व, तरक्की, काम न रहने पर अलहदगी और पुनर्नियुक्ति, (५) काम की परिस्थितियाँ, सफाई, स्वच्छता, सुरक्षा, काम की रफ्तार, दैनिक और साप्ताहिक काम के घटे।

यूनियनो को सार्वजनिक रूप से मान्यता अभी हाल मे ही मिली है, किन्तु अव यह मान्यता अमेरिकन जीवन का अग वन गई है, हालाकि कुछ उद्योग-सचालक प्राइवेट तौर पर इससे असन्तुष्ट है। किन्तु यह वात थोड़ी-बहुत सर्वत्र अनुभव की जाने लगी है कि मजदूर लोग अपनी शक्ति का उपयोग कर ऐसे लाभो की भी माँग कर सकते है जिनसे महगाई का खतरा पैदा हो जाए, क्योकि मजदूरो की मागें पूरी करने के लिए मालिको का जो खर्च वढेगा उसकी वसूली वे उपभोग्य वस्तुओ की कीमतें वढाकर करेंगे और अन्तत उसे उपभोक्ताओ की जेव से निकालेंगे।

अनेक यूनियनो ने इस तथ्य को भली-भाति महसूस कर समझदारी का परिचय दिया है कि उनके सदस्यो का कल्याण भी मालिको और आम जनता के कल्याण के साथ अविच्छिन्न रूप से वधा हुआ है। उदाहरण के लिए अमलगमेटेड क्लोदिंग वर्कर्स यूनियन प्रवन्धको को काम के नियमित प्रवाह की व्यवस्था करने, उत्पादन का स्तर निर्धारित करने, हाथ के काम की जगह मशीन का उपयोग प्रारम्भ करने, काम की कमी से वेकार होने वाले श्रमिको को दूसरे कामो मे स्थानान्तरित करने और पूँजी के रूप मे उपयोग के लिए धन उधार देने मे सहायता देती है। इटरनेशनल लेडीज गार्मेण्ट वर्कर्स यूनियन ने अपने निज के इजीनियर रखे हुए हैं जो मालिको को उत्पादकता वृद्धि मे सहायता देते है। अधिकतर सफल यूनियनें जानती हैं कि मजदूरी और अन्य लाभो मे

वृद्धि का एकमात्र उपाय उत्पादकता को बढाना है। इसलिए वे यह प्रयत्न करती हैं कि उत्पादकता बढे और उसके लाभ मे से श्रमिक को भी उचित हिस्सा मिले। वाल्टर रॉयथर जैसे नेताओ का तो यह ख्याल है कि श्रमिको को कम्पनियो के रिकार्ड भी दिखाए जाने चाहिए ताकि वे कम्पनी की स्थिति को देखकर उचित और सही मांगें कर सकें और कम्पनी की आर्थिक स्थिति मे सुधार कर उससे श्रमिको के लिए सामाजिक लाभ प्राप्त कर सकें।

श्रमिको ने अनुभव से यह भी सीख लिया है कि सरकार को बीच मे डालने की अपेक्षा मालिकों के साथ सीधी बातचीत और सौदा करने मे उनका अधिक लाभ है। यद्यपि यूनियनो की राजनीतिक कार्रवाई समितिया है और वे श्रमिको के साथ सहानुभूति रखने वाले उम्मीदवारों को काग्रेस (ससद्) के चुनावो मे जिलवाने के लिए उनके पक्ष मे प्रचार भी करती हैं तो भी मूलत यूनियनो की प्रवृत्तियाँ राजनीतिक न होकर व्यावसायिक होती है।

यह प्रणाली श्रमिको के लिए बडी अच्छी और सफल साबित हुई है। हाल के वर्षो मे यूनियनों ने बडे उद्योगो मे अपनी निज की दुकानें खुलवाने (१९४१), स्वास्थ्य और कल्याण योजनाएं मजूर कराने (१९४६), सामाजिक सुरक्षा के साथ-साथ पेंशन भी दिलाने (१९४९), जीवन-व्यय मे वृद्धि के साथ-साथ मजदूरी मे भी वृद्धि कराने (१९५०) और बेरोजगारी के समय मजदूरो को राहत दिलाने (१९५५) मे सफलताएँ प्राप्त की हैं। यूनियनो की एक बडी सफलता यह है कि उन्होने सिद्धान्ततः यह स्वीकार करा दिया है कि श्रमिको का कल्याण मालिको और प्रबन्धको की जिम्मेदारी है।

यूनियनें स्वय बहुत बड़े पैमाने पर पूजीपति बन गई हैं। उनकी बड़ी-बडी रकमें सरकारी हुण्डियो और अन्य शेयरो मे लगी हुई हैं। अकेली यूनाइटेड ओटोमोबील वर्कर्स के पास ४ करोड डालर की पूँजी है। अमेरिकन फेडरेशन ऑफ लेबर और कांग्रेस ऑफ इण्डस्ट्रियल

आर्गेनाइजेशन्स की संयुक्त सस्था (ए० एफ० एल०-सी० आई० ओ०) के हैडक्वार्टर का वार्षिक वजट ही ८० लाख डालर का होता है। यूनियनें अपने नेताओ को अच्छा वेतन देती है। ए० एफ० एल०-सी० आई० ओ० के अध्यक्ष जार्ज मीनी को ३५,००० डालर वार्षिक वेतन मिलता है। किन्तु कुछ राष्ट्रीय यूनियनो के अध्यक्षो को इससे भी ज्यादा वेतन मिलता है। स्टील वर्कर्स यूनियन के अध्यक्ष डेविड मैकडोनल्ड को ४०,००० डालर मिलते हैं।

यूनियन आन्दोलन प्रारम्भ मे सरकार की सहानुभूति और समर्थन से और उसके बाद अपनी निज की शक्ति के उपयोग से विकसित होकर आज एक प्रतिसन्तुलनकारी शक्ति बन गया है। उसने श्रमिको की मेहनत के फल को अधिक व्यापक क्षेत्र मे वितरित करने मे सहायता दी है और इसके लिए अर्थ-व्यवस्था को शक्तिशाली, स्वस्थ और सप्राण बनाये रखने का प्रयत्न किया है।

यदि यूनियन और प्रबन्धक समझौते की वार्त्ता मे असफल हो जाएँ तो वे सघीय मध्यस्थता एव सराधन सेवा (फ़ेडरल मीडिएशन एण्ड कन्सिलियेशन सर्विस) का लाभ उठा सकते है, परन्तु इसके लिए दोनो का राजी होना जरूरी है। प्रतिवर्ष यह सेवा हजारो मामले निबटवाती है, जो इसकी सहायता के बिना हड़ताल का रूप धारण कर सकते हैं। सामूहिक सौदेबाजी के तरीके से सम्बद्ध मामलो पर, जैसे अनुचित उपाय बरतना आदि, फैसला कराने या कर्मचारियों के मतदान का निरीक्षण कराने के लिए राष्ट्रीय श्रम सम्बन्ध बोर्ड (नेशनल लेबर रिलेशन्स बोर्ड) की शरण ली जा सकती है। आजकल हड़तालो की सख्या बहुत कम हो गई है और जो थोडी-बहुत हडतालें होती भी है, उनमे १९३० के दशक की भाँति खूनी सघर्ष का वातावरण नही होता। सन् १९५९ की इस्पात उद्योग की हडताल मे स्वयं श्रमिको ने ही इस्पात सयन्त्रो की भट्टियो को सावधानी से बन्द कर दिया था ताकि उन्हें किसी तरह का नुक्सान न पहुँचने पाए। कुछ हड़तालियो ने कम्पनी के दरवाजे पर

डेरा जमा लिया और वे इस बात पर नजर रखने लगे कि कही कोई ऐसा आदमी भीतर न चला जाए जो कारखाने को नुक्सान पहुँचाये और बहुत-से श्रमिक मालिको से छुट्टी के दिनो का पैसा लेकर अपने परिवारो के साथ छुट्टी मनाने बाहर चले गये।

उद्योगो मे जैसे पुराने जमाने के मैनेजर नही रहे, वैसे ही पुराने श्रमिक नेता भी नही रहे। पुराने मैनेजरो की जगह, जो स्वय मालिक भी होते थे, अब पेशेवर वेतनभोगी मैनेजर आ गये है। उसी तरह श्रमिक नेता भी आज पेशेवर होते हैं। उनमे कानूनवेत्ता, अर्थशास्त्रज्ञ, प्रचार-विशेषज्ञ और शिक्षाशास्त्री सभी तरह के प्रशिक्षित लोग होते है। श्रमिक आन्दोलन ६०० पत्र-पत्रिकाएँ प्रकाशित करता है। सन् १९५० मे इण्टरनेशनल लेडीज गार्मेण्ट वर्कर्स यूनियन ने यूनियन के काम को अपनी जीविका का साधन बनाने के इच्छुको के लिए एक स्कूल खोला था। विस्कौन्सिन विश्वविद्यालय श्रमिको के लिए एक ग्रीष्मकालीन विद्यालय चलाता है, जो श्रमिको को विश्वविद्यालयी जीवन का कीमती अनुभव प्रदान करता है। उद्योग-व्यवसाय के प्रबन्धको की भाँति श्रमिक यूनियने भी नगर के जीवन मे सक्रिय भाग लेती है, नगर परिषदो मे उनके प्रतिनिधि होते है और वे विभिन्न कोशो के लिए धन-सग्रह मे सहायता देती हैं।

श्रमिको की शक्ति बहुत बढ जाने से कुछ नई समस्याए भी पैदा हो गई है। बड़े उद्योगों मे सामूहिक सौदेबाजी का अर्थ-व्यवस्था पर अर्थात् मूल्यों, रोजगार की स्थिति और नये कारखाने के लिए स्थान के चुनाव के बारे मे उद्योग-सचालको के निर्णय आदि पर, व्यापक प्रभाव पड़ना अनिवार्य है। इसके अलावा यूनियनो के पास इतनी ताकत है कि वे अधिकारक्षेत्र सम्बन्धी विवादो मे मतदान को अपने मन के अनुकूल नियन्त्रित करने के लिए हडताल के साधन का उपयोग कर सकती हैं, अपने सदस्यों पर भारी फीस और चन्दा लगा सकती हैं और जो सदस्य

सत्तारूढ गुट के आदेश का पालन न करे उसे संगठन से निकाल भी सकती हैं।

कुछ यूनियनो मे सत्तारूढ गुट की तानाशाही बाकायदा एक राष्ट्र-व्यापी बुराई बन गई है। म्युजीशियन यूनियन और टीमस्टर यूनियन इसके उदाहरण है। इस तानाशाही और लोकतन्त्र-विरोधी आचरण के कारण इटरनेशनल लाँगशोरमैन असोसिएशन को तो ए० एफ० एल०-सी० आई० ओ० ने अपने संगठन से बाहर ही निकाल दिया था। बडे नगरो मे भवन-निर्माण का काम करने वालो ने, ठेकेदारो की मदद से, निर्माण के व्यवसाय पर एकाधिकार स्थापित कर लिया है। उन्होने यूनियन की सदस्यता सीमित कर दी, काम की गति धीमी कर दी, प्रतिबन्धक कानून पेश कराए, निर्माण के कार्यो मे किसी भी तरह की नई विधियाँ अपनाने मे रुकावट डाली और कीमतें ऊँची कर दी, जिसका फल यह हुआ कि भवन-निर्माण उद्योग शेष अर्थ-व्यवस्था से वर्षों पीछे रह गया। श्रमिको और इस प्रकार के गोलमाल करने वालो की कितनी ही साजिशो का भडाफोड हो चुका है।

फिर भी आधुनिक श्रमिक आन्दोलन आज इसलिए आवश्यक है कि मजदूर को अपनी मजदूरी की सुरक्षा चाहिए। आज की दुनिया मे वह अपनी जीविका के लिए नौकरी और मजदूरी पर ही निर्भर है और यदि वह उनसे वचित हो जाए तो उसे जीवन-निर्वाह के लिए और कोई सहारा नही है। यूनियनें इस परोपजीवी श्रमिक के प्रवक्ता और सरक्षक का काम करती हैं। फिर भी आज एक-तिहाई से भी कम अमेरिकन मजदूर यूनियनो के सदस्य है। दक्षिणी राज्यो मे, रासायनिक पदार्थों के उद्योगो मे और दफ्तरो मे काम करने वाले कर्मचारियो मे यूनियनो का सगठन बहुत कम है, परन्तु अब यूनियनें उन्हें भी इस आन्दोलन मे सम्मिलित करने का प्रयत्न कर रही हैं।

श्रमिक आन्दोलन ने समाज मे अपना एक महत्त्वपूर्ण स्थान बना लिया है, इसका एक प्रमाण यह है कि द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद उसने

अन्य देशो मे भी श्रमिको के आन्दोलन को प्रोत्साहित और अनुप्राणित किया। ए० एफ० एल०-सी० आई० ओ० सगठन प्रतिवर्ष २,५०,००० डालर विदेशो के साथ सम्पर्क बनाये रखने पर खर्च करता है, अपनी पत्रिकाओ के विदेशी सस्करण निकालता है, ब्रुसेल्स मे अपना एक स्थायी कार्यालय चलाता है, और सभी जगह ट्रेड यूनियनों की स्वतन्त्रता और श्रमिको के रहन-सहन के स्तर को ऊँचा उठाने के आन्दोलन का समर्थन करता है। अमेरिकन यूनियनें विदेशी श्रमिक नेताओ को अतिथि के रूप में आमन्त्रित करती है, जिससे उन्हें अमेरिकन श्रमिक आन्दोलन की प्रणाली को प्रत्यक्ष देखने का अवसर मिलता है।

शेयर होल्डर

उद्योगो का, जिन पर देश की उत्पादक और निरन्तर विस्तीर्यमाण अर्थ-व्यवस्था निर्भर है, मालिक कौन है ?

कम्युनिस्ट अब भी यह प्रोपेगेंडा करते हैं कि वाल स्ट्रीट के पूंजी-पति ही इन उद्योगो के मालिक हैं। वे वाल स्ट्रीट के पूंजीपतियो का चित्रण करते हुए उन्हे रेशमी हैटो और आगे से खुले लम्बे कोटो मे लैस होकर गरीब आदमियो की लाशो को रौंदते हुए दिखाते हैं। अमेरिकन परराष्ट्र विभाग का एक अधिकारी एक बार दो रूसी अतिथियो को न्यूयार्क के फिफ्थ एवेन्यू मे घुमाने ले गया। उस दिन ईस्टर का रविवार था। लोग गिरजाघर मे प्रार्थना करके बाहर आये थे। इन लोगो मे से कुछ रेशमी हैट और आगे से खुले लम्बे कोट पहने हुए थे, साल भर मे शायद एक ही दिन उन्हें पुराने ढग की यह पोशाक पहनने को मिलता था। रूसी लोग उन्हे देखकर ऐसे चौके, जैसे अभी टैक्सी की खिड़की से बाहर गिर पड़ेंगे।

"वह देखो, पूंजीपति लोग जा रहे हैं।" वे चिल्लाए।

किन्तु अगर उन्होने सचमुच अमेरिका की किसी ठेठ पूँजीपति महिला को देखा होता तो वे उसे पहचान भी न पाते। महिला की बात हम इसलिए कह रहे है कि सयुक्त राज्य के ८६,००,०००

शेयर होल्डरो मे से आधी से कुछ अधिक सख्या महिलाओ की है। समस्त पूंजी-निवेशको मे से ३४ प्रतिशत गृह-पत्नियाँ है। यही नही, जिस पूजी निवेशक (इन्वेस्टर) को लेकर कम्युनिस्ट जगत् मे अनेक कथाएँ प्रचलित हैं, उसकी औसत आयु ४८ वर्ष है और वह २५ हजार आबादी के एक छोटे शहर मे रहता है और उसकी औसत वार्षिक पारिवारिक आय ७,०५० डालर से भी कम है। करीब दस लाख पूजी निवेशको की वार्षिक आमदनी ३,००० डालर से भी कम है। हर बारह वयस्को मे से एक के पास आज किसी न किसी सार्वजनिक कम्पनी के शेयर हैं और करीब १५ लाख व्यक्ति ऐसे हैं जो प्राइवेट कम्पनियो के शेयर होल्डर हैं। इनके अलावा दस करोड व्यक्ति जीवन बीमा या पेन्शन निधि के द्वारा अप्रत्यक्ष रूप से कम्पनियो के शेयरो के मालिक है।

शेयरो मे पूँजी लगाना अमेरिका मे इतना लोकप्रिय हो गया है कि शेयर बाजार के दलाल सार्वजनिक व्याख्यानो का आयोजन कर लोगो को शेयरो की खरीद के सिद्धान्त समझने मे सहायता देते हैं। स्थान-स्थान पर पूँजी निवेश क्लबे बन रही हैं ताकि छोटे खरीदार उनमे पैसा जमा कर नियमित रूप से शेयर खरीदते रह सकें। इसी तरह की और भी अनेक योजनाएँ हैं। न्यूयार्क स्टाक एक्सचेंज ने एक मासिक निवेश योजना चालू की हुई है। इसी प्रकार कई पारस्परिक निधियाँ भी हैं जिनसे छोटे निवेशको को विविध प्रकार की कम्पनियो मे अपना पैसा लगाने का अवसर मिलता है (इन निधियो मे इस समय २ अरब डालर लगे हुए हैं)। कर्मचारी शेयर खरीद योजनाओ के अन्तर्गत कर्मचारियो को भी अपनी कम्पनियो के शेयर खरीदने की सुविधा है। अमेरिकन टेलीफोन एण्ड टेलीग्राफ कम्पनी के करीब ढाई लाख कर्मचारियो के पास और सोकोनी मोबील कम्पनी के ८८ प्रतिशत कर्मचारियो के पास अपनी कम्पनियों के शेयर हैं।

यूनाइटेड स्टेट्स स्टील कार्पोरेशन के बेंजामिन फेयरलैस नेएक बार यह प्रश्न किया था कि यदि हमारे कर्मचारी ही कम्पनी के मालिक

हो जाएँ तो क्या होगा ? फिर स्वय ही इसका उत्तर देते हुए उन्होने कहा था, "तब कम-से-कम हडतालो की चिन्ता से हम मुक्त हो जाएँगे, क्योकि कम्पनी के मालिक स्वय कैसे हडताल कर सकते है ?"

यद्यपि यह परिवर्तन बहुत जल्दी होने की सम्भावना नही है, तो भी यह सच है कि अधिकाधिक संख्या मे सामान्य लोग अब कम्पनियो के शेयर खरीदने लगे है, लेकिन शेयरो के बडे थोक अब भी थोड़े-से लोगो के ही हाथ मे है । प्रसिद्ध बड़ी कम्पनियाँ अपने शेयरो को छोटे टुकड़ो मे बाट रही है ताकि सामान्य व्यक्ति भी उन्हे बिना किसी कठिनाई के खरीद सकें । वे जनसाधारण को अपनी स्थिति की जानकारी देने के लिए सरल भाषा मे और चार-चार रगो की आकर्षक रिपोर्टों में अपने विवरण प्रकाशित करती हैं । वे अपनी वार्षिक बैठकें आयोजित करती हैं, जहा कम्पनी का डेढ़ लाख डालर वार्षिक वेतन पाने वाला अध्यक्ष सामान्य शेयर होल्डर तक की शिकायतें धैर्य से सुनता है । कभी-कभी तो उसे स्वयं अपने कर्मचारी को भी, जो कम्पनी का शेयर होल्डर होता है, जवाब और सफाई देनी पडती है ।

कर्मचारी और कम्पनी के शेयर होल्डर के बीच की और कम्पनी के शेयर होल्डर और उपभोक्ता के बीच की विभाजक रेखाएं अब धीरे-धीरे मिटती जा रही हैं । कम्पनी के शेयर होल्डर को अपने डिविडेड के चैक के साथ ही छपे हुए ऐसे कागज भी मिलते हैं जिनमे कम्पनी द्वारा तैयार की जाने वाली वस्तुओ का विवरण रहता है और उससे यह अपील की जाती है कि वह इन वस्तुओ का स्वयं उपयोग कर और अपने मित्रो को भी उसकी सलाह देकर अपना मुनाफा बढ़ाए । जब कम्पनी का स्वामित्व इतने व्यापक क्षत्र मे फैला हुआ हो तो वह अर्थ-व्यवस्था किस ढग की होगी ? आज अमेरिकन प्रणाली मे उद्योगो का राष्ट्रीय-करण करने और उसके द्वारा राजनीति और अर्थनीति को परस्पर मिलाने के बजाय, प्रवृत्ति यह है कि उनका स्वामित्व अधिक-से-अधिक

व्यक्तियो के हाथो मे फैला दिया जाए ताकि उनका राष्ट्रीयकरण होने के स्थान पर लोकतन्त्रीकरण हो जाए ।

हाल के वर्षों मे शेयर बाजार की स्थिरता और दृढ़ता से छोटे निवेशको को बहुत प्रोत्साहन मिला है। उन्हें नियमित रूप से डिविडेंड और मुनाफा मिलता रहा है और साथ ही उन्होने यह भी अनुभव किया है कि जहाँ पैसे की क्रय-शक्ति (बीस वर्ष मे) घटकर आधी रह गई है, वहाँ सामान्य शेयरो की कीमत बढकर तीनगुनी हो गई है। इस प्रकार शेयरो मे धन का निवेश मुद्रा-स्फीति को बढने से रोकता है। पार्क एवेन्यू की एक साधारण महिला ने चार हजार डालर की रकम युद्ध से पूर्व शेयरो मे लगाई थी, जो अब चालीस हजार डालर बन गई है। इसी तरह बूट पालिश करने वाले एक लडके ने एक खास कम्पनी के शेयर पर बहुत भरोसा होने के कारण उसमे ८०,००० डालर लगा दिए। आज ये दोनो उद्योगो की बढती हुई उत्पादकता और उत्पादन-क्षमता का लाभ उठा रहे हैं।

इन छोटे निवेशको की बूंद-बूंद कर लगी पूंजी ने वाल स्ट्रीट का चेहरा बदल दिया है और बडे पूँजीपतियो के प्रभाव को कम कर दिया है। अब बडी औद्योगिक कम्पनियाँ वाल स्ट्रीट के पूँजीपतियो की शरण मे गए बिना स्वय ही अपने लिए पूँजी का प्रबन्ध कर लेती हैं। वे या तो अपने मुनाफे को फिर से अपने व्यवसाय मे लगा देती हैं (आजकल ६० प्रतिशत आय फिर से व्यवसाय मे लगाई जाती है, जबकि १९२० के दशक मे इससे आधी लगाई जाती थी), या अपने शेयर होल्डरो को डिबेंचर बेचकर धन जमा करती हैं। आज अकेले जनरल मोटर्स की कार्यकारी पूँजी २,१८,३०,००,००० डालर है, जबकि मार्गन कम्पनी कुल ६६,७०,००,००० डालर की पूँजी ही जुटा सकती है।

कमाई और खर्च

लेकिन कम्पनियो मे धन का यह निवेश या कम्पनियो का सारा उत्पादन तब तक व्यर्थ है जब तक कि उस उत्पादन की खपत न हो।

इस उपजाऊ अर्थ-व्यवस्था का एक विचित्र विरोधाभास यह है कि उसे उत्पादन की चिन्ता नही करनी पडती, बल्कि इस बात की चिन्ता करनी पड़ती है कि उसका उत्पादन तैयार होते ही हाथो हाथ बिक जाए।

अर्थ-व्यवस्था मे पैसा पैदा करने की, यानी उधार लेने-देने की क्षमता बहुत अधिक है, इसलिए आदमी जो कुछ खर्च करता है, उसका बहुत हद तक उसकी आमदनी के परिमाण के साथ कोई सम्बन्ध नही होता। जितना अधिक खर्च किया जाता है उतनी ही अधिक आमदनी बाद मे होती है। कारण यदि खर्च का स्तर ऊँचा रखा जाय तो उससे रोजगार का स्तर भी ऊँचा रहता है।

इसलिए लोगो की आमदनी का परिमाण कम होने पर भी उन्हें किस्तों पर, बाद मे अदायगी की शर्त के साथ वस्तुएँ खरीदने के लिए प्रोत्साहन दिया जाता है। यदि उधार की यह सीमा बेकाबू होती नजर आती है तो सघीय रिजर्व बोर्ड तुरन्त सख्ती करता है। अमेरिका मे लोगो के व्यक्तिगत व्यय मे खूब वृद्धि होने पर भी देश के आधे परिवारों पर किस्तो का कोई कर्ज नही चढा है। बल्कि १९५६ मे तो उपभोक्ताओ ने अपनी आमदनी मे से २०·५ अरब डालर की बचत की थी।

उपभोग और खरीद को प्रोत्साहन देने के लिए अनेक उपाय इस्तेमाल किए जाते हैं। नई-नई चीजें बिक्री के लिए बाजार मे लायी जा रही है, क्योकि खरीदार हर दफा नई-नई किस्म की चीजे आजमाना पसन्द करता है। जब कोई चतुर डिजायनर और निर्माता नये डिजायन की चीज तैयार कर ग्राहक के सामने पेश करते हैं तो पहले से चली आ रही चीजे पुरानी पड जाती है। उदाहरण के लिए यदि कोई निर्माता किसी नये रग का रेफ्रिजरेटर बनाये, जो ग्राहक के कमरे की दीवारो के रग से मेल खा जाए और उसमे शेल्फ भी नई किस्म के हो और ठडा पानी निकालने का नल लगा हो, तो ग्राहक झट उसे खरीदना चाहेगा, भले ही उसका पुराना रेफ्रिजरेटर अभी अच्छी हालत में हो।

उपभोक्ताओ को आकृष्ट करने की प्रतिस्पर्धा के अक्सर दो परिणाम होते है। पहला यह कि निर्माता अपने उत्पादनो की कीमत घटाते और नीची रखते है और दूसरा यह कि वे उनकी किस्म मे सुधार करते है। सन् १९२२ मे जहाँ बिजली के रेफ्रिजरेटर की लागत ७८ डालर प्रति घनफुट पडती थी, वहाँ १९५५ मे वह ३४ डालर प्रति घनफुट पडने लगी। यही नही, बल्कि नया रेफ्रिजरेटर पुराने रेफ्रिजरेटर से अधिक अच्छा और सुन्दर है। रेडियो सेट की कीमत तो इतनी नीची है कि देश के कुल ३ प्रतिशत घर ही ऐसे है जिनमे रेडियो नही हैं।

श्रमिक सांख्यिकी विभाग ने, जो साधारण आमदनी वाले परिवारो के जीवन व्यय मे परिवर्तन की जानकारी देने के लिए उपभोक्ता मूल्य सूचक अक प्रकाशित करता है, इस वर्ग की उपभोग्य वस्तुओ मे रेडियो, बिजली से चलने वाली सिलाई की मशीनें और अन्य स्वचालित घरेलू यन्त्र तो पहले ही शामिल किए हुए थे, अब उसने उनमे और भी अनेक वस्तुओ की वृद्धि कर दी है। दर्जनो नये खाद्य-पदार्थ, बिजली के टोस्ट सेकने के उपकरण और टेलीविजन सेट भी इस सूची मे आ गये हैं।

अमेरिका मे दूर-दूर के ग्राहको से डाक से आर्डर लेकर उन्हे माल पहुचाने की व्यवस्था बहुत व्यापक है। सुपर मार्केटो मे एक ही स्थान पर तरह-तरह की वस्तुएँ कम मूल्य पर मिल जाती है। यन्त्रीकरण और स्वचालित यन्त्रो के प्रयोग से उत्पादन की लागत कम हो रही है। इन सब चीजो का परिणाम यह है कि अमेरिकन उत्पादन दूर-दूर तक पहुच जाते है। अमेरिकन उद्योग बाजार की माँग और उपभोक्ता की रुचि का निरतर अध्ययन करते रहते है जिससे वे उसके अनुकूल उत्पादन कर पाते हैं।

अमेरिका मे उपभोग्य वस्तुओ के बाजार के इस विस्तार का एक नतीजा यह है कि इससे वर्गभेद की दीवारें टूट रही है। आज यहाँ प्रायः हर आदमी सिले-सिलाये तैयार कपडे पहनता है। नल-जोडने वाले या इस्पात कारखाने मे काम करने वाले मजदूर की पोशाक और किसी

डाक्टर की, यहाँ तक कि किसी लखपति की भी पोशाक मे भी, अधिक अन्तर नही होगा। गरीब और अमीर सब एक जैसी सिगरेट पीते है, एक ही जैसे डिब्बाबन्द खाद्य-पदार्थ खरीदते है, एक जैसी पत्रिकाएँ पढते हैं, एक जैसी सिनेमा फिल्मे देखते हैं, एक ही रेल मे और एक ही डिब्बे मे सफर करते है और एक ही जैसी बिजली की घरेलू मशीनें खरीदते है।

सयुक्त राज्य मे आय भी विषमता को दूर कर रही है, जैसा कि किसी भी परिपक्व निजी व्यापार-व्यवसाय वाली अर्थ-व्यवस्था मे सम्भव है। सन् १९३५ और १९५० के बीच अमेरिका के निम्नतम बीस प्रतिशत परिवारो की टैक्स काटने के बाद बची वास्तविक आय ४२ प्रतिशत बढी है, जबकि उच्चतम बीस प्रतिशत परिवारो की वास्तविक आय मे वृद्धि के बजाय कुछ कमी हुई है। शिल्प और कला मे लगे हर पाँच परिवारो मे से एक की आमदनी ७,००० डालर वार्षिक से अधिक है, जबकि डाक्टरी और वकालत आदि पेशो या टेक्निकल लाइनो मे काम करने वाले हर छः परिवारो मे से एक की आमदनी इतनी है। इससे स्पष्ट है कि वर्गों के बीच की विभाजक रेखाएँ अब धुँधली पड रही हैं। सम्पत्ति से होने वाली आमदनी घट और श्रम से होने वाली आमदनी बढ रही है। विशेष व्यवसायों मे दक्ष व्यक्तियो की सख्या अब बढती जा रही है और साधारण मजदूरी करने वालो की सख्या या तो जहाँ की तहाँ स्थिर है या कम हो रही है।

सयुक्त राज्य मे ३ करोड ९० लाख व्यक्तियो ने जीवन बीमा करा रखा है, ३ करोड के बैंको मे सेविंग खाते है और चालीस लाख परिवार अपने निज के मकानो मे रहते हैं। अमेरिका मे कई लाख व्यक्ति ऐसे है जो काम पर जाने वाले स्त्री-पुरुषो के बच्चो की देखभाल करते है। इन लोगो ने १९५६ मे अरबो डालर कमाये। यह नया व्यवसाय कई बातो का प्रतीक है—पहली यह कि छोटे परिवार को बाहरी सहायता की आवश्यकता है; दूसरी यह कि बूढे और किशोर आयु के लोग इस नये

काम से कुछ पैसा कमा लेते हैं, तीसरी यह कि इस काम के लिए देने को और बच्चो के खेल-कूद और मनोरजन के लिए खर्चने को पैसा भी होना आवश्यक है, और चौथी यह कि बच्चो की देखभाल का यह काम बहुत जल्दी ही एक पेशा बन गया है। होलीवुड मे बाकायदा बच्चों की देखभाल करने वाले पेशेवर लोगो का एक सघ बेबी सिटर्स गिल्ड के नाम से बन गया है, जिसके पजीकृत सदस्यो की सख्या ४,८०० है। यह सघ अपने सदस्यो की बारीकी से छानबीन करता है। डिट्रॉयट मे एक प्राइमरी स्कूल पाँचवी कक्षा के लडको को बच्चो की देखभाल का प्रशिक्षण देता है। लेकिन इन छोटे शिशुओ को यह शिक्षा किसी ने नही दी कि अपने माता-पिता के काम पर चले जाने पर वे दूसरो से अपनी देखभाल कैसे कराएँ। सम्भव है, एक दिन यह शिक्षा भी दी जाने लगे।

स्वचालित धुलाई की मशीनो, वैक्यूम क्लीनरों, जमाये हुए खाद्य पदार्थो और वस्तुओ को मिलाने वाले मिश्रको आदि के आविष्कार और निर्माण ने न केवल उन स्त्रियो का, जिन्हें इन कामो के लिए नौकर रखने पडते थे, बल्कि स्वयं अपने हाथ से काम करने वाली लाखो स्त्रियो का भी काम बहुत हल्का कर दिया है। खास तौर से कृषको की स्त्रियो को, जिन्हें स्वय पम्प से या घडो मे पानी ले जाना पडता था, हाथ से रगडाई, धुलाई और सफाई का काम करना पड़ता था, अपने खाद्य-पदार्थों को जमा कर सुरक्षित रखने के बजाय डिब्बों की शक्ल मे बन्द कर अचार-मुरब्बे की शक्ल मे रखना पड़ता था, इन नये यन्त्रो और आविष्कारो ने बहुत राहत दी है।

विक्रेता

जिस अर्थ-व्यवस्था को जीवित रहने के लिए तेजी से वस्तुओ की खपत और बिक्री की आवश्यकता है, वह ग्राहको के इन्तजार मे हाथ पर हाथ धर कर बैठी नही रह सकती। इसलिए उसे विज्ञापन का सहारा लेकर लोगो की अभाव और बचत की मनोवृत्ति को बदल कर खुले दिल से खर्च करने और खर्च से समृद्धि पैदा करने की मनोवृत्ति मे परिणत करना

पड़ता है। संयुक्त राज्य मे जिस तरह जोर-शोर से विज्ञापन किया जाता है, उससे हमारे देश मे वाहर से आने वालो को ही नही, हम मे से भी वहुतो को बुरा लगता है, परन्तु वह अनिवार्य है। मनोविज्ञान-वेत्ताओ, जनमत सग्रहो और बाजारो के सर्वेक्षण की सहायता से किया गया विज्ञापन लोगो मे वस्तुएँ खरीदने की आकाँक्षा पैदा करता है, जो लोग पैसा खर्च करने मे घवराते या उदासीन रहते हैं, उन्हें उकसाता है और ग्राहक वनाने के लिए प्रेरित करता है।

यह दलील दी जा सकती है कि जो वन विज्ञापन करने और विज्ञापित वस्तुओ के उत्पादन पर बर्बाद किया जाता है, उसका कुछ हिस्सा यदि आवश्यक स्कूलो, सड़को और अस्पतालो के निर्माण पर खर्च कर दिया जाए तो वह अधिक लाभकारी होगा। विज्ञापन परिषद् (एडवर्टाइजिंग कौंसिल), जो एक स्वैच्छिक संगठन है, इस प्रकार की आलोचनाओ से अनभिज्ञ नही है, इसलिए उसने राष्ट्रव्यापी विज्ञापन की महान शक्ति और व्यापक प्रसार का उपयोग सामाजिक सेवा के इन कार्यो के लिए भी किया है। उसका यह सिद्धान्त है कि राष्ट्र को स्कूल भवनो और अध्यापको की कमी के खतरे से सजग करते रहो। विज्ञापन के द्वारा सजग और सचेत कर दिये जाने के वाद जनता स्वयं स्वैच्छिक समाजसेवी सगठनो की मदद से इन खतरो का मुकावला अमेरिका की परम्परागत प्रणाली से कर लेगी।

विज्ञापन के नग्न, कुत्सित और अभद्र तरीको को रोकने का एक उपाय सास्थानिक जरियो से विज्ञापन करना है। उदाहरण के लिए ड्यूपौंट फर्म को लीजिए। वह अमेरिकन इतिहास के आधार पर रेडियो, और टेलीविजन पर कुछ नाटक प्रस्तुत करती है। वह अपने किसी उत्पादन का विज्ञापन नही करती, सिर्फ इतना ही कहती है कि वह रसायन विज्ञान की सहायता से जीवन-स्तर को ऊंचा उठाने के साधनो का निर्माण करती है। टेक्सास कम्पनी राष्ट्र को सीजन भर प्रति सप्ताह एक दिन तीसरे पहर मेट्रोपोलिटन ओपेरा पेश करती है। वह अपनी

किसी व्यापारिक वस्तु का विज्ञापन नही करती। यह ओपेरा ही उसका विज्ञापन होता है।

विज्ञापन निःसन्देह सामाजिक दृष्टि से अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। कुछ विज्ञापन नितान्त ग्राम्य ढग के और आपत्तिजनक होते है, किन्तु कुछ सौन्दर्य और कला की दृष्टि से बहुत उत्कृष्ट और सामाजिक चेतना को प्रकट करने वाले होते हैं। विज्ञापन बहुत जोर-शोर से किये जाने का कारण सिर्फ ग्राहको को आकृष्ट करने की प्रतिस्पर्धा और देश के विशाल उत्पादक यन्त्र को गतिशील रखने के लिए व्यापक बाजार की आवश्यकता ही है।

अपने उत्पादनो का बाजार कायम रखने की इस आवश्यकता के कारण ही अमेरिका मे ग्राहको की सुविधा और सेवा का बहुत ध्यान रखा जाता है। यहाँ तक कि कभी-कभी विदेशी लोग भी इस पर चकित होते है। डाक से आर्डर लेकर माल सप्लाई करने वाली फर्मे और बडी दुकानें तो माल पसन्द न आने पर ग्राहको से बिना किसी ऐतराज के उसे वापस भी ले लेती हैं। विक्रेताओ को ग्राहको के साथ मित्रता और सौजन्य का बर्त्ताव करने और उनकी सहायता करने की विशेष रूप से शिक्षा दी जाती है। अच्छा स्टैंडर्ड और खास-खास ब्रांड का माल तैयार करके भी उत्पादक लोग ग्राहको का विश्वास अर्जित कर सकते हैं। किस्तो पर बिक्री-टेलीफोन पर आर्डर लेना, घर-घर विक्रेताओ को भेजना और ग्राहक के घर पर ही माल पहुँचाना आदि कुछ ऐसी विधियाँ हैं जो ग्राहक के लिए सुविधाजनक रहती हैं और उसे आकृष्ट करती हैं। इन सुविधाओ से ग्राहक का पैसा खर्चने के लिए तैयार होना राष्ट्र के आर्थिक स्वास्थ्य के लिए अत्यावश्यक है।

समस्याएं

हमारी अर्थ-व्यवस्था के इस उत्कर्ष के बावजूद निराशा और चिन्ता पैदा करने वाली कुछ समस्याए मौजूद हैं। यदि सचमुच नि शस्त्रीकरण होने लगे और हमे ४० अरब डालर के अपने विशाल सैनिक व्यय मे एक

बड़ी कटौती करनी पडे तब क्या होगा ? जिन प्राकृतिक साधन सम्पदाओ का हम बहुत भारी मात्रा मे उपयोग कर रहे है, उनके भण्डार के खात्मे को रोकने के लिए हमे क्या उपाय करने चाहिएँ ? यदि सचमुच कोई गम्भीर मन्दी आ गई तो क्या हमे उसका सामना करने के लिए मुद्रा और आर्थिक स्थिरीकरण के उपलब्ध साधनो के उपयोग का साहस होगा ? क्या हम अपनी उत्पादकता के लाभो का विस्तार जारी रखकर देश मे विद्यमान गरीबी के कुछ गढो को खत्म कर सकते है ? किसानो की आवश्यकता-पूर्ति के लिए हमे क्या उपाय करने चाहिएँ ? मौजूदा मुद्रा-स्फीति की प्रवृत्ति क्या एक खतरनाक दौर मे पहुँच जाएगी और उसे रोकने के लिए हम क्या उपाय कर सकते है ?

ये कुछ समस्याए हैं जो हमारी अर्थ-व्यवस्था के सामने आज भी मुंह बाये खड़ी है।

आज सबसे स्पष्ट खतरा मंहगाई का है, जो हमारे सामने मौजूद है। जब वस्तुओ की माँग जबर्दस्त होती है तो उद्योगपति और श्रमिक दोनो ही लागत मे होने वाली वृद्धि को उत्पादित वस्तुओ का मूल्यो बढा कर ग्राहको पर डाल देते है। इसलिए महगाई को रोकने का एक-मात्र उपाय यह है कि सरकार मूल्यो पर नियन्त्रण करे।

अर्थ-व्यवस्था को स्थिर रखने के लिए यह आवश्यक है कि उद्योगो को प्रोत्साहन दिया जाए ताकि वे पूँजीगत सामग्री पर खर्च करने मे घबराये नही। साथ ही बैंको द्वारा लोगो को दिये जाने वाले ऋण और उधार मे ज्यादा उत्तार-चढाव को रोकना भी जरूरी है ताकि उपभोक्ता की खर्च करने की प्रवृत्ति पर उसका प्रतिकूल असर न पड़े।

हमारी अर्थ-व्यवस्था के सामने एक समस्या आवास व्यवस्था की भी है। आज भी अमेरिकनो की एक बड़ी सख्या शहरी और ग्रामीण गन्दी बस्तियो मे रहती है। गन्दी बस्तियो से मकान मालिको को बहुत लाभ होता है, इसलिए वे स्वयं उनके सुधार का प्रयत्न नही करेंगे। इसके अलावा उनके सुधार या उन्मूलन का खर्च इतना बड़ा है कि या तो

सरकार ही उसे उठा सकती है या स्वैच्छिक तौर पर लोग मिलकर सम्मिलित उद्योग से उसे पूरा कर सकते हैं।

सघीय सरकार ने नगरो को स्वशासन संस्थाओ के साथ मिल कर ७५० शहरी केन्द्रो मे गन्दी वस्तियो के उन्मूलन के लिए गृह-निर्माण कार्यक्रम प्रारम्भ किये हैं। सिर्फ सीमित आय वाले परिवारो को ही ये मकान दिये जाते है। इन मकानो के किराये आमदनी का पाँचवाँ हिस्सा होते हैं। हर परिवार को उसके सदस्यों की सख्या के हिसाब से कमरे दिये जाते हैं ताकि उनमे वहुत भीड-भाड न हो क्योकि अत्यधिक भीड़-भाड से ही वास्तव मे गन्दी वस्तियाँ वनती हैं। शिकागो मे तीन सवसे पुरानी बस्तियो के ८० प्रतिशत किरायेदार अब अपने निज के बढिया मकानो मे रहने लगे है। इस तरह आवास परियोजनाए परिवार के रहन-सहन के स्तर को ऊचा उठाती हैं और लोगो को अपने निज के मकानो का स्वामित्व प्राप्त करने मे भी सहायता देती है।

उद्योगो मे उत्पादन के प्राचुर्य से जहाँ श्रमिको को समृद्धि प्राप्त हुई है, वहा कृषि मे उत्पादन के प्राचुर्य से कृपको की आय मे उतनी वृद्धि नही हुई। कारण, कारखानो मे उत्पादित माल के उपभोग की कोई सीमा नही है, किन्तु मनुष्य खेतो मे पैदा अनाज या अन्य खाद्य-पदार्थों को एक नियत सीमा मे ही खा सकता है। यद्यपि हम लोगो की खान-पान की आदतें सुधार कर उन्हें अधिक प्रोटीनयुक्त पौष्टिक आहार खाने और वासी भोजन के वजाय ताजा भोजन खाने की प्रेरणा दे रहे हैं और देश मे आवादी वढने से खाने वालो की सख्या मे भी वृद्धि हो रही है, तो भी राष्ट्र उस सारी उपज को नही खा सकता, जिसे किसान मशीनो और वैज्ञानिक कृषि के साधनो से वहुत वड़ी मात्रा मे पैदा कर बाजारो मे भेज रहे हैं।

अन्न के अभाव से ग्रस्त देशो को अनाज भेजने और अपने देश के गरीबो को मुफ्त या सस्ता अन्न देने अथवा स्कूलो और सस्थाओ को अन्न मुहैया करने की योजनाओ से भी सारे फालतू अन्न का उपयोग

नही किया जा सकता। सघीय सरकार कृषि-जिन्सो के मूल्यो को स्थिर रखने के लिये जो कार्यक्रम अपनाती है उससे फालतू अन्न की समस्या और भी गम्भीर हो जाती है। किसानो को कम भूमि पर खेती करने के लिए प्रोत्साहन देने को जो पुरस्कार दिये जाते है उनका परिणाम यह होता है कि किसान खेती तो कम भूमि मे करता है, लेकिन सघन कृषि के उपायो से कम भूमि मे भी अधिक पैदावार कर लेता है।

उत्तर के गेहूँ-उत्पादक विशाल मैदानो से मध्य क्षेत्र के मक्का और सूअर उत्पादक इलाको और दक्षिण के कपास और तम्बाकू उत्पादक इलाको तक, कैलिफोर्निया की हरी-भरी सिंचित घाटी से वरमोट और न्यू हैम्पशायर के ऊचे-नीचे घास के मैदानो तक, टैक्सास के ९,२०,००० एकड़ के किंग रैंच (चरागाह) से अलाबामा की बटाई पर खेती वाली क्षरित भूमि तक, कितनी ही किस्मो की कृषि-भूमियाँ और कृषि जिन्सें अमेरिका मे है। इन सबकी आवश्यकता पूरी करने के लिए कोई एक कार्यक्रम पर्याप्त नही हो सकता।

किसानो ने अपनी सहायता अपने आप करने के लिए सहकारी समितियाँ बनाई है, जो उन्हें उनकी आवश्यकता की १२ प्रतिशत चीजे थोक भाव पर दे देती है और उनकी उपज को अधिकतम उपलब्ध भाव पर बाजारो मे बेच भी देती हैं। ग्रेंज और फार्मब्यूरो जैसे विशाल स्वैच्छिक सगठनो ने किसानो को और भी अनेक लाभ प्रदान किये हैं। वे समानीय स्तर पर सामाजिक और शैक्षणिक गतिविधियो का आयोजन करते है और राज्यीय और राष्ट्रीय राजधानियो मे किसानो की राजनीतिक शक्ति को बढाते है। संघीय सरकार किसानो को भूमि-सरक्षण विद्युतीकरण, फसल-बीमा, सिचाई परियोजनाओ, कृषि अनुसन्धान, पैम्फलेटो के प्रकाशन और विस्तार सेवा एव उधार या ऋण सेवा के एजेंटो के गाँवों के दौरे के रूप मे जो सुविधाए प्रदान करती है, उस से आज किसान ने अमेरिका मे सबसे अधिक सेवित नागरिक का दर्जा हासिल कर लिया है।

फिर भी उसकी आमदनी देश की अर्थ-व्यवस्था के शेष अगों की तुलना मे कम है। मूल्य-स्थिरीकरण कार्यक्रमो से बडी फर्मों के मालिको या विशाल पैमाने पर खेती करने वाली कम्पनियो को सबसे अधिक लाभ होता है, जबकि उन्ही को इसकी सबसे कम जरूरत होती है। इन कार्यक्रमो से उन पन्द्रह लाख के लगभग कृषि-मजदूरो को कोई लाभ नही होता, जो फसल के मौके पर उत्तर के इलाको मे जाते है, वहाँ कमर-तोड मजदूरी करते हैं, गन्दे मकानो और अस्वच्छ परिस्थितियो मे रहते हैं और चिकित्सा की सुविधा भी भली-भाँति नही पा सकते। घुमन्तू और खानाबदोश होने के कारण उन्हें किसी एक जगह का मताधिकार नही मिल पाता, वे सामाजिक जीवन नही बिता पाते और स्थायी रूप से बच्चो को शिक्षा भी नही दे पाते।

आयोवा स्टेट कालेज के कृषि अर्थशास्त्र के प्रोफेसर ज्योफ्रे शेफर्ड के अनुसार "कृषि मे फालतू उत्पादन को रोकने का एकमात्र उपाय यह है कि कृषि-आय को बढाने के लिए मूल्य स्थिरीकरण कार्यक्रमो को अपनाना बन्द कर दिया जाए।" शेफर्ड की धारणा है कि किसानो मे सन्तान-प्रजनन की दर बहुत अधिक ऊँची होने से हर बरस किसानो की सख्या पाँच लाख बढ जाती है और यही कारण है कि किसान परिवारो की आय कम रहती है। एक औसत गेहूँ या दुग्ध उत्पादक अच्छी जमीन होने पर भी साल मे केवल दो हजार डालर वार्षिक से अधिक शुद्ध आय की आशा नही कर सकता। इस आय को बढाने का तरीका कृषि के क्षेत्र को घटाना नही, किसानो की सख्या को घटाना और फिर प्रति व्यक्ति उत्पादन को बढाना है। लेकिन यह सीधी-सादी युक्ति उन लोगो को कभी पसन्द नही आ सकती, जो किसानो के वोटो की सख्या घटाने के बजाय बढाने के समर्थक हैं और जो यह समझते हैं कि कृषि का व्यवसाय और कृषक जीवन अपनाने के इच्छुको को भी अपना व्यवसाय चुनने की पूरी छूट होनी चाहिए। इसके अतिरिक्त ग्रामीण जीवन के

प्रति एक भावनात्मक मोह और ग्रामीण जीवन को ऊँचा समझने की भावना भी कम शक्तिशाली तत्त्व नही है।

विदेशी व्यापार

सयुक्त राज्य ससार के वस्तुओ के कुल उत्पादन का चालीस प्रतिशत भाग पैदा करता है और विश्व के कुल व्यापार का दस प्रतिशत उसके हाथ मे है। तट-कर मे रियायते देकर, दूसरे देशो को उपहार और कर्ज देकर उसने विश्व के अन्य देशो के उत्पादन और व्यापार को फिर से बढाने मे अपना योगदान किया है। उसने अन्य देशो को क्षेत्रीय आर्थिक सगठन स्थापित करने के लिए सफलतापूर्वक प्रोत्साहन दिया है। उसने अन्य देशो के साथ अनेक व्यापारिक समझौते किए हैं और अन्तर्राष्ट्रीय पुर्नानिर्माण और विकास बैंक (इण्टरनेशनल बैंक फौर रिकन्स्ट्रक्शन एण्ड डेवलपमेंट) एवं अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा निधि (इण्टरनेशनल मॉनिटरी फड) स्थापित करने मे महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की है। व्यापार समझौतो के फलस्वरूप हमारे तट-करो मे बहुत कमी हुई है। सन् १९३०-३३ मे हमारे औसत तट-कर ५३ प्रतिशत थे, परन्तु १९५१ मे वे १५ प्रतिशत से भी कम रह गये। जो राष्ट्र इतने समय तक तट-कर लगाता रहा हो उसके लिए उनमे इतनी कमी कर देना मामूली बात नही है। विदेशी आयात से जिन फर्मों के व्यापार पर असर पड़ता है, वे तट-कर की रियायतो के इस कार्यक्रम को कम कराने के लिए निरन्तर आन्दोलन करती रहती है। जो लोग कांग्रेस मे ऐसे व्यक्तियो के मतो से जीतकर आते हैं, जिनको विदेशी माल की प्रतिस्पर्धा से बेरोजगार होने की आशका रहती है, उन पर अमेरिकन उद्योगो की रक्षा के लिए मतदाताओ की ओर से हमेशा दबाव पडता रहता है।

सयुक्त राज्य अपने तावा, जस्त, सीसा, तेल और अन्य अनेक प्राकृतिक सम्पदाओ के भण्डारो को बहुत तेजी से इस्तेमाल कर खाली करता जा रहा है। इसलिए उसे इन चीजो की कम-से-कम आधी आवश्यकता विदेशो से आयात कर पूरी करनी चाहिए। लेकिन ऐसा

करने की चेष्टा होते ही फिर देश के आन्तरिक हितो के स्वार्थ ही आड़े आ जाते है। वे कहते है कि यदि खनिज-पदार्थ बाहर से आयात किए गये तो देश की खानो के बेकार मजदूरो का क्या होगा ? जो लोग उनके वेतनो पर निर्भर है, उनका भविष्य क्या होगा ?

जब तक अमेरिका मे वेतन, उत्पादकता और रहन-सहन के स्तर सारे ससार के औसत स्तरो से ऊँचे हैं तब तक शेष ससार के साथ हमारे व्यवहार और व्यापार मे परेशानी रहेगी ही। यहाँ तक कि उदारता की सहज भावना भी हमे चिन्तित करती है। अन्य देशो मे हमे अपनी इस उदारता के लिए सफाइयाँ देनी पडती है और देश के भीतर हम यह दिखाने का प्रयत्न करते हैं, कि हम किसी को कुछ नही दे रहे और दे भी रहे हैं तो सिर्फ सैनिक दृष्टि से कुछ लाभ प्राप्त करने के लिए फिर भी हम अपने मन मे यह बात अच्छी तरह समझते हैं कि यदि सारे ससार मे ही उत्पादकता बढ जाए तो अन्तत: उससे हमारा भी लाभ होगा।

व्यापार-व्यवसाय और सरकार

यह विचार अमेरिका के लिए अपेक्षाकृत नया है कि अर्थ-व्यवस्था को नियन्त्रित करने की जिम्मेदारी सरकार पर है ताकि उससे देश की समृद्धि सुनिश्चित बनी रहे। सरकार की अर्थ-व्यवस्था मे एक महत्त्वपूर्ण भूमिका है, क्योकि एक तो वह पारस्परिक सघर्ष के समय मध्यस्थ का काम करती है और दूसरे वह बहुत बडी खरीदार है। इसके अलावा कम्पनियो का (कुछ छोटी कम्मनियो को छोडकर) ३८ प्रतिशत मुनाफा सरकार के कोष मे जाता है और शेयर होल्डरो को कम्पनियो से जो लाभ होता है, उसका भी कुछ भाग वे टैक्स के रूप मे अदा करते हैं।

हमने अपने जीवनकाल मे जो कुछ देखा है, वह एक क्रान्ति से कम नही है। इस क्रान्ति ने पूँजीवाद का भी सामाजिकीकरण कर दिया है क्योकि उसने उसकी विराट् उत्पादक शक्ति, उसकी चयन की स्वतन्त्रता और प्रयोगात्मक वृत्ति को विद्युत्-शक्ति की तरह सग्रह कर और

श्रमिक, उद्योगपति और कृषक रूपी सब-स्टेशनो और स्वयसेवी स्वैच्छिक संगठन रूपी ट्रॉसफार्मरो के जरिये सारे देश मे फैले उपभोक्ताओ मे वितरण किया है। पूँजीवाद ने काफी समय तक सरकार से टक्कर ली, किन्तु अब उसने अन्त मे समझौता कर लिया है। उसने अब यह विचार स्वीकार कर लिया है कि अर्थ-व्यवस्था तभी किसी के लिए हितकर हो सकती है, जब वह देश के समस्त नागरिको के लिए हितकर हो। व्यापारी जगत् और सरकार के बीच की एव अर्थ-नीति और राजनीति के बीच की दीवारे ढह गई है और अब इन सभी को एक ऐसी समाज-व्यवस्था के अगो और पहलुओ के रूप मे देखा जाता है जिनका उद्देश्य जनता का कल्याण करना है। सामाजिकीकृत पूँजीवाद ने लाभो को बढाया और व्यापक बनाया है और किसी भी अन्य समाज-वादी या कम्युनिस्ट राज्य की अपेक्षा धनी और गरीब के बीच की खाई को अधिक प्रभावशाली रूप में कम किया है। सम्पदा शुल्को ने विशाल पारिवारिक ऐश्वर्य और सम्पत्तियो को धीरे-धीरे खत्म कर दिया है।

हमारी आर्थिक प्रणाली पूर्ण और सर्वथा निर्दोष है, यह दावा हम नही करते, किन्तु इसमे सन्देह नही कि हमारी प्रणाली निरन्तर सही दिशा मे गति कर रही है। प्राचुर्य और स्वतन्त्रता—ये दोनो हमे अवि-च्छिन्न रूप से परस्पर जुडे हुए प्रतीत होते है। सयुक्त राज्य ने इन दोनो को एक ऐसी सामाजिक प्रणाली के द्वारा पाया है जिसमे व्यक्तिवादिता है, स्वैच्छिक सगठन बनाकर स्वावलम्बन की वृत्ति है और साथ ही सघवाद भी है और ये तीनो एक-दूसरे को प्रतिसन्तुलित करने वाली शक्तियो के रूप मे काम कर रहे है। इस प्रणाली के फलस्वरूप उद्योगो का स्वामित्व बहुत व्यापक क्षेत्र मे फैल गया है, अभिक्रम की भावना और निश्चय करने के अधिकार का विस्तार हुआ है और अर्थ-व्यवस्था से उत्पन्न प्राचुर्य का लाभ अधिकाधिक व्यापक क्षेत्र को पहुँचा है।

भौतिक वस्तुओ का प्राचुर्य हो जाने के कारण अब उधर से निश्चिन्त होकर अमेरिकन लोग अर्थेतर वस्तुओ की ओर अधिक झुकाव

द खाने लगे हैं और उन प्रवृत्तियो मे अधिक हिस्सा लेते हैं, जिनका सम्बन्ध केवल भौतिक सम्पदा को बढाने से नही है। स्वैच्छिक नागरिक प्रवृत्तियो मे तो अमेरिकन लोग हमेशा ही दिलचस्पी और रुचि लेते रहे हैं, किन्तु अब वे उन वस्तुओ को भी महत्त्व देने लगे हैं जो उन्हें व्यक्ति के रूप मे और समाज के सदस्य के रूप मे ऊँचा उठाती हैं।

जिन लोगो के पास अच्छे जीवन-यापन के लिए आवश्यक भौतिक वस्तुओ की कमी है, उन्ही के लिए भौतिक मूल्य सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण हो सकते हैं, किन्तु अमेरिका मे इस बात के अनेक प्रमाण और लक्षण मौजूद है कि भौतिक सम्पदा के प्राचुर्य ने वहाँ अन्य मूल्यो को अधिक महत्त्वपूर्ण बना दिया है। अर्थशास्त्री जब मानवीय व्यवहार की व्याख्या करते हैं तो उसके मूल मे हमेशा लाभ की भावना उन्हें दिखाई देती है, परन्तु आज यह जाहिर हो गया है कि अब दूसरे मूल्य और दूसरी भावनाएँ भी अधिकाधिक प्रभावी होती जा रही हैं।

भौतिक वस्तुओ के प्राचुर्य का अर्थ अक्सर भौतिकवाद समझ लिया जाता है। सयुक्त राज्य मे भौतिक वस्तुओ के प्राचुर्य के चिह्न स्पष्ट रूप मे विद्यमान हैं; किन्तु विदेशी लोगो को वे अक्सर हमारी अपेक्षा अधिक महत्त्वपूर्ण प्रतीत होते हैं। हम अपनी तड़क-भडक वाली चम-चमाती मशीनो को देख कर खुश होते है। कभी यह खुशी सुन्दर खिलौने को देखकर बच्चे को होने वाली प्रसन्नता जैसी होती है और कभी उसका कारण उससे मिलने वाला आराम और सुविधा होती है। किन्तु इन वस्तुओ का दूरगामी प्रभाव हमे भौतिकवाद से मुक्त करने वाला है—क्योकि इन मशीनो के प्रयोग से हमारा जो समय बचता है, उसे हम अभौतिक वस्तुओ की ओर लगा सकते हैं।

सयुक्त राज्य ने उन समस्याओ के साथ जूझना अभी से प्रारम्भ कर दिया है जो अन्य देशो के सामने अब तक आयी ही नही हैं। वे समस्याएँ हैं : जब वर्गभेद समाप्त हो जाएगा और अधिकतर लोगो के पास काफी अवकाश और खर्च करने को पैसा हो जाएगा, तब सस्कृति

का क्या होगा ? व्यक्ति को यान्त्रिक अर्थ-व्यवस्था मे क्या सन्तोष और क्या निराशाएँ अनुभव होती है ? उत्पादक अर्थ-व्यवस्था को उन उद्देश्यो की पूर्ति मे कैसे लगाया जा सकता है जो विशुद्ध रूप से आर्थिक नही हैं ? रुचि, सवेदनशीलता और शैली पर अर्थ-व्यवस्था का क्या असर पड़ता है ? और वह ललित कलाओ और लोक कलाओ पर क्या प्रभाव डालती है ?
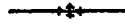
कलाएँ

क्या कोई ऐसी कला ससार मे है जो खास तौर से एक सचल, गतिशील और प्रायः वर्गहीन समाज के लिए उपयुक्त हो ?

डि टोकविल का विचार था कि ऐसी कला है। उसका कहना था कि उसका साहित्य ऐसा होना चाहिए जो आसानी से उपलब्ध हो सके और जल्दी से पढा जा सके। उसमे तीव्र अनुभूतियों और भावनाओ की अभिव्यक्ति होनी चाहिए। उसकी शैली प्रभावकारी और सरल होनी चाहिए, उसमे अप्रत्याशित और सर्वथा नवीन वस्तु का वर्णन होना चाहिए ताकि वह मनोहारी होने के बजाय आश्चर्य की सृष्टि कर सके और रुचि को तृप्त करने के बजाय भावनाओ को झकझोर सके और आन्दोलित कर सके।

यद्यपि डि टोकविल का यह कथन सामूहिक माध्यमों (सिनेमा, रेडियो, टेलीविजन, समाचार-पत्र आदि) पर बहुत अच्छी तरह लागू होता है तो भी उसमे इस बात को ध्यान मे नही रखा गया है कि शिक्षा के व्यापक प्रसार और भौतिक समृद्धि के प्राचुर्य के कारण इन माध्यमों के श्रोता और दर्शक या पाठक किसी एक वर्ग के नही रहे, बल्कि विविध वर्गों के हो गये है। किन्तु तो भी उसने उन खतरो की ओर अवश्य स्पष्ट सकेत कर दिया है जो वणिक् सभ्यता मे कला को उठाने पडेगे।

डि टोकविल यह कल्पना नही कर सका कि ऐसा समय भी आ सकता है जबकि मेहनत-मशक्कत से मुक्त होकर मनुष्य अपनी निज की रुचियो का विकास कर ले और चाहे तो कुछ घटे मेहनत करने के बाद स्वय कलाकार बन जाए। उसने आज के जमाने की कल्पना नही

की थी जबकि सामान्य नागरिक प्रतिवर्ष दस करोड डालर के सगीत के रिकार्ड खरीदते हैं, और एक सगीतकार की आलोचनात्मक तुलना दूसरे से करते हैं। आज लोग स्वयं आश्चर्यजनक रीति से सगीत के विशेषज्ञ होते जा रहे है।

अमेरिकन लोग अपनी भौतिक सफलताओ की तो खूब डीग हाँकते है, परन्तु सास्कृतिक क्षेत्र मे एक कदम भी आगे रखने मे सकोच करते हैं। उन्हें भय रहता है कि कही उनकी सस्कृति यूरोपीय लोगो की आँखो को ग्राम्य और अपरिष्कृत प्रतीत न हो। हम यह दावा करते हैं कि लोकतन्त्र, स्वतन्त्रता, समृद्धि, सुख-सुविधा और यान्त्रिक दक्षता हमारी अपनी चीजे है, किन्तु सस्कृति हमारी नही, वह यूरोप की है। हमारी दृष्टि मे यूरोप बूढा और थका हुआ है, वह आधुनिक और यौवन से परिपूर्ण नही है। इसलिए कला के विकास और परिष्कार का काम हमने स्त्रियो के लिए छोड दिया। यही कारण है कि कला हमारे लिए स्त्रैण वस्तु बन गई।

अब तस्वीर धीरे-धीरे बदल रही है लेकिन उसका कलक अभी तक ज्यो का त्यो बना हुआ है।

सचाई यह है कि हम अतीत से विमुख होकर भविष्य की ओर अभिमुख हो रहे है और डि टोकविल ने इस सचाई को अपनी विचक्षण दृष्टि से देख लिया था। अतीत से पराङ्मुख होकर भविष्य की ओर हमारा यह मुँह मोडना एक तरह से कला के प्रतीकात्मक आकारो से मुँह मोडना है। कारण, कला कल्पना और प्रतीको का आश्रय लेकर जीवन के सम्बन्ध मे एक दु:खमय अनुभूति और सवेदन प्रस्तुत करती है, वह मानव की वर्त्तमान परिस्थिति और भावी नियति के सम्बन्ध मे अत्यन्त दारुण सत्य को उद्घाटित करती है। किन्तु अमेरिका एक नया नवीन देश था जिसके भविष्य मे दुःखान्त परिणति के लिए कोई स्थान नही था। उसकी कल्पना उसका स्वप्न आशा से ओत-प्रोत था।

लेकिन इस आशामय सुखपूर्ण भविष्य का सृजन केवल कवि बन कर और काव्य की सृष्टि कर के ही नही किया जा सकता। कुरूपता, असौन्दर्य, गरीबी और पतन से खिन्न और उद्विग्न होकर हम अमेरिकन उनके निवारण के लिए कुछ करने को आतुर थे। हमने अनुभव किया कि इन समस्याओ से जूझने की आवश्यकता है—हमे केवल कला से उन्हें साकार और अभिव्यक्त ही नही करना, बल्कि उनका उपचार भी करना है। इसलिए हम सामाजिक प्रयोगो और सामाजिक विज्ञानो के अध्ययन मे लग गये।

जो ऊर्जा और जो आन्तरिक प्रेरणा कलाकार की स्फूर्ति और प्रेरणा बनती, वही समाजविज्ञान-वेत्ताओ और मनोवैज्ञानिको की मानव के अध्ययन की उर्जा और प्रेरणा वन गई। कलाकार की-सी धैर्यपूर्ण आशा-आकाक्षा से उन्होने मानवीय अभिप्रायो और उद्देश्यो का अध्ययन किया, वैसे ही प्रयत्न से मानवीय व्यवहार के अभिप्राय की व्याख्या की। लेकिन उससे अन्त मे जो कुछ तैयार हुआ वह है स्कूल मे अध्ययन की पाठ्य पुस्तक, पारिवारिक कल्याण सेवा या चिकित्सा विज्ञान के क्षेत्र मे मानसिक चिकित्सा की पद्धति।

इस तरह हमने कार्यप्रणाली कलाकार की अपनायी है—अर्थात् अनुभव की तात्कालिक अनुक्रिया ही हमारी पतवार है। अपरिमेय उत्कण्ठा से प्रेरित होकर हमने अपने ससार को उसी तरह खोजा और टटोला है, जैसे वच्चा समुद्रतट पर किसी बिल को खोजता और टटोलता है या कवि प्रकृति मे किसी अनुभूति या क्षण को खोजता-परखता है। कला की साधना का परिणाम एक ऐसी कृति का सृजन होता है जो सत्ता को प्रस्फुटित करती है, परन्तु हमारी साधना की अन्तिम परिणति एक ऐसी कृति मे होती है, जो सत्ता या परिस्थितियो की व्याख्या नही करती, उसे वदल देती है।

जब हमारे प्रतिभाशाली लोग कला की ओर प्रवृत्त होते हैं तब भी उनकी प्रेरक शक्ति और भावना परिस्थितियो को बदलने की ही

रहती है, कम-से-कम वे अमेरिका के विशिष्ट अर्थ को, उसके गूढ अभिप्राय को अनावृत करने और उसे उसके सौन्दर्य और कुरूपता, दोनो मे स्पष्ट रूप से देखने का प्रयत्न करते है। इसीलिए ग्राण्ट वुड अपने किसान नर-नारियो के चेहरो पर प्रेयरी प्रदेश के हरे-भरे मैदानो को चित्रित करता है और वाल्ट व्हिटमैन अगडाई लेते, प्राण से स्पन्दित और मांस-पेशियो को अकड़ाते समूचे राष्ट्र को अपने काव्य मे समेटने का प्रयत्न करता है।

यद्यपि हमारे देश मे महान् कवि है और भविष्य में भी होते रहेंगे तो भी इस तरह की सस्कृति मे साहित्य स्वभावतः पत्रकारिता की दिशा में मोड लेता है। एक ऐसी दुनिया के लिए, जो तीव्रगति से चल रही है, जिसमे सिर्फ सार्वजनिक घटनाएँ ही तेज गति से नही घटती, बल्कि वैज्ञानिक अनुसधान भी तीव्र गति से होते है और दैनिक जीवन मे उन का उपयोग भी त्वरित गति से होता है, पत्रकारिता अत्यन्त आवश्यक है। आज जबकि विज्ञान के सीधे-सादे और सच्चे वर्णन पुराने कवियो की कल्पना की ऊँची उड़ानो से भी बढ गये हैं और प्रकृति के आश्चर्यो का वाल्ट डिस्ने द्वारा सिनेमा के पर्दे पर किया गया चित्रण ओडीसियस के आश्चर्यजनक भ्रमणो से भी कही आगे बढ़ गया है, हमे ऐसे व्यावहारिक व्यक्तियो की आवश्यकता है जो हमें अद्‌भुत आश्चर्यो की इस भूलभुलैया मे से रास्ता दिखाते हुए आगे ले जा सकें, जो हमे उसके रहस्य को समझा सकें।

क्या आप यह जानना चाहते हैं कि संसार मे क्या हो रहा है? आप की जिज्ञासा को शान्त करने के लिए यहाँ साप्ताहिक समाचार-पत्रिकाएं है या जान गन्थर जैसे पत्रकार हैं, जो हर महाद्वीप की जानकारी आप को दे सकते हैं। मनोविज्ञान मे आपकी दिलचस्पी है? आपकी इस दिलचस्पी को पूरा करने के लिए गली-कूचो और सडको पर मनोविज्ञान की अपनी सरल और सस्ती किताबें बेचने वाले आपको मिल जाएगे। ये लोग जानते हैं कि उपन्यासकार या नाटककार की वर्णन कला का

उपयोग कैसे किया जा सकता है। इनकी पुस्तको के विषय आकर्षक और दिलचस्प होते हैं, इसलिए कुछ हद तक इन लोगो ने उपन्यासकार और नाटककार को बहिष्कृत कर दिया है।

पत्रकारिता उपन्यास और नाटक मे भी घुस आई है। अपटन सिनक्लेयर उस जमाने मे, जबकि समाज की गन्दगी को साफ करने और उसका भण्डाफोड़ करने का आन्दोलन चल रहा था, डिब्बाबन्द माँस तैयार करने वालो और बड़े तेल उद्योगपतियो के पापो का पर्दाफाश करने के लिए अपने उपन्यासो का उपयोग करता था, और आज के उपन्यासकार हमे हालीवुड की बाहरी चमक-दमक के पीछे छिपे कुत्सित जीवन की, विज्ञापन कला के खेल की अथवा किसी जहाज के जीवन की झाँकी देते हैं। समाचार-पत्रिकाएँ दैनिक घटनाओ को आकर्षक और स्मरणीय रूप मे चित्रित करने के लिए उपन्यास और कहानी की कला का उपयोग करती हैं और दूसरी ओर कहानी लेखक और उपन्यासकार अपने आधुनिक जीवन के चित्रण को अधिक विश्वसनीय बनाने के लिए पत्रकार-कला का इस्तेमाल करते हैं। सिनेमा फिल्मे भी आज आधुनिक जीवन और घटनाओ पर अधिक बनाने लगी हैं। इन फिल्मो मे आधारभूत मानवीय सम्बन्धो को चित्रित करने वाली कहानियो के बजाय जातिभेद, मद्यपान, अपराधी वृत्ति आदि आधुनिक समस्याओ को चित्रित करने वाली कहानियो को आधार बनाया जाता है।

आज की यान्त्रिक दुनिया, जो हमे पत्रकारिता की ओर प्रेरित करती है, लिखित, चित्रित या रचित कृतियो को प्रसारित करने के साधन भी उपलब्ध कराती है। आज का निन्दित "भौतिकवाद" ही प्राचीन शास्त्रीय सगीत के रिकार्डो, पुस्तको, फिल्मो और सुन्दर रगीन चित्रो को बड़े पैमाने पर जन-जन तक पहुँचने के लिए उत्तरदायी है। लोकप्रिय पत्रिका 'लाइफ' टी० एस० इलियट की कठिन कविताओ को, हेमिंगवे के 'ओल्डमैन ऑफ दि सी' उपन्यास को और अन्य पुराने साहित्यकारो की रचनाओ एवं विश्व के धर्मो के वर्णनो को प्रकाशित करती है। वह

चीज केक (पनीर का केक) बनाने की विधि छापती है, तो अपराधो की तस्वीरे भी छापती है। किन्तु उसके द्वारा उच्च सस्कृति उन लोगो तक पहुँचाती है, जिन्होने कभी उसका सम्पर्क नही पाया। और आज कौन कह सकता है कि यह सस्कृति किन जड़ो को सीचेगी और किस जीवन को परिपुष्ट करेगी ?

आधुनिक यन्त्र विद्या और कलात्मक अनुभूति, दोनो के पारस्परिक सम्मिश्रण से ही आज सगीत के रिकार्डों का निर्माण, टेलीविजन पर नृत्य-नाटको का प्रदर्शन, चित्रकला की सुन्दर कृतियो का जन-साधारण के लिए प्रकाशन सम्भव हुआ है। ऐसे लोगो की सख्या बहुत कम है जो सस्कृति को एक बहुत छोटे उच्च सम्भ्रान्त वर्ग तक ही सीमित रखने के पक्षपाती है ताकि इस सस्कृति पर एकाधिकार रहने से वे दूसरो की अपेक्षा अपने आप को ऊँचा और श्रेष्ठ समझ सके। हम समझते है कि जो कला सचमुच महान् है, वह किसी एक वर्ग को नही, समग्र ससार को आकृष्ट और प्रभावित करती है।

कला को लोकप्रिय बनाने और उसे लोककला का रूप देकर जन-सामान्य तक पहुँचाने की यह प्रवृत्ति अमेरिका मे आने वाले विदेशियो को आश्चर्य और आघात पहुँचाती है, मानो कला का प्रसार कला को विकृत भी कर देता हो।

साहित्य

यह आशा की जा सकती है कि व्हिटमैन के काव्य की भाँति हमारा सारा साहित्य ही ससार की अटारियो से उच्च घोष के साथ वर्बर गर्जन करेगा, उसमे नई-नई आबादियो को बसाने वाले असभ्य लोगो की-सी स्थूल अपरिष्कृतता, सबल आशावादिता और अपने इर्द-गिर्द के सांस्कृतिक परिवेश की स्वस्थ व्यावहारिकता प्रतिबिम्बित होगी।

किन्तु वस्तुस्थिति यह नही है। डब्ल्यू० एच० औडन ने कहा था, "यूरोप से यहाँ आकर मेरे मन पर सबसे पहली और सबसे जबर्दस्त छाप यह पड़ी है कि यहाँ का सारा साहित्य जितना निराशा से भरा है,

उतना ससार मे कभी भी और कही भी लिखा गया साहित्य नही है।" औडन को यह देखकर आश्चर्य हुआ कि जो राष्ट्र ससार मे सबसे अधिक आशावादी होने के लिए मशहूर है, जो पृथ्वी पर सबसे अधिक स्वतन्त्र है, वह अपने आपको "हताश व्यक्तियो, कलुष चरित्र वालो और अपनी धुरी और स्थान से विस्थापित व्यक्तियो का समाज" समझता है और उसके सब वीर और नायक वे लोग है "जिनमे व्यथा और विपत्ति को चुपचाप सहन करने के सिवाय और कोई गुण नही है।" वह सोचता था कि इसका कारण क्या है ?

इसका एक उत्तर यह है कि अनेक अमेरिकन लेखक अन्तरतम से आदर्शवादी है, वे अमेरिकन जीवन-पद्धति की भावी आशापूर्ण सम्भावनाओ को बहुत गम्भीरता से लेते है और आदर्श के विकृत होने पर विद्रोह करते हैं। वे उस सिक्के का, जिसके एक ओर बूस्टर यन्त्र की मूर्ति अकित है, दूसरा पार्श्व हैं। अब लेखक का यह भी एक काम हो गया है कि वह गन्दी वस्तियो पर एक आँख रखे। उपन्यासकार शायद अमेरिकन जीवन मे सर्वत्र पायी जाने वाली प्रतिसन्तुलनकारी शक्तियो का ही एक अग है और उस रूप मे वह विज्ञापनदाता की कमी को पूरा करता है। सम्भवत, जैसा कि डी० डब्लू० ब्रोगन ने कहा है, निराशावादिता यहाँ के जीवन मे पायी जाने वाली प्रतिस्पर्धा के दबाव और खिंचाव का परिणाम है।

गार्लैण्ड, ड्राइजर और नोरिस से लेकर सिन्क्लेयर लुइस, अपटन सिन्क्लेयर, डॉस पासोस, हेमिंगवे, फौकनर और स्टाइनबैक तक और उसके बाद युद्धोत्तरकालीन नये लेखको तक सभी सशक्त उपन्यासकारों ने इसी पृष्ठभूमि पर अपनी रचनाए तैयार की है। सन् १९२५ से १९४० तक अमेरिकन उपन्यास पश्चिमी ससार मे सबसे अधिक प्रभावशाली रहे हैं।

हेमिंगवे की विशिष्ट शैली, जिसमे वह शब्दाडम्बर के बिना सत्य को उसके सही रूप मे उघाड कर रख देता है, और अनुभव को प्रतीयमान

रूप के बजाय अनुभूयमान रूप मे प्रकट करने का उसका सकल्प, सबसे अधिक प्रभावशाली थे। उसकी रचनाओ मे आधुनिक मानव का यह भय भी अन्तर्निहित रहता था कि कही अपनी दुनिया पर से उस की पकड और नियन्त्रण ढीला न हो जाए। उसके पात्र आत्मनियन्त्रण खो देने के भय से हमेशा ग्रस्त रहते है, इसलिए वे मन्द्र सप्तक मे बोलते हैं। उसके नायक आम तौर पर शारीरिक और भौतिक दृष्टि से पराजित है और यदि उन्होने कोई विजय प्राप्त की भी है तो वह निरी नैतिक विजय है। उसके एक उपन्यास मे एक बूढा एक मछली और समुद्र के खिलाफ लड़ाई में विजय पा लेता है, परन्तु पुरस्कार नही जीत पाता। उसकी रचनाओ मे और उसके पात्रो पर विनाश और मौत की छाया झूलती रहती है।

जॉन डोस पासोस अपने पूर्ववर्त्ती अनेक अमेरिकनो की भाति अर्थ-व्यवस्था के परिवर्त्तन से, जिसने जैफर्सन के जमाने की कृषि-प्रधान लोकतत्री अर्थ-व्यवस्था को हैमिल्टन की बड़े व्यापारियो और उद्योग-पतियो के प्राधान्यवाली अर्थव्यवस्था मे बदल दिया था, बहुत नाखुश था, इसलिए उसने १९३० के दशक के जन-साधारण का चित्रण एक ऐसे शोषित मानव के रूप मे किया जो अपने ही देश मे बेघर, बेगाना और अपनी विरासत से वंचित है। कैमरा, न्यूजरील और जीवनकथा की टैकनीक से उसने बेरोजगार और अल्पवेतनभोगी शोषित व्यक्ति की ओर से विद्रोह का झंडा खड़ा किया। उसके नायको को हेमिंगवे के नायको की भाँति लडने का मौका ही नही मिलता, वे हमेशा हारे रहते है और विराट् महानगरी, जिसके लिये व्यक्ति का कोई मूल्य नही है, उन्हे हमेशा असहाय बनाये रखती है।

विलियम फॉकनर ने दक्षिण के जीवन का अध्ययन करते हुए उस मे हिंसा, पतन और असामान्यता पायी। फॉकनर ने दक्षिण का जो चित्रण किया उसमे वर्त्तमान पर अतीत का प्रभाव और लज्जा के साथ गर्व का सम्मिश्रण था। उसमे जातीय असहिष्णुता के भार से दबी

हुई गन्दी बस्तिया उद्योगो से पैदा किए गए दु:स्वप्न से भी कही अधिक भयकर चित्रित की गई है। इन रचनाओ के कथानक एक प्रकार के दु:स्वप्न है, यहाँ तक कि कथानक मे आने वाले कुछ अस्पष्ट तत्त्वो मे दु:स्वप्न की सी भयंकरता है। फिर भी फॉकनर ने अपने साहित्य मे दु:खान्तता की सृष्टि की, जो कम-से-कम अर्थहीनता से तो बेहतर ही थी।

अन्य लेखक-लेखिकाओ ने भी, जिनमे बीसियो बहुत अच्छे हैं, अमेरिका के जीवन को भिन्न-भिन्न झरोखो और टेकरियो पर खड़े होकर ऐसे ही अनुज्ज्वल और धुँधले पहलू से देखा है। अर्स्काइन कैल्डवैल ने जॉर्जिया से और जेम्स फैरेल और मेयर लेविन ने शिकागो से अमेरिकन जीवन की झाँकी प्रस्तुत की है, किन्तु दोनो का ही चित्रण अँधियारे जीवन की झाँकी है। जॉन ओ' हारा ने भी उच्च अभिजात वर्ग मे जीवन का खोखलापन देखा है और बड शुलबर्ग को हॉलीवुड मे कोरी स्वार्थवृत्ति और घूँसेबाजी आदि के अखाडो मे और सागर-तट के पुलिन प्रदेशो पर ही नही, बल्कि ऐसी सभी जगहो पर, जहाँ सत्ता और शक्ति मनुष्य को सामाजिक रीति-नीति और आचार के उल्लघन के लिए प्रलोभित करती है, भ्रष्टाचार और कुत्सा दिखाई दी।

किन्तु अमेरिका बहुत बड़ा देश है, उसकी विशालता और विविधता के कारण कुछ स्थानो से ऐसा साहित्य सृजन भी हुआ है, जो अधिक उत्साह और आशा का सचार करता है, क्योकि वह जीवन को यथार्थ-वादिता से और कम निराशावादिता से चित्रित करता है। डोरोथी कैनफील्ड फिशर ने वरमोट के ग्राम जीवन को ही चित्रित नही किया, बल्कि याँकी-सस्कृति को समझने मे भी हमे सहायता दी है। वाल्टर डी० एडमड्स और सेम्युअल हॉपकिन्स ऐडम्स ने न्यूयार्क राज्य के उत्तरी भागो के निवासियो का, मार्था ओस्टेन्सो (और उससे पूर्व विला कैथर) ने उत्तरी मैदानो के एकाकी आप्रवासी किसानो के और ए० बी० गथरी ने सुदूर उत्तर-पश्चिम के पर्वतवासियो के जीवन का चित्रण कि-

है। कोनराड रिश्टर ने पेनसिलवेनिया और दक्षिण-पश्चिमी प्रदेश के अतीत जीवन का, क्लाइड ब्रामन डेविस ने अनेक स्थानो के, विशेषकर मिसूरी और कोलोराडो के और मार्जोरी किनन रॉलिग्स ने फ्लोरिडा के देहातो के जीवन को अकित किया है। बेन लूसियन बर्मन ने नदी के माँझी की सस्कृति के चित्रण मे विशेषता प्राप्त की है।

जब हम फिर दक्षिण की ओर आते है तो हमे हिंसा और पतन की झाँकी साहित्य मे पुन मिलती है, फिर भी हमारे अनेक दक्षिणी उपन्यासकार अत्यन्त प्रतिभाशाली है। इस कोटि मे कार्सन मैककलर्स लिलियन स्मिथ, यूडोरा वेल्टी और अन्य अनेक लेखक-लेखिकाओ की गणना की जा सकती है।

अमेरिका मे प्रायः सभी लोग आप्रवासी हैं, इसलिए उन्होने नवागन्तुक आप्रवासियो के अनुभवो, यूरोप और अन्य महाद्वीपो मे उनके अतीत जीवन, उनके सघर्ष और धीरे-धीरे नई सस्कृति के आत्मसात्-करण के चारो ओर बहुत-सा साहित्य का ताना-वाना बुना है। इर्विग फाइनमैन ने पुराने यहूदी जीवन का बहुत बारीक और पैनी दृष्टि से वर्णन किया है और हर्मन वौक ने मौजूदा समाज-व्यवस्था पर तीव्र आघात किया है। ओलिवर ला फार्ज ने अपने 'लाफिंग ब्वाय' और अन्य उपन्यासो मे इडियनो के दो सस्कृतियो के बीच सघर्ष के प्रति सहानुभूति व्यक्त की है। रिचर्ड राइट और अन्य नीग्रो लेखको ने नीग्रो लोगो पर जाति-भेद के प्रभावो का वर्णन किया है। ऐसे लेखकों की सूची से पूरा एक पृष्ठ भर सकता है, जिन्होने हमारे जटिल जातीय चित्र मे रग भरे है।

अमेरिकनो ने जब अपनी निज की मिश्रित और सकर सस्कृति से बाहर निकलकर अन्तर्राष्ट्रीय जगत् को समझने की कोशिश की, तो फिर उपन्यास ने ही दोनो ससारो के बीच पुल का काम किया। पर्ल बक ने चीन का मर्मस्पर्शी चित्रण किया और जेम्स मिश्नर ने एशिया की अन्य सस्कृतियो का वर्णन। अमेरिकनो ने हमेशा यूरोप की पृष्ठभूमि

पर उपन्यास लिखे है। जब उनकी दिलचस्पी अफ्रीका की ओर हुई तो उन्होने उस दुःखग्रस्त प्रदेश के जीवन और उसकी समस्याओ को समझने के लिए उपन्यासो का ही आश्रय लिया, हालांकि ये सब उपन्यास अमेरिकनो के ही लिखे हुए नही थे।

यद्यपि सयुक्त राज्य का जीवन उसके उपन्यासो के भीतर से देखने पर हमे मुख्यत. निराशा का ही जीवन लगता है, तो भी कुछ चोटी के लेखक ऐसे हैं जिन्होने इस जीवन की अधिक सन्तुलित झाँकी प्रस्तुत की है। यद्यपि स्टाइनवेक ने मानव पर प्रकृति और उत्तरदायित्वहीन समाज के अत्याचारो पर बहुत रोष और आक्रोश प्रकट किया है, तो भी जीवन के प्रति उसकी अविचल आस्था और जीवित रहने के लिए सघर्ष करने की उसकी भावना उस आक्रोश को सन्तुलित कर देती है। व्यग्यकार और शुद्धाचारवादी जे० पी० मार्क्वैण्ड ने अपनी रचनाओ मे दिखाया है कि जो लोग पिछली पीढी के पैमाने के मुताबिक जीते है या दौलत जिन्हें रूढिवादी बना देती है, वे कैसे मानवीय शक्ति को बर्बाद करते हैं। फिर भी उसका स्वर सहानुभूति से भरा है, उसमे क्रोध या निराशा नही है।

रॉबर्ट पेन वारेन ने अपनी जीवन की तस्वीरो मे, खासकर दक्षिण के जीवन की तस्वीरो मे दु.ख की सच्ची अनुभूति अकित की है, उसने दिखाया है कि अच्छे इरादो और सदाशयता से किए गए कामो का परिणाम भी अक्सर खराब हो जाता है। उसे यह कथन एक क्रूर व्यंग्य दिखाई देता है कि अक्सर बुराई मे से भी भलाई पैदा हो जाती है, जैसा कि विली स्टार्क ने अपने 'ऑल दि किंग्स मैन' उपन्यास मे स्पष्ट किया है। फिर भी आशा की बात यही है कि मनुष्य आज भी न्याय के लिए आतुर और व्यग्र हैं, हालांकि वे उससे वचित कर दिए गये हैं, या स्वय उन्होने ही उसे विकृत कर दिया है।

जेम्स गोल्ड कोजन्स ने अनेक विषयो पर रचनाएँ लिखी हैं, परन्तु वह हमेशा मानव के सघर्ष को आध्यात्मिक मूल्यो के एक ढाँचे के भीतर

ही देखता है। उसकी दृष्टि मे मानव की मुख्य समस्या यह है कि अच्छाई को बुराई से अलग करके कैसे पहचाना जाए और कैसे वरणीय का वरण किया जाए। उसकी पुस्तको मे बुराई और कुत्सा के प्रति चिन्ता अवश्य है किन्तु वह उससे अभिभूत नही होता।

एडना फर्बर, जिराल्ड वार्नर ब्रेस और हैमिल्टन बासो आदि लेखक-लेखिकाओ की गिनती भी उन्ही मे की जा सकती है जिनके पाँव बुराई और पाप की लहर मे उखडे नही और जो सामान्य जीवन के पुनर्निर्माण के इच्छुक है और व्यक्ति और समाज की पारस्परिक अनुक्रियाओ मे रुचि लेते हैं।

और भी अनेक होनहार लेखक हैं और यह उचित प्रतीत नही होता कि उनमे से कुछ का अलग से नामोल्लेख किया जाए, फिर भी नेल्सन आलग्रेन और सौल बेलो सम्भवतः उन लेखको मे विशिष्ट और प्रमुख है, जो सामान्य जन मे, बल्कि सामान्य से भी निम्न श्रेणी के मानव मे दिलचस्पी लेते है और जिनमे पाठक को व्यक्तिश. आकृष्ट करके इस श्रेणी के मानव का पुन सृजन करने की क्षमता है।

सयुक्त राज्य मे ऐतिहासिक उपन्यास बहुत लोकप्रिय है, क्योंकि अमेरिका को अपने इतिहास पर गर्व है और वह अपने अतीत को बिल्कुल हाल का और अत्यधिक निकटवर्ती होने के कारण सहज मे ही देख भी सकता है। ऐतिहासिक उपन्यासकारो की सख्या बहुत बड़ी है, फिर भी उनमे कैनेथ रॉबर्ट्स, सेम्युअल शेलाबर्गर, टामस बी० कौस्टेन, ब्रुश लैकास्टर और वान विक मेसन विशेष दक्ष है।

द्वितीय विश्वयुद्ध की पृष्ठभूमि पर लिखे गये उपन्यास अनेक सिद्धहस्त लेखको की छायानुकृति है। उनका बाह्य ढाँचा डोस पासोस से लिया गया है, क्योंकि अपने नायको को सामूहिक रूप से चित्रित करने के लिए लेखको को उसकी टैकनीक की आवश्यकता है। उन्होंने पात्रो की मन स्थिति के चित्रण मे स्कॉट फिट्जजिराल्ड से, हास-परिहास के लिए स्टाइनबेक से और क्रिया, गति और वार्त्तालाप के

लिए हेमिंगवे से प्रेरणा ली है। इन सब उपन्यासो की एक विशेषता यह है कि उनमे एक ऐसी पलटन या दस्ते का चित्रण अवश्य होता है जिसमे सभी जातियो के लोग होते है। इस पलटन या दस्ते मे जातीय या इतर विद्वेष उभर आते हैं, किन्तु अन्त मे नायक किसी ऐसी जाति का व्यक्ति बनता है जिससे सबसे अधिक घृणा की जाती रही है। असहिष्णु लोग या तो मारे जाते हैं या उनका हृदय-परिवर्तन हो जाता है और शत्रु के आक्रमण की अग्निपरीक्षा के समय सब भाई-भाई बन जाते हैं। जाति-विद्वेष के अलावा उन अफसरो और स्त्रियो के प्रति, जो सुदूर अपने देश मे ही हैं, इन विदेश-स्थित सैनिको मे घृणा पैदा हो जाना भी अक्सर इन उपन्यासो मे पाया जाता है। ये लोग यद्यपि कठोर अनुशासन को नापसन्द करते हैं, तो भी युद्ध को अनिवार्य मान कर उसे अपने जीवन की एक शर्त के रूप मे ग्रहण कर लेते हैं। लेकिन वे किसी मिशन या आदर्श की भावना से नही लड़ते, बल्कि इस विश्वास के साथ लड़ते हैं कि यह मुसीबत स्वदेश लौट जाने पर उन्हें कुछ समय तक आराम और छुट्टी मनाने का हक तो दिलाएगी। यह बहुत बड़ी आशा की बात है कि इन उपन्यासो मे अच्छे पात्रो और चरित्रो की कमी नही होती और वे सब साधारण मानव होते हैं जो सकट के समय अत्याचार के विरुद्ध सीना तानकर खड़े होते हैं।

किसी भी लेखक ने ठेठ अमेरिकन कस्बे की कहानी नही लिखी। किसी ने यह वर्णन नही किया कि किस प्रकार एक अमेरिकन कस्बे मे स्कूलो, गिरजाघरो, कारखानो, दफ्तरो या क्लबो मे विभिन्न वर्गो का जीवन स्पन्दित होता है. कैसे वहाँ गेंद के खेल होते हैं, परेडे होती हैं और चौक-चौराहो पर नृत्य-मंडलियाँ थिरकती है, कैसे राजनीतिक सघर्ष और आर्थिक उतार-चढाव होते हैं, सडक और गली के दोनो ओर मकानो की कतारे होती है और कितने ही घर आन्तरिक मनोमालिन्य से उजडे रहते हैं। किसी ने यह नही बताया कि इन कस्बो मे क्रिसमस के दिन रग-बिरगी बत्तियो से सड़कें और गलियाँ जगमगा उठती हैं।

वहाँ के लोगो मे उपहासास्पद अभिमान भी है और सीधा-सादा भोला-पन भी। आग या बाढ के खतरे के समय सभी नगर की रक्षा के लिए उमड पडते है। वहाँ छोटे आदमियो मे वीरता और वडप्पन है और वडो मे आन्तरिक अधःपतन। कस्बे मे अपने लिए एक अनोखी अनुभूति है और अपने शिशु और किशोर वर्ग मे वह सुरक्षा और भय दोनो का सचार करता है। लेकिन किसी ने इनकी कहानी को साहित्य मे चित्रित नही किया।

अमेरिका की सस्कृति निरन्तर बन रही है, इसलिए अमेरिकन लेखक यह भरोसा नही कर सकते कि उन्हे ऐसे पाठक मिल जाएँगे, जो उनके इगित या अर्धस्पष्ट अर्थ को स्वय समझ सकेंगे। इसीलिए (जैसा कि मार्गरेटमीड ने कहा है, उन्हे ऐसी वस्तुओ को अपनी अभि-व्यक्ति का माध्यम बनाना पडता है जिनका परम्परा से बँधा-बधाया स्पष्ट और गहरा अर्थ है, वे ऐसे शब्दो का सहारा नही ले सकते जोअपना अर्थ अपने आप अभिव्यक्त करते है। इसी कारण शायद उन्होने अपसामान्य का चित्रण किया है और व्यग्य और हास-परिहास का आश्रय लिया है, क्योकि इसमे संकेतो को आसानी से समझा जा सकता है।

यह भी एक कारण है, जिससे कि कविता ने अपने सन्देश को जन-साधारण तक पहुँचाने का प्रयत्न छोड़ दिया और वह केवल बुद्धिजीवी विदग्ध समाज की दिमागी कसरत बनकर रह गई और इस विद्ग्ध समाज की सख्या भी अधिक नही है। चालीस वर्ष पूर्व जिस पीढी ने कविता का पुनरुद्धार किया था, उसमे से सिर्फ रॉबर्ट फ्रोस्ट ही एकमात्र कवि है जो आज भी सार्वभौम वाणी मे कविता करता है, जिसकी कविता धरती के साथ इतनी घुल-मिल गई है कि हर कोई उसे प्यार करता है और आसानी से समझ लेता है। फिर भी वहुत-से अन्य अच्छे कवि भी हैं, तरुण भी और प्रौढ़ भी, जो अब भी उनके लिए काव्य का सृजन करते है, जिनके पास उसे सुनने के लिए कान हैं।

पाठक अब भी ससार को, जो अधिकाधिक जटिल होता जा रहा है, समझने के लिए कथा और उपन्यास से भिन्न साहित्य की ओर अधिकाधिक अभिमुख हो रहे हैं। इधर इस पेचीदा दुनिया को स्पष्ट करने के लिए अध्ययन के दूसरे नये-नये साधन भी निकलते आ रहे है। पाठक राष्ट्र के सब से खूनी अनुभव गृह-युद्ध को पूरी तरह समझने के लिए अनेक उत्तम पुस्तको का अध्ययन करते हैं। महापुरुषो के जीवन-चरित, मृत सागर से लेकर बाह्य आकाश की यात्रा की सम्भावनाओ तक'सभी प्रकार की वर्णनात्मक पुस्तके, राजनीतिज्ञो और सेनापतियो के सस्मरण, राजनय सम्बन्धी ग्रन्थ और आध्यात्मिक जीवन सम्बन्धी पुस्तकें सभी यहाँ लोकप्रिय हैं। अमेरिकन लोग अपने ग्रन्थो को अन्तर्राष्ट्रीय पृष्ठभूमि पर रचने का प्रयत्न करते है, क्योकि वे सारी दुनिया मे अपना रास्ता बनाना चाहते हैं, और सारी दुनिया के लिए चिन्तित हैं।

अमेरिका मे पुस्तको के पढने का व्यसन काफी बढ गया है, क्योकि एकाएक यहाँ सस्ती किताबो का चलन हो गया है, जो २५ सेंट से एक डालर तक की कीमत मे मिल जाती है। ऐसा लगता है कि ये सस्ते सस्करण निकालकर टैकनॉलोजी ने अन्त मे किताबो की ऊँची कीमत की समस्या का समाधान निकाल लिया है। यद्यपि नई किताबो की कीमत भी और सब वस्तुओ के साथ-साथ बढ रही है, तथापि उनके पुनर्मुद्रण (और कहानी एव उपन्यास साहित्य की कुछ मूल पुस्तकें भी) पत्रिका के बराबर मूल्य पर सुलभ हो रही हैं। इससे देश मे पुस्तको की बाढ-सी आ गई है। पहले जहाँ अमेरिका मे कुल ५०० पुस्तको की दुकानें थी, वहाँ आज उनकी बिक्री के स्थान ५० हजार है, क्योकि स्टेशनरी की हर दुकान, यहाँ तक कि दवाइयो की दुकाने भी, पुस्तकें बेचती हैं। गृहिणियाँ रसोईघर का सामान जिस दुकान से खरीदती हैं, उसके पास की दुकान से उन्हें किताबे भी आसानी से मिल सकती हैं। सन् १९५६ मे तीस करोड सस्ती किताबें बिकी। आज चूँकि पुस्तकें भी इतनी सस्ती हो गई है कि बेफिक्री से पत्रिकाओ की तरह फेंकी

जा सके, इसलिए आज वे लाखो और करोड़ो की सख्या मे प्रकाशित होती हैं।

सस्ते सस्करणो मे प्रकाशित कुछ पुस्तके बिल्कुल निकम्मी होती है, जैसा कि उनके घटिया और रद्दी मुखपृष्ठो से स्पष्ट हो जाता है। किन्तु उन मे कुछ उच्च कोटि की प्राचीन या आधुनिक साहित्य की पुस्तकें या गम्भीर विषयो की कठिन पुस्तके भी होती हैं। इतनी बौद्धिक सम्पदा इससे पूर्व कभी भी जनता के लिए इस कदर सुलभ नही हुई।

उपर्युक्त सस्ती पुस्तको के अलावा ११,५०,००,००० महँगी पुस्तकें और ६,५०,००,००० बच्चो की पुस्तकें भी १६५६ मे बिकी। इनके अतिरिक्त बाइबिलें, विश्वकोश, पाठ्य पुस्तकें और टैक्निकल पुस्तकें भी भारी सख्या मे बिकी। अनुमानतः इनकी सख्या ८० करोड थी।

पुस्तक क्लबें, जिनकी सदस्य सख्या कई लाख है, पुस्तको की बिक्री मे और भी अधिक योग देती है।

ब्राडवे के रंगमचो की आर्थिक दशा को देखते हुए रगमच के लिए नाटक लिखना एक तरह का जूआ खेलना है, फिर भी टेनेसी विलियम्स और आर्थर मिलर रगमच के ऐसे लेखक है जिन से दिलचस्प और उच्च कोटि की रचना की आशा की जा सकती है। इस बीच सारे देश मे लघु रगमच, जिनमे विश्वविद्यालयो के रगमच भी शामिल हैं, नये और पुराने नाटको के अभिनयो का प्रदर्शन करते रहते है। अभिनय शैली, प्रस्तुतीकरण और लेखन मे उनके नये प्रयोग प्राय. बहुत दिलचस्प और मनोरजक होते है। ग्रीष्मकालीन नाट्य कार्यक्रमो ने अमेरिका मे अपना एक विशेष स्थान बना लिया है। खलिहानो मे, सामाजिक केन्द्रो मे, टाउन हॉलो मे और खास तौर से बनाये गये रगमचो मे, जहाँ कही भी श्रोता और दर्शक उपलब्ध हो गये, ब्राडवे के पेशेवर कलाकार और तरुण शौकिया कलाकार मिलकर शेक्सपीयर के नाटको से लेकर आधुनिक प्रहसन तक सभी प्रकार के नाटको का अभिनय करते है।

जाज

जब थाईलैंड का राजा बेनी गुडमैन] के सगीत समारोह मे सम्मिलित होता है और सगीत की समाप्ति पर उसे राजकीय पदक से विभूषित करता है, जब लुई (सैचमो) आर्मस्ट्रांग लन्दन के रॉयल फेस्टिवल हॉल मे रॉयल फिलहार्मोनिक ऑरकेस्ट्रा के साथ अपनी तुरही बजा कर सबको मुग्ध कर देता है, जब मध्यपूर्व के श्रोता जीवन मे पहली बार डिजी गिलेस्पी के सगीत कार्यक्रमो मे जाज सगीत सुनकर विभोर हो उठते हैं, तब यह मानना ही पडेगा कि संसार जाज सगीत को संस्कृति के लिए एक नई और मोहक देन स्वीकार करता है। लुई आर्मस्ट्रांग ने जर्मनी मे अपना जाज सगीत प्रस्तुत करने के बाद अपने श्रोताओ के बारे मे एक बार कहा था, "वे लोग जब हाथ से तालियाँ बजाते-बजाते थक गये तो कुर्सियाँ खटखटा कर ही अपना हर्ष व्यक्त करने लगे।"

गिलेस्पी और उसका बैंड एक ऐसे वक्त ग्रीस पहुचे, जब वहाँ अमेरिका-विरोधी भावना बहुत प्रबल थी। किन्तु जिन छात्रो ने एथेन्स के अमेरिकन दूतावास पर पत्थर फेंके थे, वही उनका सगीत सुनने के लिए सभाभवन मे आये और उस संगीत से मस्त होकर और होश-हवास खोकर वहाँ व्यवस्था कायम करने के लिए तैनात पुलिस के सिपाहियो के साथ नाचने लग गये। वे गिलेस्पी को कन्धो पर उठा कर घर ले गये।

जाज का जन्म और विकास दोनो अमेरिका मे हुए। मूलतः यह लोक-सगीत है, किन्तु टैक्निकल दक्षता और निपुणता से इसका विकास किया गया और इसे एक ललित कला का रूप दिया गया। जाज सगीत दो महान् सगीत-परम्पराओ का मिश्रण है—एक यूरोपीय सगीत जिस मे समस्वरता और असम स्वर दोनो हैं, और दूसरा पश्चिमी अफ्रीकी सगीत जो जटिल ताल और लय से युक्त है। इसमे सन्देह नही कि मूलत यह नीग्रो सगीत है, जिसे अमेरिका मे गुलामो के रूप मे लाये गये नीग्रो खेतो मे काम करते हुए या प्रार्थना करते हुए मस्त होकर

गाते थे। उसे विकसित और परिष्कृत किया अमेरिकन गोरो ने। यह कहना अधिक सही होगा कि यह गोरो द्वारा नीग्रो लोगो के सगीत के आत्मसात्करण से उत्पन्न सगीत है। यह महत्त्वपूर्ण बात है कि इसका विकास मुख्यतः न्यू ओर्लियन्स मे हुआ, जहाँ फ्रेंच और स्पेनिश रक्त वाले नीग्रो लोगो ने दो सास्कृतिक धाराओ को मिलाकर इसकी रचना की।

यदि नीग्रो लोगो को प्रारम्भ से ही अमेरिका मे पूर्णत आत्मसात् कर लिया गया होता या उनका पूर्णतः वहिष्कार ही कर दिया गया होता, तो जाज़ कभी विकसित न हो पाता। यह वास्तव मे एक ऐसे दुविधाग्रस्त समाज की उपज है, जो नीग्रो के सर्वोत्तम गुणो की प्रशसा करता है, किन्तु साथ-ही ईसाइयत और लोकतन्त्र के सिद्धान्तो मे इतना पूर्ण विश्वास नही करता कि उसे समाज मे अपने समान पूरा दर्जा दे सके। फिर भी नीग्रो ने अपनी लोक-कथाओ के डरपोक खरगोश की तरह अपने अधिक ताकतवर भाइयो को चुपचाप चतुराई से हरा दिया है, क्योकि उसका सगीत ससार मे प्रायः सर्वत्र सयुक्त राज्य की कला को दी गई सबसे बडी देन समझा जाता है।

जाज सगीत निरन्तर विकास की मजिलो से गुजरता हुआ पूर्णता की ओर बढा है। जिस समाज का वह अग है, उसी की भाँति वह हमेशा परिवर्तित होता रहा है और नई-नई राग-रागिनियो, नये स्वरो और नये वाद्यो की सगति से, जो आज भी काम या भक्ति के समय गाये जाने वाले गीतो के निर्माताओ द्वारा विकसित किए जा रहे है, निरन्तर प्रवर्द्धमान हो रहा है। वह सगीत की सभी नई विधाओ को अपनाने के लिए तैयार रहता है।

जाज उन लोगो पर भी, जिन्होने उसे पहले कभी नही सुना, इतना प्रबल प्रभाव कैसे डालता है ? इस प्रश्न का उत्तर देते हुए हैम्बर्स हॉट क्लब के अध्यक्ष ने कहा है कि "जाज़ सगीत की हर बैठक एक तरह से एक छोटा लोकतन्त्र है, जिसमे हर वाद्य का स्वतन्त्र और बराबरी

का दर्जा है। उसमें सब वादको को एक सूत्र मे बांधने वाली शक्ति है हर वादक के प्रति सहिष्णुता की भावना।" एक नया व्यक्ति भी जाज़ संगीत सुन कर तत्काल यह अनुभव करेगा कि उसमे स्वत-स्फूर्ति, कला और वैयक्तिक सृजनशीलता है और साथ ही परस्पर सहयोग और समवेत वादन की भावना भी है। जाज लिखित स्वर लिपि के बिना भी केवल शुद्ध वादन कौशल और पारस्परिक सहयोग से चलता है।

किन्तु मनोविज्ञानशास्त्री जाज़ की माधुरी और आकर्षण की बिल्कुल दूसरी ही व्याख्या करता है। उसका कहना है कि जाज़ एक तरह से अधिकारी सत्ता के प्रति विरोध और विद्रोह है और यही कारण है कि वह किशोरो, बुद्धि-जीवियो और नीग्रो लोगो को सबसे अधिक आकृष्ट करता है, क्योकि वे सभी समाज से तिरस्कृत होने के कारण उस तिरस्कार का कुछ प्रतीकार चाहते हैं।

एक कला के प्रति सवेदनशीलता मनुष्य को दूसरी कला के प्रति भी सवेदनशील बनाती है। यह सम्भव है कि जाज, जो किसी समय वेश्यालयो का जुगुप्सित सगीत समझा जाता था, अमेरिकनो मे अन्य कलाओ के प्रति भी आकर्पण और सवेदन पैदा करे।

किन्तु जाज है क्या? मार्शल स्टर्न्स का कहना है कि "वह एक अर्ध स्वतःस्फूर्त्त अमेरिकन सगीत है, जो तत्काल हृदयग्राही हो जाता है, जिसमे कण्ठस्वर का खुल कर स्वतन्त्रता से उपयोग किया जाता है और उसके साथ ही मिश्रित लय और ताल प्रवाहित होते हैं। वह तीन सौ वर्ष तक सयुक्त राज्य मे यूरोपीय और पश्चिम अफ्रीकी सगीत परम्पराओ के सम्मिश्रण के लिए किए गये परीक्षणो का परिणाम है। इसके प्रधान तत्त्व है—यूरोपीय समस्वरता, यूरो-अफ्रीकी राग और अफ्रीकी लय और ताल।"

किन्तु आम प्रचलित लोकप्रिय गीतो को, जिनमे से कुछ अवश्य ही खूब आकर्षक हैं और स्मृति-पट पर अकित हो जाते हैं, लेकिन अधिकतर

नियत प्रतिमान मे बाँध दिए गये हैं और हृदय को झकृत नही कर पाते, जाज सगीत समझना भूल होगा।

अन्य सगीत

नीग्रो भक्ति सगीत आज भी रचा जा रहा है। मूलतः यही सगीत जाज का आरम्भिक स्रोत रहा है। ये गान हृदय की गम्भीर भक्ति को, परम आनन्द और गहरे दुःख को अभिव्यक्त करते हैं। अमेरिका के उच्चतम सगीत की तुलना मे वे बखूबी ठहर सकते है। अन्य लोकसगीत भी हम लोगो के बीच मे अभी तक जीवित है। लीडबेली के काम के समय गाये जाने वाले गीत, वुडी गथरी और सिस्को हौस्टन के आधुनिक गाथा गीत, चरवाहे और लकडहारे जॉन जैकब नाइल्स आदि गायकों के पुराने अग्रेजी गाथा गीत और रेल कम्पनियो के मजदूरो के पुराने गान—ये सब हमे यह स्मरण कराते हैं कि देश मे नाना प्रकार की स्वर लहरियाँ और सगीत-शैलियाँ गूँज रही है, जिन्हे ससार के सभी भागो से आप्रवासी लोग अपने साथ यहाँ लाये थे और जिनका नई परिस्थितियो के अनुसार यथोचित सस्कार और परिष्कार कर दिया गया है।

अमेरिकन गीतकारो ने सगीत-शालाओ के लिए वृन्द सगीत की आधार-भूत स्वर-लहरियाँ खोजते-खोजते इस लोककला का आविष्कार कर डाला। इस लोक-सगीत की रचना इतनी समृद्ध और इतने बड़े पैमाने पर हुई कि उसके महत्त्व को सहज मे आँका नही जा सकता।

चार्ल्स आइव्स (१८७४-१९५४) यद्यपि अपने जीवन-काल मे अधिकतर उपेक्षित और अज्ञात रहा, तो भी आज एक महान् सगीतकार के रूप मे उसे धीरे-धीरे सम्मान मिलने लगा है। उसने शोएनबर्ग और स्ट्राविन्स्की की कुछ नई रचनाओ का पहले ही निर्माण कर दिया था। उसके 'कॉंकोर्ड, मैसाचुसेट्स (१८४०-१८६०)', 'थ्री प्लेसेज इन न्यू-इंग्लैंड' आदि सगीत ग्रन्थो और १५० के लगभग गीतो और सगीतशाला मे गाये जाने वाले सगीत मे अमेरिकन शैली पायी जाती है। उसकी पुस्तको के विषय मुख्यत. लोक-सगीत हैं और वह पुराने जमाने की

नीग्रो संगीत मडलियो या न्यू इगलैड के किसी कस्बे मे जुडने वाले गायको के दलो का वर्णन करने मे खूब आनन्द पाता है। इस लोक-कला सामग्री के बावजूद आइव्स ने सगीत की अपनी निज की शैली का आविष्कार किया, जो उसके जमाने से बहुत आगे की थी। उसमे बहु-स्वरता, मिश्रताल और सम एव असम स्वर विद्यमान थे।

जाज़ की शैली से महत्त्वपूर्ण तत्त्व ग्रहण कर आरन कोपलैड ने वृन्द सगीत मे एक नये प्राण का सृजन किया। उसका 'लिकन पोर्ट्रेट' गान और 'एपलेचियन स्प्रिग' गेय नाटिका स्पष्टत' अमेरिकन हैं, और इस गेय नाटिका की मूल वस्तु एक प्रचलित लोकप्रिय गीत है। रेडियो और सिनेमा फिल्मो के लिए उसने जिन गीतो की स्वर-रचना की है, उनमे उसने लोक गीत, लोक रुचि और आधुनिक वृन्द सगीत—तीनो को मिला दिया है जिससे उनका बहुत व्यापक स्वागत हुआ है।

रॉय हैरिस को, अन्य अनेक सगीतकारों की भाँति वाल्ट व्हिटमैन की कविता से प्रेरणा मिली। इस कविता को आधार बनाकर ही उसने अपनी 'सिम्फनी फार वॉयसेज' की रचना की। किन्तु उसकी 'फॉकसॉग सिम्फनी' का आधार लोकसगीत था।

अमेरिकन विषयो और अमेरिकन पृष्ठ भूमि पर इतनी बडी मात्रा मे उत्तम सगीत की रचना हुई है कि विशेषज्ञ लोग भी उसे पूरी तरह जान नही सकते। आर्थर फरवैल ने अपने गीतो की रचना के विषय नीग्रो, चरवाहे और इडियन लोगो के समाज से लिए। डगलस मूर ने लोक-कथाओ के आधार पर अनेक गेय नाटिकाएँ लिखी है। देहाती सारगी-वादको और ब्रास बैड मे, नृत्यशालाओ और सर्कसो मे उसे अपनी कितनी ही जीवन्त स्वर-लहरियो के लिए प्रेरणाए मिली। उनके आधार पर ही उसने अपनी रचनाओ मे हास-परिहास और विनोद का पुट दिया या विभिन्न दृश्य प्रस्तुत किये। जॉन आल्डेन कार्पेण्टर ने जाज से प्रभावित होकर लोकप्रिय हास-परिहास और गली-कूचो मे बजाये जाने वाले मामूली बाजो की ध्वनियो को, यहाँ तक कि कुत्ते के

भौंकने की आवाज तक को अपनी सगीतमय रचनाओ मे स्थान दिया। मेरी होव ने ऑरकेस्ट्रा वृन्द सगीत और वृन्द वादन के लिए एक ऐसे समूहगान की रचना की जो हृदय को झकृत कर मतवाला बना देता है। इसमे आधुनिक और प्राचीन दोनो सगीतो का अत्यन्त उत्कृष्ट सम्मिश्रण किया गया था। वर्जिल टामसन ने 'दि रिवर्स' और 'दी प्लो दैट ब्रोक दि प्लेन्स' जैसी फिलमो के लिए जो सगीत तैयार किया, उसने खूब लोकप्रियता प्राप्त की। वह लोक-सगीत और लोक-धुनो को अवसर अपने गीतो का आधार बनाता है।

विलियम ग्राण्ट स्टिल ने, जो नीग्रो सगीतकारों मे प्रमुख हैं, जाज की लय और ताल का लाभ उठाकर लिंचिग प्रणाली (अपराधी को न्यायालय मे न ले जाकर नागरिको द्वारा स्वय उसका फैसला करना और सार्वजनिक रूप से यातना देकर मार डालना) पर एक गीत-नाट्य लिखा और एक अफ्रो-अमेरिकन सिम्फनी की रचना की। रैण्डाल थाम्पसन की सैकड सिम्फनी अपनी समस्वरता, लोक-गीत की धुन की अनुभूति और सजीव लय के कारण एक ऐसा सगीत प्रस्तुत करती है, जो स्पष्टतः अमेरिकन भी है और आधुनिक श्रोताओ के लिए कर्णप्रिय भी। उसकी अन्य रचनाएँ भी इसी कोटि की है।

अमेरिकन सगीतकारो मे सबसे प्रसिद्ध जॉर्ज ग्रेश्विन है, जिसने जाज की परम्परा का सगीतशालाओ की परम्पराओ के साथ सफलता-पूर्वक मिश्रण किया है और जिसकी 'पोर्गी एन्ड बैस' रचना ने स्वर सौन्दर्य और यथार्थता को सम्मिश्रित कर लोकप्रिय नृत्य नाटिका और संगीत-नाटक की ओर मार्ग-निर्देशन किया है। ये दोनो ही अमेरिकन संगीत के सबसे अधिक लोकप्रिय रूप है। सारा ससार 'शो बोट' (जैराम केर्न), 'ओकलाहामा' और 'साउथ पैसिफिक' (रिचर्ड रोजर्स) और 'किस मी, केट' (कोल पोर्टर) के गीतो को जानता और पसन्द करता है। इस प्रकार की रचनाओ मे जो स्फूर्त्ति और सप्राणता है, सार्वभौम मानस को झकझोरने की जो ऊर्जा है, सहज मे स्मृति मे बैठ

जाने वाली और देर तक मस्तिष्क मे गूँजने वाली लोकप्रिय धुनें हैं, उनमे अमेरिका के जन-जीवन के अनुकूल शैली का खूब विकास और परिपाक हुआ है।

इस स्पष्टतः अमेरिकन सगीत की रचनाओ के साथ-साथ बहुत से सगीतकार ऐसी शैलियों मे भी रचनाएँ कर रहे है, जिन्हे स्ट्राविन्स्की, शोपनबर्ग और हिण्डेमिथ के प्रभावो ने सार्वभौम बना दिया है। सार्वभौम सगीत की रचना मे भी अमेरिकन सगीतकार अन्य देशो के सगीतकारो की तुलना मे खड़े होने का साहस कर सकते हैं। आधुनिक सगीत मे आरोह-अवरोह, लय और बहु-स्वरता की जो विशेपताएँ हैं, उन पर यहाँ बराबर प्रयोग होते रहते हैं। हेनरी डिक्सन कोवल ने पियानो वादन मे एक नई विधि का समावेश किया, जिसके टोन क्लस्टर बाँह के कोहनी के आगे के सारे भाग से बजाये जाते हैं। सेम्युअल बॉर्बर ने अपनी सैकंड सिम्फनी मे एक ऐसे बिजली के उपकरण का उपयोग किया, जिससे रेडियो सकेतो के समान ध्वनि निकलती है। ओटो लॉयनिंग ने टेप-रिकार्ड की गई ध्वनियो को वाद्य-सगीत मे मिलाने का प्रयोग किया है। कार्ल रगल्स ने भी साधारण आरकेस्ट्रा और उसके वाद्यो की सीमाओ को तोड कर नई ध्वनियो और नये वाद्यो को अपने वृन्द वाद्य मे समाविष्ट करने का प्रयत्न किया है। इन प्रयोगवादियो मे सबसे साहसी और रूढि-भजक एडगर वारेस है जिसका जन्म फ्रांस मे हुआ था, किन्तु जो १६१५ मे सयुक्त राज्य मे आ बसा। वारेस का विश्वास है कि सगीत का विकास तभी हो सकता है जबकि उस मे निरन्तर नवीन प्रयोग चलाते रहे। उसका कहना है कि जितने भी बड़े सगीत-कार हुए हैं, वे सभी प्रयोगवादी थे और सगीत को स्वतन्त्र होने के लिए शास्त्रीय बन्धनो को काट फेंकना चाहिए। 'डैजर्टस' जैसी नई सगीत रचनाओ का, जिनमे आरकेस्ट्रा की धुनो के सामान्य शोर-गुल के साथ लाउडस्पीकरों से सगीत के रिकार्डों की तीखी ध्वनि भी आ मिलती है, भौतिक प्रभाव "बहुत जबर्दस्त" बताया जाता है।

संयुक्त राज्य ने स्ट्राविन्स्की हिण्डेमिथ, शोएनबर्ग, बरटोक और मिलहौड जैसे निष्णात संगीतज्ञो के अमेरिकन नागरिक बन जाने या दीर्घ काल तक अमेरिका मे रहने से बहुत लाभ उठाया है। अमेरिकन संगीत और यूरोपीय संगीत, दोनो पर ही उनका प्रभाव स्पष्ट है।

आधुनिक शैली पर सगीत की रचना करने वाले और भी सैकड़ों व्यक्ति अमेरिका मे है, किन्तु उसमे से कुछ का ही यहाँ उल्लेख करना सम्भव है। रोजर सेशन्स, वाल्टर पिस्टन, लुई ग्रुएनबर्ग, व्लाडीमीर डुकेल्स्की, ल्यूकस फोस, जॉन विन्सेन्ट, ल्योनार्ड बर्नस्टाइन, पॉल क्रेस्टन, ल्यो सावरबी, विलियम शुमान, कोलिन मैकफी, जॉन केज और ग्यान-कार्लो मेनोटी इसी श्रेणी के सगीतकार हैं। कोलिन मैकफी के 'टाबू टाबूहान' मे बाली के सगीत की-सी लय है। जॉन केज सगीत के लिये एक नये किस्म के पियानो का इस्तेमाल करना पसन्द करता है। ग्यान-कार्लो मेनोटी की मनोहारी ओपेरा शैली का, जिसमें गीतिकाव्य की सी अभिव्यंजकता और नाना उज्ज्वल रग हैं, 'अमाल एण्ड दि नाइट विजिटर्स, के टेलीविजन पर प्रसारण से लाखो व्यक्तियो ने रसोपभोग किया है। हावर्ड हैन्सन और डीम्स टेलर ने अपने ओपेरा और सिम्फनियों में रोमाटिक तत्त्वों को कायम रखा है।

संगीत और सस्कृति

अन्य सभी वस्तुओ की भाँति सगीत का पथ-निर्देशन भी सरकार ने नही, बल्कि स्वैच्छिक सगठनो ने किया है। देश भर मे गाने-बजाने के लिए हजारो गायक-वादक दल सगठित किए गये हैं। इनमे सर्वाधिक प्रसिद्ध बैथलहम, पेनसिलवेनिया का बाख फेस्टिवल और लिड्सबर्ग, कन्सास मे प्रतिवर्ष 'मसीहा' का अभिनय करने वाला शौकिया कलाकारो का दल है। इन शौकिया कलाकारो को पेशेवर विशेषज्ञ संगीत निर्देशन प्रदान करते है।

कालेज और विश्वविद्यालय भी संगीत के केन्द्र हैं। अक्सर इन संस्थाओं मे छात्रों से कुछ-न-कुछ संगीत के ज्ञान की भी आशा की जाती

है। इनमे आधुनिक और प्राचीन दोनों तरह के उच्च कोटि के संगीत की महफिलो का आयोजन किया जाता है और आस-पास के इलाको में वे मुफ्त सगीत के कार्यक्रम प्रस्तुत करती है। इन सस्थाओ मे गीतो की स्वर-लिपि लिखना और उन्हे गायनवादन के द्वारा प्रस्तुन करना, दोनो की शिक्षा दी जाती है।

ग्रीष्मावकाश आते ही सगीत-शिविरों, सगीत सम्मेलनों और सगीत कक्षाओ का जोर-शोर से आरम्भ हो जाता है। शौकिया कलाकारो के दल तरह-तरह की धुनें निकालने लगते हैं, जो पहले से रचे हुए गीतो को स्वरबद्ध करती है और नये गीत रचने के लिए गीतकारों को प्रेरणा देती हैं। गायको और वादको के सगीत शिविरो मे किशोर लडके-लडकियाँ एकाकी एव समवेत गायन-वादन के उत्तमोत्तम कार्यक्रम पेश करते हैं। बोस्टन सिम्फनी जैसे प्रसिद्ध आरकेस्ट्रा नियमित रूप से देहातो मे जाकर तारो की ठण्डी छांह मे हजारो श्रोताओ के सम्मुख अपना सगीत प्रस्तुत करते हैं।

कल्पना कीजिए कि आप एकाकी वादक हैं और ओवो या वायलिन बजाते हैं। तब आप म्यूजिक अनलिमिटेड से अपने मन के अनुसार किसी प्रसिद्ध सिम्फनी का ऐसा रिकार्ड खरीद सकते हैं, जिसमे आपके वाद्य के सिवाय शेष सब वाद्य हो। उस रिकार्ड के साथ-साथ अपना वाद्य बजाकर आप मजे से एक पूर्ण सिम्फनी का स्वय अग बनकर उसका रसोपभोग कर सकते हैं।

सयुक्त राज्य अब अपने सगीतकारो को स्वय ही शिक्षा देता है, इस बारे मे अब वह यूरोप पर आश्रित नही है। हमारे हर तीन पेशेवर गायको और वादको मे से एक अब अमेरिकन ही है और यह बात सभी स्वीकार करते हैं कि अमेरिका मे भी सगीत का स्तर किसी भी कदर यूरोप के अथवा ससार के किसी भी अन्य देश के सगीत से कम ऊँचा नही है। किन्तु दुर्भाग्य से इन श्रेष्ठ कलाकारो मे से कितने ही एसे हैं जिनकी कला को सगीतशालाओ और रगमचो के प्रबन्धको ने खरीद

लिया है, इसलिए जनसाधारण तक उनका रस पहुँच नही पाता। अमेरिकन गायक सघ ने ऐसे सगीत के गायन और वादन पर प्रतिबन्ध लगा दिया है, जो उसकी स्वाभाविक अभिवृद्धि और विकास मे बाधा पहुँचाता है।

सगीत के श्रोताओ की सख्या मे भारी वृद्धि हो जाने से अब सगीत भी व्यापार की वस्तु बन गया है। अब सगीत प्रस्तुत करने वालो को जन-रुचि का भी घ्यान रखना पड़ता है और इसका परिणाम यह है कि वे इस क्षेत्र मे परीक्षण और प्रयोग नही कर सकते। श्रोताओ की विशाल संख्या को प्रसन्न रखने के लिए सगीतकार को अपनी प्रतिभा पर बन्धन लगा देना पड़ता है, ताकि उसके नए प्रयोगो से कही श्रोता बिगड़ न उठें। यह कुण्ठा उसे अपने हृदय मे मचल रहे किसी नए स्वर को बाहर अभिव्यक्त करने से रोक देती है। इसका एक परिणाम यह भी होता है कि सगीत का रचयिता गायक-वादक के मुकाबले मे ही नही, उसकी रचनाओ को प्रस्तुत करने वाले रेडियो स्टेशन या सिनेमा स्टुडियो एव विज्ञापन कर्ता के मुकाबले भी गौण हो जाता है। दूसरी ओर उसकी रचनाएँ ग्रामोफोन के रिकार्ड आदि के द्वारा लोगो के लिए इतनी आम-फहम और सुपरिचित हो जाती हैं कि जनता फिर नये सगीत की माँग करने लगती है।

लेकिन इस क्षेत्र मे भी एक प्रतिसन्तुलनकारी शक्ति मौजूद है। विश्वविद्यालयो के सामने कोई व्यापारिक प्रलोभन नही होता और सरकार का भी उन पर कोई अकुश नही होता, इसलिए वे सगीत-रचयिता और प्रयोगवाद-प्रेमी श्रोताओ के लिए अनुकूल वातावरण और अवसर उपस्थित कर देते है।

नृत्य कला

कला की खोज और साधना करते हुए अमेरिकनो ने मानो एका-एक नृत्य को फिर से खोज डाला है। नृत्य पुराने जमाने मे हमेशा ही अमेरिकन जन-जीवन का अंग रहा है। उन दिनों जो सामूहिक लोक-

नृत्य ग्राम-जीवन को सौंदर्य और रंगीनी प्रदान करते थे, उन्हे अमेरिकनो ने नई आवश्यकताओ और नये माध्यमो के अनुसार ढाल लिया है। इसाडोरा डकन, रथ सेंट डेनिस और टेड शौन और उनकी नृत्य मडलियो ने सबसे पहले स्वच्छन्द मुक्त नृत्य और जातीय नृत्य लाखो अमेरिकन नर-नारियो तक पहुँचाये। उनके अधिकतर नृत्य आध्यात्मिक नृत्य थे और गिरजाघरो मे लोगो ने उन नृत्यो से देवता की आराधना की। उनमे से अनेक नृत्यो की कथा-वस्तु विशुद्ध अमेरिकन विरासत से ली गई थी।

अन्य अनेक महान् नृत्य-विशारदो ने भी एक ऐसी नृत्य-कला का विकास किया है, जो गति, भंगिमाओ और मुद्राओ के साथ संगीत का समन्वय करके केवल मानवीय भावो को ही नही, बल्कि सामाजिक अन्याय, व्यक्तिगत दु ख और उद्वेग या विजय एव प्रकृति के विभिन्न रूपो को अभिरूपित कर सकती है।

इस बीच नृत्य-नाटिका, जो किसी समय यूरोप की एक खास चीज समझी जाती थी, अमेरिका की भूमि और आबो-हवा मे भी खूब जम गई और इन नृत्य-नाटिकाओ का प्रदर्शन करने वाली कितनी ही कम्पनियाँ अमेरिका मे बन गईं। ऐग्निस डि मिल ने जब नृत्य-कला को सगीत की कॉमेडी के अनुकूल ढाला और जब उसने बैले और आधुनिक नृत्य एव लोक-नृत्य तीनो का 'ओकलाहोमा!' मे सम्मिश्रण किया, तब बैले नृत्य असन्दिग्ध रूप से अमेरिका की भी अपनी चीज बन गया। नृत्य अब केवल नाटक के बीच मे शोभा की एक पृथक् वस्तु नही रह गया था, बल्कि समूचे नृत्य कार्यक्रम का एक अग बन गया था। सिनेमा फिल्मो मे भी, जो फ्रेड एस्टेयर और जेन केली के कुशल नृत्यो से पहले ही काफी समृद्ध थी, नृत्य अब एक अनिवार्य अग बन गया। 'सैवन ब्राइड्स फॉर दि सैवन ब्रदर्स' फिल्म मे नृत्य कथानक और चरित्र विकास का इतना स्वाभाविक अग बन गया था कि दर्शक

उसे कथानक से अलग करके देख ही नही सके और इसी के लिए दर्शकों ने उसकी सबसे ज्यादा प्रशंसा की।

नृत्य विद्या टेलीविजन मे और भी अधिक महत्त्वपूर्ण भाग अदा कर रही है और अब उच्च कोटि के अनेक नर्तक टेलीविजन कार्यक्रमों मे हिस्सा लेते हैं। नृत्य केवल गम्भीर ही नही, हल्के हास्यपूर्ण भी हो सकते है, जैसा कि मिमिक हास्य नर्तकी इवा किचेल अपने नृत्य के परिधान और अवगुण्ठनो मे फस कर नृत्य मे तरह-तरह के हास्य और विनोद का पुट देती है।

नृत्य की शिक्षा को अमेरिका मे प्रारम्भ करने का मुख्य श्रेय मार्था हिल और मार्गरेट डब्लर को है। इस शिक्षा ने अमेरिका मे नर्त्तक ही तैयार नही किये, नृत्य-दर्शक भी तैयार किये और नृत्य को एक कला और विद्या के रूप मे सम्मान दिलाया।

चित्रकला और मूर्तिकला

अमेरिकन चित्रकला पर यदि निष्पक्ष दृष्टिपात किया जाय तो यह स्पष्ट हो जाएगा कि वह फ्रांस को छोड़ कर, जो इस कला मे ससार का नेता है, और किसी भी देश से पीछे नही है। यथार्थवाद अमेरिकन चित्रकला मे प्रधान भाव रहा है, किन्तु यह यथार्थवाद भी कोरी यथार्थ-वादिता नही, उसमे रोमाटिक भाव भी मिश्रित रहा है। जार्ज इन्नेस, टामस ईकिन्स, विनस्लो होमर, जेम्स ए० मैकनील व्हिस्लर, एल्वर्ट राइडर, जॉन सिगर सार्जेण्ट, चाइल्ड हैसम और मेरी कैसेट आदि प्राकृतिक दृश्य के चितेरो ने उन्नीसवी शताब्दी के अन्त मे फ्रेंच इम्प्रेश· निस्ट सिद्धान्तों को अपना कर वर्तमान शताब्दी की अमेरिकन चित्रकला की ठोस नीव रखी। इनमे से विनस्लो होमर समुद्र के दृश्यो को अंकित करने मे निपुण है। ए०मैकनील व्हिस्लर और एल्वर्ट राइडर की शैलियाँ विशुद्ध व्यक्तिवादी शैलियाँ हैं जिनमे गीति-काव्य और रहस्यवाद की छाया है। ,जॉन सिगर सार्जेण्ट भद्र वर्ग के लोगो के चित्र अंकित करने मे कशल है।

रॉबर्ट हेनरी, जॉन स्लोन और जॉर्ज वेलोज के नेतृत्व मे, जिन्होंने 'दि एट' (आठ) के नाम से सुप्रसिद्ध कलाकार मण्डल बना रखा था, चित्रकला के क्षेत्र मे एक ऐसा आन्दोलन आया, जो उसे पुरानी रूढ़िवादी शैली और यूरोप के प्रभुत्व से दूर पूर्ण स्वतन्त्रता की ओर ले गया। यह स्वतन्त्रता पाकर कलाकार अपनी इच्छा के अनुसार विषय और टैकनीक का चुनाव करने लगे। उनका अधिक आग्रह अमेरिकन दृश्यावली को यथार्थवादिता से चित्रित करने के लिए था। इस स्वतन्त्रता ने ही "ऐश कैन स्कूल" नामक कलाकार संघ की स्थापना की जिसके सदस्य निडर होकर जो कुछ जैसा देखते थे, वैसा ही चित्रित करते थे।

आधुनिक अमेरिकन चित्रकला के इतिहास मे सबसे महत्त्वपूर्ण मोड़ का वर्ष १६१३ है, जबकि न्यूयार्क मे आर्मरी शो प्रदर्शनी ने पहली बार अमेरिकन कलाकारो को इस बात की पूर्ण प्रतीति कराई कि फ्रांस मे चित्रकला में निपुण कलाकार क्या कुछ कर रहे हैं। उसके बाद से ही अमेरिका मे फोविज्म, क्यूबिज्म, एक्सप्रेशनिज्म, डाडा, सरियलिज्म और इसी तरह के अनेक आधुनिक वाद और आन्दोलन आये। सबसे महत्त्व-पूर्ण बात यह थी कि कलाकार ने ससार को देखने के लिए आधुनिक-वादी रवैया अपनाया (वास्तव मे यह रवैया प्राचीन ही था)। वह विश्व को ऐसे देखने लगा, मानो वह कोई सर्वथा नई वस्तु हो, और पुरानी रूढियो के बन्धनो से अपने आपको पूर्णत. मुक्त कर विशुद्ध आन्तरिक प्रेरणा से उसका चित्रण करने लगा। आर्मरी शो ने औद्योगिक डिजा-इनो, कपड़े और आन्तरिक सजावट के डिजाइनो मे, यहाँ तक कि मकानो मे नल लगाने और धातु के घरेलू भारी सामान एव मशीनो आदि के डिजाइनो मे भी एक क्रान्ति कर दी। लोगो ने इस प्रदर्शनी मे से कला की बहुत-सी सामग्री खरीद ली, जो बाद मे सग्रहालयो मे रख दी गई।

ऐब्स्ट्रैक्ट (अमूर्त्त) कला के प्रारम्भिक अमेरिकन उन्नायको मे मैक्स वेबर, चार्ल्स डेमथ, जॉन मैरिन, स्टुअर्ट डेविस और आर्शिल गोर्की जैसे व्यक्ति थे। अन्ततः इन लोगों की कृतियो से ही अमेरिकन ऐब्स्ट्रैक्ट

इम्प्रेशनिस्ट शैली का विकास हुआ। सन् १९४० के दशक मे जैकसन पोलक, रॉबर्ट मदरवैल, विलियम बैंजियोट्स से और मार्क रोथको इस शैली के प्रमुख कलाकार थे। इनके चित्र किसी वस्तु के चित्र नही थे, बल्कि स्वय सृजन-क्रिया के चित्र थे। सन् १९४८ मे जब जैकसन पोलक ने फर्श पर एक विशाल कैनवास बिछा कर उस पर रग बिखेरना और फैलना शुरू किया, तब उसने जिस कलाकृति को जन्म दिया, वह एक तरह से 'सृजन की विस्फोटक गति' को कैनवास पर उतारने वाली उत्कृष्टतम कृति थी। उससे बढिया कृति की उस समय कल्पना भी नही की जा सकती थी।

आज अमेरिका मे अनेक उच्च कोटि के जो ऐब्स्ट्रैक्शनिस्ट कलाकार हैं उनमे विलेम डि कूनिंग, मार्क टोबी, विलफोर्ड स्टिल और फ्राज क्लाइन के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। विलेम डि कूनिंग के विशाल कैनवास व्यग्य मे निपुण है। मार्क टोबी के चित्र कातिब की लेखनी से चित्रित प्रतीत होते है जिन पर पूर्व की छाया है। विलफोर्ड स्टिल के रंग' कैनवास पर मानो नक्शा बनाते हैं। फ्रॉज क्लाइन के काले और सफेद रग के चित्रो की जापान मे बहुत प्रशसा हुई है। इस वर्ग के कलाकारो की विशेषता यह है कि वे रग पर बहुत जोर देते है और अपनी तूलिका की गति पर कोई अंकुश नही लगाते।

आधुनिकवादी चित्रकला के साथ-साथ यथार्थवाद की पुरानी परम्परागत शैली भी चल रही है जिसकी कृतियो के विषय आम तौर पर अमेरिकन होते हैं। ओहायो मे चार्ल्स ई० बर्चफील्ड, मिसूरी में टामस हार्ट बेण्टन, कन्सास मे जॉन स्टुअर्ट करी और आयोवा मे ग्राण्ट वुड पुरानी शैली के प्रमुख कलाकार है एडवर्ड हॉपर अपने सामने विद्यमान सामान्य दृश्य को बहुत महत्त्व देता था, इसलिए उसने गुजरते हुए दृश्यो के भीतर भी नित्यता और स्थायित्व का तत्त्व देखा और उसे अपनी चित्रकला के भीतर से व्यक्त किया। यद्यपि ऐब्स्ट्रैक्ट (अमूर्त) कला का उसके लिए कोई अधिक उपयोग नही था तो भी उसकी अपनी

कृतियों ने अनावश्यक विस्तार को दबाकर मोटे समतलो और रंगो के क्षेत्रो को अभिव्यक्त कर अमूर्तीकरण और प्रस्तुतीकरण के बीच सेतु का काम किया।

विशिष्ट यथार्थवाद और आकारिक डिजाइन को सम्मिश्रित करने वाले अन्य कलाकारों मे जॉर्जिया ओकीफ, चार्ल्स शीलर, पीटर ब्लूम और जॉन ऐथर्टन के नाम उल्लेखनीय हैं।

किन्तु यह सम्भव है कि यदि एक औसत अमेरिकन से पूछा जाए कि उसे किस चित्रकार की कला सबसे ज्यादा पसद है तो वह नॉर्मन रॉकवैल का नाम ले। यद्यपि रॉकवैल का नाम कला की पुस्तको मे बहुत कम आता है, तो भी उसके टैकिनकल लालित्य और फोटोग्राफी की-सी शैली ने, जिसमे मीठे विनोद और चुभते व्यग्य, दोनो का पुट था, और उसके भावुकतापूर्ण घरेलू चित्रण ने उसे उन लोगो का प्रिय बना दिया है, जो यह चाहते हैं कि उनकी कला एक कहानी कहे।

पिछले बीस वर्षो मे सभी स्तरो पर कला मे लोगो की दिलचस्पी बहुत बढ़ी है। आर्थिक मन्दी ने यह स्वीकार कर कि बेरोजगार कलाकारो का भी सरकार पर उतना ही दावा है, जितना कि बेरोजगार ट्रक ड्राइवरो का, कला को सम्मान दिलाया। उन्होने जो भित्ति-चित्र अकित किए उन्होने कला मे लोगो की दिलचस्पी पैदा की। इससे पूर्व 'इण्डैक्स ऑफ अमेरिकन डिजाइन' मे प्रकाशित लोक कला की कृतियों ने चित्रकला को इतना लोकप्रिय बनाया कि लोगो ने औपनिवेशिक युग के विलियम्सबर्ग (वर्जीनिया) नगर का हमारी सांस्कृतिक विरासत के रूप मे पुनर्निर्माण किया। सयुक्त राज्य की सरकार अपनी इमारतों के लिए कलाकृतियो को खरीदकर विश्व की सबसे प्रमुख कला की सरक्षक बन गई।

समकालीन चित्रकला की कृतियो के सग्रह के लिए देश मे अनेक संग्रहालय भी स्थापित हुए, खासकर न्यूयार्क मे आधुनिक कला संग्रहालय कायम किया गया। छोटे-छोटे कस्बो ने भी अपने निवासियो के लिए

विवादग्रस्त कला की प्रदर्शनियाँ आयोजित करने के लिए धन-सग्रह किया। वर्जीनिया ललित कला सग्रहालय ने सबसे पहले एक चलती-फिरती कला-प्रदर्शनी की स्थापना की, जिसने सारे राज्य मे घूम-घूम कर लोगों को सुन्दर कला-कृतियो से परिचित कराया। देश भर मे छोटे-वडे कला सग्रहालयो की स्थापना का एक लाभ यह हुआ कि उनमे वच्चो को आमन्त्रित कर तरह-तरह की कलाओ के लिए प्रोत्साहन दिया गया। उनसे चित्र वनाने, नाटक खेलने, कविता करने, बुनने या अन्य कलाओ मे भाग लेने के लिए कहा जाता। इससे कला को जीवन मिला और आज अमेरिका मे पाँच लाख व्यक्ति ऐसे है जो तैल-चित्र बनाते है।

मूर्त्तिकला मे भी भारी परिवर्त्तन हुआ। पहले जहाँ वह शरीर के अगो को यथार्थवादिता से प्रदर्शित करती थी, वहाँ अब वह सर्वथा भिन्न मार्ग पर चल पडी है। जैकव एप्सटाइन का जन्म यद्यपि अमेरिका मे हुआ था, पर वह इग्लैड मे चला गया। रूडो ब्लेश ने उसके सम्बन्ध मे लिखा है कि "उसने अपनी मूर्त्तिकला से इगलैड के लोगो को इतना चमत्कृत किया कि उन्होने उसे नाइट के खिताव से विभूषित कर दिया।" पॉल मैनशिप ने, जो लोक-कला और उच्चवर्ग की कला, दोनो मे निपुण है, अनेक स्मारक मूर्तियाँ गढी है। जो डेविडसन, मेहनरी यग, गरट्रूड वाडर-विल्ट व्हिटनी, गुट्जन बोर्गलम और मैल्विना होफमैन की कृतियो की भी उपेक्षा नही की जा सकती। विलियम जोरक, इसामु नोगुची, चेम ग्रॉस रावर्ट लॉरेंट आदि अनेक प्रमुख मूर्त्तिकारो ने प्राचीन रूढिवादी फार्मूलो को ठुकरा कर लकडी और पत्थर पर पूर्ण स्वतन्त्रता से काम किया और नई अतियथार्थवादी कल्पनाएँ अपनाईं। पिछले बीस वर्षो मे मूर्त्तिकला के क्षेत्र मे इतना वड़ा काम हुआ है कि सैकड़ो कलाकारो के नाम गिनाए जा सकते है, ऐसी दशा मे केवल दस-बीस का नामोल्लेख करना अन्याय होगा।

अलेग्जैंडर.कैल्डर और उनका दल स्थान-स्थान पर जाकर विभिन्न मसालो से तरह-तरह की मूर्त्तियाँ या अन्य रचनाए गढते हैं, जिनमे खाली स्थान को बहुत महत्त्व दिया जाता है। मूर्त्ति कला के क्षेत्र मे यही सबसे नई प्रगति है। जेम्स अर्न्स्ट ने टेलीविजन के 'प्रोड्यूसर्स शा केस' नामक प्रदर्शन के लिए जो रचना तैयार की है, उसने लाखो व्यक्तियो को इस किस्म की कला से परिचित कराया है।

वास्तु कला

कार्यात्मकता (फकशनलिज्म) की जडें सयुक्त राज्य मे बहुत गहरी है। प्रारम्भिक अधिवासियो ने अपने घरो पर जो औजार, फर्नीचर या घरेलू सामान बनाये थे उनमे अनेक बार इतने बढिया डिजाइनो की चीजें बनी कि सग्रहालयो ने अब तक उन्हें सग्रह कर के रखा हुआ है। न्यू इग्लैंड मे अग्रेजो ने जो साधारण घर बनाये थे या डेलेवारा मे स्वीडिश लोगो ने जो लकडी के मकान बनाये थे, वे सीधे-सादे तो थे ही, उनमे उपलब्ध सामग्री का यथासम्भव उत्तम उपयोग भी किया गया था।

सन् १८४० मे होरेशियो ग्रीनो ने औद्योगिक युग की देहरी पर खडे होकर कार्यात्मकता की समुचित व्याख्या की थी। उसने लिखा था "सौन्दर्य से मेरा अभिप्राय है कार्यात्मकता का परिणाम।" उसकी नजरो मे निरी कला के लिए कला का मूल्य नही था, वह जहाजो, पुलो और मशीनरी के निर्माण मे कला के सहयोग को ही कला मानता था। वह कहता था कि हर भवन या ढाँचा बनाते हुए उसमे खाली स्थान या आकार का आकल्पन ऐसे वैज्ञानिक ढग से किया जाना चाहिए कि वे उसकी उपयोगिता को बढा सकें और यथास्थान किये गये हो। उसके विचार मे लोकतन्त्र, विज्ञान और उद्योग, ये तीनो ही सौन्दर्य बोध के प्रतिमान के आधार हैं।

ग्रीनो के सिद्धान्त जॉन रोब्लिंग द्वारा ब्रुकलिन पुल के डिजाइन और निर्माण मे, जो १८६९ में प्रारम्भ हुआ था, साकार हुए। इस डिजाइन मे जो कसौटियाँ अपनाई गईं, वे अब भी उपयोग मे आ रही है।

लेकिन सयुक्त राज्य ने कार्यात्मकवाद और उपयोगितावाद से प्रारम्भ अवश्य किया, किन्तु बाद मे वह भी यूरोप की भाति उपयोगिता को भूलकर प्रदर्शनात्मक बाह्य रूप और आलकारिक सज्जा के फेर मे पड़ गया। दुर्भाग्य से यह उस समय हुआ जबकि अधिकतर देश का निर्माण हो रहा था। यही कारण है कि आज हमे देश मे ऐसे भवन बहुत बडी सख्या मे मिलते हैं, जो बाह्य आकार-प्रकार मे आडम्बर और प्रदर्शनात्मक कला के नमूने है।

किन्तु हेनरी होब्सन रिचर्डसन (१८३८-१८८६) और लुई सुलिवन (१८५६-१९२४) जैसे वास्तु-शिल्पियो के नेतृत्व मे शिकागो शैली के परिणामस्वरूप अमेरिकन स्थापत्य-कला फिर से प्रदर्शन और बाह्य आलकारिकता को छोड़कर उपयोगितावाद मे लौट आई। यह एक सयोग मात्र नही था कि वित्तीय मनोवृत्ति वाले न्यूयार्क के बजाय शिकागो मे, जो कृषि-जीवियो के राजकीय नियन्त्रणवादी आन्दोलन का गढ था, लोकतन्त्र पर आधारित कार्यात्मकवाद पल्लवित और पुष्पित हुआ। रिचर्डसन ने इमारतो के सामने के भाग का डिजाइन इस ढग का बनाया कि वह उसे व्यर्थ की सजावट के साथ मिलाकर गडबड़ाने के बजाय इमारत की आन्तरिक व्यवस्था की झाकी दे सके। सुलिवन ने यद्यपि इस्पात के ढाचे या ऊँची इमारतो का आविष्कार नही किया तो भी उसने सेंट लुई की वेनराइट बिल्डिग और श्लेसिंगर डिपार्टमेट स्टोर जैसे कुछ प्रसिद्ध भवनो का निर्माण किया, जिनके डिजाइन आधी शताब्दी तक आदर्श मॉडल का काम करते रहे। सन् १८८० के दशक मे सुलिवन ने अपने इस प्रसिद्ध सूत्र की घोषणा की कि "आकार कार्य या उपयोगिता को अभिव्यक्त करता है और कार्य या उपयोगिता आकार को निर्धारित करती है।" सुलिवन सामाजिक चेतना से अनुप्राणित था,

इसलिए उसने कहा था कि हमे ऐसी वास्तु कला अपनानी चाहिए जो समाज की आवश्यकताओ को पूरी कर सके और प्रगति की वाहक और साधन बन सके।

सुलिवन के शिष्य फ्रैंक लॉयड राइट (१८६९-१९५९) ने भी अपने बनाये भवनो मे अपने गुरु के आदर्शों को क्रियान्वित किया। उस ने जो भवन बनाये, उनमे उसने इस बात का ध्यान रखा कि अपने बाह्य प्राकृतिक परिवेश के साथ उनका सामजस्य हो। उसने उनमे समानान्तर धरातलो का उपयोग किया ताकि धरती के साथ उनकी पकड़ मजबूत हो और भीतर के भाग मे खुला स्थान हो, वे बन्द बक्से की तरह सकरे न हो। राइट के डिजाइन का आरम्भ इस दृष्टिकोण से नही होता था कि मकान बाहर से देखने मे कैसा होना चाहिए, बल्कि वह इस विचार के साथ प्रारम्भ होता था कि उसके भीतर रहने वाले की आवश्यकताएँ क्या होगी। वह भवन मे रखे जाने वाले फर्नीचर और साज-सज्जा के सामान का डिजाइन भी इस ढग से करता था कि वह उसका स्वाभाविक अग बन सके, उसमे सादगी और गम्भीरता हो।

राइट भवनो के नक्शे, रचना और यान्त्रिक ढाचे के मामले मे बहुत कुशल और निष्णात था। वह हमेशा नये और अद्भुत आकारो का आविष्कार करता था। गुगेनहाइम म्यूजियम का डिजाइन उसी की देन है। वह भवन-निर्माण की नई टेकनीको का भी आविष्कार करता था।

हस्तशिल्प की वस्तुओ के उत्पादन मे प्रारम्भ मे जो सादगी और उत्पादन कौशल की परम्परा कायम हुई थी, वही औद्योगिक युग मे भी प्रतिष्ठापित हुई। जॉन्सन वैक्स कम्पनी के लिए राइट द्वारा बनाई गई प्रयोगशाला, जनरल मोटर्स कम्पनी का औद्योगिक अनुसन्धान केन्द्र या ऐल्बर्ट काहन के कारखाने ऐसी इमारतें हैं जो उपयोगितावादी

दृष्टिकोण की विजय को सूचित करती है। इन इमारतो मे सादगी और उपयोगिता ही सौन्दर्य है।

कार्यात्मकता या उपयोगितावाद की पहली विजय औद्योगिक भवनो मे हुई, जबकि गगनचुम्बी इमारतें और कारखाने बनाते हुए सादगी और द्रुत निर्माण को दृष्टि मे रखा गया। इसका परिणाम यह हुआ कि ये इमारतें बहुत जल्दी बनकर खडी होने लगी। उसके बाद रिहायशी मकानो और स्कूलो मे और अन्त मे गिरजाघरो और पुस्तकालयो के निर्माण मे भी, जहा कि परम्परा के हावी होने से पुरानी शैली की ही पुनरावृत्ति की आशका थी, इसी पद्धति का उपयोग हुआ। घरो के निर्माण मे अब इस सिद्धान्त को ध्यान मे रखा जाता है कि उनके भीतरी स्थान का उपयोग बहुविध होना चाहिए। पहले जहा बैठक, खाने का कमरा और शयनागार अलग-अलग छोटे-छोटे कमरो के रूप मे होते थे, वहा अब उन्हें मिलाकर एक ही बडे कमरे मे परिणत कर दिया गया है। इस विशाल कमरे का उपयोग इन तीनो कामो के लिए होता है। यहा तक कि आजकल रसोईघर भी इस बडे कमरे मे ही शामिल कर दिया जाता है, सिर्फ एक छोटा काउन्टर उसे उनसे अलग करता है। रसोईघर को इन कमरो से मिला देने का कारण यह है कि आज खाना पकाने का काम नौकरानियाँ नही करती, गृहिणी को स्वय करना पडता है और उससे पर्दे की कोई आवश्यकता नही है।

राइट का यूरोप मे बहुत प्रभाव था, इसलिए अनेक यूरोपीय स्थापत्य-कला विशेषज्ञो ने अमेरिकन भवन-निर्माण कला को समृद्ध किया है। रिचर्ड न्यूट्रा, एँटोनिन रेमण्ड, मार्सल ब्रॉयर, वाल्टर ग्रोपियस और मीज वान डेर रोहे ने यूरोप से यहा आकर एक अन्तर्राष्ट्रीय शैली की स्थापना की है। ल कोर्बूसियर यद्यपि सयुक्त राज्य मे बहुत कम समय तक रहा है तो भी शेष ससार की तरह सयुक्त राज्य को भी उसने बहुत प्रभावित किया है। फ्रैंक लॉयड राइट ने टोकियो मे इम्पीरियल होटल का डिजाइन तैयार किया था। जापानी स्थापत्य-कला ने भी राइट तथा

कुछ अन्य वास्तुकारो के द्वारा अमेरिकन वास्तुकला को प्रभावित किया है।

इन सब प्रभावो ने और टैक्निकल उन्नति के फलस्वरूप भवन-निर्माण की नई और सस्ती सामग्रियो के आविष्कार ने अमेरिका के चेहरे को बदल दिया है और निरन्तर बदल रहा है। अमेरिका के गगन-चुम्बी भवनो मे इन प्रभावो के कारण ही उपयोगितावादी सादापन भी है और विशालता की भव्यता भी। सामूहिक पैमाने पर बनाये गये रिहायशी मकानो की बस्तिया, जिनमे खेलने और मनोरजन के लिए पार्क है और विशाल खुले स्थान से घिरे बाजार हैं, नई आधुनिक शैली की उदघोषणा करती हैं। घरो और नगरो की स्थापना के लिए आज जो नये डिजाइन तैयार किये जा रहे हैं उनमे प्रवृत्ति यह है कि खुला स्थान खूब हो, जहा लोग खुलकर सास ले सकें, परिवार आन्तरिकता और आत्मीयता से जीवन बिता सके, लोग अपने अवकाश का अधिकाधिक उपयोग कर सकें, घर के भीतर का खाली स्थान और बाहर का खाली स्थान मिलकर एकाकार हो सकें और सामूहिक खेल-कूद के लिए भी पर्याप्त स्थान हो। ऐसा प्रतीत होता है कि सयुक्त राज्य मे अब वास्तु कला मे भी एक पुनर्जागरण का युग आ रहा है।

अध्याय : ग्यारह

सामूहिक प्रचार-माध्यम

जब हम कला के प्रचार से प्रचार की कला पर आते है तो हम दोनों मे एक बेचैनी भरा सम्बन्ध देखते है। सामूहिक प्रचार के साधन सभी प्रकार की कलाओ की प्रतिभा का उपयोग करते हैं। इस उपयोग की उपज कभी-कभी ऐसी होती है कि उसे कला की श्रेणी मे रखा जा सके किन्तु सामूहिक प्रचार माध्यमो मे ऐसी प्रवृत्तियाँ भी शामिल होती हैं जो कलापूर्ण नही होती और जिनका प्रयोजन सृजनात्मकता के बजाय मुनाफा होता है।

विज्ञापनकर्त्ताओ ने १९५६ मे विज्ञापन पर दस अरब डालर के लगभग व्यय किये, जिनका अधिकांश भाग सामूहिक प्रचार के साधनों —टेलीविजन, रेडियो, समाचार-पत्रो और पत्रिकाओ—मे खर्च किया गया। विज्ञापन ही इनमे से कुछ को जीवित रखे हुए है। हमारे देश मे ६२६ सामान्य पत्रिकाए, १७०० दैनिक समाचार-पत्र, ९,००० साप्ताहिक पत्र, २९४७ रेडियो स्टेशन और ४६५ टेलीविजन स्टेशन विज्ञापनदाताओ की बदौलत ही जीवित है। स्वभावत: इन सामूहिक माध्यमो से विज्ञापनदाता का विचार और दृष्टिकोण ही विज्ञापनो और घोषणाओ के रूप मे प्रकाश मे आता है और वह पत्र-पत्रिकाओ के लेखो, सम्पादकीय टिप्पणियो और रेडियो एव टेलीविजन के कार्यक्रमों को प्रभावित करता है। विज्ञापनदाता लोगो को मनोरजन प्रदान कर ग्राहक बनाते है और चूँकि हर सिगरेट या साबुन निर्माता अपने माल के अधिकाधिक ग्राहक चाहता है, इसलिए वह सब से अधिक लोकप्रिय रेडिया या टेलीविजन कार्यक्रम को अपनाना और सबसे अधिक प्रसार वाले समाचार-पत्र या पत्रिका मे विज्ञापन करना पसन्द करता है।

रेडियो और टेलीविजन स्टेशनो की पत्र-पत्रिकाओ के साथ भी श्रोता और पाठक जुटाने मे प्रतिस्पर्धा चलती रहती है।

टेलीविजन

किन्तु सब से अधिक व्यक्तियो को कौन आकर्षित कर पाता है ?

टेलीविजन पर 'फ्लेडरमाउस' पर आधारित नाटक का कार्यक्रम १ करोड ३०लाख व्यक्तियो ने और 'ला बोहेम' पर आधारित नाटक का प्रसारण १ करोड २० लाख व्यक्तियो ने देखा। जब नेशनल ब्राडकास्टिंग कम्पनी ने पाँच लाख डालर खर्च कर लॉरेन्स ओलिवियर के 'रिचर्ड दि थर्ड' के आधार पर नाटक प्रस्तुत किया तो उसे पाँच करोड व्यक्तियो ने सुना। किसी भी कार्यक्रम के लिए इतने श्रोता दिन के समय इससे पूर्व कभी उपलब्ध नही हुए थे। यद्यपि यह कहा जाता है कि लोगो मे अभी तक बारह वर्ष पुरानी मनोवृत्ति है, तो भी यह स्पष्ट है कि इस तरह की आलोचनाओ के बावजूद जब भी कोई अच्छी चीज प्रसारित की जाएगी तो लोग उसकी ओर आकृष्ट होगे ही।

लेकिन टेलीविजन को कुछ समय तक देखने के बाद ही आसानी से यह समझा जा सकता है कि उस पर सब कार्यक्रम 'फ्लैडरमाउस' और 'रिचर्ड तृतीय' जैसे उच्चकोटि के ही प्रसारित नही किये जाते।

टेलीविजन को कुछ दिन तक निरन्तर देखने के बाद कुछ चीजें सर्वथा स्पष्ट हो जाती हैं। पहली यह कि उसमे विशुद्ध मनोरजन प्रदान करने की, श्रोताओ और दर्शको पर तत्काल सीधा प्रभाव डालने की, मानवीय सस्पर्श की और सारे समाज के सास्कृतिक धरातल को ऊँचा उठाने की भारी क्षमता है। अभी वह न्यूयार्क से सयुक्त राष्ट्र सघ के कार्यक्रम प्रसारित करता है और उसके अगले ही क्षण स्वेज नहर मे डूबते किसी जहाज का चित्र दिखाता है और फिर तत्काल ही कैलिफोर्निया मे पहुँच जाता है, जहाँ कोई विशाल अग्निकांड घटित हो चुका होता है। इस तरह हम भी उसके साथ एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुँचते और विचरण करते है। वह कितने ही ऐसे घरो मे बैले(नृत्य-

नाटक) को पहुंचाता है, जिन्हें उस शब्द के अर्थ तक का ज्ञान नही होता, वह हमे हंसी से लोट-पोट कर देता है और भय से जकड़ देता है। उस से हम उन लोगो के बीच मे पहुँच जाते हैं जो उसके कैमरे के सामने आये होते हैं। वह हमे अपनी दुनिया की एक नई जानकारी देता है, हम उसे नई दृष्टि से देखते और नए स्पर्श से छूते हैं। वह हमे सैकड़ो तरह से यह अनुभव कराता है कि सारा विश्व, सारा मानव समाज एक ही है।

दूसरी चीज यह स्पष्ट हो जाती है कि टेलीविजन मे उत्कृष्ट कार्यक्रमों के साथ-साथ नितान्त घटिया कार्यक्रम भी प्रसारित होते रहते हैं। वह उन दोनो के भेद को महसूस नहीं करता। जाहिर है कि जब एक टेलीविजन स्टेशन महीनो तक प्रतिदिन अठारह घंटे कार्यक्रम प्रसारित करता रहता हो तब स्वभावत. उसके कुछ कार्यक्रम निम्न या साधारण कोटि के भी होगे ही। कठिनाई यह है कि अभी तक वह कोई ऐसी कसौटी निर्धारित नही कर सका जिससे अच्छे और बुरे कार्यक्रम में भेद कर सके। किन्तु यह बात रंगमच पर भी उतनी ही लागू होती है, जो हजारों वर्ष से चला आ रहा है। वह भी किसी नाटक की अच्छाई या बुराई का निर्णय तब तक नही कर सकता, जब तक उसे दर्शको के सामने एक बार प्रस्तुत न कर ले।

टेलीविजन मे हम एक और आश्चर्यजनक बात देखते है और वह यह कि वह पारिवारिक जीवन मे गहरी दिलचस्पी लेता है। टेलीविजन की प्रतियोगिताओ मे भाग लेने वालो से उनके परिवारो के बारे मे प्रश्न पूछे जाते हैं, बच्चो को बार-बार कैमरे के सामने लाया जाता है और पारिवारिक जीवन के सम्बन्ध मे छोटे-छोटे हास-परिहास के और सुखान्त नाटक प्रस्तुत कर उनमे यह दिखाने का प्रयत्न किया जाता है कि किस प्रकार विनोद की भावना से, या दूसरे का मन रखकर और लिहाज कर के चलने से घरेलू जीवन को सुखी बनाया जा सकता है। टेलीविजन बच्चो के उन्मुक्त जीवन को, उनके बन्धनहीन और बेरोक-टोक कामो

को आत्मीयता से पर्दे पर प्रस्तुत करके यह दिखाता है कि नन्हे बच्चों मे कैसी आश्चर्यजनक प्रतिभा होती है और कैसे वे हमारी तरुण, प्रवर्धमान, युक्ति-तर्क हीन, जिद्दी, भयभीत, खर्चीली, अभिमानी उदार और भावना-युक्त सस्कृति के प्रतीक हैं। यह सम्भव है कि बच्चो के प्रति हमारा प्रेम मोहात्मक हो परन्तु हमे वह पावन और आनन्ददायक प्रतीत होता है। टेलीविजन ने हमारी इस कमजोरी को देख लिया है और वह उससे लाभ उठाता है।

अमेरिकनो मे यह विशेपता है कि आज जिस चीज पर वे हँसते हैं देर-सवेर उसी को वे अगीकार कर लेते हैं। किसी समय वे ड्यूशाप की कलाकृति "सीढ़ी से उतरती नग्न नारी" का मजाक उडाते थे, पर आज उन्होने आधुनिक कला की सुन्दरतम कृतियो का वढिया सग्रह कर डाला है। इस सौभाग्यशाली देश मे लोगो को एकाएक जो हँसी आती है, वह बच्चो की-सी हँसी नही होती। जैसे कभी-कभी दूर से डराती आ रही एक्सप्रेस ट्रेन एकाएक पास की पटरी से गुजर जाती है और हम भय से मुक्त होकर चैन की साँस लेते हैं, वैसे ही कभी-कभी यह हँसी किसी दुखान्त घटना के पास पहुँच कर फिर उसे बचाती हुई निकल जाती है। वह हमारे इस गहरे विश्वास को द्योतित करती है कि सद्-भावना से सव सघर्षो को टाला जा सकता है, और किसी भी वस्तु का असल तत्त्व उसका सवसे अधिक विनोदकारी अश ही है। किसी भी चीज को हँसकर सहज मे जीता जा सकता है।

वाहर से आने वाले लोग अक्सर यह शिकायत करते है कि हममे जीवन को दु खमय दृष्टि से देखने की प्रवत्ति का अभाव है और यह वात सही है। किन्तु जीवन को विनोद के वजाय दुःख और विषाद की दृष्टि से देखना क्या सचमुच गुण है? जो सस्कृतियाँ गुलामी, विशेपाधिकार, क्रूरता, शोषण या सामूहिक भुखमरी की वुनियाद पर खडी हुई है, उनमे जीवन के प्रति दुःखमय और वेदनापूर्ण दृष्टि की वात समझ मे आती है, परन्तु अमेरिका की सस्कृति अपनी समस्त त्रुटियो के वावजूद उस

किस्म की नही है। वह भावात्मकता पर बल देती है। अमेरिका का यह विश्वास है कि सबके लिए शिक्षा की व्यवस्था और सबके नैतिक और भौतिक कल्याण के लक्ष्यो को प्राप्त करना असम्भव नही है। इस-लिए स्वभावतः वह जीवन के प्रति दु खमय और वेदनापूर्ण दृष्टि नही अपनाता और विनोद और हास-परिहास का आश्रय लेता है।

टेलीविजन एक काम और भी करता है। वह नाटक और वृत्त चित्र, दोनो का सम्मिश्रण करता है। उदाहरण के लिए टेलीविजन पर 'ऐण्ड्री डोरिया' के डूबने की घटना का जो चित्रण किया गया वह उस घटना की वास्तविक फिल्म और कुछ दृश्यो के पुनरभिनय का सम्मिश्रण था। जेल-जीवन के सम्बन्ध मे प्रस्तुत एक टेलीविजन नाटक मे स्वाभा-विक अभिनय तो प्रस्तुत किया ही गया, उसमे यह सन्देश भी दिया गया कि यदि अपराधो को खत्म करना है तो जीवन मे जो लोग छिन्न-मूल है उन पर विश्वास करो और उन्हे भी किसी मूल आधार से जोड़ कर विस्थापित से समाज मे स्थापित बना दो। एक डाक्टर के सम्बन्ध मे जो एक छोटे से कैरीबियन गाँव मे सेवा करके नया जीवन पाता है, एक टेलीविजन कार्यक्रम मे उसके इस सन्देश को सशक्त रूप मे प्रसा-रित किया गया कि हर सस्कृति की अपनी अलग जीवन-प्रणाली है, अपने पृथक् उद्देश्य है और सभी सस्कृतियो का सम्मान किया जाना चाहिए।

केवल २६ शैक्षणिक टेलीविजन स्टेशन ही नही, बहुत-से व्यापारिक स्टेशन भी ज्ञान के सभी क्षेत्रो मे उच्च कोटि के कार्यक्रम प्रसारित करते है। कोई भी व्यक्ति प्रतिदिन ये कार्यक्रम देख-सुनकर और उनके नोट लेकर अपने कमरे मे ही काफी शिक्षा प्राप्त कर सकता है। वैसे अभी टेलीविजन का उपयोग शिक्षा के लिए प्रारम्भ ही हुआ है। 'शैक्षणिक टेलीविजन के लिए राष्ट्रीय नागरिक समिति' नामक एक स्वैच्छिक संगठन टेलीविजन के स्तर को ऊ चा उठाने के लिए निरन्तर

उद्योग कर रहा है। लेकिन इस बीच शैक्षणिक टेलीविजन स्टेशनो के कार्यक्रम पाँच करोड व्यक्तियो तक अभी से पहुँचने लग गये है।

टेलीविजन की और चाहे जो कमियाँ हो, इसमे सन्देह नही कि अभिनय, निर्देशन, प्रस्तुतीकरण और नई-नई चीजो के आविष्कार की सूझ-बूझ की दृष्टि से उसने एक उच्च स्तर प्राप्त कर लिया है। वह प्रचार और सम्पर्क का एक उर्वर और सजीव माध्यम है। यही नही, वह सामूहिक प्रचार के सभी साधनो का मिलन-स्थल भी बन गया है। वह प्रेस एसोसियेशनो, खबरो और तस्वीरो का, पत्रिकाओ और पुस्तको के कथानको का, रेडियो के कलाकारो और निर्देशको का एव हॉलीवुड की फिल्मो का व्यापक उपयोग करता है।

दर्शको और श्रोताओ की दृष्टि से टेलीविजन की सबसे अधिक उबा देने वाली चीज है उस पर प्रसारित व्यापारिक विज्ञापन, जो बहुत लम्बे होते है और बार-बार दोहराये जाते है। कभी-कभी ये विज्ञापन टेलीविजन दर्शक को अपना अपमान भी प्रतीत होते है। सबसे ज्यादा गुस्सा तब आता है जब किसी नई ब्रांड की सिगरेट या नये साबुन की बिक्री के लिए टेलीविजन पर उसका विज्ञापन करते हुए यौवन, सौंदर्य, सुख, घरेलू शान्ति और ईसाई धर्म के नैतिक सिद्धान्तो की दुहाई दी जाती है।

रेडियो और टेलीविजन प्रसारको की राष्ट्रीय एसोसियेशन ने टेलीविजन के बारे मे यह सकल्प व्यक्त किया है कि वह अच्छे से अच्छी शिक्षा, ज्ञान और मनोरजन की सामग्री प्रस्तुत करेगा। सार्वजनिक सेवाओ के सम्बन्ध मे अपने कर्त्तव्य को दृष्टि मे रखकर टेलीविजन अपने कार्यक्रमो के बीच-बीच मे लोगो से गिरजाघर मे नियमित रूप से जाने और सामुदायिक कोष मे दान करने की अपीलें करता है और उन्हें मानसिक स्वास्थ्य और जन-कल्याण सम्बन्धी कार्यक्रम समझाता है। सयुक्त राज्य मे सरकार का कोई अपना रेडियो या टेलीविजन का देशव्यापी जाल नही है, इसलिए वह व्यापारिक स्टेशनो पर अन्य किसी भी देश की सरकार की अपेक्षा अधिक निर्भर करती है। यही कारण

है कि टेलीविजन स्टेशन सरकार को भी अपने प्रसारणो मे काफी समय देते है। उदाहरण के लिए कोलम्बिया ब्राडकास्टिंग सिस्टम ने वायु-सेना के सहयोग से हवाई ताकत के बारे मे एक पूरी कार्यक्रम-माला प्रसारित करने के लिए दस लाख डालर खर्च किए। सयुक्त राज्य मे रेडियो और टेलीविजन कम्पनियाँ एव स्टेशन व्यापारिक है, इसलिए उन्हे आर्थिक प्रश्नो पर विचार पहले करना पडता है, अन्यथा वे सफल नही हो सकते। किन्तु क्या यह जरूरी है कि हर कार्यक्रम सबको पसद आये ? इसका उत्तर यह है कि छोटे-से-छोटे कार्यक्रम को सुनने और देखने वाले भी लाखो की सख्या मे होते है। ऐसी दशा मे क्या टेलीविजन स्टेशन का यह नैतिक कर्त्तव्य नही है कि वह बौद्धिक दृष्टि से उत्सुक और आलसी दोनो की आवश्यकताओ को पूरा करे।

सामूहिक प्रचार-साधनो मे एक बडी खराबी होती है कि वे लाभ मे अधिक-से-अधिक एकाधिकार प्राप्त करने की चेष्टा करते है, किन्तु उनकी इस प्रवृत्ति को प्रतिसन्तुलित करने वाली कुछ अच्छी बाते भी है। उनके श्रोताओ की सख्या बहुत बडी होती है, उनमे सभी प्रकार की रुचियो और अनुभवो वाले लोग होते है, इसलिए उन्हें अपने कार्यक्रम प्रस्तुत करते हुए सहिष्णुता का परिचय देना पडता है। ऐसे विविध श्रोता इन कार्यक्रमो मे जान डालने के लिए भी स्टेशनो को मजबूर करते है, जिससे उनमे घिसापिटापन और शिथिलता नही रहती। श्रोता उत्कृष्ट कोटि के नाटको, गेय-नाट्यो और सगीत मे बहुत उत्साह और रुचि दिखाते है जिससे यह प्रतीत होता है कि प्रारम्भ मे जन-रुचि के जिस स्तर की सम्भावना प्रकट की गई थी, वास्तव मे उसका स्तर उससे ऊँचा है। इस प्रकार व्यापारिक दृष्टि से भी वह टेलीविजन कम्पनियो को अपने कार्यक्रमो का स्तर ऊँचा रखने के लिए प्रोत्साहन देती है।

रेडियो

टेलीविजन के आविष्कार के बाद रेडियो का स्थान पीछे हो गया है। किन्तु अब भी वह विशाल जन-समूह तक पहुंचता है और आज भी ऐसे अनेक अवसर होते है जबकि टेलीविजन नही देखा जा सकता, किन्तु रेडियो सुना जा सकता है। टेलीविजन के साथ प्रतियोगिता मे उतर कर रेडियो ने यह अनुभव कर लिया है कि उसमे भी कुछ विशिष्ट शक्ति है।

साबुन के विज्ञापन के लिए रेडियो पर प्रसारित किये जाने वाले गेय-नाटक कार्यक्रम अब भी उन व्यस्त गृहिणियो तक पहुँचते है जिनके पास टेलीविजन के सामने बैठने के लिए पर्याप्त समय नही है या जो वर्षों तक साथ देने वाले अपने अभिन्न साथी रेडियो को छोडना नहीं चाहती, या जो टेलीविजन पर नाटक या अन्य कार्यक्रम देखने के बजाय अपने ही कल्पना-लोक मे विचरण करना पसन्द करती है। रसोईघर स्नानागार, शयनागार और मोटरकार मे अब भी रेडियो का ही राज्य है, क्योकि इनमे लोगो के हाथ और आँखे व्यस्त रहती है, वे सिर्फ कान ही कार्यक्रमो को सुनने मे लगा सकते है। पिकनिक और यात्राओ मे रेडियो ही साथ देता है। ट्रांजिस्टर और बैटरी सैट अब इतने छोटे बनने लगे हैं कि जेब मे डालकर भी ले जाये जा सकते हैं। रेडियो ने अब अपनी शक्ति को पहचान लिया है—उसका सीधा-सादा और औपचारिकता से रहित होना, तत्काल प्रभावकारिता, सक्षिप्तता और वर्णन कौशल ही उसकी शक्ति है।

लोग आज खबरे और मौसम के समाचार सुनने या किसी गम्भीर सकट अथवा विपत्ति के वक्त ताजा और नवीनतम बुलेटिन सुनने के लिए रेडियो का उपयोग करते है। वे सगीत सुनने के लिए भी रेडियो का उपयोग करते है क्योकि हर बडे नगर मे किसी-न-किसी रेडियो स्टेशन से हर वक्त सगीत प्रसारित होता ही रहता है। रात के समय भी रेडियो पर पूरी रात के कार्यक्रम प्रसारित किए जाते हैं और सगीत

के रिकार्डों के बीच-बीच मे उद्घोपक कुछ-न-कुछ बोलता रहता है और इस प्रकार रात को काम करने वाले कर्मचारी के अकेलेपन को दूर करता है।

रेडियो पर आजकल छोटे-छोटे कार्यक्रम भी प्रसारित किये जाते हैं ताकि जिन्हे लम्बे कार्यक्रमो को सुनने की फुरसत नही है, वे हजामत या नाश्ता करते अथवा मोटर से काम पर जाते-जाते पूरा कार्यक्रम सुन सके। जिन्हें लम्बे कार्यक्रम सुनने के लिए फुरसत है उनके लिए भी लम्बे कार्यक्रमो को ऐसे छोटे टुकडो मे बाँट दिया जाता है, जो अपने आप मे पूर्ण होते हैं। इसका लाभ यह होता है कि जो अधिक समय नही दे सकते वे भी उनके एक-दो टुकडे सुनकर आनन्द ले सकते हैं। अखबारो की तरह रेडियो भी यदि अभी ताजा समाचार सुना रहा है, तो अगले ही क्षण आपकी किसी संसत्सदस्य से मुलाकात कराता है, और उसके बाद समुद्रपार की कोई रिपोर्ट या किसी नई वैज्ञानिक खोज या स्त्रियो के किसी नये फैशन की दुनिया मे आपको पहुँचा देता है।

सिण्डिकेटो के जरिए अब उच्चकोटि के कलाकारो के कार्यक्रम भी छोटे-छोटे स्थानीय स्टेशनो पर प्रसारित होने लगे है। इन कार्यक्रमो के बीच-बीच मे स्थानीय स्टेशन अपने स्थानीय विज्ञापन और घोपणाएँ भी प्रसारित करते रहते हैं। इन सिण्डिकेटो की वजह से अब वे लाभ छोटे स्टेशनो और स्थानीय व्यापारियो को भी मिल जाते है जिन्हें पहले बडे स्टेशन और बडे व्यापारी ही पा सकते थे।

सिनेमा

टेलीविजन ने सिनेमा को बहुत चोट पहुचाई है। पहले जहाँ प्रति सप्ताह सयुक्त राज्य मे नौ करोड व्यक्ति सिनेमा देखने जाते थे, वहाँ उनकी सख्या घट कर पहले पाँच करोड हो गई, किन्तु बाद मे फिर साढ़े-पाँच करोड पर पहुच गई। इस कमी का कारण सिर्फ टेलीविजन ही नही था लेकिन वह एक महत्त्वपूर्ण कारण अवश्य था। इसका असली कारण था सिनेमा की टिकट-दरें बढ जाना। सामान्य आय वाले

जिस व्यक्ति को सपरिवार सिनेमा देखना होता, वह या तो बच्चो का भी टिकट खरीदता या छोटे बच्चो को घर छोड जाने पर उसे उनकी देखरेख के लिए पैसे देकर किसी को बैठा जाना पडता। बाद मे छोटे बच्चो के लिए मुफ्त टिकट की व्यवस्था हो जाने पर इस मामले मे लोगो को कुछ सहायता मिली।

शुरु मे कुछ समय तक हॉलीवुड ने ऐसा दिखाया जैसे टेलीविजन का अस्तित्व ही नही है। किन्तु बाद मे उसने अनुभव किया कि टेलीविजन के खिलाफ लडाई लडना उसके लिए सम्भव नही है इसलिए वह टेलीविजन के लिए फिल्मे तैयार करने लगा और पुरानी फिल्मे टेलीविजन पर प्रदर्शन के लिए देने लगा। यही नही, हॉलीवुड के सितारे भी टेलीविजन पर अभिनय करने लगे। टेलीविजन की प्रतिस्पर्धा का एक परिणाम अच्छा भी हुआ और वह यह कि हॉलीवुड ने घटिया फिल्मे छोड कर अच्छी फिल्मे बनानी आरम्भ की। इस प्रतियोगिता मे टेलीविजन के मुकाबले मे हॉलीवुड कुछ लाभ की स्थिति मे था, क्योकि उसका कार-बार विशाल था, सैट बडे-बडे थे, अभिनेता-अभिनेत्रियो के दल विशाल थे और वह दूर-दूर जाकर फिल्मे बना सकता था। ठीक निर्णायक समय आने पर फिल्म निर्माण उद्योग मे कुछ ऐसे टेक्निकल सुधार हो जिनसे हॉलीवुड की ये विशेषताए और भी निखर आई। उदाहरण के तौर पर कैमरो के लिए अधिक चौडे कोण वाले लैन्स बन गये, अधिक बडे रजतपट बने और तरह-तरह के सुन्दर रगो का आविष्कार हो गया।

निःसन्देह हॉलीवुड टैक्निकल सुधार और आविष्कार की दृष्टि से हमेशा बहुत उपजाऊ रहा है। धीमी गति वाली फिल्मे जिनमे घटना की गति को बहुत बारीकी और विस्तार से दिखाया जा सकता है, पानी की सतह के नीचे फोटोग्राफी, डूबते जहाजो, टकराती रेल गाडियो और आग से जलते समूचे के समूचे शहरो के मार्मिक, विस्मयकारी और प्रभावशाली दृश्य, चलते-फिरते मजाकिया कार्टून जिनमे जादू की

तरह किसी वस्तु को नष्ट कर फिर से एकदम पुनर्निर्मित कर दिया जाता है—इन सबने सिनेमा दर्शको के मन में यह विश्वास बैठा दिया कि वे हॉलीवुड से इसी तरह की बडी-बडी आश्चर्यजनक चीजो की आशा कर सकते है। एक सिनेमा फिल्म तैयार करने के लिए २७६ बड़ी कलाओ और शिल्पो की आवश्यकता पडती है।

हॉलीवुड के जादू मे कुछ-न-कुछ बात ऐसी अवश्य थी कि वह सभी जगह लोगो को प्रभावित करता था। हॉलीवुड यौन भावनाओ का और ससार के स्वप्न का प्रतीक बन गया। लोग यौन भावनाओ को भडकाने वाली उसकी फिल्मो की आलोचना करते थे परन्तु फिल्मे देखना छोड़ते भी नही थे। इस तरह हॉलीवुड उनके भीतर जो स्वप्न और कल्पनाए जगाता उनका वे आनन्द भी लेते और अपनी कमजोरियो के लिए उसे कोसते भी रहते।

हॉलीवुड की अन्तर्राष्ट्रीय सफलता का एक कारण यह था कि उसने प्रारम्भ से ही बहुत बडी सख्या मे अन्य देशो से आने वाले आ-प्रवासियो के कारण यह सीख लिया था कि कैसे अपनी फिल्मो मे सार्व-भौम आकर्षण पैदा करने के लिए उनकी कहानियो मे मानव की बुनि-यादी आवश्यकताओ और मूलभूत भयों को आधार बनाया जाए। उस ने काऊब्वाय फिल्मे (अमेरिका के प्रारभिक दिनो मे पशुओ के चरवाहो का जीवन चित्रित करने वाली फिल्मे) बनाई, जिनमे चरवाहो के आन्त-रिक तनाव एव द्वन्द्व और आक्रमण के लिए उसकी बाह्य अभिव्यक्ति का चित्रण किया जाता था। लुटेरो की भयानक फिल्मे बनाई जाती थी जिनमें अपराधी और अपराध की भावना से युक्त लोग दूसरो का पीछा करते थे और पुलिस की गाडियो के चीखते-चिल्लाते भोपू सुनाई पड़ते थे। हॉलीवुड प्रणयलीला के नग्न और कामुकता भरे चित्र भी बनाता जिनसे दर्शक थोड़ी देर के लिए यह अनुभव करता, मानो सुन्दर और गुदगुदी नायिका उसकी गोद मे बैठी है। ये सभी ऐसी फिल्मे थी, जिनका आकर्षण किसी एक देश, जाति या वर्ग तक सीमित नही था

बल्कि सार्वभौम था। दक्षिणी सागरो के मूल निवासी हॉलीवुड की फिल्मो को, हर चीज की तह मे जाने की अपनी सहज बुद्धि के कारण, दो श्रेणियो मे बाँटते थे या तो मारकाट की फिल्मे या चुम्बन और प्रणय-लीला की फिल्मे। उन्हें दोनो ही पसन्द थी।

अमेरिका का यह दुर्भाग्य था कि इन सार्वभौम काल्पनिक चित्रो को देखकर अन्य देशो के भोले लोग यह समझने लगते थे कि अमेरिका मे सभी लोग गुण्डे, लुटेरे, खूख्वार चरवाहे और कामुक प्रेमी है, हालाकि अपने देश मे बनी फिल्मो को देखकर वे यह भूल कभी न करते और यह कभी न मानते कि उन फिल्मो मे लोगो का जैसा चित्रण किया गया है, उनके सब देशवासी वैसे ही है। हॉलीवुड की सफलता के लिए अमेरिका को यही सब से बडी कीमत देनी पडी कि उसके बारे मे सारे ससार ने एक गलत और घृणा की तस्वीर अपने मन मे बना ली। यह तस्वीर इतनी गहरी थी कि अमेरिका ने वास्तविक सत्य को प्रकट करने के लिए जितने भी प्रयत्न किये, वे सब निष्फल हुए और कम्युनिस्टो ने इस गलत धारणा का लाभ उठाकर सयुक्त राज्य के विरुद्ध खूब प्रचार किया। ऐसा लगता था कि पैगलियासी की भाति अमेरिका सारे ससार का मनोरजन करेगा, किन्तु उससे दुनिया की नजरो मे उसका जो पतन होगा, उससे वह कभी उबर नही सकेगा और लोग उसे कभी ठीक-ठीक समझ नही सकेंगे।

हॉलीवुड की फिल्मो मे जब भी किसी मैक्सिकन या अरब या किसी अन्य जाति के व्यक्ति को खलनायक दिखाया जाता तो उक्त देश या जाति की ओर से बहुत तीव्र विरोध होता। परिणाम यह हुआ कि हॉलीवुड ने अपनी फिल्मो मे अमेरिकन के सिवाय किसी भी और को खलनायक न बनाने का फैसला कर लिया (कभी-कभी वह कम्युनिस्ट को भी खलनायक बनाता, परन्तु उसका कोई देश न बताता)। इस तरह हमने स्वय जान बूझ कर और एक कीमत चुका कर सारे ससार की नजरो मे खलनायक बनना स्वीकार किया।

फिल्मो की कहानियो मे एक खास तरह का पेच और घुमाव होता, जिससे यह मालूम होता कि वह अमेरिकन है। अमेरिकन फिल्मो में ही ऐसी लडकिया दिखाई जाती है जो प्रतीत बुरी होती हैं, किन्तु वास्तव मे होती अच्छी है। उसे खराब चित्रित करने का कारण शायद पुरुष कहानी लेखक की अपनी आन्तरिक मनोभावना है। वह ऐसी लडकी की कल्पना करना पसन्द करता है जो आसानी से उसके बाहुपाश मे आ जाए। लडकी की ऊपर से प्रतीयमान दुश्चरित्रता ऐसा अवसर लाने मे सहायता देती है जबकि एक दिन एकाएक उसकी किसी युवक से मुलाकात होती है। यह मुलाकात एक ऐसी सस्कृति मे अनिवार्य ही है जिसमे तरुण-तरुणिया अपना जीवन-सगी स्वय खोजती है। वह नायक के सम्पर्क मे आने के लिए तैयार रहती है, इसलिए नायक के मन मे उसकी माता द्वारा पैदा की गई नैतिकता की भावना की दुविधा और सकोच धीरे-धीरे मिट जाते है। और अन्त मे उसकी वासनाओ को भडका देने के बाद एक ऐसी स्थिति आ जाती है जिसमे ऐसा प्रतीत होता है मानो वह उसके हाथो मे अपने आपको सौप देगी। लेकिन हठात् उसी समय पता लगता है कि वह दुश्चरित्र नही थी, बल्कि भोली और निर्दोष थी। तब दोनो के विवाह मे सारे काण्ड की सुखद परिणति हो जाती है।

अमेरिका के पारिवारिक जीवन की कुछ विशिष्ट परिस्थितियाँ है। इन परिस्थितियो के कारण फिल्मो की कहानियो मे कुछ निश्चित विशेषताए रहती है। इन कहानियो का नायक अपने माता-पिता को पीछे छोड देता है और इस बात पर जोर देता है कि उसे अपने लिए जीवन का मार्ग स्वय चुनने का अधिकार है। कथानक मे बल उस नये परिवार पर दिया जाता है जिसका वह निर्माण करता है न कि उस पर जिसमे वह पैदा होता है। युवक के यौवन की बडी महिमा प्रकट की जाती है। इसके विपरीत युवक के पिता को गजा, प्रभावहीन और उपहासास्पद चित्रित किया जाता है। मेलोड्रामे के चित्रण मे पिता को

बुरा और खतरनाक चित्रित किया जाता है और ऐसा दिखाया जाता है, मानो वह नायक को जीतने की चेष्टा कर रहा है। फ्रायड के मनोविज्ञान की भाषा मे उसकी व्याख्या की जाए तो यह कहा जा सकता है कि कथानक लेखक पिता के इस आचरण मे युवक को पिता से अलग और दूर रहने के अपराध से बरी कर देता है, क्योंकि पिता के इस आचरण से यह स्वाभाविक ही है। जिस खतरनाक ससार से उसे लोहा लेना पडता है वह पिता से आगे बढने या उसकी अवज्ञा करने के उसके अपराध को बाहर अभिव्यक्त करता है और पुलिस उसे सन्देह की नजर से देखती है, इसलिए भी वह मानो अपने आप को अभियुक्त ठहराता है।

इस तरह मा बाप के अत्याचार की यह काल्पनिक कहानी ही अपराध की फिल्मो के मूल मे रहती है। अपराध का पता अन्त मे पुलिस नही लगा पाती, बल्कि कोई प्राइवेट जासूस या वकील लगाता है। यह जासूस विद्रोही पुत्र को अमेरिकन युवक का एक प्रतीक बना देता है, जिसे न्याय पाने के लिए पिता के अधिकार के रूप मे कानून की अवज्ञा करनी पडती है। प्रतीक की दृष्टि से यह अमेरिकन एक ऐसा नौजवान है, जिसने एक नई दुनिया मे जाने के लिए अपने पितृदेश को ठुकरा दिया है और जो पश्चिम की ओर नित्य नये ससार मे दौलत और सुख की खोज मे जाने के लिए अपने पिता के घर और व्यवसाय का परित्याग कर देता है। वहा उसे कानून को अपने हाथ मे लेना और नया घर बसाना पडता है और एक दिन नई पीढी उसे और उसके घर को भी उसी की तरह ठुकरा देती है। माता-पिता के अधिकार को चुनौती और उसका प्रतिरोध ही लोकतन्त्र का सार है, जिसमे सब को समान माना गया है। इसीलिए वह हमारी राजनीति मे ही नही, कला मे भी निरन्तर दखल किये रखता है। हम कला मे यौवन पर, नर-नारियो की आगे बढकर अभिक्रम करने की प्रवृत्ति पर, उद्योग और विजय-प्राप्ति पर और अन्त मे सुखी जीवन की उपलब्धि पर बल देते है।

जो लोग सिनेमा फिल्मों की यह कह कर आलोचना करते हैं कि उनका स्तर ऊँचा नही है, वे यह भूल जाते हैं कि सिनेमा फिल्म थोडे से बुद्धिजीवी भद्र वर्ग को दिखाया जाने वाला रगमच नही है, बल्कि वह ससार का लोक-नाट्य है। इसलिए सिनेमा फिल्में उन काल्पनिक कहानियो, उन भयो और आकाक्षाओ पर ही हमेशा आधारित रहेगी, जो हमेशा लोक-कथाओ का आधार रही हैं।

यदि सिनेमा फिल्मो पर सेसरशिप का लकवा न गिरे तो उनका स्तर कुछ अधिक ऊँचा होगा। सिनेमा उद्योग ने सेंसरशिप की सिरदर्दी से बचने के लिए 'मोशन पिक्चर प्रोड्यूसर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स एसोसियेशन ऑफ अमेरिका' के तत्त्वावधान मे अपनी फिल्म उत्पादन की एक आचार सहिता का निर्माण किया है। इस सहिता के अनुसार फिल्मो मे डरावनी चीजे नही दिखाई जाती, और न ही कामवासना को अत्यधिक भडकाने वाले यौन सम्भोग के अश्लील और गन्दे दृश्य दिखाये जाते है। किशोरो और वयस्को की यौन सम्बन्ध विषयक समस्याओ के आधार पर फिल्में बनाने का निषेध है। 'लीजियन्स ऑफ डिसेन्सी' नामक कैथलिक सगठन और कुछ अन्य प्रोटेस्टेंट सगठन भी हॉलीवुड को वयः प्राप्त युवक-युवतियो की यौन सम्बन्ध विषयक समस्याओ को फिल्मो मे पेश करने से रोकने के लिए निरन्तर आन्दोलन करते रहते हैं।

उनकी यह चिन्ता अस्वाभाविक नही है, क्योकि फिल्मे बच्चे भी देखते हैं। कामुकता और यौन सम्बन्ध विषयक फिल्मे देखकर बच्चो का आचरण बिगड सकता है। किन्तु उपर्युक्त आचार सहिता का परिणाम यह हुआ है कि स्त्री-पुरुष का सम्भोग तो फिल्मो मे नही दिखाया जाता लेकिन युवक-युवतियो का प्रेम और मिलन खूब जोरो से दिखाया जाता है। आचार सहिता मे अपराध और हिसा की फिल्में बनाने की अनुमति है, इसलिए फिल्म जगत् ने फिल्मी अपराधो की एक सर्वथा काल्पनिक सृष्टि कर डाली है। सेंसर विभाग ने फिल्मो को बदल कर समाज को बदलने की चेष्टा की है, किन्तु समाज को बदलने के लिए

अपराधो के मूल कारणो—गन्दी बस्तियाँ, माता-पिता द्वारा अत्याचार या उपेक्षा, मनोरजन के साधनो का अभाव और धन को अत्यधिक महत्त्व देने वाले और लूट-खसोट मे निपुण समाज की शोषण से अपराधो को बढावा देने की प्रवृत्ति आदि—को दूर करने की कोई चेष्टा नही की गई है। कारण यह है कि अपने आपको दोष देने की अपेक्षा फिल्मो के सिर दोष मढना कही आसान है।

हाल के उच्चतम न्यायालय के निर्णयो ने सेंसरशिप की आचार-नियमावली को कुछ कमजोर किया है। अब निर्माता लोग आचार-सहिता का प्रमाण-पत्र लिये बिना भी अपनी फिल्मो का प्रदर्शन कर सकते हैं। टेलीविजन पर सेंसर की कोई पाबन्दी नही है, इसलिए उसने हॉलीवुड द्वारा निर्धारित आचार सहिता के अनेक निषेधो का उल्लघन किया है।

किन्तु यदि सेंसरशिप की समस्या हल हो भी जाए तो भी एक बुनियादी समस्या बनी ही रहेगी। हॉलीवुड एक ऐसा उद्योग है जो एक कलात्मक उत्पादन तैयार करता है, लेकिन उद्योग और कला परस्पर विरोधी चीजें हैं। इस उद्योग के लिए पैसा देने वाले बैंक फिल्म निर्माण मे कोई नया कलात्मक प्रयोग करने का विरोध करते हैं। वे फिल्म निर्माताओ को किसी ऐसे फार्मूले से परे नही हटने देते जिसकी उपयोगिता और सफलता सिद्ध हो चुकी है। फिर भी अनेक उच्चकोटि की फिल्मो की भारी आय से सिद्ध हो गया है कि कलात्मक कल्पना और मौलिक सूझ-बूझ से अन्तत. फायदा ही होता है।

आज ऐसे लोग, जो स्वय कहानी, सिनारियो और सवाद लिखते हैं, स्वय निर्देशन करते और स्वय ही निर्माता हैं, उच्चकोटि की फिल्मो का अधिकाधिक सख्या मे निर्माण करने लगे हैं। इन सब कामो का एक ही व्यक्ति मे सम्मिश्रण करना और उसे निश्चय करने की स्वतन्त्रता देना स्वभावतः हॉलीवुड मे उपलब्ध प्रतिभा के अधिक अच्छे उपयोग का अवसर प्रदान करता है। आम तौर पर यह प्रतिभा निराशा

की दशा मे रहती है, इसलिए जब उसे खुलकर अपनी अभिव्यक्ति का मौका मिलता है तो वह अच्छी फिल्मो का निर्माण करती है। किन्तु इससे उस कटुता और विरोध का अन्त नही होता जो निर्माता और निर्देशक, निर्माता और अभिनेता एव अभिनेता और एजेट के बीच मे रहता है।

जहाँ तक अभिनेताओ और अभिनेत्रियो का सम्बन्ध है, उनमे चोटी के लोग अक्सर प्रेम के चक्कर मे पडे रहते हैं, खूब अपव्यय करते और ठाठ से जीवन बिताते है। उनका प्रचार और ख्याति खूब होती है और जब कभी वे अचानक सामान्य लोगो के बीच मे आ पडते है तो लोग उन्हे देखने के लिए ओलम्पिस के देवताओ की भाँति घेर लेते और पूजते है, परन्तु यदि गहराई से भीतर जाकर देखा जाए तो उनका जीवन वैसा सुखमय नही होता, जैसा उनके प्रशसक समझते है। जब वे किसी चित्र मे भूमिका अदा कर रहे है तो उन्हे उसके निर्माण के लिए बहुत-बहुत देरी तक कडा परिश्रम करना पडता है। कभी-कभी उन्हे खूब इन्तजार करना पडता है और एक ही दृश्य का छवि अकन बार-बार होने से वे परेशान हो जाते है। एक चित्र का निर्माण समाप्त होने के बाद उन्हे जब तक किसी नए चित्र का अनुबन्ध नही मिल जाता तब तक उनका जीवन निराशा से भरा रहता है और अक्सर उन्हे व्यर्थ की उबा देने वाली पार्टियो मे शरीक होना पडता है या यौन सम्बन्धो से परितृप्ति पाने अथवा मनोविनोद के दूसरे साधन खोजने की कोशिश करनी पडती है। उन्हे अपनी आय के मुताबिक शान-शौकत से रहना पडता है और आय उनकी फिल्मो की आर्थिक सफलता पर निर्भर करती है। यद्यपि उनकी आमदनी देश के अन्य लोगो से अधिक होती है, किन्तु इस आमदनी के लिए उन्हे गुलामो की तरह सात-साला कण्ट्रैक्टो मे बधे रहना पडता है। आम जनता की नजरो मे उनका स्थान बहुत ऊँचा और भव्य होता है, परन्तु जिन लोगो के साथ वे काम करते हैं, वे उन्हें हिकारत की नजर से देखते है। लेकिन जनता भूल से

यह समझ लेती है कि वे जैसे ऊँचे चरित्र का फिल्मो मे अभिनय करते है, वैसा ही वास्तव मे उनका निजी चरित्र है और इसलिए वे उनकी पूजा करने लगते है।

जिस फिल्म मे वे नायक का अभिनय करते हैं वह सारे ससार मे दर्शको को आकृष्ट करती है। इसका कारण क्या है ?

हॉलीवुड की सिनेमा फिल्म भी एक व्यवसाय है, जिसमे एक अत्यन्त कठिन और पेचीदा माध्यम की टेकनीक मे निपुणता प्राप्त कर हमारी मानवीय सत्ता के मूल मे निहित भावनाओ का व्यापार किया जाता है। वह अनुभव का सरलीकरण कर उसे क्रमबद्ध करती है, हमारे ससार को देश और काल मे फैलाती है, हत्या की लोमहर्षक विभीषिका मे से गुजारने के बाद हमे फिर सुरक्षित स्थान पर पहुँचा देती है, हमे अपने आक्रमणो, आशकाओ और घृणाओ को बाहर अभिव्यक्त करने, ऐश्वर्य और विलासिता मे आलोडन करने, हास-परिहास मे चतुर नायक के साथ बहादुर और खलनायक पर विजयी बनने का अवसर देती है और अन्त मे हम इस सारे वैचित्र्यमय अनुभव के बाद सुन्दरी-युवती को पा जाते हैं। साठ सेंट के टिकट मे यह क्या घाटे का सौदा है।

समाचार-पत्र

अमेरिका के समाचार-पत्र ससार का ६० प्रतिशत अखबारी कागज इस्तेमाल करते हैं। ये समाचार-पत्र अनेक प्रकार के हैं। इनमे 'न्यूयार्क डेली न्यूज' जैसा छोटे आकार का लोकप्रिय समाचार-पत्र भी है, जिसके रविवार के सस्करण की बिक्री ३६,९४,८५१ है। इसके अलावा 'क्रिश्चियन साइंस मॉनीटर' और 'वाल स्ट्रीट जर्नल' जैसे भिन्न किस्म के पत्र भी इनमे शामिल हैं। इन्ही मे 'न्यूयार्क टाइम्स' जैसा विश्व-विख्यात पत्र भी है जो यह दावा करता है कि उसमे ससार भर की खबरें होती है और उसका रविवार का सस्करण छापने के लिए २०० एकड जगल खप जाता है। इनके अतिरिक्त अनेक छोटे स्थानीय पत्र हैं जो व्यक्तिगत समाचारो और स्थानीय खबरो पर बल देते है और

कस्बे या नगर की भावना को व्यक्त करते और स्थानीय जनता के उत्साह को बनाये रखते हैं। 'क्लीवलैंड प्रेस' जैसे पत्र भी अमेरिका से निकलते है, जिसके सम्पादक लुई सेल्ट्जर ने बचपन मे अत्यधिक गरीबी के दिन देखे है और अपने अध्यवसाय से उन्नति की है। उसने अपने पत्र को सारे कस्बे के अन्तःकरण की आवाज बना दिया है। उसने लेक एरी को साफ करने और नगर मे एक चिड़ियाघर स्थापित करने की आवश्यकता पूरी कर दी है। उसका एक कर्मचारी सारे दिन अमेरिकन और विदेशी बच्चो के बीच पत्रो के आदान-प्रदान को बढाने के ही काम मे लगा रहता है।

अमेरिका के लोकप्रिय पत्र किस ढग के हो, इसका निर्णय करने मे महत्त्वपूर्ण भूमिका अमेरिका के आप्रवासियो ने अदा की। जोसेफ पुलिट्ज़र ने सबसे पहले एक जर्मन समाचार-पत्र से यह मालूम किया कि जर्मन मूल के आप्रवासी किस तरह की सामग्री अखबार मे चाहते है। इसलिए इन आप्रवासियो की अगली पीढी के समर्थन से उसका पत्र 'न्यूयार्क वर्ल्ड' खूब लोकप्रिय हो गया। इसी तरह हर्स्ट ने आयरिश लोगो की मदद से अपने पत्रो को लोकप्रिय बनाया। दोनों ने विदेशी भाषाओ के पत्रो से यह जाना कि समाचारपत्रो को लोकप्रिय बनाने के लिए सनसनीखेज खबरें देना, सामाजिक एव वर्गीय प्रवृत्तियो के समाचार प्रकाशित करना और पाठको को सलाह-मशविरा देना बहुत महत्त्वपूर्ण है।

समाचारपत्रो की आमदनी का मुख्य स्रोत विज्ञापन है और विज्ञापनो के लिए पत्र की बिक्री अच्छी होना जरूरी है, इसलिए बिक्री बढाने के उद्देश्य से सनसनीखेज खबरो पर जोर दिया जाने लगा है। समाचारपत्रो ने नौजवान, बच्चे और बूढे सभी को आकृष्ट करने के लिये खेल के समाचार, भद्र वर्ग की खबरें, मजाकिया कार्टून, चित्रमय कहानियाँ, किताबों और कलाओ की समीक्षाएँ, घर की साज-सज्जा, घरेलू सामान की मरम्मत की विधियाँ, सिण्डिकेटो से प्राप्त हास्यपूर्ण और

गम्भीर लेख और स्वास्थ्य एव चिकित्सा के नुस्खे और व्यक्तिगत समस्याओ के हल के लिए परामर्श छापने शुरू किए।

बडी-बडी समाचार समितियाँ—असोशियेटेड प्रेस, यूनाइटेड प्रेस और इण्टरनेशनल न्यूज सर्विस—केवल समाचार ही सारे देश मे तारो और टेलीप्रिंटरो से नही भेजती, बल्कि अखबारो के दफ्तरो मे लगी मशीनो से खबरो के टेप भी तैयार कर देती है, जो कम्पोज करने के लिए सीधे प्रेस मे भेजे जा सकते है। अमेरिका मे दो सौ के लगभग सिण्डिकेट हैं जो हर किस्म के फीचर और स्तम्भ प्रकाशन के लिए अखबारो को देती है। इसका लाभ यह है कि अनेक छोटे समाचार-पत्र भी, जो धन की कमी और बडे अखबारो की प्रतिस्पर्धा के कारण टिक नही सकते थे, इन सिण्डिकेटो से कम पैसे मे प्रकाशनीय सामग्री प्राप्त करके अपने पाठको को दे सकते है और इस प्रकार अपना अस्तित्व बनाये रख सकते है, भले ही वह सामग्री उनकी अपनी मौलिक सामग्री नही होती। समाचार-पत्र स्वय भी अपने नगरो की महत्त्वपूर्ण खबरें दूसरे पत्रो को देने के लिए अपनी तार सर्विसें चलाते है, जिससे अखबारो मे पारस्परिक सर्विस भी चलती रहती है।

पत्रिकाएँ

आम प्रसार की ५०० पत्रिकाओ मे से ५४ पत्रिकाएँ ऐसी है जिनकी बिक्री सात लाख से १ करोड १० लाख प्रतियो तक है। इनमे पहला स्थान रीडर्स डाइजेस्ट का है, जिसकी बिक्री सिर्फ सयुक्त राज्य मे ही नही, अन्य देशो मे भी बहुत बडी है। यह पत्रिका आशावादिता से परिपूर्ण है और अपव्यय एव जाल-साजी, धोखाधडी आदि का भडाफोड करती है। इसके छोटे-छोटे सरल लेख, कहानी की सी शैली, बडे व्यक्तियो के व्यक्तित्व का दक्षतापूर्ण परिचय, लोकप्रिय विज्ञान, व्यक्तिगत परामर्श और मनोरजन एव हास्य की सामग्री—ये सभी चीजे अमेरिकनो की आवश्यकताओ को पूरा ही नही करतीं, बल्कि उनकी मनोवृत्ति और मानसिक रुझान को भी द्योतित करती है।

इनके अलावा व्यापार-व्यवसाय की पत्रिकाएँ, विद्वत्तापूर्ण पत्रिकाएँ (जिनमे से कुछ विश्व की श्रेष्ठतम पत्रिकाएँ है), कम्पनियो के प्रकाशन स्कूलो की पत्रिकाएँ और विभिन्न सगठनो के समाचार बुलेटिन आदि अन्य हजारो चीजे भी विविध पत्र-पत्रिकाओ की सख्या मे वृद्धि करती है।

पत्रिकाएँ भी अनेक प्रकार की हैं। 'अमेरिकन स्कॉलर' जैसी दिलचस्प और बौद्धिक पत्रिका के साथ-साथ कॉमिक की पत्रिकाएँ भी प्रकाशित होती है जो दिलचस्प अवश्य होती है, परन्तु बुद्धिजीवी मनीषी वर्ग के मतलब की नही होती। इसके अलावा घटिया दर्जे की पत्रिकाएँ जिनका उद्देश्य प्रसिद्ध व्यक्तियो, खासकर फिल्मी सितारो के बारे मे, निन्दात्मक सत्य को प्रकाशित करना, गर्भपात की खबरें छापना और इसी तरह की अन्य गन्दी और कुत्सित चीजे प्रकाश मे लाना है, जो एक विशिष्ट समाज की हीन मनोवृत्ति, निकृष्ट लोभ और पतन को सूचित करती है।

विज्ञापन प्राप्त करने के लिए पत्र-पत्रिकाओ की बिक्री ऊँची होना आवश्यक है, इसलिए उनमे पाठको को आकृष्ट करने वाली सामग्री छापी जाती है, चाहे वह अच्छी हो या घटिया। फिर भी यह बात बडी उत्साहवर्धक है कि जो पत्रिकाएँ सर्वोत्तम लेखको की रचनाएँ और सर्वोत्तम चित्र प्रकाशित करती है और जिनकी साज-सज्जा उच्चकोटि की होती है वही बिक्री के लिहाज से भी सबसे ऊपर रहती हैं। दूसरी ओर गन्दी और घटिया दर्जे की घृणित सामग्री प्रकाशित करने वाली पत्रिकाएँ न केवल समाचार एव चित्र पत्रिकाओ से, बल्कि अन्य धार्मिक पत्रिकाओ से भी बिक्री के लिहाज से नीचे रहती है।

कुछ अमेरिकन इस प्रकार की भद्दी और भोडी सामग्री के प्रकाशन को रोकने के लिए सेंसरसिप के पक्षपाती हैं। किन्तु आम तौर पर अमेरिकन लोग अब भी यही महसूस करते हैं कि वाणी के स्वातन्त्र्य का तब तक कोई अर्थ नही है, जब तक कि सर्वथा अश्लील और वासनामय

कामोत्तेजक साहित्य को छोडकर बाकी सब कुछ प्रकाशित करने की स्वतन्त्रता न दी जाए। उनका ख्याल है कि इस प्रकार की गन्दी चीजो के प्रकाशन को रोकने का सबसे अच्छा उपाय लोगो को शिक्षित करना और इस गन्दी सामग्री की जगह सुरुचिपूर्ण सामग्री देना है।

आलोचना

यदि सामूहिक प्रचार के साधन नीचे स्तर पर उतर आते हैं तो उनकी खूब प्रतिकूल आलोचना होती है। सिनेमा, रेडियो, टेलीविजन, पत्र-पत्रिकाएँ, सगीत, नृत्य, रगमच, रिकार्ड और साहित्य—इन सभी पर हमेशा लोगो की पैनी नजरें लगी रहती है और उन्हें आलोचना का पात्र बनना पडता है। इस आलोचना का प्रभाव अन्तत स्वस्थ ही होता है। किसी भी सस्कृति मे आलोचनात्मक छान-बीन करने के लिए आलोचको की इतनी बडी सख्या इससे पहले कभी नही रही।

आलोचक आम तौर पर बहुत कठोर होते है। अमेरिकन उपन्यास-कारो ने आम तौर पर अपने राष्ट्र और देशवासियो की त्रुटियो की बहुत कडी और कभी-कभी चुभने वाली आलोचना की है। लेकिन अब उपन्यासो को स्वय आलोचना का पात्र बनना पडता है। साहित्यिक कृतियो की आज बहुत बारीकी से हर पहलू से आलोचना की जाती है। समीक्षाकार लेखक की अपनी शैली के विकास की, समाज के प्रति उसके रवैये और दृष्टिकोण की, पुस्तक की भाषा और कथानक आदि की बारीकी से आलोचना करते हैं। जॉन क्रो रैन्सम ने आलोचना की एक नई पद्धति का विकास किया है जिसका उद्देश्य साहित्यिक रचना का एक पृथक् सत्ता के रूप मे उसके विशिष्ट नियमो के अन्तर्गत अध्ययन करना है।

साहित्यिक त्रैमासिक पत्रिकाएँ भी खूब उन्नति कर रही है। एड-मण्ड विल्सन, कैनेथ बर्क, लॉयनल ट्रिलिंग और जोसेफ वुड क्रच जैसे प्रख्यात व्यक्तियो ने मुख्यतः आलोचक और समीक्षाकार के रूप मे ही

अपना स्थान बनाया है। मार्क वान डोरेन जैसे कवियो ने भी अनेक उच्च कोटि की साहित्यिक समीक्षाएँ लिखी है।

उपन्यासकार देश की जो आलोचना करता है और समीक्षाकार उपन्यास लेखक की जो आलोचना करते है, उससे शायद कुछ लोग यह समझने लगे कि सयुक्त राज्य की हालत बहुत खराब है। लेकिन वास्तविकता यह है कि उपन्यासकार और समीक्षक दोनो ही आदर्शवादी पैमाने से नापने के अभ्यासी है। इसका अर्थ यह है कि अमेरिका बहुत आशावादी देश है जो यह मानकर चलता है कि आदर्श को पाया जा सकता है और उसमे शिथिलता नजर आने पर वह विक्षोभ प्रकट करता है।

जो भी व्यक्ति किशोर आयु के बालक-बालिकाओ से जाज़ सगीत या अन्तर्दहन इजनो के बारे मे जानकारी भरी बाते सुनता है, जो प्रमुख पत्र-पत्रिकाओ में छपने वाली समालोचनाएँ पढता है और जो यह जानता है कि ये समालोचनाएँ और समीक्षाएँ सिण्डिकेटो के जरिए विभिन्न पत्र-पत्रिकाओ मे छपती है, और जो राजनीति और खेलो पर भी टिप्पणियाँ और आलोचनाएँ देखता है, वह सहज मे यह जान सकता है कि अमेरिकन लोगो मे कितनी आलोचनपूर्ण सजग वृत्ति है।

अमेरिकन समीक्षक केवल अमेरिकन साहित्य या कला की ही समालोचनाएँ नही छापते, बल्कि अमेरिका से बाहर के अँग्रेजी साहित्य की भी कुछ सर्वोत्तम समालोचनाएँ अमेरिका मे ही छपी है। एक फ्रेंच प्रेक्षक का कहना है कि फ्रेंच कला की फ्राँस से बाहर जितनी विशद और व्यापक आलोचनाएँ सयुक्त राज्य मे हुई है, उतनी और कही नही हुई।

अमेरिका का आलोचना-शास्त्र मनोविज्ञान, समाज विज्ञान और नृवंश विज्ञान की सहायता से और अलकार शास्त्र, इतिहास एव दर्शन की पुरानी परम्पराओ को ध्यान मे रखकर अपने आधार का अधिकाधिक विस्तार कर रहा है और अपने अवबोध को गहरा बना रहा है।

अमेरिकन आलोचको को अपने ऊपर और अपनी आलोचना की विधियो पर पूरा भरोसा है, इसलिए डेलमर श्वार्ट्ज के शब्दो मे वे समालोचना की उस रूढि-विरोधी पद्धति की रक्षा का प्रयत्न कर रहे है, जिसके बिना 'बौद्धिक' शब्द निरर्थक हो जाता है और प्रतिभा भी अथार्थ हो जाती है।"

अभिरुचि

किन्तु प्रश्न यह है कि क्या अमेरिकन अभिरुचि मे कोई सुधार और परिष्कार हुआ ? या वह अभी तक लडखडा रही है ?

इस प्रश्न का एक उत्तर तब मिला, जब टेलीविजन ने दस या पन्द्रह वर्ष पुरानी सिनेमा फिल्मे दिखानी प्रारम्भ की। ये फिल्मे जिस समय बनाई गई थी, उस समय पूर्ण प्रतीत होती थी,परन्तु दस-पन्द्रह वर्ष बाद टेलीविजन पर दिखाई जाने के समय वे टेकनीक की दृष्टि से पुरानी, सवादो की दृष्टि से भद्दी, कथानक मे कमजोर और कल्पना की दृष्टि से बहुत हल्की प्रतीत हुईं। आधुनिक टेलीविजन और पुरानी फिल्मो की इस तुलना ने यह साबित कर दिया कि रुचि और स्तर मे कितना अन्तर आता जा रहा है।

कभी-कभी ऐसा लगता है कि सामूहिक प्रचार के माध्यमो के लिए बड़े पैमाने पर दर्शक और श्रोता जुटाने मे जो प्रतिस्पर्धा चल रही है और उसमे लाखो व्यक्तियो को आकृष्ट करने वाली सामग्री प्रस्तुत करने का जो उद्यम हो रहा है, उससे लोकरुचि का स्तर बहुत नीचा हो जाता है। किन्तु भोडी और हीन रुचि की इस सारी सामग्री के मुकाबले मे कुछ उच्च कोटि की सुरुचिपूर्ण कलात्मक सामग्री भी रहती है। यूरोपीय लोग सिर्फ छोटे-से कला-पारखी भद्र समाज के सामने कला को प्रस्तुत करने के अभ्यस्त हैं, इसलिए जब वे पत्र-पत्रिकाओं के स्टालो या टेलीविजन पर इस तरह की हीन रुचि की घटिया चीजो को भारी मात्रा मे देखते हैं तो उनका विचलित होना स्वाभाविक ही है। किन्तु अमेरिकन लोग परिवर्तन के अभ्यासी हैं, इसलिए वे किसी भी

वस्तु को स्थिर या स्थायी मानने के बजाय परिवर्तनशील प्रवृत्ति के रूप मे देखते है। वे यह अनुभव करते हैं कि उन्होने सचार के साधनों को विशाल जनसमुदाय के लिए खोल दिया है और वे एक पूरे राष्ट्र की रुचियो का परिष्कार और एक अभूतपूर्व पैमाने पर सांस्कृतिक विकास कर रहे है।

वास्तविक समस्या यह है कि सामूहिक प्रचार के साधनो का मुँह भरने के लिए इतनी बडी मात्रा मे उत्कृष्ट सामग्री कहाँ से लाई जाए और विज्ञापन-दाताओ को उच्च कोटि की वस्तु का समर्थन करने और सहायता देने के लिए कैसे प्रेरित किया जाए। सम्भव है कि उस प्रतिभा से, जो विदेशो मे जाने के बजाय अपने देश मे ही विद्यमान है, यह आवश्यकता पूरी की जा सके। इसके अतिरिक्त अब किसी अन्य देश मे भी कोई ऐसा सास्कृतिक स्वर्ग नही रह गया है, जहाँ अमेरिकन ग्राम्यता और अपरिष्कृत रुचि से बच कर आश्रय लिया जा सके। इसीलिए, लॉयनल ट्रिलिग का कहना है कि, अमेरिका मे धीरे-धीरे सस्कृति का स्तर ऊँचा हो रहा है। दौलत अब मन और कल्पना के राज्य के सम्मुख आत्म-समर्पण करने को उद्यत है और सुरुचि और सवेदनशीलता के द्वारा अपने अस्तित्व का औचित्य सिद्ध कर रही है। बुद्धिजीवी वर्ग का अब निरन्तर विस्तार हो रहा है और उसके सदस्य कलात्मक कृतियों के उत्पादन को बढावा दे रहे है। विचार और चिन्तन को आज पहले हमेशा की अपेक्षा अधिक मान्यता और महत्त्व दिया जा रहा है।

जिस प्रकार अमेरिकनो ने अपनी राजनीतिक दृष्टि को विशुद्ध स्थानीय प्रश्नो के ऊपर उठा कर अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र तक पहुँचा दिया है, वैसे ही यह आशा की जाती है कि आज द्रुत सास्कृतिक विस्तार की देहरी पर पहुँच कर अमेरिकन कलाकार भी एक ऐसी भापा और शैली मे कला का सृजन करेंगे जिसे सारा ससार समझ सकेगा।

मनोरंजन

पिछले युद्ध के दिनो मे जिन अमेरिकन सैनिको के दक्षिण-पश्चिमी प्रशान्त क्षेत्र के जगलो मे घिर जाने की आशका होती थी, उन्हें यह सिखाया जाता था कि वे अपनी जेबो मे रस्सी का एक टुकडा रखा करें और जब भी उन्हे यह सन्देह हो कि इन जगलो मे मूल निवासी लोग उन्हे मारने के लिए शत्रुता की नीयत से उनकी ओर आ रहे हैं, वे फौरन ही रस्सी से खेलना प्रारम्भ कर दें । अवसर यह देखा गया कि ऐसे अवसर आने पर मूल निवासी शत्रुता का भाव छोड कर स्वयं भी इस खेल मे शामिल हो जाते । खेल ऐसी चीज है जो शत्रुता को खत्म कर देती है और जहाँ दो पक्षो मे सम्पर्क की कोई सामान्य भाषा नही है, वहाँ मैत्री के सेतु का काम करती है ।

प्राचीन काल के खेलो और उत्सवो से आधुनिक ओलिम्पिक प्रतियोगिताओ तक और प्राचीन मन्दिरो के नृत्यो से आधुनिक सामूहिक नृत्यो तक सर्वत्र और सर्वदा नर-नारियो ने ऐसी शारीरिक क्रियाओ और गतियो की खोज की है जिनके द्वारा वे अपनी सम्पूर्ण सहजवृत्तियो और आकाक्षाओ को अभिव्यक्ति प्रदान कर सकें । खेल भी कला की भाँति अराजकता के बीच से व्यवस्था को और अर्थहीनता के मध्य से अर्थ को अभिरूपित करने का उद्योग करता है । खेल भी कला की भाँति किसी राष्ट्र के उद्देश्यो और जीवन के अभिप्रायो को अभिव्यक्त करते हैं ।

अमेरिकन लोग जो खेल खेलते है और अपने खाली अवकाश का जिस प्रकार उपयोग करते हैं, उससे हम क्या सीख सकते है ?

खेल

अमेरिका का स्क्वेयर डाँस (चारों दिशाओ से चार जोडो का परस्पर सम्मिलित नाच) यद्यपि यूरोपीय लोक नृत्य की ही उपज है तो भी वह सर्वथा अमेरिकन नृत्य है। ग्रामो मे इसका जन्म हुआ है और ग्रामो के ही यह अनुकूल है । इस मे चार जोडे चार दिशाओ से भाग लेते हैं, इसलिए वह स्वभावतः यह स्वीकार करता है कि अमेरिकन संस्कृति मे विवाहित युगल का बहुत महत्त्व है और साथ ही वह सामूहिक सहयोग पर बल देता है। नृत्य की गतिशील और भव्य मुद्राओ मे विचार और गति दोनो का वैसा ही सम्मिश्रण होता है, जैसा कि प्रारम्भिक जमाने का साहसी और अग्रणी अमेरिकन और उसकी बन्दूक या फावड़ा उसकी विचारशीलता और गति के सम्मिश्रण के द्योतक थे।

स्क्वेयर डाँस एक प्रकार से सृष्टि का लघु प्रतिरूप है । वह यह द्योतित करता है कि इस नृत्य की भाँति समाज-व्यवस्था मे हर व्यक्ति की स्थिति अनिवार्य है और सब व्यक्तियो की सयुक्त क्रिया ही समाज को एक भव्य समग्र रूप प्रदान करती है। वास्तव मे स्क्वेयर डाँस प्रतीकात्मक रूप मे समाज के सारे ढाँचे को अभिव्यक्त करता है। इसमे व्यक्ति पर बल दिया जाता है, जिसका उस वर्ग के प्रति सामूहिक एवं पारस्परिक लाभ के लिए उत्तरदायित्व होता है, जिसमे वह स्वेच्छा से शामिल हुआ है। इस प्रकार उसमे व्यक्तित्व और स्वैच्छिक सहयोग, दोनों चीजें आ जाती हैं। इस नृत्य मे इस तरह के चार-चार जोडे एक नही अनेक होते है और वे अलग-अलग नृत्य करते हुए भी एक अनुशासन के भीतर समस्वर होकर नाचते है। यह हमारे समाज के संघवाद का प्रतीक है। इसी तरह पुरुषो और स्त्रियो की परस्पर-विरोधी चंचल गतियाँ समाज की प्रतिसन्तुलनकारी शक्तियो और नर-नारियो को परस्पर मिलाने वाली जटिल नृत्य-गतियाँ पारस्परिक मिलन की

और चारो जोडो की हाथ मिलाकर एक वृत्त बनाने की अन्तिम क्रिया समाज के एकीभाव की प्रवृत्ति के प्रतीक रूप मे दिखाई देती है।

इसी तरह हमारे मुख्य खेल भी समाज-व्यवस्था को प्रतीक रूप मे प्रकट करते हैं। उनमे खिलाडी पर व्यक्तिगत रूप से बल दिया जाता है, किन्तु उसका व्यक्तिगत खेल एक दल के अग के रूप मे होता है और वह दल भी अन्य दलो के साथ एक सघ के रूप मे खेलता है।

बेसबॉल अमेरिका का सबसे प्रधान खेल है और वह सामूहिक और सम्मिलित क्रिया पर निर्भर है, किन्तु उसमे हर व्यक्ति को अपना पूरा कौशल अभिव्यक्त करने की स्वतन्त्रता और मौका होता है। नपा-तुला काम, तीव्र गति, सूक्ष्म और त्वरित दृष्टि और बाहु का जोर इन सब से खेल मे सफलता मिलती है। खिलाडी से आशा की जाती है कि यदि एकाएक कोई अनुकूल मौका आ पडे तो वह उसका लाभ उठाने मे नही चूकेगा, खेल के मैदान मे कहाँ क्या हो रहा है, इसे वह एक ही क्षण मे भाप लेगा और झटपट यह हिसाब लगा लेगा कि क्या कदम उठाना सब से अधिक लाभकारी होगा। इसके अलावा सारी टीम बिना किसी प्रकार के आदेश के मिलकर समन्वय, सहयोग और सौहार्द से खेलती है। वह पारस्परिक सहायता और सौमनस्य पर निर्भर रहती है (क्या इसी कारण अमेरिकन सैनिक युद्धकाल मे सब से अधिक साहस शत्रु को मारने मे नही, बल्कि शत्रु से अपने साथियो को बचाने मे दिखाते है)।

बास्केट बॉल का खेल भी (जिसकी शुरुआत १८९३ से कुछ समय पूर्व स्प्रिगफील्ड, मैचाचुसेट्स मे हुई थी) सयुक्त रूप मे काम करने की भावना, त्वरित निश्चय, तीव्र अनुक्रिया और उपलब्ध अवसर का तत्काल लाभ उठाने के गुणों और क्षमता पर निर्भर है।

फुटबाल के खेल मे भी, जिसके अमेरिकन रूप का विकास १८६७ के बाद हुआ, सारा दल सयुक्त रूप से काम करता है, और उसमे सिर और टांगो से तेज प्रहार किये जाते है और द्रुत और निरन्तर गति कायम रखी

जाती है, किन्तु उसमे शरीर से शरीर की भयकर टक्कर और घर्षण पर अधिक बल दिया जाता है। उसके इर्दगिर्द की सब वस्तुएँ भी पुराने जमाने के युद्ध के वातावरण की ही प्रतीक होती है—रणस्थल मे सैनिको की हिम्मत बढाने के लिए जैसे सैनिक बैड बजाया जाता है, वैसे ही इस खेल मे भी बैड बजता है, पुराने जमाने की लडाइयो की तरह दर्शक मडली मे बैठी स्त्रियाँ और बूढे बुजुर्ग अपने-अपने दल के वीरो का हौसला बढाने के लिए शोर मचाते और उन्हे अपनी लाज बचाने के जिए आवाहन करते है। दलो के चिह्न भी प्राचीन काल के आदिवासी लडाको के पशु-पक्षियो के चिह्नो के समान ही होते है। उदाहरण के लिए कोलम्बिया का चिह्न सिह और प्रिंसटन का चीता है।

दर्शको को भी खेल से उतना ही लाभ होता है जितना खिलाडियो को। अपने इतिहास के उन प्रारम्भिक दिनो से ही, जब हम पश्चिम की ओर बढते हुए नये-नये क्षेत्रो को आबाद करने के लिए साहसिक कार्य कर रहे थे, और जब या तो कायदे-कानून थे ही नही या बहुत कमजोर थे, हम आत्म-रक्षा के लिए अमूर्त्त न्याय का सहारा लेने के बजाय अपने समूह के बल का ही सहारा लेते रहे है। यह भावना हमारे-खेलो मे भी आ गई है। हम अपने व्यक्तित्व को एक दक्ष और कुशल टीम मे एकाकार कर लेते हैं और इस प्रकार न केवल टीम के साथ, बल्कि उसके द्वारा सब दर्शको एव समूचे समाज के साथ भी एकाकार हो जाते हैं।

शौकिया दिल-बहलाव

अमेरिका मे लोगो के दिल-बहलाव के शौक इतने अधिक प्रकार के हैं कि उनकी सूची नही दी जा सकती। इन कामो मे लोग अपना अवकाश का अधिक-से-अधिक समय व्यतीत करते है। अमेरिकन स्त्री-पुरुष अपने पूर्वजो की भाँति ही हाथ के काम और श्रम मे गौरव अनुभव करते है, इसलिए वे पुराने हस्तशिल्प के काम बहुत अधिक करने लगे है। यही नही, उद्यान क्लबे और पुष्पप्रदर्शनियाँ आयोजित की जाती है, जो लोगो के बागबानी के शौक की सूचक है। डाक टिकटो से लेकर बटनो

तक, छोटी-छोटी मूर्तियो से हस्ताक्षरो तक तरह-तरह की चीजो के संग्रह करने की लोगो मे प्रवृत्ति है। तरह-तरह के जानवर पालने का शौक भी अनेक लोगो को है। अपने हाथ से काम करने का जो दीवानापन अमेरिका मे चला है, उसने उन लोगो के लिए भी हाथ से काम करने के अनेक रास्ते खोल दिये हैं, जिन्होने पहले कभी हाथ का काम नही किया था। इस शौक को पूरा करने के लिए लोग जो किताबें, औजार और अन्य सामग्री खरीदते हैं उनका हर वर्ष करीब ६ अरब डालर का व्यापार होता है। अपने हाथ से फोनोग्राफ बनाने का शौक (ही फी) तो इतना अधिक व्यापक हो गया है कि पत्रिकाओ मे भी उसकी नई-नई चामत्कारिक विधियाँ छपती रहती है।

हर शौक (हॉबी) के लिए अलग क्लब है। लोग इन क्लबो के जरिये नये-नये मित्र बनाते हैं। पक्षियो को देखने के शौकीन रात को निर्दिष्ट स्थानो पर एकत्र होते हैं और अपने पक्षी-संग्रह मे पक्षियो को मार कर नही, बल्कि केवल देखकर ही वृद्धि करते है। पुराने जमाने के मॉडलो की कारो मे पुराने जमाने के ही कपडे पहनकर सैर के लिए निकलने का भी एक अजीब शौक कुछ लोगो को है। वे इन पुरानी कारो को खूब सजाते-चमकाते हैं। इनकी अपनी एक अलग क्लब है। लोक संगीत या शास्त्रीय संगीत के शौकीनो की गायन मडलियाँ भी बनाई जाती हैं। लॉस एंजेलेस मे एक संगीत मडली ऐसी है जिसमे केवल गायन-वादन के शौकीन डाक्टर ही हैं।

कस्बो मे नगरपालिकाओ के रंगमंच नाटक-ड्रामे के शौकीनो को आकृष्ट करते है। जो अभिनय नही कर सकते, किन्तु नाटक के शौकीन हैं, वे इन रंगमंचो मे दृश्यो के पर्दे या वेश-भूषा बनाने के काम मे हिस्सा बँटाते हैं। रोआनोक आइलैंड मे हर ग्रीष्म ऋतु मे 'दि लॉस्ट कॉलोनी' नामक नाटक का आयोजन होता है, पश्चिम के अनेक नगरो मे भी नाटक खेले जाते हैं। अल्बुकर्क के उत्सव मे लोकनृत्य और लोक नाट्य का उत्साहपूर्ण आयोजन होता है। ये सभी नाटक और उत्सव

उस सांस्कृतिक ताने-बाने को सुन्दर और वैचित्र्यपूर्ण बनाते हैं, जिसमे देश के निर्माण के काम मे लगे लोग परिश्रम से थक कर और चूर होकर अपने अवकाश काल मे मन-बहलाव के लिए हिस्सा लेते हैं।

गाँवो मे स्कूल को ही सामाजिक केन्द्र बनाने का रिवाज पुराने समय से चला आ रहा है। आर्थिक मन्दी ने इस पुराने रिवाज को और भी अधिक सबल बना दिया था, जिससे आज भी अधिकाधिक सख्या मे सार्वजनिक स्कूल सामाजिक केन्द्रो का काम करते हैं । कोई भी रात ऐसी नही जाती जब कि गाँव के हाई स्कूल मे रोशनी न जलती हो और उसके कारखाने मे लोग फरनीचर बनाना न सीखते हो, या माता-पिता बच्चो के प्रदर्शन न देखते हो, किशोर बालक नृत्य न करते हो या पुस्तकालय मे अध्ययनशील लोग विभिन्न विषयो पर वाद-विवाद न करते हो । कुछ बड़े नगरो में इन कामो के लिए अलग मनोरंजन केन्द्र होते हैं।

जिन कस्बो मे नवयुवको के लिए मनोरजन के साधन उपलब्ध नही थे, वहाँ उन्नीसवी शताब्दी मे खेल के मैदानो का निर्माण किया गया था। आज ये मैदान सभी जागरूक नगरो के लिए आवश्यक और अनिवार्य समझे जाते हैं। जहाँ नागरिक प्रशासन अपने आपको खेल का मैदान बनाने के लिए समर्थ नही पाता, वहाँ नागरिको के स्वैच्छिक सगठन यह काम अपने हाथो मे ले लेते हैं। सन् १९५६ तक ७६ हजार वेतनभोगी कार्यकर्त्ता, इस प्रकार के खेलो और मनोरजन कार्यक्रमो का निर्देशन कर रहे थे।

पार्को का निर्माण आज जनता के उपयोग के लिए किया जाता है, पहले की भाँति उन्हे कुछ विशिष्ट उत्सवों के लिए ही सुरक्षित नही रखा जाता। मेन से वाशिंगटन राज्य तक फैले विशाल राष्ट्रीय पार्क अमेरिका के सब से प्रसिद्ध पार्क है। इन पार्को मे राष्ट्र की प्राकृतिक विरासत की रक्षा की जाती है। इनमे खूब सुन्दर और चौडी मोटर सड़कें भी बनाई गई है ताकि लोग उनमे घूमकर प्राकृतिक दृश्य और

मोहिनी वन-श्री का आनन्द ले सकें । सब से प्रमुख और बडा पार्क यलोस्टोन है जिसका क्षेत्र लगभग ३५०० वर्गमील है । इसके गर्म सोतो और रगीन कीचड के उबलते जलाशयो ने, इसकी सुरम्य झीलो, पहाडो और जगलो ने इसे प्रकृति की एक महान् रचना बना दिया है। ऐतिहासिक और सामरिक उद्यान यद्यपि छोटे हैं तो भी उनमे लिंकन की वह लकडी की झोपडी, जिसमे उसका जन्म हुआ था, गेटिसबर्ग का रणक्षेत्र और अग्रेजो की सब से पहली बस्ती जेम्सटाऊन (वर्जीनिया) आदि महत्त्वपूर्ण स्मारक सुरक्षित हैं ।

इसी तरह १५० राष्ट्रीय वन भी जनता के लिए खुले हुए हैं जिनमे पिकनिक और कैम्प लगाने के लिए ४४०० स्थान बने हैं। इनमे शिकार और मछली पकडने, बर्फ पर फिसलने का खेल खेलने, जगलो मे घूमने या पानी के खेल खेलने के लिए भी अनेक स्थान है । इन मनोहारी वनो मे मामूली-से किराये पर जमीन लेकर प्राइवेट मकान बनाये जा सकते हैं । प्रायः हर राज्य के अपने दर्शनीय ऐतिहासिक स्थान और पार्क हैं, जहाँ कैम्प लगाने की भी सुविधाएँ है।

छुट्टी मनाने के लिए अमेरिकन लोग इतनी विशाल सख्या मे इन वनो और पार्को मे जाते है कि कभी-कभी उनकी सडको के लिए इतने यातायात को सँभालना भी मुश्किल हा जाता है । ऐतिहासिक स्थानो को देखने की उत्सुकता से प्रेरित होकर वे अपने बच्चो को भी इनमे ले जाते हैं और उनसे प्लाइमाउथ रॉक, जैफर्सन्स मौटिसेलो के बँदर कॉक या अलामो के रणस्थल की, जहाँ डेवी क्रॉकेट लडा और वीरगति को प्राप्त हुआ था, खोज करने के लिए कहते हैं। अधिक सुविज्ञ लोग अपने साथ राज्य की मार्गदर्शक पुस्तक भी रखते हैं। आर्थिक मन्दी के दिनो मे लेखको की सहायता के लिए सघीय सरकार द्वारा आयोजित परि-योजना के अन्तर्गत ये पुस्तकें तैयार की गई थी । अमेरिका के इतिहास मे इस से पहले कभी भी अतीत के अध्ययन मे लोगो ने इतनी व्यापक दिलचस्पी नही ली और न अतीत को सुरक्षित रखने या उसका पुन-

निर्माण करने मे मे ही कभी इतना उत्साह दिखाया गया है । पहले अमेरिकनो ने पुराने सलेम नगर का पुनर्निर्माण किया, फिर विलियम्स-बर्ग का, उसके बाद स्टरब्रिज का और अब प्लाइमाउथ का। यदि यही प्रवृत्ति रही तो हमारे देश मे पुराने भवन मिस्र से भी अधिक हो जाएँगे।

सयुक्त राज्य मे अब हजारो ऐसे लोगो को भी गर्मी की छुट्टियाँ मिलने लगी है, जिन्हे पहले नही मिलती थी। इसका परिणाम यह हुआ है कि अब बहुत बडी सख्या मे अमेरिकन परिवार अपनी कारो पर सवार होकर देश के विभिन्न भागो मे गर्मी की छुट्टियाँ बिताने के लिए जाने लगे है । इससे उन्हे देश-दर्शन का और राष्ट्र का परिचय पाने का अवसर मिला है । वे जहाँ जाते है वहाँ उन्हे एक जैसा पैट्रोल और एक ही जैसे सिगरेट मिलते हैं, इससे उनकी यात्रा आराम से बीतती है । साथ ही उन्हें अपने इतिहास की चित्र-विचित्र वस्तुएँ और नाना प्रकार के प्राकृ-तिक दृश्य देखने का आनन्द भी प्राप्त होता है। जो परिवार छुट्टी बिताने के लिए बाहर जाने योग्य आर्थिक स्थिति मे नही होते, उनके बच्चो के लिए छोटे नगरो मे स्वय नागरिक ही खुली हवा के कैम्प या आवासगृहो की व्यवस्था कर देते हैं।

भ्रमण और पर्यटन की इस प्रवृत्ति ने सयुक्त राज्य मे पहरावे के सम्बन्ध मे औपचारिकता को बहुत कम कर दिया है। दूर-दूर तक कार मे यात्राएँ करने, जगह-जगह कैम्प लगाकर विश्राम करने, पहाडी नदियो मे मछली पकडने और कारखानो मे काम करने से लोगो मे कमीज की आस्तीनें ऊपर चढाए रखने और नीली जीन पहनने की आदत पड़ गई है। स्त्रियाँ भी स्लैक्स या हाफपैंट पहनने लगी है। यहाँ तक कि बढिया होटल भी यह विज्ञापन करते है कि "आप जैसे पहरावे मे है उसी मे आएँ" । इस प्रकार के विज्ञापनो से अनौपचारिकता को और भी बढावा मिलता है ।

मित्रो का स्वागत और आतिथ्य करने के मामले मे भी बहुत अनोपचारिकता बरती जाती है। आतिथेय महिलाएं नौकरो की सहायता के बिना ऐसे खाद्य पदार्थों की योजना बनाती है जो पहले से ही तैयार करके रखे जा सकते हैं, गर्मागर्म हालत मे भोजन के कमरे मे लाये जा सकते हैं और बूफे के ढग से परोसे जा सकते हैं। अतिथि अपनी-अपनी तश्तरियो में स्वय उन्हें डालते और खडे होकर या बैठक मे कही भी बैठ कर गपशप करते हुए खा सकते हैं। घर के बाहर खुले मैदान मे होने वाली दावतें और भी अनोपचारिक और आडम्बरहीन होती हैं। उनमे आतिथेय स्वय रसोइये के कपडे पहन कर चूल्हे पर रसोई तैयार करता है और फिर घासपर बैठे मेहमानो को भोजन परोसता है।

जिन परिवारो को अधिक खाली अवकाश मिलता है और वे उसे इकट्ठे मिलकर बिता सकते है, वे घर के भीतर ही बहुत-सी काम की चीजें तैयार कर लेते हैं। अब हर घर मे एक छोटा-सा वर्कशाप अवश्य बनाया जाता है। बच्चो को ऐसे खिलौने दिये जाते है जिन्हें मनोविज्ञान-शास्त्री बच्चो के मानसिक विकास के लिए उपयुक्त समझते है। बडे होने पर बच्चो को ऐसे खेल सीखने के लिए भेजा जाता है, जो स्कूलो मे नही सिखाये जाते—मसलन नृत्य, पियानो वादन, घुडसवारी और टेनिस आदि।

मानस शास्त्रियो ने घर के भीतर एक और खेल की भी अनुमति दी है। वह खेल है पति और पत्नी के दाम्पत्य प्रेम का खेल। अब पुरानी कुण्ठाओ, निषेधो और आशकाओ का स्थान इस सर्वमान्य सत्य ने ले लिया है कि लैंगिक प्रेम पारिवारिक जीवन की सुदृढ नीव है, लैंगिक आनन्द की सहज वृत्ति स्वाभाविक और उचित है और आधुनिक जीवन के अनेक तनाव हँसी से लेकर लैंगिक वासनापूर्त्ति तक सभी प्रकार की प्रेम-वृत्ति के बेरोकटोक परीक्षणो और उपयोगो से दूर किये जा सकते हैं।

सेवा से अवकाश प्राप्त कर रिटायर्ड जीवन बिताने वाले बूढो के लिए मनोविनोद की एक नई आवश्यकता पैदा हो गई है। इसकी पूर्त्ति

के लिए नई मनोरजक प्रवृत्तियो के कार्यक्रम बनाये गये है जिनमे बूढे लोग अपने समवयस्को के साथ उठते-बठते और भाग लेते है। सारे देश मे सीनियर सिटिज़न्स या गोल्डन एज नामक बूढो के संगठन स्थापित किये गये हैं। इनके सदस्य वाद-विवाद से लेकर नृत्य तक सभी प्रकार के कार्यक्रमो का अपने लिए स्वय आयोजन करते हैं। अनेक रिटायर्ड अधिकारी सारा जीवन सघर्ष और प्रतिस्पर्धा मे विताने के बाद अपना अवशिष्ट जीवन बिना वेतन लिये समाज की सेवा मे लगाकर परम सन्तोप अनुभव करते हैं। वे स्कूलो के प्रवन्धक मडलों में या अन्य नागरिक संगठनो मे शामिल हो जाते है। आज अमेरिका मे हर व्यक्ति ६५ वर्ष की आयु मे सेवा से मुक्त कर दिया जाता है किन्तु जीवन की अवधि इससे भी काफी लम्बी होती है, इसलिए राष्ट्र को इन नागरिको के खाली समय के रूप मे काफी साधन सम्पदा उपलब्ध हो जाती है।

किन्तु जिन मनोरजन कार्यक्रमो पर हमने ऊपर दृष्टिपात किया है, दुर्भाग्य से वे सभी उत्पादक नही होते। उदाहरण के लिए लास वेगास, नेवाडा मे, जो राष्ट्र का मुख्य द्यूत नगर है, १९५५ मे अमेरिकनो ने (और कुछ विदेशियो ने भी) ६,०३,२०,००० डालर का जूआ खेला। प्रतिदिन औसतन ३८६१ व्यक्ति जूआ खेलने के लिए वहाँ आते और अपना पैसा बरवाद कर चले जाते। इसी तरह राष्ट्र ने १९५२ मे ५·३ अरब डालर तम्बाकू का धूआँ उडाने मे और इससे दुगुनी राशि शराब पीने मे उड़ा दी।

अवकाश के समय का उपयोग

अमेरिकन लोग अपने खाली समय का तरह-तरह से जो उपयोग करते है और मनोविनोद पर जो अत्यधिक बल देते हैं, वह उनके इस सकल्प को प्रकट करता है कि वे अपने श्रम के फल का पूरा उपभोग करेंगे और जो दौलत उन्होने अपने कठोर परिश्रम से अर्जित की है उस मे से कुछ आत्मिक आनन्द भी प्राप्त करके रहेंगे। इसलिए वे मनोविनोद

और रस-राग की प्राप्ति भी ऐसे उद्दाम आवेग से करते है, मानो किसी नई मुहिम पर निकले हो।

इस सारे मनोरजन और आत्मविनोद की जड़ मे सृजनात्मकता की भावना है। अतीत मे अमेरिकन लोग अपने काम-धन्धे, व्यवसाय और रोजगार मे भी सृजनात्मकता की भावना का समावेश करते थे। स्वय काम भी उनके लिए खुराक और शराब की तरह नशा और पोषण जुटाता था। उन्होने अपने परिश्रम से जो प्राचुर्य और इफरात पैदा की है, उसका उपभोग करना भी आवश्यक है। वे यह जरूरी समझते है कि उत्पादन मे कम समय दिया जाए और उपभोग मे अधिक। अर्थ-व्यवस्था के इस बुनियादी परिवर्त्तन ने लोगो की मनोवृत्ति मे भी एक आधारभूत परिवर्त्तन कर दिया है। पहले अमेरिकन को काम मे नैतिकता नजर आती थी, आज उसे मनोविनोद मे नजर आती है। और वह आज मनोविनोद के सम्बन्ध मे औरो से कही अधिक गम्भीर है। इसीलिए और चीजो की भाँति वह मनोरजन का तरीका सीखना भी आवश्यक समझता है।

उद्योगवाद ने पुराने जमाने की कला और शिल्प को जो चोट पहुँचाई है उससे अमेरिकन लोग अब उबरने लग गये है। टैक्नोलॉजी ने आज हमे ऐसे माध्यम और साधन प्रदान किये हैं जिनके द्वारा नाट्य-कला को लाखों-करोडो व्यक्तियो तक पहुँचाया जा सकता है। इस-लिए कला और उद्योग के बीच पूर्ण विच्छेद नही हो सकता, वे एक-दूसरे के साथ गुथे हुए हैं। स्वचल यन्त्रो के आविष्कार और उपयोग ने मानव को उसके चिरकालीन बन्धन से मुक्त कर दिया है। उद्योग उसे काफी खाली अवकाश देकर कला, शिल्प और सृजनकारी प्रवृत्तियो की उस पुरानी विरासत मे फिर से भेज रहे हैं, जिसने प्राचीन काल मे कलाओ और आनन्दोत्सवो को जन्म दिया था। इस प्रकार जिन ताकतो ने मानव को अपनी लोहे की उँगलियो से जकड़ा हुआ था, उन्ही के हाथो बन्धन से मुक्त होकर अब फिर वह एक लम्बे रास्ते से मनोरजन और

व्यक्तिगत सृजन की पुरानी विरासत में लौट रहा है। टैकनोलॉजी आज हमारे लिए एक महान् वरदान बन गई है क्योंकि अपनी भौतिक सम्पदा के प्राचुर्य की बाढ़ से ही वह हमें मुक्ति प्रदान कर एक ऐसे जीवन की ओर ले जाएगी जो भौतिक नहीं, सृजनात्मक और आनन्दमय है।

यदि हम एक लम्बी चक्राकार यात्रा कर अन्त में फिर अदन के बगीचे में लौट आएँ, जहाँ से हमारी यह महायात्रा शुरू हुई थी, तो कौन कह सकता है कि वह यात्रा सार्थक नहीं थी?

अध्याय : तेरह

विज्ञान और मानव

अमेरिकन गणराज्य का जन्म एक ऐसे बौद्धिक युग मे हुआ, जिसमें विज्ञान और वैज्ञानिक पद्धति एक नये जीवन के द्वार उन्मुक्त कर रहे थे, इसलिए उसने विज्ञान को हमेशा एक सामाजिक शक्ति के रूप मे ग्रहण किया और उस पर अपनी आशाएँ केन्द्रित की। बेंजामिन फ्रेंकलिन के परीक्षणो और टामस जेफर्सन के आविष्कारो से लेकर नवीनतम औद्योगिक उत्पादनो तक सर्वत्र विज्ञान ने अमेरिका के जीवन मे एक दुर्बोध और उत्कण्ठापूर्ण वस्तु के रूप मे नही, वलिक जन-सामान्य के सेवक और एक ऐसी शक्ति के रूप मे स्थान पाया, जो उत्पादन बढ़ाने और सबको उसके लाभ प्रदान करने के कारण लोकतन्त्री प्रक्रिया के लिए आवश्यक है। विज्ञान ने परिवहन और सचार के द्रुत साधन प्रदान कर हमारे ससार को वहुत व्यापक बना दिया है। उसने हमारी दिलचस्पियो और जिम्मेदारियो का भी विस्तार किया है, नृत्य, नाट्य और सगीत की कलाओ को हमारे घरो मे पहुँचाया है, स्त्री और पुरुष के कामो को बदला है और द्रुत परिवर्तन की अपनी शक्ति से ससार को वह इतनी तेज गति से बदलता है कि हमारे लिए अपने बच्चो को उसे ठीक से समझाना भी कठिन हो जाता है।

विज्ञान ने मानव जीवन को दीर्घकालावस्थायी बनाया है और शिशुओ की मृत्यु-सख्या को कम किया है। इसका परिणाम यह हुआ है कि आज हमारे यहाँ नवयुवको और बूढो का अनुपात वदल गया है। इसी की बदौलत आज सन्तान पैदा करना या न करना मनुष्य के अपने हाथ की बात हो गई है, इसलिए सन्तानोत्पत्ति आज बोझ का नही,

सच्चे आनन्द का स्रोत बन गई है। विज्ञान ने अनेक बीमारियो का हमेशा के लिए अन्त कर दिया है, अनेक के इलाज ढूँढ निकाले हैं और कई बीमारियो की पूर्ण चिकित्सा न करने पर भी वह उनमे राहत दे रहा है। उसे यह मालूम है कि सबको भोजन देने के लिए क्या उपाय करना चाहिए और वह यह भी जानता है कि समूची मानवता को कैसे मुहूर्त मात्र मे विनष्ट किया जा सकता है।

विज्ञान के साधन से ही आज हमारी सभ्यता अपनी वर्तमान स्थिति मे पहुँच पायी है। उसके अमूर्त्त सिद्धान्तो को, जिन्हें किसी समय प्रयोगशाला मे प्रयोग की कसौटी पर कसा गया था, आज क्रियात्मक उपयोग मे लाया जा रहा है और उससे अधिकाधिक उपभोग्य वस्तुएँ तैयार की जा रही हैं। विज्ञान के विशुद्ध सैद्धान्तिक अनुसन्धानो ने पूरे के पूरे नये उद्योग खडे कर दिए हैं, जिनसे नाइलन और प्लास्टिक जैसी सर्वथा नई वस्तुओ का निर्माण होने लगा है।

किन्तु लोगो मे विज्ञान के अनुकूल रवैये और मनोवृत्ति पैदा होना भी उतना ही महत्त्वपूर्ण है, क्योकि आज यह सत्य सबने स्वीकार कर लिया है कि समस्याओ पर विचार करने और उनके हल खोजने का सबसे सही रास्ता वैज्ञानिक ही है। और यह बात केवल भौतिक समस्याओ के बारे मे ही नही, मानवीय समस्याओ के बारे मे भी सही है। वैज्ञानिक तरीका पूर्वाग्रह और अन्धविश्वासो का विकल्प है। वैज्ञानिक प्रयोग और परीक्षण किसी वस्तु के प्रति मनुष्य का विश्वास बैठाने के लिए सबसे अधिक सफल साधन हैं, इसलिए विज्ञापनकर्त्ता भी इसका बहुत अधिक सहारा लेने लगे है। उदाहरण के लिए विज्ञापनो मे कहा जाता है कि "हर पाँच डाक्टरों मे से चार मानते हैं कि.........." या "वही कार खरीदिए जिसे इजीनियर पसन्द करते हैं।" यद्यपि आम तौर पर कोई भी यह नही जानता कि 'टोर्शन बार सस्पेन्शन' (मुड़ी हुई तार को लटकाना) का सही अभिप्राय क्या है, फिर भी सुनने मे वह एक वैज्ञा-

निक शब्दावली जैसा लगता है, इसलिए विज्ञापनदाता कारो की बिक्री के लिए ग्राहक को प्रभावित करने के लिए इसका उपयोग करते हैं।

विज्ञान आज की दुनिया मे जो महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करता है उसे स्वीकार कर ही कॉग्रेस (ससद्) ने १९५० मे एक राष्ट्रीय विज्ञान प्रतिष्ठान की स्थापना की थी, जिसका उद्देश्य विज्ञान के बुनियादी अनुसंधानो और शिक्षा को समुन्नत करने और सामान्य जनकल्याण पर विज्ञान के प्रभाव का मूल्याकन करने के लिए एक राष्ट्रीय नीति को बढावा देना था। यद्यपि इस प्रतिष्ठान की इस बात के लिए आलोचना की जाती रही है कि उसने अपना नीति-निर्धारण का काम पूरी तत्परता से नही किया है, तो भी उसने अनेक महत्त्वपूर्ण सिद्धान्त अपने लिए निर्धारित किए हैं। ये सिद्धान्त हैं : (१) जहाँ तक सम्भव हो प्रतिष्ठान क्रियात्मक विज्ञान के बजाय बुनियादी विज्ञान को समुन्नत करे; (२) देश मे अधिक वैज्ञानिक तैयार करने के लिए माध्यमिक स्कूलो मे विज्ञान की शिक्षा के तरीको मे सुधार करे; और (३) गुप्त रखे जाने वाले वैज्ञानिक कार्यों के बजाय ऐसे कार्यों को हाथ मे ले, जिनको गुप्त रखना आवश्यक नही है।

विज्ञान और सामाजिक सुधार

जिस तरह प्रतिभाशाली युवक मैकेनिक घर के पिछवाड़े गैरेज में मोटर या अन्य मशीनो मे छेड़-छाड़ कर उन पर प्रयोग करते रहते हैं, वैसे ही अमेरिकन लोग अपने समाज मे भी इस सुधार की आशा से कुछ-न-कुछ प्रयोग और परिवर्तन करते रहते हैं। किसी भी सस्कृति के लिए, जिस पर तरह-तरह के दबाव पड़ रहे हो, यह बात बहुत आशा-वर्धक होगी कि उसके सदस्य उसकी निष्पक्ष और वैज्ञानिक आधार पर ऊँचे स्तर की आलोचना करें। यद्यपि यह सम्भव है कि स्वार्थी और सकीर्ण हित जीत जाएँ तो भी यह बात सभी स्वीकार करते हैं कि वैज्ञानिक प्रमाण ही किसी भी नीति-निर्धारण या निर्णय मे सबसे अधिक वज़नी प्रमाण होते हैं।

स्वयं हमारे राष्ट्र का निर्माण भी सत्रहवी शताब्दी के यूरोप में विद्यमान परिस्थितियो के विरोध से हुआ। इसलिए विरोध और विद्रोह ही अमेरिकन समाज का विशिष्ट लक्षण है। लेकिन इस विद्रोह के द्वारा वह सुधार करना चाहता है और उसकी सुधार की प्रवृत्ति सबसे पहले ईश्वर में और उसके बाद मानवीय प्रगति मे उसके विश्वास और आस्था पर आधारित रही है। अमेरिकन सुधार आन्दोलन मे धर्म और नैतिकता का रग आज भी विद्यमान है। यही कारण है कि जिन लोगों के कान बार-बार मार्क्स और लेनिन के वचनो को सुनने के अभ्यस्त हो गए है, वे अमेरिकन समाज मे होने वाले सुधारो को देख ही नही सकते और देखते भी है तो सन्देह की दृष्टि से।

अमेरिका के विद्रोह और सुधार के विशाल साहित्य को अन्य देशो के लोग बहुत कम जानते हैं। इस साहित्य का आरम्भ अमेरिका के आरम्भ से ही होता है, जैसाकि विलियम ब्रैडफोर्ड द्वारा अमेरिका मे लिखी गई सर्वप्रथम महान् अंग्रेजी पुस्तक 'ऑफ प्लिमथ प्लाण्टेशन' से विदित होता है। इस साहित्य मे अमेरिका के औपनिवेशिक युग से जैफर्सन के युग तक का, विलियम लॉयड गैरीसन, सूसन बी० एन्थनी, डेमारेस्ट लॉयड आदि समाज-सुधारकों के वचनो और कार्यों का, १८४० के दशक मे गुलाम-प्रथा उन्मूलन, अध्यात्मवाद, समाजवाद और सब वस्तुओ को मानवीय मन की उपज बताने वाले शेलिंग और इमर्सन आदि के सिद्धान्त के रूप मे हुए समस्त सुधारवादी आन्दोलनो का और उसके बाद समाज की गन्दगी को साफ करने वाले अगली शताब्दी के सुधारको तक का वर्णन है।

ब्रायन और टेडी रूजवेल्ट से विल्सन और लाफोलेत तक, उसके बाद फ्रैंकलिन रूजवेल्ट की नई नीति (न्यू डील) तक और फिर आइज़न-हावर के युग तक सुधारवाद ने राजनीति को प्रभावित किया है। अब यह ज़ाहिर हो गया है कि अनुदार लोगो के दल ने भी समाज-सुधार को अपने लक्ष्य के रूप मे अपना लिया है, हालांकि यह सम्भव है कि

उसके कुछ सदस्य अब भी जन-साधारण के समाज के इतने निकट सम्पर्क मे आने से घबरायें। पोपुलिस्ट, सोशलिस्ट और प्रोग्रेसिव आदि सभी समाजसुधारक वर्गो द्वारा सुझाये गये प्रस्ताव देर-सवेर कानून का रूप धारण करते ही रहे हैं।

विरोध और सुधार के आन्दोलन के मूल मे दो सिद्धान्त अन्तर्निहित रहे हैं। पहला यह कि मानवीय तर्क-बुद्धि और निरन्तर प्रवर्धमान वैज्ञानिक ज्ञान जनता के रहन-सहन के स्तर को ऊँचा उठा सकता है और दूसरा यह कि देश मे जो दौलत पैदा होती है उसमे सभी को हिस्सा मिलना चाहिए। दोनो प्रमुख राजनीतिक दलो के कथनो और कार्यों से यह स्पष्ट हो गया है कि ये सिद्धान्त अब अमेरिकन सिद्धान्त बन गये हैं। हाल के वर्षों मे दोनो राजनीतिक दलो और जनता ने यह भली-भाँति समझ लिया है कि उनका अपना भला इसी मे है कि इन सिद्धान्तो का विश्वव्यापी प्रसार किया जाए और सारे ससार का जीवन-स्तर ऊँचा उठाया जाए।

एक ओर शुद्धाचारवादी प्योरिटन लोगो का समाज-व्यवस्था के प्रति विरोध और विद्रोह और दूसरी ओर तर्कबुद्धि का युग, एक ओर ईसाइयत का समाज कल्याण का सन्देश और दूसरी ओर वैज्ञानिक पद्धति का विकास—इन सबने मिलकर सयुक्त राज्य मे विज्ञान को मानव की उन्नति का साधन बना दिया है। जेम्सटाउन और प्लाइमाउथ की प्रारम्भिक बस्तियो से लेकर ब्रुक फार्म और ओनीडा कम्युनिटी तक और बाइबिल कॉमनवेल्थ से सर्वजातीय आवास-गृहो के विकास तक हर मजिल और दौर मे देश ने तरह-तरह के सामाजिक परीक्षण किए है। अमेरिका के इतिहास के प्रारम्भिक युग मे जब जगलो मे नई बस्तियाँ बसाई जाती थी, तब प्रायः उनमे कोई-न-कोई नया कार्यक्रम हाथ मे लिया जाता था। उदाहरण के लिए जॉन जे शिफर्ड ने ओबर-लिन, ओहायो मे अपनी नई बस्ती एक स्कूल को केन्द्र बनाकर स्थापित की। इस स्कूल का उद्देश्य ऐसे युवक तैयार करना था जो ईसाइयत

के सन्देश को और ओबरलिन की समाजवादी पद्धति को तमाम नये इलाको मे पहुँचा सके ।

ये बस्तियाँ एक प्रकार की सामाजिक प्रयोगशालाएँ थी । बाद में समाजशास्त्रियो ने इन प्रारम्भिक बस्तियो का अध्ययन कर यह मालूम करने की चेष्टा की कि क्यो वे सफल हुईं और क्यो असफल । इन अध्ययनो मे सबसे प्रसिद्ध रॉबर्ट और हेलन लिण्ड द्वारा किया गया मिडिलटाउन का अध्ययन है । इससे पूर्व कुछ ऐसी सामाजिक व्यवस्थाएँ की जा चुकी थी, जिनमे पडोसी गरीब बस्तियो की समस्याओ का अध्ययन कर उनकी आवश्यकताएँ पूरी करने का प्रयत्न किया गया था । मिडिलटाउन के अध्ययन के बाद और भी अनेक अध्ययन किए गए, जिनमे सबसे विस्तृत और व्यापक अध्ययन डब्लू. लॉयड वार्नर और उनके साथियो की यांका सिटी परियोजना थी ।

इन विस्तृत अध्ययनो के आधार पर समाजशास्त्रियो ने मानवीय व्यवहार, सामूहिक बस्तियो और सामाजिक सस्थाओ के बारे मे एक विस्तृत वैज्ञानिक जानकारी का संग्रह किया । जीवकोशो का खुर्दबीन से अध्ययन करने वाले जीवविज्ञान शास्त्री और परमाणु की रचना का अध्ययन करने वाले भौतिक विज्ञान शास्त्री की भाँति इन लोगो ने भी मानवीय क्रियाकलाप का अध्ययन अत्यन्त निष्पक्षता से किया । उन्होने यह मालूम किया कि सामाजिक व्यवहार को पहले से ही कैसे जाना जा सकता है और सामाजिक बुराइयो को रोकना या सुधारना कैसे सम्भव है ।

डार्विन और फ्रायड के सिद्धान्तो की भाँति इन समाजशास्त्रियों के सिद्धान्त भी जन-चेतना मे प्रवेश करने लगे । एक बार जब समाज-शास्त्र के सिद्धान्त जन-साधारण के लिए विज्ञान का अग बन गए तो सामाजिक न्याय की ओर प्रगति का रास्ता अपने आप ही खुल गया, क्योकि जन-साधारण विज्ञान को समझ न पाने पर भी उसकी चाम-त्कारिक सत्ता को स्वीकार अवश्य करता था । विज्ञान अपने आपको

इतनी अधिक बार सफल सिद्ध कर चुका था कि उसकी समस्त सफल-ताओ ने इस नये विज्ञान को अपनी जडें मजबूत बनाने के सघर्ष मे बहुत सहायता दी। समाज शास्त्र ने समाज के जिन दुखते और सड़े अंगो की परीक्षा की थी, उन्हे काटकर फेंक देना या उनका इलाज करना जरूरी था। जिस तरह चिकित्सक केवल रोग का निदान ही नही करता उसका इलाज भी बताता है, वैसे ही सामाजिक चिकित्सक भी केवल सामाजिक रोगो का निदान ही नही करता, वह जातीय तनाव, बाल-अपराध और पारिवारिक असन्तोष और अशान्ति के रोगो का इलाज करने के लिए कार्यक्रम भी सुझा सकता है।

समाज-सुधार का काम सबसे पहले कस्बो और बस्तियो की आव-श्यकताओ का निर्धारण करने के लिए उनके सर्वेक्षण से आरम्भ हुआ। उदाहरण के लिए ग्रीनविल, दक्षिणी कैरोलाइना, के सामने सबसे बड़ी समस्या उसके नीग्रो निवासियो की थी। इसलिए वहाँ की नगर-परिषद् ने यह अनुभव किया कि यह हर व्यक्ति की समस्या है, सभी विचारो का प्रतिनिधित्व करने वाले गोरो और नीग्रो लोगो की एक समिति नियुक्त की। इस समिति ने बारह उपसमितियाँ आवास से लेकर रोजगार तक सभी समस्याओ के अध्ययन के लिए कायम की। हर उपसमिति के दो-दो अध्यक्ष थे, एक गोरा और एक नीग्रो। दो सौ व्यक्ति इन समस्याओ के बारे मे सर्वेक्षण के लिए नियुक्त किए गए। गृहिणियो को अपने पडौसियो की समस्याओ का अध्ययन करने का और पादरियो को बसो मे नीग्रो लोगो के साथ किए जाने वाले व्यवहार की जाँच करने का काम सौपा गया।

ग्रीनविल ने जब सारी सामाजिक समस्या का अध्ययन कर लिया तो नीग्रो और अन्य लोगो के लिए आवास एव गन्दी बस्तियो के उन्मूलन के कार्यक्रम प्रारम्भ कर दिए गए। नीग्रो डाक्टरो को पहली बार मैडि-कल सोसाइटी की बैठको मे आमन्त्रित किया गया। सम्भवतः सबसे महत्वपूर्ण बात यह थी कि गोरे और नीग्रो दोनो इन समितियो मे एक

साथ मिलकर काम करते थे जो अपने आप मे एक बडी सामाजिक प्रगति था। इस सर्वेक्षण मे जो पद्धति अपनाई गई उसमे पहले समस्या का पता लगाया जाता और फिर मिलकर उसका विश्लेषण और उसके बाद इलाज किया जाता। यह पद्धति जॉन ड्यूई की लोकतन्त्र की परिभाषा को साकार करती है। जॉन ड्यूई लोकतन्त्र को एक ऐसी पद्धति मानता है जिसमे प्रयोगो और परीक्षणो द्वारा मानवीय प्रकृति की शक्तियो को मुक्त कर स्वैच्छिक प्रयत्नो पर आधारित सहकारितापूर्ण स्वतन्त्रता की सेवा मे नियोजित किया जाता है।

समूचे नगर और समाज के स्तर को ऊँचा उठाने और उसे सुखी बनाने का विचार अमेरिकनो को प्रारम्भ से ही आकृष्ट करता रहा है। जीवन के स्वप्न को साकार करने के लिए हर प्रकार की समाज-सेवा का आश्रय लिया जाता है—जैसे मनोरजन कार्यक्रम, पारिवारिक सेवा केन्द्र, मानसिक स्वास्थ्य चिकित्सालय, नगर परिषदो द्वारा नियुक्त नर्सें, शिशु चिकित्सालय, प्रसव से पूर्व गर्भवती स्त्रियो की देखभाल, रोजगार दिलाऊ कार्यालय, बालचर और गर्लगाइड, वृद्धो और निराश्रित बच्चो की देख-भाल आदि। इन सब सामाजिक सेवाओ के लिए धन सग्रह करने को बीस लाख से अधिक व्यक्ति हर वर्ष घर-घर जाते हैं और सामूहिक नगरकोषो और परिषदो के कार्यक्रमो के लिए ३० करोड डालर से अधिक राशि एकत्र करते है। यही नही, सेवाभावी लोग अस्पतालो मे सेवा करके या स्काउटो को प्रशिक्षण देकर लाखो घण्टे समाज-सेवा के लिए प्रदान करते हैं। समाज के स्तर को ऊँचा उठाने का काम सरकार का नही है। वह स्वय समाज का काम है और उसके लिए यह आवश्यक है कि समाज-सेवी लोग स्वेच्छा से धन और समय दें।

समाज-विज्ञानो के द्वारा किये गये अध्ययनो के निष्कर्षो का उपयोग समाज के सभी क्षेत्रो मे किया जा रहा है। पादरी इन निष्कर्षो के आधार पर गिरजाघर मे उपदेश करता है। स्कूल अपने मार्गनिर्देशन कार्यक्रमों मे और छात्र के व्यक्तित्व और उसकी आवश्यकताओ के

अध्ययन मे उनका उपयोग करता है । उद्योग अपने कर्मचारियो के साथ अच्छे सम्बन्ध और जनता के साथ सम्पर्क स्थापित करने मे उनका इस्तेमाल करता है । हॉलीवुड जनता की आवश्यकता और माँग का पता लगाने और विज्ञापनकर्त्ता जनता की उत्पादित वस्तुओ की माँग का अध्ययन करने के लिए इसी पद्धति का आश्रय लेता है ।

व्यक्तियो के आपसी सम्बन्धो की टैकनीक का अध्ययन कर ऐसे उपाय निकाले जाते है जिनसे विभिन्न वर्गो, दलो और समितियो का काम अधिक अच्छे सौहार्दपूर्ण तरीके से हो सके । इस प्रकार सामाजिक विज्ञान हमे महत्त्वपूर्ण और उपयोगी साधन प्रदान करते हैं और उनका मूल्य उनके उपयोग से ही जाँचा जा सकता है । बारूद एक नई सडक बनाने के लिए रास्ता साफ करने के काम मे भी लाया जा सकता है और एक बेगुनाह व्यक्ति की जान लेने के काम मे भी । इसी प्रकार धन का उपयोग भी मनुष्य को ऊँचा उठाने या पतन की ओर ले जाने, दोनो मे किया जा सकता है । यही नही, धर्म का उपयोग भी वैमनस्य और घृणा को बढाने के लिए किया जा सकता है । इस प्रकार समाज विज्ञान के उपकरण भी यदि स्वार्थी और अविवेकी लोगो के हाथो मे पड जाए तो वे उनका उपयोग कर्मचारियो को मालिको की इच्छा का दास बनाने, जन-मत को प्रभावित करने और व्यावसायिक एव राज-नीतिक प्रयोजनो के लिए जन-भावनाओ को उभाडने मे कर सकते हैं ।

वैज्ञानिक सिद्धान्तो को मानवीय कल्याण और उत्कर्ष के लिए उपयोग मे लानेवाली तमाम परियोजनाओ मे सबसे महत्त्वपूर्ण थी टेनेसी घाटी परियोजना, जिसकी टैक्निकल सफलताओ और उपलब्धियो का पहल ही उल्लेख किया जा चुका है । लेकिन इसकी सामाजिक सफलता उनसे भी अधिक महत्त्वपूर्ण है । टेनेसी घाटी प्रशासन ने अपने कार्यक्रम अपने क्षेत्र के किसी गाँव पर जवर्दस्ती नही थोपे, वल्कि उसने इनमे धीरे-धीरे इन कार्यक्रमो के प्रति दिलचस्पी पैदा की । प्रशासन के अधि-कारी किसानो से उनके घरो पर जाकर मिले । उन्होने उन्हें ग्राम के

स्कूल मे छोटे-छोटे समूहो मे मिलने के लिए निमन्त्रित किया और समझाया कि पारस्परिक सहयोग से वे क्या लाभ उठा सकते हैं। धीरे-धीरे लोगो की समझ मे बात आ गई। कृषि के तरीको मे सुधार हुआ। फसले अधिक अच्छी हुई। लोगो मे सामूहिकता और सहयोग की भावना का विकास हुआ। फलत स्वच्छता, सफाई, अच्छे घरो का निर्माण, अच्छी शिक्षा-व्यवस्था और मनोरजन के साधनो का आयोजन किया गया। सरकार ने जनता को अपने दक्ष व्यक्तियो की सेवाएँ अर्पित की किन्तु उन्हे उसपर थोपा नही। उसने तब तक प्रतीक्षा की, जब तक कि लोगो मे सहयोग की भावना स्वेच्छा से विकसित न हो, क्योकि वह जानती थी कि स्वय भीतर से पैदा होने वाला परिवर्तन ही सुनिश्चित और स्थायी होता है।

नई सीमाए

चिकित्सा विज्ञान आन्त्रपुच्छ को आपरेशन कर निकाल सकता है, टूटी हुई टाँग को ठीक बैठा सकता है और शिशु पक्षाघात पर विजय पा सकता है। कृषि विज्ञान सस्ते खाद्य-पदार्थ इतनी बडी मात्रा मे पैदा कर सकता है कि उससे भूख का नाम ही ससार से मिटाया जा सके। किन्तु इन्सान की यह लडाई अधूरी है। कारण, बीमारी मनुष्यो को इतनी चोट और नुकसान नही पहुँचाती, जितना कि वे अपनी सस्थाओ और परम्पराओ के दबावो से स्वय अपने आपको पहुँचाते हैं। आज लोग रोगो के विषाणुओ और जीवाणुओ के शिकार उतने नही होते, जितने कि तनाव, सघर्ष, प्रतिस्पर्धा और आर्थिक लोभ और लूट-खसोट के शिकार होते है।

इसलिए अब प्राकृतिक विज्ञान और सामाजिक विज्ञान, दोनो को ही समान समस्याओ का समाधान करना है। डाक्टर आज रोगी की चिकित्सा के लिए मानस-चिकित्सक को भी बुलाता है। भारत या थाईलैंड के किसी गाँव मे जब कृषि-टैक्नीशियन किसी नई टैक्नीक का प्रयोग करता है तो वह नृवशशास्त्रियो की भी यह जानने के लिए,

सहायता लेता है कि कही उसका कोई कार्य इन ग्रामो मे प्रचलित सामाजिक विधि-निषेधो या रूढियो का उल्लघन तो नही करता। वह अपना कार्यक्रम जनता के सामने इस ढग से प्रस्तुत करता है कि स्थानीय लोगो के नैतिक आचार-विचार, परम्पराएँ और रूढियाँ उसे अगीकार कर लें। जो उद्योगपति अपने कारखाने मे कोई नई मशीन लगाना चाहता है, वह भी पहले मानवीय विषयो और सम्बन्धो के ज्ञाताओ से, फिर अपने प्रबन्धक अधिकारियो से और उसके बाद कर्मचारी सघ के प्रतिनिधियो से विचार-विनिमय करके उसके लिए भूमिका तैयार करता है।

सामाजिक और प्राकृतिक विज्ञान केवल उन्ही समस्याओ के समाधान का प्रयत्न नही करते, जिनके लिए उनके सयुक्त प्रयत्न की आवश्यकता है। बल्कि वे एक-दूसरे के एकाकी क्षेत्रो मे भी प्रवेश करने लगे हैं। पहले जो क्षेत्र केवल भौतिक विज्ञान के या केवल जीव-विज्ञान के क्षेत्र समझे जाते थे, उनके मध्य मे आज जीव-भौतिक विज्ञान और जीव-रसायन के नये क्षेत्र आ गये है। इसी तरह जीव-विज्ञान और समाज-विज्ञान के बीच की खाई भी भरती जा रही है। आज जैविक क्रियाओ के रासायनिक आधार को और सामाजिक व्यवहार के जीव-विज्ञान सम्बन्धी आधार को पहले की अपेक्षा अधिक अच्छी तरह समझा जा रहा है। जब विभिन्न विज्ञानो के बीच की लुप्त कडियाँ मिल जाएँगी, तब यह सम्भव है कि मानव के व्यवहार और रुझान और सामाजिक प्रगति को रासायसिक साधनो से नियन्त्रित किया जा सके। वह जमाना तो आ ही चुका है जब कि मनुष्य सुबह उठकर और ब्रुश से दाँत साफ कर अपने दवाओ के बक्से से ऐसी गोली ले सकता है जो उसे बर्फ पर स्की से फिसलने का खेल खेलने के लिए शारीरिक शक्ति या किसी महावपूर्ण बिक्री के सौदे के लिए अनुकूल मानसिक शक्ति प्रदान कर सके।

साइबरनेटिक्स का विज्ञान मशीनरी और समाज दोनो को सन्देशो द्वारा नियन्त्रित करने के उपायो का अनुसन्धान कर रहा है ।* यहाँ मशीनरी के साथ समाज को भी जोड देना यह सूचित करता है कि हमने सभ्यता को किस हद तक मशीनी सभ्यता बना लिया है या मशीन का किस हद तक सामाजिकीकरण कर लिया है । नॉर्वर्ट वीनर ने सन्देशो के विज्ञान मे केवल भाषा, सचार के माध्यमो और गणना-यन्त्र आदि मशीनो का ही समावेश नही किया है, बल्कि उन सभी साधनो का समावेश किया है जिनसे समाज को नियन्त्रित करने वाले सकेत भेजे जाते हैं । उसका विश्वास है कि समाज को पूरी तरह समझने के लिए उन सब सन्देशो को पूर्ण रूपेण समझना जरूरी है, जो समाज में आदान-प्रदान किये जाते हैं । यही नही, भविष्य मे इन सन्देशो के भावी विकास को पूरी तरह समझना और भी अधिकाधिक आवश्यक होता जाएगा क्योकि सन्देशो के प्रेषण और ग्रहण का काम, जो अब तक केवल मानवीय कार्य ही समझा जाता था, धीरे-धीरे मशीनो के हाथ मे चला जा रहा है ।

गणना यन्त्र (कम्प्यूटिग मशीन) जिन्हें इलेक्ट्रॉनिक मस्तिष्क भी कहा जाता है, अभी से उस काम को कुछ मिनटो मे पूरा करने लग गये है, जो पहले वर्षो मे होते थे और जिनमे इतना समय लगने पर भी गलती की सम्भावना अधिक रहती थी । अब ऐसे यन्त्र बनाये जा रहे है जिनसे किसी भी विषय पर एक पूरे पुस्तकालय का ज्ञान तत्काल ही उपलब्ध हो सकेगा । एक भाषा से दूसरी भाषा मे अनुवाद करने की मशीनें तो बना भी ली गई हैं । मशीनरी आज मानव को केवल उबा देने वाले शारीरिक श्रम से ही नही, बल्कि मानसिक श्रम से भी, जिस मे उसने सारी जिन्दगी लगा दी थी, धीरे-धीरे मुक्त करती जा रही है । वह युग अब नजदीक ही आ गया है, जबकि मनुष्य स्वतन्त्र होकर अपनी सृजन की शक्तियो का पूर्णत. उपयोग कर सकेगा ।

*नॉर्वर्ट वीनर - 'दि ह्यूमन यूज़ ऑफ ह्यूमन बीइंग्स' ।

लोकतन्त्र का विज्ञान

विज्ञान या वैज्ञानिक पद्धति का दर्शन जब एक लोकतन्त्री समाज की आवश्यकताओ पर लागू किया जाता है तब उसे फलवाद (प्रैग-मेटिज्म) कहा जाता है। इसका अर्थ यह है कि अच्छे और बुरे अथवा सत्य और मिथ्या के बीच चुनाव कुछ अमूर्त्त सिद्धान्तो के साथ चिपटे रह कर नही किया जा सकता, बल्कि किसी काम के फल को देखकर ही किया जा सकता है। अधिकतर दार्शनिक विचारधाराओ का आधार यह विचार रहा है कि यह ससार एक सुनिश्चित प्रणाली का अग है और यदि उसके मूल सिद्धान्त एक बार खोज और निर्धारित कर लिये जाएँ तो उससे सभी समस्याएँ हल हो जाएँगी। लेकिन फल-वादी ससार को एक प्रतिक्षण परिवर्तमान वस्तु मानता है जिसमे किसी सिद्धान्त के साथ कट्टरपन से चिपटे रहना और किसी सत्य को बिल्कुल अन्तिम और अपरिवर्तनीय मान लेना केवल हानिकारक ही होता है।

विलियम जेम्स ने फलवाद की व्याख्या करते हुए (प्रैगमेटिज्म नाम भी उसे जेम्स ने ही दिया है) अस्पष्ट और अमूर्त्त सिद्धान्तो के क्षेत्र मे युगो से चले आ रहे दार्शनिक विवादो का अन्त कर दिया और इस बात पर आग्रह किया कि किसी भी सिद्धान्त की कसौटी सिर्फ यह है कि मनुष्यो की दुनिया पर उसका क्या क्रियात्मक असर पड़ता है। इस-लिए फलवादी पद्धति ने अन्तहीन दार्शनिक विवादो को लमहे भर मे ही फल और उपयोगिता की कसौटी से खत्म कर दिया। जेम्स का कहना है कि "सत्य उसी वस्तु का नाम है जिसके बारे मे हमारा यह विश्वास हो कि वह अच्छी है और जिसके अच्छी होने के भी कुछ निश्चित कारण हो।"

वैज्ञानिक पद्धति की दार्शनिक विचारधारा के साथ जॉन ड्यूई ने साधनवाद का भी समावेश किया और इन दोनो को मानव के दैनिक जीवन की दुनिया की सेवा मे प्रवृत्त किया। उसका यह आग्रह था कि किसी उद्देश्य का सही मूल्याकन करने के लिए यह देखना आवश्यक है

कि उसकी प्राप्ति के लिए काम मे लाये गये साधनो का परिणाम क्या होता है। साधन भी उद्देश्य का ही हिस्सा हैं। हम यह तब तक नही जान सकते कि हमने किस वस्तु का चयन किया है, जब तक कि हम यह न जान लें कि उस चयन का परिणाम क्या होगा। आदर्शों मे आस्था रखने से भी हमे उनके परिणामों के मूल्याकन से छुटकारा नहीं मिल सकता।

एक ओर जहाँ जॉन ड्यूई वैज्ञानिक पद्धति के उपयोग से समाज के पुनर्निर्माण के लिए एक उपयागी दार्शनिक आधार तैयार कर रहा था, वहाँ ओलिवर वैंडल होम्स यथार्थवाद (रीयलिज्म) के नाम से कानून के क्षेत्र मे एक नया आन्दोलन चला रहा था। उसका कहना था कि कानून को एक अमूर्त्त वस्तु नही माना जाना चाहिए, बल्कि उसे एक ऐसा साधन समझा जाना चाहिए जो मानव की बदलती हुई आवश्यकताओ को पूरा कर सकता है और सामाजिक परिवर्त्तनो के अनुसार परिवर्तित होता रहता है।

जेम्स हार्वे रौबिन्सन का कहना था कि इतिहास केवल अतीत की घटनावली का वर्णन ही नही है, बल्कि वह एक साधन है जिससे वर्तमान को जाना जा सकता है और भविष्य को प्रभावित किया जा सकता है। इस प्रकार इतिहास सामाजिक विज्ञानो का सहगामी बन गया। ड्यूई, रौबिन्सन और उनके अनुयायियो का विश्वास था कि एक समय ऐसा आएगा जबकि औद्योगिक क्रान्ति द्वारा घोषित वैज्ञानिक दृष्टिकोण राजनीति मे भी आ जाएगा। विज्ञान की पद्धति से उद्योगों ने संसार को बदल दिया है। किन्तु टैकनोलॉजी के क्षेत्र मे इतनी उन्नति कर लेने के बाद भी सामाजिक क्षेत्र मे हम बहुत पीछे रह गये है। ड्यूई का कहना था कि जिस वैज्ञानिक पद्धति ने उद्योगवाद को जन्म दिया है, उसकी निन्दा करने या उसे ठुकराने के बजाय यह कही बेहतर है कि हम समाज मे भी उसके सिद्धान्तो का उपयोग करे और उनसे ग़रीबी, अज्ञान और विषमता को दूर करने का प्रयत्न करें।

अमेरिका मे ऐसे लोग भी थे जो ड्यूई के इस विचार को स्वीकार नही करते थे कि साधन और उद्देश्य मे परस्पर सम्बन्ध है। उनका कहना था कि विज्ञान के पास मूल्यो को निर्धारित करने का कोई उपाय नही है। तथ्य यह है कि वैज्ञानिक लोग यह सिद्ध कर सकते हैं कि सामाजिक सगठन को अन्य प्रणालियो के मुकाबले मे लोकतन्त्रीय प्रणाली से समाज और व्यक्ति दोनो को अधिक लाभ हैं। इस प्रकार लोक-तन्त्री प्रणाली के द्वारा मुक्त होकर मानव अपने लिए लक्ष्य और उनकी प्राप्ति के मार्ग का निर्धारण कर सकता है। दूसरे शब्दो मे इस का अर्थ यह है कि फलवादी विचारधारा मे मानवीय मूल्यो की धारणा स्वय ही निहित है।

जो लोग यह आग्रह करते थे कि हमे मानवीय मूल्यो का निर्धारण किसी प्रागनुभव और पूर्णवादी अपरिवर्त्तनीय सैद्धान्तिक प्रणाली से करना चाहिए, उन्हें भी यह स्वीकार करना पडा कि विज्ञान ने चिकित्सा-तन्त्र, समाज शास्त्र, उद्योग और विशुद्ध विज्ञान के क्षेत्र मे अनु-सन्धान के अनेक कार्यक्रम अपनाकर आधी शताब्दी मे ही मानव को सुखी बनाने के लिए उससे कही अधिक काम किया है, जितना कि अमूर्त और अव्यावहारिक दार्शनिक विचारधाराओ ने आद्य कारण, अप्रेरित प्रेरक और विशुद्ध ज्ञान आदि चीजो पर बहस करते हुए तीन हज़ार वर्ष मे भी नही किया है।

जैसा कि जेम्स ब्रायण्ट कोनाण्ट ने कहा है, पिछली एक शताब्दी या इसके लगभग काल मे निर्धारित किये गये वैज्ञानिक सिद्धान्त भी पार्थेनन या मध्ययुगीन गिरजाघरो की भाँति ही इस बात के स्मारक हैं कि मानवीय भावना क्या कुछ कर सकती है। वे मानव की सृजन शक्ति के विकास के चिह्न हैं। "परीक्षा और प्रेक्षण से नये सिद्धान्तो और नई विचार-धाराओ का एक महान तानाबाना तैयार करना और नये परीक्षणों का

अत्यधिक फलयुक्त और लाभप्रद सिद्ध होना कोई छोटी उपलब्धि नहीं है।"*

अमेरिकनो ने विज्ञान को अपनी निज की चीज़ के रूप में अपनाया, उसे एक ऐसी विचार-प्रणाली की शक्ल मे ग्रहण किया, जो उनके अनेकत्ववादी, नये-नये क्षेत्रो मे अग्रणी बनने वाले, आशावादी, परिवर्तनशील और अधिनायकवाद-विरोधी समाज को सबसे अच्छे तरीके से अभिव्यक्त करती है। विज्ञान उनके लिए एक अन्तहीन सीमा था; उन्नति, अभिवृद्धि और सुधार का प्रशस्त मार्ग था।

प्रतिष्ठान

विज्ञान मे यह गहरी आस्था और इस आस्था की क्रियात्मक अभिव्यक्ति जितनी हमारे देश मे सस्थापित विभिन्न प्रतिष्ठानो मे नजर आती है, उतनी और किसी चीज मे नही। टैकनोलॉजी की बदौलत अर्जित की गई विशाल सम्पदाओ के फलस्वरूप बीसवी शताब्दी में मानवीय उन्नति के लिए अनुसन्धान कार्यक्रमो को समुन्नत करने के लिए ये प्रतिष्ठान कायम किये गये।

देश मे इस समय चल रहे सैकड़ो प्रतिष्ठानो मे से कुछ का यहाँ उदाहरण के लिए उल्लेख किया जा सकता है। कारनेगी कार्पोरेशन आफ न्यूयार्क (जो स्काटलैंड से बचपन में अमेरिका मे आकर बसे कारनेगी द्वारा, जो अपने अध्यवसाय से ससार का बहुत बडा इस्पात उद्योगपति बन गया, स्थापित अनेक प्रतिष्ठानो मे से एक है) ज्ञान की उन्नति और प्रसार के लिए स्थापित किया गया था। यह प्रतिष्ठान अब उन संस्थाओ को अनुदान देता है जो मानव को अधिक सुखी बनाने के लिए आवश्यक नये ज्ञान के द्वार खोलने वाले अध्ययन और अनुसन्धान के कार्यक्रमो को चला रही है। रसेल सेज प्रतिष्ठान अपना अधिकतर धन सामाजिक विज्ञानो के अनुसन्धान के परिणामो और निष्कर्षों को समाज-

*मॉढ ः साइंस एण्ड मॉडर्न मैन, पृष्ठ १८७।

मे क्रियात्मक रूप देने वाले कार्यक्रमो पर खर्च कराता है। बोस्टन के व्यापारी एडवर्ड फिलेन द्वारा स्थापित 'ट्वेण्टीएथ सेंचुरी फड' वर्त्तमान आर्थिक और सामाजिक समस्याओ के अध्ययन और जनता को उनकी जानकारी देने के कार्यक्रमो का सचालन करता है।

रॉकफेलर प्रतिष्ठान की स्थापना, समस्त विश्व मे मानव समाज के कल्याण को समुन्नत करने के लिए की गई थी। यह प्रतिष्ठान ज्ञान के विविध क्षेत्रो की सहायता करता है और केवल ज्ञान की उन्नति और अभिवृद्धि पर ही नही, बल्कि मानव की अभिरुचियो और हितो मे उसके क्रियात्मक उपयोग पर भी बल देता है। चिकित्सा विज्ञान, जीव विज्ञान, कृषि, सामाजिक विज्ञान और विज्ञानेतर विषय सभी इस के क्षेत्र के अन्तर्गत आ जाते है।

जॉन साइमन गगेनहाइम स्मारक प्रतिष्ठान केवल वैज्ञानिको और अनुसधान-कार्यकर्त्ताओ को ही नही, सभी प्रकार के सृजनात्मक कलाकारो—कवियो, गायको, मूर्त्तिकारो और चित्रकारो—को भी सहायता देता है। अन्य प्रतिष्ठान जहाँ दूसरी सस्थाओ के द्वारा व्यक्तियो को सहायता देते हैं, वहाँ यह प्रतिष्ठान असाधारण योग्यता प्रदर्शित करने वाले होनहार व्यक्ति का चुनाव स्वय करता है। इसके अनुदानो ने ऐसे सैकडो सृजनशील कार्यकर्त्ताओ को प्रोत्साहन दिया है, जिनका काम स्वभावत बिल्कुल एकाकी है और इसीलिए जो अन्य किसी रूप मे प्रतिष्ठा और मान्यता प्राप्त नही कर सकते थे, क्योकि समाज मौलिक और अग्रगामी सृजनात्मक कार्यो का मूल्य धन के रूप मे बहुत कम आँकता है।

सबसे बडा प्रतिष्ठान फोर्ड फाउडेशन है। जैसा कि इस प्रतिष्ठान के परिचय के सम्बन्ध मे एक पुस्तक मे कहा गया है, "यह प्रतिष्ठान एक विशाल कोश है, जो उन लोगो से हर समय घिरा रहता है, जिन्हें कुछ धन की आवश्यकता होती है।"* सन् १९५३ मे इस कोश की

*ड्वाइट मैकडोनल्ड ' "दि फोर्ड फाउडेशन ' दि मैन ऐण्ड दि मिलियन्स।"

परिसम्पत्ति ५० करोड डालर थी किन्तु १९५५ मे उसने यह सारा धन एक ही बार मे बिना किसी धार्मिक विश्वास के भेदभाव के चार हजार से अधिक प्राइवेट कालेजो, विश्वविद्यालयो और अस्पतालो को दे डाला।" यह सारा धन मोटर उद्योग के मुनाफे से प्राप्त हुआ था और एक नाटकीय ढग से इस बात को अभिव्यक्त करता था कि किस प्रकार प्राइवेट उद्योगो को अपने सार्वजनिक दायित्व का बोध है और किस तरह वे राष्ट्र के कल्याण मे योगदान करते है।

फोर्ड प्रतिष्ठान की नीति और कार्यक्रम को निर्धारित करने के लिए किये गये सर्वेक्षण और अध्ययन से मालूम हुआ है कि इन पाच क्षेत्रो को सबसे अधिक सहायता की आवश्यकता है—शान्ति की स्थापना, लोकतन्त्र का सुदृढीकरण, अर्थ व्यवस्था का दृढीकरण, लोकतन्त्री समाज मे शिक्षा का प्रसार और व्यक्तिगत व्यवहार और मानवीय सम्बन्धो का अध्ययन। यह एक विचित्र, किन्तु सही बात थी कि यह अध्ययन करने वालो ने भौतिक विज्ञानो और टैकनोलॉजी के विकास के लिए, जिसकी बदौलत इतनी विशाल सम्पदा एकत्र की जा सकी, धन की सहायता देने की कोई आवश्यकता नही समझी।

इन प्रतिष्ठानो के द्वारा, जिनमें कैन्सर अनुसधान या शिशु पक्षाघात के नियन्त्रण के लिए स्थापित ऐसे प्रतिष्ठान भी शामिल है, जो छोटे-छोटे दाताओ से थोडा-थोडा कर लाखो डालर प्राप्त करते हैं, अमेरिकन लोग अपना यह विश्वास प्रगट करते है कि ज्ञान और प्रतिभा अर्जित करना मानव का एक नैतिक दायित्व है और विज्ञान मे मानवीय समस्याओ को हल करने की क्षमता है। इससे यह भी प्रकट होता है कि वे इस कार्य मे सहायता देना अपनी जिम्मेदारी और कर्त्तव्य समझते है। और सबसे बढकर यह उनके इस विश्वास को द्योतित करता है कि यदि हम भविष्य के प्रति समझदारी और तत्परता एव सजगता का दृष्टिकोण अपनाए तो वह अवश्य ही अच्छा और कल्याणमय होगा।

हम किधर जा रहे हैं ?

हर सस्कृति को व्यक्ति और समाज के सापेक्ष महत्त्व के प्रश्न पर विचार करना चाहिए और हर युग को दोनो के सन्तुलन को नये सिरे से आँकना चाहिए। सयुक्त राज्य अपने इतिहास के व्यक्तिवादी युग मे से गुजर चुका है। इस युग मे सयुक्त राज्य ने ऐसे स्वतन्त्र कारीगर और शिल्पी थे, जिन्हे अपने काम पर गर्व था। इस युग मे उसके पास बडे-बडे लुटेरो के सरदार थे, बडे-बडे धन-कुवेर थे, गरीबी के गढ थे, ऐसे लोग शासनसत्ता हाथ मे ले चुके थे, जो अपने ही दल के लोगो को या अपने अनुयायियो को ही उच्च पद देते थे और ऐसा राजनीतिक भ्रष्टाचार भी रह चुका था, जिसे देखकर लज्जा अनुभव होती। इस प्रकार सयुक्त राज्य व्यक्तिवाद की अच्छाइयाँ और बुराइयाँ, दोनो देख चुका है। उसने व्यक्ति और समाज के बीच सन्तुलन के परीक्षण हजारो तरह से किये हैं।

अमेरिका की सस्थाओ का निर्माण करते हुए व्यक्ति की स्वतन्त्रता पर बहुत बल दिया गया है। हमने व्यक्ति की स्वतन्त्रता के इस आग्रह के लाभ और हानि, दोनो का अनुभव किया है। किन्तु हाल के वर्षों मे हमने अपना रुख बदलकर समूह और समाज पर अधिक बल देना शुरू कर दिया है। विलियम एच० ह्वाइट जूनियर ने अपनी पुस्तक "दि आर्गेनाइजेशन मैन" मे कहा है कि इस सम्बन्ध मे हम सीमा का अतिक्रमण कर गये हैं। उसका कहना है कि औद्योगिक सगठन मे हम सब लोगो को समानता देने पर बहुत जोर देते हैं और व्यक्तिगत दृष्टि से सोचने के बजाय वर्गीय प्रक्रिया के रूप मे सोचते है और खुशी से यथास्थिति को स्वीकार कर लेते हैं, जिसे देखकर आश्चर्य होता है।

'सगठन मानव' के सामाजिक जीवन मे उसे समूह पर अधिक वल दिखाई देता है। यह वल व्यक्ति की पृथक् एकान्त निजी सत्ता को नष्ट कर देता है। उपनगरो मे रहने वाले लोग सामाजिक समुदायो मे वट जाते हैं और सारा समुदाय हर चीज को सयुक्त रूप से उपभोग करता है। लोग घास काटने के लिए अलग-अलग मशीने खरीदने के वजाय मिलकर एक मशीन खरीद लेते है। स्त्रियाँ आपस मे मिलकर एक-दूसरे के वच्चों की वारी-वारी से देखभाल करती हैं। चाँदी के वर्त्तन, खाने के वर्त्तन, किताबे और सगीत के रिकार्ड आदि का भी परस्पर आदान-प्रदान होता रहता है।

उपनगरो मे रहने वाले इन नये आदमियो मे से वहुत-से ऐसे है जो वड़े नगरो से आये है, जहाँ सामुदायिक जीवन जैसी कोई चीज नही होती। इन उपनगरो मे छोटे इलाके का सौहार्दपूर्ण पडोसीचारा और सामुदायिक जीवन पाकर वे सिर्फ पुराने अमेरिका को ही, जो यहाँ के वीरान जगलो मे वसी पहली आवादी के जमाने से ही छोटे कस्वो और गाँवो मे हमेशा विद्यमान रहा है, फिर से पाते हैं। इस जीवन मे उन्हें उन पुराने अमेरिकन कस्वो की नवीनता, उनका स्वल्प आकार, वाह्य अधिकारी सत्ता के हस्तक्षेप से मुक्ति और पारस्परिक सहायता की आवश्यकता के पुन दर्शन होते हैं। आज अन्य अनेक नई वस्तुओ की भाँति समूह और वर्ग पर हम जो नये सिरे से जोर दे रहे है, वह भी पुरातन की ही नूतन पुनः प्राप्ति है। प्रारम्भिक युग की प्लाइमाउथ वस्ती, उस जमाने के पश्चिमाभिमुख गाडियो के काफिलो और १८४० के दशक की आदर्श वस्तियो मे व्यक्तिगत मानव और समूहगत मानव के वीच जो सन्तुलन और समन्वय था, उसी का आज जीर्णोद्धार हो रहा है।

यह आशका करना कि अनुसन्धान और प्रशासन मे सामूहिक रूपसे कार्य करने का वर्तमान प्रणाली हमे उलट-पलट देगी, एक ऐसे समाज की आत्म-सन्तुलन की शक्ति को नजरन्दाज करना है, जो लाखो छोटे-

छोटे प्रारम्भिक समूहो से और फिर लाखो ही बडे सगठनो से मिलकर बना है। ये सगठन नागरिक, आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक और साँस्कृतिक सभी क्षेत्रो मे निर्मित है।

इस प्रकार का अनेकत्व पूर्ण समाज जिसमे हरेक समूह दूसरे को अपनी ओर आकृष्ट करने का उद्योग करता है या सब समूह परस्पर समझौते से काम करते है, उत्साह से परिपूर्ण होता है। इस बहुत्वमय समाज मे हम से यह या वह कार खरीदने की, विमान के बजाय रेल से यात्रा करने की, सरकार की सत्ता के बजाय व्यक्ति की सत्ता का समर्थन करने की या डेमोक्रेटिक अथवा रिपब्लिकन उम्मीदवार को वोट देने की ही अपील नही की जाती, बल्कि उद्योगो के प्रबन्धक और श्रमिक, अन्नोत्पादक किसान या डेयरी फार्म सचालक, भूमि और अन्य प्राकृतिक सम्पदाओ की रक्षा के समर्थक और उनका दोहन करने वाले, प्रगतिशील शिक्षा-प्रणाली के समर्थक और शिक्षा-क्षेत्र क रूढिवादी और नाना धर्मों के अनुयायी—अर्थात् सभी प्रकार के लोग अपने-अपने पक्ष मे हम से अपीलें करते है। जो जीवन हमारे सामने इतने विकल्प प्रस्तुत करता है, जो हमे इतने अधिक स्तरो पर उसमे भाग लेने के लिए आमन्त्रित करता है, वह हमे उत्साह और स्फूर्ति प्रदान नही करेगा तो और क्या करेगा।

इधर यान्त्रिकीकरण से हमारा काम का बोझ घट रहा है और उधर हमारे सामने एक नही अनेक प्रकार के विकल्प उपस्थित हो रहे हैं जिनमे से हम इच्छानुसार चुनाव कर सकते है। एक उद्योग मे व्यक्तियो की भरती के लिए हाल मे ही तीन सौ कॉलेज छात्रो के इटरव्यू लिये गये, लेकिन उनमे से एक ने भी यह नही पूछा कि जिस काम के लिए उनका इटरव्यू लिया गया है, उसके लिए वेतन कितना मिलेगा। देश मे दौलत का जो प्राचुर्य है, वह इतने व्यापक पैमाने पर वितरित किया जा रहा है कि अब आदमी अपने स्वास्थ्य और आराम को भी खतरे मे डालकर दूसरो से आगे बढने की अभिलाषा नही करता। केवल

भौतिक क्षेत्र मे उन्नति करने के लिए उद्योग करना उतना आवश्यक नही रहा है। मानसिक शान्ति, सुखी पारिवारिक जीवन, मनोरजन आदि जीवन के अन्य मूल्यो का महत्त्व आज बढता जा रहा है, क्योकि काम का अधिकार लोगो के समय और चिन्तन पर पहले से कम हो गया है।

भविष्य मे सफलता की परख इस बात से की जाएगी कि कोई व्यक्ति अपने खाली समय का उपयोग किस तरह करता है—अर्थात् कौन खेलों मे विजयी होता है, कौन दूर-दूर तक आनन्दपूर्ण दिलचस्प यात्राएँ करता है, अपनी उपलब्धियो की चर्चा करना है, समाज मे अपने अच्छे कार्यो से अपनी उपस्थिति अनुभव कराता है और कौन भौतिक वस्तुओं के उपभोग के बजाय अवकाश के समय का सदुपयोग कर सन्तोप अनुभव करता है। सक्षेप मे कहा जा सकता है कि समय का अच्छे से अच्छा उपयोग कर व्यक्ति, परिवार और समाज को लाभ पहुँचाना ही सफलता की कसौटी होगा।

उपलब्धि और सफलता

आज जबकि शेप सारा ससार उथल-पुथल मे से गुजर रहा है, संयुक्त राज्य ने विभिन्न प्रकार की सामग्रियो का सयोजन कर एक रहने और जीवन-यापन के लायक समाज का निर्माण कर लिया है। उसने यह सिद्ध कर दिया है कि परस्पर विचार-विनिमय और सत्ता एव सम्पदा के विकेन्द्रीकरण के द्वारा शासन ही सभ्य जीवन का सबसे सीधा मार्ग है। अब भी हम स्वतन्त्र है—हमे इच्छानुसार कही भी जाने की स्वतन्त्रता है, अपनी सरकार की आलोचना करने की आजादी है और कतार मे खडे होने के बन्धन या अयुक्तियुक्त कानूनो के विरुद्ध संघर्ष से भी हम पूर्णतः मुक्त है।

लेस्ली ए० फीडलर ने लिखा है कि "यूरोपीय लोगो मे मानव की अशक्तता की जो धारण बनी हुई है, उससे अत्यधिक अभिभूत होने के कारण वे ऐसे किसी भी राष्ट्र या समाज को भय और सम्भ्रम मिश्रित प्रशसा के भाव से देखते हैं, जो उन चीजो को जिन्हे यूरोपीय

सैद्धान्तिक दृष्टि से असम्भव समझते हैं, कोरे सिद्धान्तो के प्रति आस्था न होने के कारण सम्भव करके दिखा देते हैं।"

किन्तु अमेरिकनो ने जो सफलता या उपलब्धिया अर्जित की हैं, उनका अन्तिम मूल्यांकन करने के लिए हमें कुछ समय प्रतीक्षा करनी पडेगी। लेकिन यह बात तो हर आदमी सहज मे बता सकता है कि आज अमेरिका मे एक बौद्धिक उफान आया हुआ है, आत्मालोचन बहुत ऊचे स्तर पर हो रहा है, सामाजिक विज्ञानो और टैकनोलॉजी की उन्नति हो रही है, रहे-सहे वर्ग-भेद पर भी प्रहार किया जा रहा है और परमाणु युग को मानव के लोकतन्त्री स्वप्न की पूर्त्ति का साधन बनाने के सकल्प को साकार करने का उद्योग हो रहा है।

इतने विशाल और इतने विविधतापूर्ण समाज की उपलब्धियो का वर्णन करना साधारण काम नही है, फिर भी एक व्यक्ति का सक्षिप्त इतिहास देकर यहाँ उसकी एक झाँकी अवश्य दी जा सकती है। यद्यपि हम बहुत-से लोगो की जीवन-झाँकी दे सकते हैं, परन्तु फिर भी हमने उन मे से उच्चतम न्यायालय के न्यायाधीश विलियम ओ० डगलस को सिर्फ इसलिये चुना है कि उन्हे विदेशो मे भी लोग जानते है। विलियम डगलस का जन्म मिनेसोटा मे एक सामान्य धर्मप्रचारक के घर मे हुआ था। छ. वर्ष की आयु मे ही पिता की मृत्यु हो जाने पर वे अपने परिवार के अन्य लोगो के साथ पश्चिमी तट पर अवस्थित वाशिगटन राज्य मे आ गये। उन्होने स्वय परिश्रम करके स्कूल की पढाई की और छोटा-मोटा काम कर उसकी फीस और अन्य खर्च निकालते रहे। स्कूल की पढाई खत्म होने पर ह्विटमैन कालेज मे पढने के लिए उन्हे छात्र-वृत्ति मिल गई। कालेज की पढाई के साथ-साथ वे खिडकिया साफ कर और एक दुकान मे सहायक का काम कर दस सेंट प्रति घटा कमाते रहे। वे एक होटल में वेटर का काम भी करते रहे जिससे उन्हें भोजन मुफ्त मिल जाता। कालेज जीवन के चार वर्षों मे से अन्तिम तीन वर्ष उन्होने एक खाली प्लाट पर तम्बू गाडकर विताये और इस प्रकार कुछ

पैसा बचाया। गर्मियो की छुट्टियो मे वे बगीचो मे फल तोडने, जगलो मे लकडी के लट्ठे घसीटने और जगल की आग बुझाने का काम करते। प्रथम विश्व-युद्ध के दिनो मे कुछ समय देश से बाहर रहने के बाद लौट कर उन्होने कालेज की पढाई समाप्त की। उस समय वे छात्र सघ के अध्यक्ष थे। अन्त मे वे फे बीटा कापा विश्वविद्यायल के ग्रेजुएट बन गये।

दो वर्ष तक विलियम डगलस ने अपने कस्वे मे शिक्षक के रूप मे काम किया। इसके बाद वे भेडो के चरवाहे के रूप मे एक मालगाडी से पूर्व की ओर गये और शिकागो जा पहुँचे। वहाँ से अपनी बची-खुची पूँजी से उन्होने न्यूयार्क का टिकट खरीदा। जब वे वहाँ पहुँचे तो उनके पास कुल छः सेंट ही शेप थे। वहाँ वे कोलम्बिया लॉ स्कूल मे भरती हो गये और अपना खर्च चलाने के लिए ट्यूशन करने लगे। उन्होने एक पुस्तक भी लिखी। स्कूल की अन्तिम परीक्षा मे वे कक्षा मे दूसरे स्थान पर आये। उन्होने कुछ समय तक बडी कम्पनियो के कानूनी काम की देखभाल करने वाली एक फर्म मे काम किया, कोलम्बिया और येल विश्वविद्यालयो मे कानून का अध्यापन किया और दीवालियेपन का विशेप अध्ययन करने के कारण सरकार के व्यवसाय-वाणिज्य विभाग ने उन्हे अपने यहाँ बुला लिया। इसके बाद वे शेयर और एक्सचेंज कमीशन के अध्यक्ष बनाये गये, जहाँ उन्होने वित्तीय जगत् मे अनेक सुधार किये। सन् १६३६ मे उन्हे उच्चतम न्यायालय मे न्यायाधीश नियुक्त किया गया। अमेरिका के इतिहास मे छोटी आयु मे ही यह उच्च सम्मान प्राप्त करने वाले वे दूसरे व्यक्ति थे। उसके बाद के जीवन की कितनी ही ग्रीष्म ऋतुएँ उन्होने ससार के विभिन्न भागो की यात्रा मे व्यतीत की है और अन्य सस्कृतियो की समस्याओ और विशेषताओ का अध्ययन किया है।

अमेरिकनो का विश्वास कहता है कि आज जो लड़के अखबार बेचकर या मैदानो की घास काटकर अपनी जीविका चला रहे है, उनमे

कितने ही और डगलस है, जो धीरे-धीरे बड़े हो रहे है। ये लोग अपनी पीढी की समस्याओ का समाधान करना इसी तरह सीख लेगे।

आज राष्ट्र के सामने जो समस्याएँ है, वे बहुत गम्भीर है और कभी-कभी हिम्मत तोड देती है—उदाहरण के लिए बाल अपराध, मदिरापान, मानसिक विक्षिप्तता, अन्य अपराध, पक्षपात एव भ्रष्टाचार। किन्तु हमने प्रवृत्तियो का अध्ययन और उनके समाधान का प्रयत्न करना सीख लिया है, क्योकि हम जानते है कि ये बुराइयाँ हमारे साथ कुछ हद तक रहेगी ही। इन समस्याओ के समाधान की प्रवृत्ति से हममे से बहुतो का उत्साह बढा है। कितनी ही सरकारी और स्वैच्छिक सस्थाएँ इन समस्याओ के समाधान के प्रयत्न मे लगी है। लेकिन इनसे हमारा उत्साह केवल इसीलिए नही बढता कि इस दिशा मे बहुत बडा काम किया जा रहा है, बल्कि इसलिए भी बढता है कि यह प्रयत्न लोक-तन्त्री पद्धति से किया जा रहा है।

हम यह आशा करते हैं कि १९८० तक हमारी अर्थ-व्यवस्था का विस्तार और विकास इतना हो जाएगा कि हर व्यक्ति को साल भर काम मिलता रहेगा और उसे प्रति सप्ताह ३४ घटे से अधिक काम नही करना पडेगा। अगले दस या पन्द्रह वर्षो मे हमे कालेजो के अध्यापको की सख्या बढाकर दुगुनी कर देनी है ताकि तमाम कालेज छात्रो की शिक्षा की आवश्यकता पूरी हो सके। साथ ही छात्रो के लिए हमे कालेजो और छात्रावासो के भवन भी इतनी बडी सख्या मे बनाने पडेगे, जितनी सख्या मे हमने गत तीन सौ वर्ष मे बनाये है।

हमे यह भी आशा है कि हमारे देश मे जैसी प्राचुर्यमय अर्थ-व्यवस्था है, जिसमे किसी वस्तु का अभाव नही है, वैसी ही सारे ससार मे हो जायेगी। हम यह भी आशा करते है कि इस विश्वव्यापी प्राचुर्यपूर्ण अर्थ-व्यवस्था के निर्माण मे पारस्परिक सहायता और सम्मान मे दिलचस्पी लेने वाले राष्ट्रो के साथ हम सहयोग कर सकेंगे।

संयुक्त राज्य मे श्रम और काम की प्रतिष्ठा और सामाजिक सहयोग के आदर्शो का सम्मिलन हो रहा है और उससे जो सस्कृति बन रही है, वह बिल्कुल नई है और जो उसके बीच से गुजर रहे हैं, उन्हे उत्साह और स्फूर्ति प्रदान करती है। हम नारी की विशेष अन्तर्दृष्टियो का उपयोग कर उससे लाभ उठाना और हर समस्या को पुरुष और नारी दोनो के दृष्टिकोणो के समन्वय से हल करना भी सीख रहे है। इस प्रकार नारी के रूप मे मानव जाति का जो आधा भाग अब तक घर की चारदीवारी के भीतर कैद था, उसकी योग्यताएँ, प्रतिभाएँ और अन्तर्दृष्टियाँ हमे यह समझने मे सहायता दे रही हैं कि समाज क्या है और क्या होना चाहिए ?

अमेरिकन पौराणिक गाथा

हर राष्ट्र की एक पौराणिक गाथा होती है, जो वास्तव मे उसकी आशाओ और आकाँक्षाओ को और उसकी सफलताओ और असफलताओं को अभिव्यक्त करती है। उसमे उस राष्ट्र की एक अपनी प्रतीकात्मक तस्वीर होती है, और उस तस्वीर के अनुसार अपने आदर्श को पाने का वह प्रयत्न करता है। अमेरिका की पौराणिक गाथा यूरोप के एक ऐसे स्वतन्त्रता-प्रेमी घुमक्कड युवक की गाथा है, जो घूमता-घूमता एक नये देश मे पहुँच जाता है और वहाँ के जंगली और असभ्य लोगो को पराजित कर बर्बरता और असभ्यता के स्थान पर सभ्यता और कानून के शासन की स्थापना करता है। इस शासन मे सब लोग स्वतन्त्र और बराबर है। नये देश की विशाल साधन-सम्पदा उन सबके लिए खुली पडी है, जिसका वे यथेच्छ उपभोग कर सकते हैं। साहस और सूझबूझ से वे जगल मे ही मंगल कर सभ्यता की स्थापना करते हैं। उनके कामो से यह सिद्ध हो जाता है कि उनके गुण, उनका धर्म और उनकी कलाएँ मूल निवासियो के गुण, धर्म और कला से उच्चकोटि के हैं, इसलिए नियति ने उस नये महादेश पर अधिकार करना और उसे विकसित करना उनके भाग्य मे लिख दिया है।

कारीगरो, आविष्कारको, वैज्ञानिको, यन्त्र-विशारदो और व्यवसायियो के रूप मे ये लोग एसी उत्पादक प्रणालियो और मशीनरी का निर्माण कर लेते है, जो सबके लिए भौतिक सम्पदा के प्राचुर्य का उनका स्वप्न लगभग पूरा कर देती है। सबके लिए शिक्षा और उन्नति के अवसर के लक्ष्य भी उस स्वप्न के अग हैं और उनकी भी अधिकाधिक पूर्ति होती रहती है।

अमेरिकन लोग यूरोप मे अपने पूर्वजो का घर-बार छोड कर इस नई धरती पर आए है, इसलिए वे शोषित, दलित और उपेक्षित व्यक्ति के उद्धार के ध्येय का हमेशा समर्थन करते हैं। वे ऊपर से थोपी गई अधिकारी सत्ता को हमेशा सन्देह की नजर से देखते है और उसका प्रतिरोध करते है। अमेरिकन नागरिक को उन सब वस्तुओ मे आनन्द मिलता है, जो युवको को उल्लसित करती है—वह सब तरह के प्रतिबन्धो और बन्धनो को उखाड फेंकना, चचल सुन्दरी युवतियो के साथ मनोरजन करना, मर्दानगी के खेल खेलना, साहसपूर्ण कृत्यो मे भाग लेना और अमेरिकन लीजियन या राष्ट्रीय राजनीतिक सम्मेलन जैसे उत्साहपूर्ण और उत्सवमय समारोहो मे हिस्सा लेना पसन्द करता है। प्रगाढ आशावादिता और फिर आकस्मिक किन्तु अल्पकालावस्थायी निराशा, अपनी शक्ति से आनन्द और हर्ष की अनुभूति, और एक ऐसे युवक की भाँति, जो अपनी रहस्यमय आकाँक्षाओ और किशोरावस्था की अनुभूति को फिर से लौटा लाना चाहता है, बुद्धि, सौंदर्य और जीवन-व्यवस्था की अटूट लालसा—यही अमेरिकन नागरिक की विशेषताएँ हैं।

अमेरिका अब भी अपने आपको एक तरुण पुत्र के रूप मे देखता है और शायद वह हमेशा ही अपने आपको उस रूप मे देखता रहेगा। इतिहास ने उसे हमेशा के लिए एक ऐसे सीमावासी साहसी मानव-समूह के रूप मे गढ दिया है, जो पिता की, अतीत की और अधिकारी सत्ता की सब पाबन्दियो और बन्धनो को उखाड फेंकता है। इसलिए किसी को भी इस बात से डरने की आवश्यकता नही है कि अमेरिकन उस पर

प्रभुत्व स्थापित करने की चेष्टा करेंगे, क्योंकि किसी पर प्रभुत्व स्थापित करना उनका आदर्श नही है। ऐसा अवसर आने पर यह सम्भव है कि वे पीछे हट जाना, फिर से अपने पुराने वन-प्रदेशो को खोजना और पुरानी दुनिया के प्रभुत्व और सत्ता की स्थापना के आदर्शो को ठुकरा देना अधिक पसन्द करें। उनके भाग्य मे ही हमेशा विद्रोह करना और ससार पर प्रभुत्व स्थापित करने के बजाय पारस्परिक सहयोग से व्यवस्था स्थापित करना लिखा है। इसीलिए अमेरिका मे सामाजिक विज्ञानो की उन्नति हो रही है, वर्ग-भेद को खत्म करने की पद्धतियो का विकास किया जा रहा है, मालिक और अफसर को भी कर्मचारी के बराबर स्तर पर रखा जाता है और श्रमिको और गैर-श्रमजीवियो की समानता पर बल दिया जाता है।

षड्विध प्रक्रिया

आज इस बारे मे किसी को भी सन्देह नही है कि हम सयुक्त राज्य मे एक ऐसे समाज का निर्माण कर रहे हैं, जिसे व्यक्तिवाद, प्राइवेट उद्यम, पूँजीवाद जैसे पुराने शब्दो से, यहा तक कि लोकतन्त्र शब्द से भी ठीक-ठीक व्यक्त नही किया जा सकता। हमारी समाज-व्यवस्था के विभिन्न खण्डो के अत्युत्तम विश्लेषण किए गये है, फिर भी हम अपने समाज के बारे मे कोई एक समग्र चित्र और सिद्धान्त प्रस्तुत नही कर सके है।

अमेरिकन समाज को समझने के लिए उसे एक ऐसी प्रक्रिया के रूप मे देखना चाहिए, जिसकी छ विशेषताएँ है— व्यक्तिवाद, स्वैच्छिक कार्यवाद, सघवाद, प्रतिसन्तुलन, पारस्परिक सहयोग और क्रिया अनुक्रिया एव एकता और सम्मिलन। यह प्रक्रिया हमारी समाज-व्यवस्था को अब भी विकसित कर रही है और आत्म-विकास और परिस्थितियो के साथ समायोजन के द्वारा एक दिन यह समाज-व्यवस्था बहुत व्यापक हो जाएगी।

उदाहरण के तौर पर इस प्रक्रिया को समझने के लिए हम सबसे पहले व्यक्ति को लेते हैं। मसलन प्लाइमाउथ के गवर्नर विलियम ब्रैडफोर्ड को लीजिए। ब्रैडफोर्ड जब नौजवान था, तब उसने स्वेच्छा से ही भिन्न विचार रखने वाले एक विरोधी समूह मे शामिल होने का निश्चय किया, जिसे आज हम 'तीर्थ-यात्रियो' के रूप मे जानते है। उस समय उसके व्यक्तित्व ने समान विचारो वाले लोगो के एक समूह मे, जो धार्मिक प्रयोजनो से संबद्ध हुए थे, शामिल होकर अपने आपको विराट् बनाया। इसके बाद ये लोग उत्तरी अमेरिका मे आये तो उन्होने अपने स्वैच्छिक सगठन के सिद्धान्त को और भी व्यापक बनाकर और कार्य-रूप देकर प्लाइमाउथ की अपनी छोटी-सी बस्ती बसाई और उसके व्यावसायिक कामो को सभालने के लिए एक व्यापारिक कम्पनी का निर्माण किया। बाद मे जब अनेक छोटे-छोटे कमजोर ग्राम गणराज्यो ने सैनिक उद्देश्य से परस्पर मिलकर न्यू-इगलैण्ड महासघ की स्थापना की तब सघवाद का सिद्धान्त भी अमल मे आ गया।

प्रारम्भ मे कुछ समय तक इन गणराज्यो की शक्तियाँ परस्पर सन्तुलित होती रहती थी। उदाहरण के लिए बोस्टन और प्लाइमाउथ दोनो ही कनैक्टिकट घाटी के लिए लडते-झगड़ते रहे और इस तरह एक दूसरे की ताकत का प्रतिसन्तुलन करते रहे। पारस्परिक सहयोग और क्रिया-अनुक्रिया की अगली मजिल तब आयी जब इन छोटी-छोटी जागीरो ने (उदाहरण के लिए हार्टफोर्ड, वैदर्सफील्ड, सेब्रुक आदि) मिलकर एक प्रान्तीय सरकार बनाई। और अन्त मे एकता और सम्मिलन का दौर आया जबकि कनैक्टिकट एक राज्य बन गया।

यही प्रक्रिया सघीय सरकार के निर्माण मे भी देखी जा सकती है।

षड्विध प्रक्रिया का यही सिद्धान्त हमारे समाज मे भी कार्य कर रहा है। उदाहरण के लिए शिक्षा को लीजिए। हमारी स्कूली शिक्षा इस व्यक्तिवादी सिद्धान्त पर आधारित है कि हर नागरिक के लिए समान अवसरों का द्वार खुला है और वह यह अवसर शिक्षा के द्वारा ही

पा सकता है। स्कूल प्रणाली मे स्वैच्छिक सगठनवाद तो इस बात से ही स्पष्ट है कि हर कस्बे की अपनी निज की स्थानीय स्कूल व्यवस्था होती है। नागरिक स्कूलो का खर्च चलाने के लिए स्वयं अपने ऊपर टैक्स लगाते है। वे स्कूलो का निर्माण और अध्यापक के लिए वेतन की व्यवस्था स्वय सहयोग से करते है।

किन्तु स्वय सेवा का सिद्धान्त दो अन्य तरीकों से भी हमे यहा अमल मे दिखाई देता है। इसलिए यह समझने के लिए कि हमारा समाज किस प्रकार कार्य करता है, हमे इन दोनो मे थोडा भेद करना चाहिए। अध्यापक परस्पर मिल कर अपना एक स्वैच्छिक सगठन बनाते हैं जिसका ध्येय सामाजिक भी होता है और उनके पेशे से सम्बद्ध भी। यह सगठन बडे प्रादेशिक और राष्ट्रीय सगठनो से सम्बद्ध रहता है। इस सगठन की प्रणाली को हम कार्यात्मक प्रणाली कह सकते हैं, क्योंकि अध्यापक इसका निर्माण अपने पेशे की दृष्टि से अपनी स्थिति सुदृढ बनाने के लिए करते है।

अध्यापक और अभिभावक मिलकर दोनों का सयुक्त सगठन भी बनाते है। इस सगठन को हम सामाजिक सगठन कह सकते है, क्योकि उसका सम्बन्ध समाज मे स्कूल का क्या स्थान है, इस प्रश्न से रहता है। यह सगठन स्कूल और परिवार, इन दो बुनियादी चीजो को कुछ ऐसे उद्देश्यो के लिए एक-दूसरे के सम्पर्क मे लाता है, जिनका स्थानीय समाज के लिए एक विशिष्ट मूल्य और महत्त्व है और जो स्थानीय समाज का सर्वमान्य अग है।

सघवाद का सिद्धान्त कार्यात्मक और सामाजिक, दोनो शाखाओ के राष्ट्रीय सगठनो मे स्पष्ट दिखाई देता है। सघीय रूप धारण कर लेने के बाद ये कमजोर सगठन भी एकाएक शक्तिशाली हो जाते है। अब ये सगठन राष्ट्र के जटिल शक्ति-जाल मे प्रतिसन्तुलनकारी शक्तियो के रूप मे कार्य करते है। वे स्कूलो मे सुधार करने, कर या सीमा-शुल्क कम कराने, किसानो को सहायता देने, श्रमिक कानूनो को अधिक उदार

बनाने, वन्य जीव-जन्तुओ की रक्षा करने और इसी तरह की हजारो अन्य चीजो के लिए आन्दोलन करते और उनके पक्ष मे अपने सगठन बल का उपयोग करते है । हमारा समाज असख्य स्थानीय स्वैच्छिक सगठनो से निर्मित है और ये स्थानीय सगठन अपने सघो या राष्ट्रीय प्रधान कार्यालयो के द्वारा अखिल देशीय रूप धारण कर इतने शक्तिशाली वन जाते हैं कि वे वाशिंगटन मे सघ सरकार के निश्चयो को प्रभावित कर सकते है ।

यहा तक हमारे विश्लेषण मे ऐसा लगता है कि हमारी सामाजिक प्रणाली विरोध और सघर्ष पैदा करने वाली है, परन्तु इसके वाद सहयोग और क्रिया-अनुक्रिया का आरम्भ होता है । एक-दूसरे पर अनुक्रिया और प्रतिक्रिया पैदा करने वाले समूह एक-दूसरे के प्रति शत्रुता पैदा नही करते, वल्कि एक-दूसरे का अनुकरण करते है । जो शिक्षा पहले केवल स्कूलो और अध्यापको का ही विशेषाधिकार समझी जाती थी, वह अव समाज के अन्य वर्गो और पहलुओ मे भी प्रवेश करने लगी है । श्रमिक यूनियनें अव अपने निज के स्कूल और कक्षाए स्थापित करती हैं । उद्योग भी अपने कर्मचारियो को काम की अधिक ऊँची शिक्षा देने के लिए आन्तरिक प्रशिक्षण के कार्यक्रम चलाते हैं और उनके जो कर्मचारी काम पर रहते हुए अध्ययन जारी रखना चाहते है, उनका खर्च भी वहन करते हैं । कृषि-सगठन किसानो के लिए विचार-गोष्ठिया, व्याख्यान, वृत्त-चित्र और निवन्ध प्रतियोगिता आदि का आयोजन करते हैं ।

हमारे समाज के किसी भी वर्ग मे यही आगिक प्रतिक्रिया देखी जा सकती है । एक वकील को लीजिए । वह स्थानीय स्तर पर अपनी वार एसोसिएशन (कार्यात्मक सगठन) का और कानूनी सहायता सघ एव कम्युनिटी कौंसिल (दोनो सामाजिक सगठन) का सदस्य है । इस प्रकार के और भी सैकडो उदाहरण दिये जा सकते है, जिनसे पता लगता है कि अमेरिकन लोग अपने पेशे और समाज, दोनो की उन्नति के लिए किस प्रकार परस्पर सहयोग से चलते हैं और व्यक्ति एव समाज, दोनो

का एकीकरण कर देते हैं । श्रमिक और उद्योगपति, दोनो एक समय मूलत परस्पर-विरोधी समझे जाते थे, लेकिन अब वे सहयोग और पारस्परिक क्रिया-अनुक्रिया के दौर मे पहुँच रहे हैं। यूनियनें उद्योगो के प्रबन्ध की समस्याओ मे दिलचस्पी लेती हैं और प्रबन्धको ने भी अब यूनियनो के साथ सहयोग करके चलना सीख लिया है । स्वचालित यन्त्रो के प्रयोग से श्रमिको के काम के घटे कम होने और मजदूरी एव वेतन मे वृद्धि होने से एकीकरण की मजिल नजदीक आ जाएगी। एक ऐसा समय आ जाएगा, जबकि आर्थिक सम्पदा, मनोरजन और जीवन के प्रति दृष्टिकोण के पैमाने से मजदूर और प्रबन्धक के बीच का अन्तर कम होता-होता इतना घट जाएगा कि उसका कोई महत्त्व नही रहेगा ।

इस षड्विध आंगिक प्रक्रिया के और भी सैकडो उदाहरण दिये जा सकते हैं । चर्च पहले अपने आपको केवल धर्म सम्बन्धी मामलो तक ही सीमित रखता था, परन्तु आज वह राजनीतिक और सामाजिक गति विधियो मे भी हिस्सा लेता है । इसी तरह राजनीतिक दलो के इतिहास को देखने पर हमे प्रतीत होगा कि किसी समय दोनो बडे दल एक-दूसरे से बिरकुल अलग थे, किन्तु आज उनमे इतना कम अन्तर है कि वह दीख नही पडता और अक्सर दोनो दल एक-दूसरे के साथ घुल-मिल कर मतदान के लिए बिल्कुल नये गठजोड बनाते है । इस तरह दोनों एक-दूसरे का प्रतिबिम्ब है, क्योकि अन्तत उन्हे अपने भीतर विद्यमान सभी बडी राजनीतिक ताकतो को एकत्र कर शासन-सत्ता हस्तगत करनी या कायम रखनी है ।

यहाँ हम एक ऐसी चीज का उदाहरण लेते है जो अभी धीरे-धीरे अपना विकास कर रही है और उपर्युक्त सिद्धान्त का प्रयोग कर उसके भावी मार्ग की भविष्यवाणी करते है ।

हाल मे ही सारे देश मे ऐसे व्यक्तियो के छोटे-छोटे समूह बन गये हैं, जो एक लाभमय अर्थ-व्यवस्था मे सम्पत्ति के स्वामी होने की हैसियत

से अपनी बचत की राशि को काम मे लगाना चाहते हैं। ये लोग अपनी निवेश-क्लबे (इन्वेस्टमेट क्लब) बनाते हैं, उनमे अपना पैसा जमा करते हैं, किसी व्यक्ति को आमन्त्रित कर शेयरो और बांडो के बारे मे उससे जानकारी हासिल करते हैं, जिन शेयरो को खरीदने लायक शेयरो की कोटि मे रखते है, उन पर विचार-विनिमय करते हैं और हर महीने अपना धन सयुक्त रूप मे शेयरो आदि मे निवेश करते हैं।

यह अनिवार्य है कि ये निवेश-क्लबें एक दिन सघीय स्तर पर अपने सगठन बना लेंगी। उनके राज्यीय और राष्ट्रीय स्तरो पर सम्मेलन होगे। ये सगठन वाशिगटन मे या न्यूयार्क मे या दोनो जगह अपने कार्यालय स्थापित करेंगे। वे बडे निवेशको (इन्वेस्टर), बैंको और बडी कम्पनियो के निवेश सम्बन्धी दबावो को प्रतिसन्तुलित करने के लिए अपनी शक्ति का उपयोग करेंगे। वे छोटे निवेशक को कर सम्बन्धी रियायतें दिलाने के लिए आन्दोलन करेंगे। किन्तु इसी प्रक्रिया मे वे अपने हितों का एकीकरण भी कर डालेंगे। व्यक्ति के तौर पर ये सब निवेशक कर्मचारी भी है और उपभोक्ता भी, सगठन के सदस्य के रूप मे वे निवेशक हैं, और राष्ट्रीय सघ के सदस्य के तौर पर वे एक राजनीतिक प्रभाव डालने वाली शक्ति हैं। इस सारी प्रक्रिया मे योग देकर वे एकीकरण की दिशा मे काम करते हैं। सम्मिलन और एकीकरण की यह स्थिति आ जाने पर उनके विविध रूपो मे और इन विभिन्न कार्यों और हितो के बीच अन्तर घटता चला जाता है।

किन्तु एकीकरण का अर्थ एक ऐसी स्थिति नही है जो अपरिवर्त्तनीय और स्थायी हो, बल्कि वह एक प्रवृत्ति है। हमारा समाज परिवर्त्तनशील है, और यही उसकी शक्ति है। किन्तु उसके बुनियादी तत्त्व—यानी पूर्ण और प्रचुर उत्पादन, उत्पादित वस्तुओ का अधिकाधिक व्यापक वितरण और आय, शिक्षा एव वर्ग के भेद की धीरे-धीरे समाप्ति—इन दृष्टिकोणो का अधिकाधिक एकीकरण और सम्मिलन अनिवार्य कर देते हैं। मजदूर, पादरी और कारखाना मालिक—तीनो के लडके एक

साथ हाई स्कूल मे जाते है, यहा तक कि कालेज मे भी इकट्ठे पढ़ते हैं। अब ऐसे सभी लोग, जिन्होने कालेज मे भरती होने की अर्हता प्राप्त कर ली है, एक साथ कालेज मे जाने लगेंगे, तो शिक्षा विभेदक तत्त्व नही रहेगी। इसी प्रकार विभिन्न राष्ट्रो और जातियो से आप्रवासी के रूप मे अमेरिका मे आये लोगो मे परस्पर एकीकरण हो रहा है और वह भी इसका एक उदाहरण है। प्रोटेस्टैंट ईसाई धर्म के विभिन्न सम्प्रदाय अपने सघ बना रहे हैं और अन्त मे उनका भी एकीकरण हो जाएगा।

निराशावादी लोगो को हमारे यान्त्रिक समाज मे ऐसी शक्तिया नजर आ रही हैं, जो मनुष्य को अशक्त और वन्ध्य बनाती हैं, क्योकि इस समाज मे इन्सान एक विशाल मशीन का पुर्जा भर रह जाता है। ये लोग अपने आपको यथार्थवादी कहते हैं, परन्तु वास्तव मे कल्पना-लोक मे विचरण करते है। ये औद्योगिक युग से पहले के उस युग को याद करते हैं, जबकि छोटे-छोटे कारीगर और शिल्पी छोटे पैमाने पर काम करते थे, और उस याद मे ही सन्तोष अनुभव करते हैं, लेकिन वह युग अब चला गया है। वे अपने ही लिए स्वतन्त्र रूप से काम करने मे एक त रह की सुरक्षा महसूस करते हैं, परन्तु वह सुरक्षा अब अतीत की वस्तु बन गई है। यह कैसा पागलपन है!

अठारहवीं शताब्दी के कारीगर और शिल्पी को व्यापारिक प्रतिस्पर्धा से, लाइलाज समझी जाने वाली बीमारियो से और अत्याचारी शासन से कौन-सी सुरक्षा प्राप्त थी? आज कौन-सा ऐसा आदमी है जो फिर से १२ घटे दैनिक काम और बाल-श्रम के युग मे लौट जाना चाहता हो? आज चालीस घटे काम का सप्ताह (शीघ्र ही वह तीस घटे का रह जाएगा) सामाजिक सुरक्षा के लाभ, बेरोजगारी भत्ता, आधुनिक चिकित्सा और उच्च एव सार्वजनीन शिक्षा—इन सबने मिल कर आधुनिक अमेरिकन श्रमिक के चारो ओर सुरक्षा का एक ऐसा जबर्दस्त घेरा बना दिया है कि पचास वर्ष पूर्व कोई उसकी कल्पना भी नही कर

सकता था। और सुरक्षा ही नही, और भी अनेक लाभ आज के नागरिक को प्राप्त हैं।

कुछ लोगो मे यह प्रवृत्ति देखी जाती है कि वे पुराने जमाने के गाँवो या नगरो के समाज की खूब प्रशसा करते हैं और कहते हैं कि उस समाज मे सब लोग मिल कर सहयोग से काम करते थे। यह प्रशंसा वे इस प्रकार करते है, मानो उस समाज मे कुछ सहज आन्तरिक विशेषता थी। किन्तु आज जो स्वैच्छिक सगठन बनाए जाते हैं, वे आज की पहले से कही अधिक जटिल समाज-रचना का परिणाम हैं। इस स्वैच्छिक संगठन की प्रक्रिया से हमे ऐसे विचारो को आजमाने का अवसर मिलता है जो बाद मे सरकार का प्रश्रय भी पा सकते हैं। इस आजमाइश का परिणाम यह होता है कि यदि उनमे कोई गलती होती है तो वह बड़ी नही होने पाती।

जैसे-जसे विभिन्न हित सघ का रूप धारण करते है, एक-दूसरे को प्रतिसन्तुलित करते हैं और फिर परस्पर समन्वय भी स्थापित करते हैं वैसे-वैसे इस प्रक्रिया के फलस्वरूप एकीकरण और सम्मिलन अधिकाधिक बढता जाता है, भले ही हमें बीच-बीच मे मतभेद और अनैक्य की आवाजें भी सुनाई देती रहें। सौहार्दपूर्ण विविधता ही अमेरिकन जीवन का चिह्न है—यानी परस्पर मतभेद और अनैक्य के द्वारा सघनित होने वाला सौहार्द और प्रतिसन्तुलनकारी शक्तियो के द्वारा परस्पर एकत्व मे बाँधी गई अनेकता।

जो लोग यह समझते है कि समाज एक अपरिवर्त्तनीय और चारो ओर से बन्द सस्थान है, यह विश्वास भी नही कर सकते कि अमेरिकन समाज, जो तरह-तरह के समूहो, वर्गों और हितो से भरा हुआ है, किसी तरह चल रहा होगा। अमेरिका मे बाहर से जो ऊपरी साम्य नजर आता है, वह इसलिए नही है कि सब लोग एक जैसे और एक बराबर हैं, बल्कि वह परस्पर-विरोधी हितो के एकीकरण के अनवरत प्रयत्नो का, मतभेद के बजाय मतैक्य पर अधिक बल देने का और

भावनात्मक एवं विध्यात्मक तत्त्वो को प्रबल बनाने की चेष्टाओ का परिणाम है। हमने फूट मे से एकता, मतभेदो मे से मतैक्य का निर्माण किया है। इसमे सन्देह नही कि हमने देश मे जो साम्य और सादृश्य पैदा कर लिया है, उसे हम बहुत महत्त्व देते है। बाहरी प्रेक्षको को ऐसा लगता है, जैसे हम यह जानते ही नही कि एक-दूसरे से भिन्न होना क्या चीज है। हमने बड़े प्रयत्न और सयम से अपने मतभेदो और भिन्नताओ को दूर किया है, ताकि हम शान्ति से रह सके। यदि हमारे एकता के प्रतीक लोगो को बहुत अस्पष्ट नजर आते हैं तो हम इतना ही कह सकते है कि वह अस्वाभाविक नही है, क्योकि हम सब को उस मे समाविष्ट करने के लिए उनका अस्पष्ट होना स्वाभाविक ही था। आज जिन चीजो मे हम मे समानता है,—उदाहरण के लिए हमारे तौर-तरीको की समानता और अपनी आर्थिक प्रणाली के साथ हमारे सम्बन्ध —वे हमारी कठिनाई और परिश्रम से प्राप्त एकता की प्रतीक है।

हमारे सिक्को पर जो 'ए प्लुरिबस ऊनम' लिखा रहता है, वह केवल एक वाक्य ही नही है। कारण, हमारे यहाँ सचमुच अनेकता मे एकता है, हमारी सस्कृति मे धार्मिक और राजनीतिक विचार साथ-साथ चलते है, सरकारी और गैर-सरकारी दोनो तरह की चीजो मे एकीभाव है, राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय हित अविच्छेद्य हैं, जॉन ड्यूई के हाथो राजनीतिक सिद्धान्त ने एक अनूठे शिक्षा-दर्शन का रूप धारण कर लिया है और आदर्शवादी यह अनुभव करने लगे है कि प्राचुर्य और समानता की उनकी दुनिया मे उनके ध्येय यथार्थवादियो के ध्येयो के साथ मिल कर एकाकार हो गये है।

समानता अपने आपमे एक सयोजक तत्त्व बन जाती है, वह आदर्श भी है और तथ्य भी, एक नैतिक आवश्यकता भी है और सामाजिक यथार्थता भी। जैसा कि डेनियल बूरस्टिन ने अपनी 'दि जीनियस ऑफ अमेरिकन पौलिटिक्स' नामक पुस्तक मे कहा है, समानता शरीर क्रिया विज्ञान से

धर्मशास्त्र तक एक सयोजक और एकीकरण करने वाली सतत प्रक्रिया है ।

जैसे-जैसे विभिन्न तत्त्वो का पारस्परिक सहयोग होता जा रहा है, वैसे-वैसे एक नया सश्लेषण एक नया समन्वय बनता जा रहा है। कारण जैसे-जैसे लोगो के हितो का एकीकरण होता जाएगा वैसे-वैसे उन के प्रयोजन और उद्देश्य भी एक होते जाएगे।

जॉन ड्यूई ने यह आशा इन शब्दो मे व्यक्त की है · "जब दर्शन-शास्त्र घटनाक्रम के साथ सहयोग कर के चलेगा, और दैनिक जीवन की विस्तृत बारीकियो के अर्थ को स्पष्ट और परस्पर सगत रूप मे पेश करेगा, तब विज्ञान और भावना एक-दूसरे से अलग नही रहेंगे, और क्रियात्मक अमल और कल्पना भी एक-दूसरे मे गुथ जाएगे। कविता और धार्मिक भावनाए तब विना किसी दवाव के प्रस्फुटित होने वाले जीवन के फूल होगी। वर्त्तमान घटनाक्रम के अर्थ को अभिव्यक्त और स्पष्ट करना सक्रमण काल मे दर्शनशास्त्र का ही काम है।"*

गतिशील समाज वह है जिसमे मूलतः सब व्यक्ति समान हो; जिसमे परस्पर सहयोग से काम करने के लिए स्वैच्छिक सगठन बनाने की प्रवृत्ति हो, जो राष्ट्रीय स्तर पर सघ-निर्माण के द्वारा और सवल हो जाए और जो सामाजिक सन्तुलन और विकास मे पासग का काम कर सके, जिसमे हितो, पैमानो और लोगो की अभिवृत्तियो मे परस्पर क्रिया-अनुक्रिया और अन्योन्य-निर्भरता हो, और जिसके सामने एक ऐसा सुदूर लक्ष्य भी हो जो समानान्तर रेखाओ के आपस में मिलन की तरह असाध्य हो। गतिशील समाज का यह चित्र हमारे भविष्य के लिए और शायद अन्य राष्ट्रो के भविष्य के लिए भी, एक योजना है, जिसके आधार पर वे आगे बढ सकते है। कारण, यह उन लोगो की दुविधा और संशयो का भी समाधान कर देता है, जो समाजवाद के सामाजिक न्याय के ध्येय की लोकतन्त्री पूंजीवाद के

*'रिकन्स्ट्रक्शन इन फिलॉसफी', पृष्ठ २१२।

व्यक्तिगत प्रोत्साहन के आदर्श के साथ सगति बैठाना चाहते है। हम अमेरिकन लोग तो इन दोनो मार्गो से बनी पटरी पर रेल मे बैठकर तेजी से आगे बढ़ रहे है। इस रेलगाड़ी के शक्तिशाली मोटर उसे आगे बढा रहे हैं और उसक प्रतिसन्तुलनकारी ताकते उसे संभाले हुए है। केवल प्रतिक्रियावादी ही यह समझते हैं कि यदि इस रेल मार्ग की एक पटरी निकाल दी जाए तो यात्रा अधिक सरल हो जाएगी।

सांस्कृतिक विरासत

यह अमेरिकन सभ्यता एक लम्बी विरासत का परिणाम है, क्योकि यह सम्भव है कि सभ्यताएं लड़खड़ा जाए या कही रुक जाए, परन्तु जीवन अपनी धारा मे बहता रहता है। अमेरिका को भी ग्रीक लोकतन्त्र उसी तरह विरासत मे मिला है, जैसे यूरोप को। इसी तरह ग्रीक लोगो के तार्किकवाद, सौन्दर्य-प्रेम और शरीर-साधना मे भी अमेरिका यूरोप के समान ही साझी है। अमेरिका मे लैगिक सम्बन्धो के बारे मे जो अगोपनीयता है, धार्मिक आवेश हैं या मद्यपान की विलास वृत्ति है, उन सब की जड भी प्राचीन काल मे निहित है। नैतिक नियमों का हमारा आग्रह, ब्रह्माण्ड को ईश्वर द्वारा नियन्त्रित और व्यवस्थित मानने का हमारा विश्वास और अपने आपको ईश्वर द्वारा एक विशिष्ट ध्येय के लिए चुना गया राष्ट्र मान कर गर्व करने की भावना हमे यहूदियो से विरासत मे मिली है। प्रेम, पडोसी की सहायता और जरूरत-मन्दो के साथ बाँट कर उपभोग करने के नियम और हर व्यक्ति को ईश्वर की प्रतिमूर्त्ति मानना हमारी ईसाई धर्म की बहुमूल्य विरासत है, जिसे हम अपने इतिहास की मुख्य प्रेरक शक्ति और अपने अस्तित्व का मूल कारण मानते हैं।

रोमन लोगो से हमे कानून और व्यवस्था के प्रति आस्था मिली है, भारत से अतीन्द्रियज्ञानवादियो की मार्फत समस्त प्रकृति की रहस्य-पूर्ण एकता का विचार मिला है, अफ्रीका से सगीत और लय प्राप्त हुई है और ससार के विभिन्न भागों से, जहां लोग न्याय के भूखे और अपनी

प्रसुप्त शक्तियो के उपयोग के लिए अवसर पाने के इच्छुक थे, आये आप्रवासियो से दृढता और उद्यमी वृत्ति मिली है—और इन सब गुणो को नई दुनिया द्वारा पैदा की गई आशाओ और ऊर्जा के खमीर ने खूब उद्‌बुद्ध कर निखार दिया है।

जिन लोगो ने अटलांटिक के तट पर सब से पहले आकर बस्तियाँ बसाई थी, वे भली-भांति जानते थे कि वे क्या कर रहे हैं। उनका परीक्षण और प्रयोग एक सजग और चेतन परीक्षण था; क्योकि विलियम ब्रैडफोर्ड के शब्दो मे, "जैसे एक छोटी मोमबत्ती एक हजार आदमियो को रास्ता दिखा सकती है, वैसे ही यहाँ जलाई गई रोशनी ने बहुतो को रास्ता दिखाया है और एक तरह से तो सारे राष्ट्र को ही कुछ न कुछ आलोक दिया है।" अमेरिकन लोग अब भी अपने राष्ट्र को एक परीक्षण समझते हैं। लिंकन ने तो अपने गैटिसबर्ग के सुप्रसिद्ध भाषण मे अमेरिकन गृह-युद्ध को भी यह देखने के लिए एक कसौटी बताया था कि क्या जनता के लिए जनता द्वारा जनता का शासन स्थायी हो सकता है।

उद्योगवाद ने इन्सान को जमीन से अलग कर दिया है, एक स्थायी घर-द्वार से विस्थापित किया है और एक ऐसे धन्धे और रोजगार से भी विच्छिन्न कर दिया है जिसमे मनुष्य जो कुछ बनाता था उसकी पूर्णता का सन्तोष और सुख अनुभव करता था, परन्तु इससे भी बढकर उसने उन बन्धनो को काटकर फेंक दिया है जो इन्सान को जीवन के लंगर के साथ बाँधे रखते थे। घर, प्रकृति, मौसम और उपजाऊ धरती माता आदि जिन प्रतीको के रूप मे हम अब तक जीवन के अर्थ को समझते रहे हैं, उनको उसने बहुत कुछ निरर्थक कर दिया है।

लेकिन हाल के वर्षो मे हम उस निरर्थकता को दूर कर इन प्रतीको को फिर से अर्थपूर्ण बनाने लग गये है। सामाजिक विज्ञानो के विकास, जॉन ड्यूई के दर्शन, उद्योगपतियो मे बढती हुई सामाजिक चेतना, नये ढंग के आवास की परियोजनाओ मे सामुदायिक आवश्यकताओ की

अनुभूति, स्कूलो की पथ-प्रदर्शन सेवा और इसी प्रकार के सैकड़ो अन्य तरीको से हमारी सस्कृति मानवीय गतिविधि के अर्थ को खोजती और शुरू के दिनो की सहयोग की भावना का विकास करती रही है।

ऐसा प्रतीत होता है कि अमेरिकन लोग मिलकर सयुक्त रूप से काम करने की भावना और प्रवृत्ति को हमेशा पसन्द करते रहे है। मिलकर एक टीम की तरह काम करने की वृत्ति का मूल स्रोत परिवार है और अपनी टीमो मे, क्लबो मे, सगठनो मे, राजनीतिक दलो मे और एक जीवन्त समाज की शेष सभी सामूहिक कार्रवाइयो मे हम इस पारिवारिक भावना का प्रसार करते है। हर समाज एक भावनात्मक सस्कृति पर आधृत होता है और चू कि हमारी भावनाए हमारे बचपन के सम्बन्धो और सम्पर्को मे बनती है, इसलिए समाज को अपनी सस्कृति का मूल आधार पारिवारिक सम्बन्धो को बनाना चाहिए। एक ग्राम, नगर या समुदाय एक सामाजिक इकाई है जिसमे हम अपनी पारिवारिक सस्कृति का विस्तार करते है। यही कारण है कि हम अपने कालेज को विद्या का मातृमन्दिर कहते हैं, गिरजाघर को माँ कहकर पुकारते है। राष्ट्र को मातृभूमि या पितृदेश कहते है और अपने सगठनो को बिरादरी कहते हैं। पारिवारिक भावना और पारिवारिक प्रतीको का समाज, राष्ट्र और विश्व मे विस्तार करना, लोकतन्त्र का तर्कसगत स्वाभाविक परिणाम है। कारण, लोकतन्त्र अपने नागरिको से यह आशा करता है कि वे सामाजिक प्रक्रिया मे सक्रिय रूप से रत होगे। लोकतन्त्र, जैसा कि हमने पहले कहा है, केवल एक शासन प्रणाली ही नही है, वह एक जीवन-पद्धति है।

स्कॉट फिट्जजिराल्ड ने कहा था, "अमेरिका हृदय की एक आवेगमय उत्कण्ठा है।" यदि यह बात भावुकतापूर्ण लगती है तो हमे यह स्वीकार कर लेना चाहिए कि अमेरिका भावुक भी है।

विश्व की एकता और संयुक्त राज्य

अमेरिकन लोग अनेक वर्ष तक अत्याचार के विरुद्ध क्रान्ति, समस्त देशो के आत्म-निर्णय के अधिकार, व्यक्ति के हितो, शासन की लोकतन्त्री प्रणाणी और सब के लिए न्याय और समानता के समर्थक रहे हैं। हम लोग ही विश्व का अन्तःकरण रहे है, हमने आक्रमण की निन्दा की है, सभी जगह स्वतन्त्रता के सघर्ष को प्रेरणा और स्फूर्ति प्रदान की है, इस सघर्ष के कारण अपने देश से निर्वासित और भागकर आने वाले देशभक्तो को आश्रय दिया है और अमेरिकन डालरो से स्वतन्त्रता के आन्दोलनो को सहायता दी है। लेकिन इस सब के वावजूद हमने अपने आपको ससार के झगडो से अलग रखने का प्रयत्न किया है और हमारी इस पृथक्ता का आधार जार्ज वाशिंगटन की सलाह और मनरो सिद्धान्त रहे है।

यद्यपि हम स्पेन के विरुद्ध अविवेकपूर्ण लडाई मे कूदे और हमने अपने आपको एकाएक प्रशान्त महासागर के उस पार फिलिपाइन्स तक फैले हुए देखा, तो भी हमने अपने इन साम्राज्यवादी कार्यों के लिए गहरी लज्जा अनुभव की। हमने अपने अधिकृत प्रदेशो को उपनिवेश नही कहा और जल्दी ही फिलिपाइन्स को स्वतन्त्रता के लिए तैयार करने की वातचीत प्रारम्भ कर दी। जब हम चीन के बॉक्सर विद्रोह मे यूरोपीय ढग के साम्राज्यवादी झगडे मे उलझे तब भी हमने उस झगडे के फलस्वरूप प्राप्त हरजाने का अपना हिस्सा सयुक्त राज्य मे चीनी छात्रो की शिक्षा के खर्च के लिए लौटा दिया।

अमेरिकन महाद्वीपो के अन्य देशो के साथ अच्छा पडोसीचारा बनाये रखने की हमारी नीति के परिणामस्वरूप इन देशो के साथ हमारी

कितनी ही सन्धियाँ और समझौते हुए। हमने फिलिपाइन्स को स्वतन्त्रता देने की अपनी योजना क्रियान्वित की। हम स्वयं किसी समय औपनिवेशिक दासता के बन्धन मे रह चुके थे, इसलिए उपनिवेशो की जनता के साथ हमारी सदा सहानुभूति रही। अपने शान्ति के इरादे का प्रमाण देने के लिए १९२० और १९२१ में हमने एक तरह से अपनी नौसेना को बिल्कुल ही खत्म कर दिया। सन् १९३३ के मौटेवीडियो सम्मेलन और १९३६ के ब्यूनोस एयर्स सम्मेलन मे हमने अपने निज के हितो की रक्षा के लिए भी शक्ति के प्रयोग का परित्याग करने की घोषणा की। सन् १९२२ और १९३० मे हमने क्रमशः गुआम और फिलिपाइन्स मे किलेबन्दी न करना स्वीकार किया। ये और इसी प्रकार के हमारे अन्य कार्य यह जाहिर करते थे कि शान्ति और छोटे राष्ट्रों की स्वतन्त्रता के लिए हमारी आकांक्षा कितनी प्रबल है और किस तरह हम इन उद्देशयो की खातिर अपनी निज की शक्ति और सुरक्षा को भी खतरे मे डाल सकते है।

सन् १९३० के दशक मे हमने पारस्परिक व्यापार सन्धियो से एक स्वस्थ विश्व अर्थ-व्यवस्था के निर्माण का भी उद्योग किया। सन् १९३९ मे कॉर्डेल हल ने यह रिपोर्ट दी कि ससार के १९ देशो ने, जो ससार के ६० प्रतिशत व्यापार का प्रतिनिधित्व करते है, हमारे साथ समझौते कर लिए है। यद्यपि इन समझौतो से व्यापार के मार्ग मे बाधा डालने वाली तटकर की दीवारो को गिराने मे सफलता नही मिली, तो भी उन्होने इन दीवारो को और ऊँचा उठाने से र क अवश्य दिया।

इस बीच हम शान्ति की गारण्टी करने वाली अनेक योजनाओ शामिल हो चुके थे। यह सम्भव है कि आज हमारे ये काम कितने ही व्यर्थ और गलत प्रतीत हो, परन्तु वे इस बात के प्रमाण अवश्य थे कि अमेरिकन लोग अपने अन्तरतम से ही युद्ध को एक गम्भीर अपराध समझते थे और यह महसूस करते थे कि अपनी बुनियादी स्वतन्त्रता और अपनी लोकतन्त्री प्रणाली के सिवाय और किसी भी कीमत पर

उससे वचना चाहिए । अमेरिकन लोगो मे यह उक्ति प्रसिद्ध थी कि संसार मे अच्छी लडाई या बुरी शान्ति जैसी कोई चीज नही है ।

सन् १९२९ मे हमने केलोग-ब्रायण्ड समझौते पर हस्ताक्षर किए । अमेरिकन शान्ति आन्दोलन के फलस्वरूप हुए इस समझौते मे सयुक्त राज्य और ५९ अन्य राष्ट्रो ने युद्ध को हमेशा के लिए गैर-कानूनी ठहराने और उसका परित्याग करने की शपथ ली । यद्यपि आक्रमणकारी देश फिर से शस्त्र-सज्जा करने लग गये थे, तो भी हमने अपने शस्त्रास्त्र निर्माताओ को ही प्रथम विश्वयुद्ध के लिए दोषी ठहराया और अपनी गतिविधियो को तटस्थता कानून की मर्यादाओ के भीतर रखा । इससे हिटलर और जापान दोनो को ही प्रोत्साहन मिला, क्योकि उन्होने यह अनुभव किया कि हम तटस्थता की नीति पर चलने के कारण उनके आक्रमण का शिकार होने वाले देशो को कोई शस्त्र-सहायता नही देंगे । मचूरिया पर जापान के अधिकार से लेकर पोलैंड पर हिटलर के आक्रमण तक सयुक्त राज्य युद्ध से अलग रहने की अपनी नीति पर अटल रहा, जिससे आक्रमणकारियो का हौसला वढा और उसका परिणाम विश्वयुद्ध के रूप मे सामने आया ।

दोनो विश्वयुद्धो के मध्यवर्त्ती काल मे हमने विश्व शक्ति की वास्तविकताओ के बजाय नैतिक और कानूनी दृष्टिकोण अपनाने का प्रयत्न किया । हमने यह स्वीकार करने से इन्कार किया कि आर्थिक तत्त्व भी विश्व मे महत्त्वपूर्ण भाग अदा करते हैं । इसीलिए हमने अपने तटकर वढा दिए और परिणाम यह हुआ कि जो राष्ट्र पहले हमारे साथी रहे थे, उन्हें हमने अपना ऋण चुकाने का मौका नही दिया । हमने जापान के लोगो को आप्रवासी के रूप मे अमेरिका मे आने से रोका और उसका सामान खरीदने से इन्कार किया, जिसका परिणाम यह हुआ कि उसने अपने तैयार माल की विक्री के लिए बाजारो और कच्चे माल की खरीद के लिए स्रोतो की तलाश दूसरी जगह प्रारम्भ कर दी ।

अपनी शक्ति से दुविधा मे पड़कर हमने अपनी अन्तर्राष्ट्रीय जिम्मेदारियो को टाला। हमने मदिरा पीकर मतवाले होने की प्रवृत्ति को रोकने के लिए मद्य-पान पर प्रतिबन्ध लगाया और युद्धो का अन्त करने के लिए शस्त्रास्त्रो पर पाबन्दी लगाई। हमारी ये दोनो प्रवृत्तियाँ मूलतः पाप को नैतिक सिद्धान्त की दुहाई देकर जीतने की हमारी कैल्विनवादी सहजवृत्ति का परिणाम थी। लेकिन जो लोग हमारी नैतिक दृष्टिकोण से देखने की प्रवृत्ति के आलोचक है, उन्हे यह याद रखना चाहिए कि आक्रमण के प्रति घृणा के बिना अमेरिका का जनमत आक्रमणकारी के विरुद्ध शक्ति को कभी सगठित न होने देता।

कूटनीति या राजनय अन्य किसी भी देश की अपेक्षा सयुक्त राज्य मे जनता के समर्थन पर अधिक निर्भर है। सयुक्त राज्य मे ऐसा कोई विशिष्ट वर्ग नही है जिसका काम ही शासन करना या राजनय को चलाना हो। जनता से यह आशा नही की जा सकती कि वह हमारे अत्यधिक व्यापक अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धो की तमाम बारीकियो और पेचीदगियो को समझ लेगी, इसलिए ये मामले उसे अत्यन्त सरल भाषा मे समझाने पडते है। इसीलिए हमारी बातो मे नैतिकता बहुत अधिक होती है, जो हमारे विदेशी मित्रो को अच्छी नही लगती। लेकिन इस नैतिकता के कारण हमारी सारी कूटनीति कमजोर के, छोटे राष्ट्र के, स्वतन्त्रता, शान्ति एव ऐसी विकासोन्मुख अर्थ-व्यवस्था के इच्छुक देश के पक्ष मे रहती है जो उन्हें अपने उत्पादन का न्यायपूर्ण हिस्सा दे सके।

द्वितीय विश्व युद्ध और उसके बाद

यूरोप मे पुनः युद्ध छिडने और फ्रास के पतन के बाद हमने अपने स्वाभाविक साथी राष्ट्र ग्रेट ब्रिटेन के साथ मिल कर अटलांटिक घोषणा-पत्र तैयार किया जिसमे स्वतन्त्रता, आजादी और आर्थिक एव सामाजिक अधिकारो के उन्ही सिद्धान्तो की घोषणा की गई, जो हमेशा हमारे पथ-प्रदर्शक रहे है, भले ही हम उनकी प्राप्ति मे सफलता न पा सके हो।

युद्ध की समाप्ति तक हम अपने सैनिक मुहैया करने के अलावा ६० अरब डालर की सहायता उधार पट्टे के रूप मे दे चुके थे। रूस को मित्र बनाने और राष्ट्रो के परिवार मे उसका स्वागत करने के लिए हमने अटलांटिक घोषणा-पत्र और अपने निज के आदर्शो तक की अवहेलना कर दी। बाल्टिक राज्यो, पोलैड की पूर्वी सीमा और बाल्कन राज्यो और मचूरिया मे रूस के प्रभाव आदि के मामलो मे हम झुक गए। जब हिटलर की सेनाएँ रूस को उसकी अपनी सीमाओ मे बहुत दूर तक धकेल रही थी, उस समय हम चाहते तो उसे सहायता देना बन्द कर देते और तभी सहायता देते जबकि वह हमारी शर्ते स्वीकार कर लेता। किन्तु इसके बजाय हमने अधिक उदार और अधिक सम्मानपूर्ण मार्ग अपनाया।

युद्ध खत्म होने पर हमने जल्दी ही अपनी सेनाए विघटित कर दी, नियन्त्रण खत्म कर दिये, अपनी युद्धकालीन सस्थाए बन्द कर दी और आराम और चैन के साथ एक ऐसे युग का आरम्भ किया, जिसे हम शान्ति का युग समझते थे और महसूस करते थे, कि हमे अब उसका हक हासिल हो गया है। हमने अपने परमाणु शक्ति के ज्ञान मे दूसरो को भी साझेदार बनाने का प्रस्ताव किया और परमाणु युद्ध के उन्मूलन के लिए अचेसन-लिलियन्थाल प्रस्ताव के द्वारा एक बहुत बडी रियायत देने की घोषणा की, क्योकि हमे आशा थी कि इससे हम शान्ति की स्थापना कर सकेंगे। किन्तु रूसी सरकार ने हमारे इस प्रस्ताव को अस्वीकार कर दिया और इसके बदले मे एक ऐसा प्रस्ताव रखा जो एक मजाक के सिवाय कुछ नही था।

इस बीच रूसियो ने अपने साम्राज्य का विस्तार करना जारी रखा। उन्होने बाल्टिक राज्यो को हडप लिया, पूर्वी जर्मनी का सोवियतीकरण कर दिया और पोलैड, चैकोस्लोवाकिया, हगरी, बलगेरिया, रूमानिया और अलबेनिया को अपने नियन्त्रण मे ले लिया और इस प्रकार ३,६२,००० वर्गमील के इलाके को अपने अधिकारक्षेत्र मे और

६ करोड जनता को अपनी अधीनस्थ आबादी मे मिला लिया। दूसरी ओर इसी समय सयुक्त राज्य फिलिपाइन्स को आजादी देने की अपनी प्रतिज्ञा पूरी कर रहा था और ब्रिटेन ने भारत, पाकिस्तान, श्रीलका और बर्मा को स्वतन्त्रता देना स्वीकार कर लिया था। इण्डोनेशिया ने नीदरलैंड्स से स्वतन्त्रता प्राप्त कर ली। इन परिवर्तनो ने ५५ करोड़ ५० लाख व्यक्तियो और २८,६४,००० वर्गमील क्षेत्र को मुक्ति प्रदान की।

सयुक्त राज्य पहले ही ऐसे सम्मेलनो का श्रीगणेश कर चुका था, जिनके परिणामस्वरूप सयुक्त राष्ट्रसंघ की स्थापना हुई। अमेरिकनो को आशा थी कि लीग ऑफ नेशन्स अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति और सुरक्षा की स्थापना के जिस काम मे असफल रही थी, सयुक्त राष्ट्रसंघ उसे पूरा कर सकेगा। किन्तु रूस के अपने पड़ोसी देशो को हड़पने और दूरस्थ देशो की सरकारो के विरुद्ध षड्यन्त्र के सकल्प ने उसे असम्भव बना दिया। यह भी स्पष्ट हो गया है कि राजनीतिक क्षेत्र की भाँति आर्थिक क्षेत्र मे भी (सयुक्त राष्ट्रसघ के विभिन्न सगठनो के द्वारा) रूस सहयोग करने को तैयार नही है।

सन् १९४७ मे जब ब्रिटेन ने घोषणा की कि वह टर्की और ग्रीस को आर्थिक और सैनिक सहायता देना जारी नही रख सकता, तब हमे इस तथ्य का सामना करना पडा कि हमारी शक्ति ने आज हम पर एक ऐसी जिम्मेदारी डाल दी है, जिसे उठाने से हम इन्कार नही कर सकते। अन्त मे ट्रुमन सिद्धान्त के द्वारा अमेरिका की परराष्ट्र नीति ने एक बड़ा मोड़ लिया। अब हमारे लिए अपने आप को इस स्वप्न से भरमाये रखना सम्भव नही था कि हम अपनी सीमाओ मे ही सिमट कर आराम से रह सकते है। न हम यही आशा कर सकते थे कि ब्रिटेन की नौसेना समुद्र मे गश्त लगाती रहेगी और शक्ति-सन्तुलन कायम रखेगी या सयुक्त राष्ट्रसघ हर सकट काल का मुकाबला कर लेगा। जब तक रूस की ताकत साम्राज्यवादी प्रसार और अशान्ति एव विद्रोह

कराने के लिए कृतसकल्प थी, तब तक केवल हमारे पास ही ऐसी शक्ति थी, जो उसके इन कार्यों को प्रतिसन्तुलित कर सकती थी।

ट्रूमन सिद्धान्त का सार यह था, "सयुक्त राज्य की नीति ऐसे स्वतन्त्र लोगो के समर्थन की होनी चाहिए जो सशस्त्र अल्पसख्यको के प्रयत्न या बाहरी दवाव से गुलामी की कोशिशो का प्रतिरोध कर रहे हो।"

यूरोप मे आर्थिक सकटो का सामना करने के लिए हमने मार्शल योजना प्रस्तुत की। किसी एक देश ने अन्य देशो को इससे पूर्व कभी भी इतनी बडी आर्थिक सहायता का प्रस्ताव नही किया था। इसका उद्देश्य सहायता प्राप्त करने वाले देशो को अपना अहसानमन्द बनाना नही था, बल्कि उन्हें इस लायक बनाना था कि वे अपने पावो पर खड़े होकर अपना हित-साधन स्वयं कर सकें। इसमे हमारा अपना हित भी था, क्योकि अब हम यह स्वीकार करने लग गए थे कि सारे ससार मे एक स्वस्थ अर्थ-व्यवस्था का होना हमारी अपनी सुरक्षा के लिए हितावह है।

सन् १९४७ मे हमने पश्चिमी गोलार्ध के अन्य देशो के साथ भी एक रक्षात्मक सगठन का निर्माण किया और प्रतिरक्षा विभाग बना कर अपनी निज की सेनाओ को मजबूत बनाया। बाद के वर्षों मे हमने यूरोप और प्रशान्त क्षेत्रो मे भी अपने रक्षात्मक सैन्य सधि सगठन बनाये।

सन् १९४८ मे चैकोस्लोवाकिया मे कम्युनिस्टो की क्रान्ति के बाद, जो कि सीमा के निकट अवस्थित शक्तिशाली सोवियत सेना की उपस्थिति के कारण सम्भव हुई, हमने अनुभव किया कि अपनी सैनिक शक्ति को मजबूत बनाये बिना हमारा काम नही चलेगा। रूस के पास आबादी के लिहाज से हमसे तीन गुनी अधिक सेना थी।

इसके बाद कोरिया पर हमला आया। अब यह स्पष्ट हो चुका था कि कम्युनिस्ट नेता अपनी प्रभुत्व और नियन्त्रण स्थापित करने की योजना के अग के रूप मे ससार के किसी भी भाग मे युद्ध का खतरा मोल लेने के लिए तैयार थे। अमेरिका के तत्काल कार्रवाई करने और सयुक्त

राष्ट्रसघ के अविलम्ब सहायता देने के फलस्वरूप इस खतरे का मुकाबला कर लिया गया।

यद्यपि सयुक्त राज्य का जन्म ही अपनी औपनिवेशिक स्थिति का अन्त करने के लिए एक युद्ध के द्वारा हुआ था और बाद मे भी उसने दक्षिण अमेरिका, फिलिपाइन्स तथा अन्य देशो मे स्वतन्त्रता चाहने वालो का समर्थन किया, तो भी रूस के कम्युनिस्ट शासक स्वय अपने चारो ओर के छोटे-छोटे स्वतन्त्र देशो को हडपते जाने के बावजूद सयुक्त राज्य के बारे मे यही प्रचार करते रहे कि वह उपनिवेशवाद का समर्थक है। यह सही है कि जहा हम यूरोप मे अपने मित्र राष्ट्रो को शक्तिशाली बनाने मे व्यस्त थे, वहाँ हमने अल्जीरिया जैसे औपनिवेशिक क्षेत्रो के मामले मे जहाँ अल्जीरिया मे उत्पन्न यूरोपीयो का भी ख्याल रखना जरूरी था, फूक-फूक कर कदम रखा। फिर भी गत दस वर्षो की किसी भी निष्पक्ष समीक्षा से यह जाहिर हो जाएगा कि जहाँ पश्चिमी राष्ट्र अन्य देशो के लोगो की आजादी को समर्थन और सहायता प्रदान करते रहे है, वहाँ रूस उन्हें गुलाम बनाता रहा है और यदि उन्होने उसका प्रतिरोध किया तो उसने उनका बिल्कुल सफाया ही कर दिया।

अब आखिरकार ठोकरें खाने के बाद अमेरिका ने यह सीख लिया है कि आक्रमणकारी अपने विरोधियो को शस्त्रहीन देख कर अपनी दुरभिसन्धियो से बाज नही आते, और इसीलिए उसने अन्त मे मजबूर होकर अपनी निज की सैनिक शक्ति का स्तर काफी ऊँचा रखकर आक्रमण की प्रवृत्ति पर अकुश लगाने की नीति अपनाई है। यही कारण है, कि वह सोवियत रूस की विश्व-प्रभुत्व की दुरभिसन्धि के विरोधी समस्त देशो की स्वतन्त्रता को सुनिश्चित बनाये रखने के लिए उनको अपनी आर्थिक शक्ति मे भी हिस्सेदार बनाता है। किन्तु अमेरिकनो को यह देख कर आश्चर्य हुआ कि जैसे ही उन्होने यह कठिन और महगा निश्चय किया, बहुत से लोगो ने उसके अभिप्राय को सन्देह की नजर से देखा और उसकी नीयत पर अविश्वास किया। अमेरिका पर यह आरोप

लगाया जाता रहा है कि उसने दोनो विश्व युद्धो से पूर्व अपने आपको शक्तिशाली नही बनाया था इसीलिए वह युद्ध को रोक नही सका, किन्तु अब यह सबक लेकर जब उसने अपने आपको शक्तिशाली बनाने का निश्चय किया तो लोगो ने उसे युद्धलिप्सु कहना शुरू कर दिया।

लेकिन फिर भी अमेरिकन लोग अपने इस पुराने स्वप्न से अभी तक चिपटे हुए हैं, कि ससार मे युद्धो का हमेशा के लिए अन्त कर दिया जाना चाहिए। इसीलिए उन्होने नि.शस्त्रीकरण करने, परमाणु युद्ध को हमेशा के लिए गैर-कानूनी ठहराने और नि शस्त्रीकरण को सफल बनाने के उद्देश्य से सैनिक संस्थानो का अन्तर्राष्ट्रीय निरीक्षण करने के लिए समझौते के प्रस्ताव बार-बार रखे। लेकिन वर्षो तक धैर्य से प्रयत्न करने का परिणाम सिर्फ एक ही हुआ और वह यह कि रूस किसी भी तरह के निरीक्षण कार्यक्रम को स्वीकार करने के लिए राजी नही हुआ।

सयुक्त राज्य अपने अब तक के इतिहास पर गर्व कर सकता है, क्योकि उसने फिनलैण्ड और पोलैण्ड पर किये गए सोवियत आक्रमणों की भाति कभी किसी देश पर आक्रमण का षड्यन्त्र नही रचा। यही नही, उसने पुराने जमाने के राजनय के समान ऐसा कोई समझौता नही किया जिसमे किसी अन्य तीसरे पक्ष को नुक्सान पहुँचा कर अपना हित साधा गया हो। (यहाँ तक कि मचूरिया को सोवियत रूस के प्रभाव-क्षेत्र मे लाने के बारे मे याल्टा मे जो समझौता हुआ और जिस पर बहुत से अमेरिकन शर्मिन्दगी भी महसूस करते हैं, वास्तव मे अमेरिका ने रूस को उतना देने की सिफारिश नही की थी, जितना कि चीन ने अन्ततः स्वय दे दिया)।

युद्ध का परिणाम कठोर नियन्त्रण, ऋण, भारी टैक्स और भौतिक सम्पत्ति के ऐसे विनाश के रूप मे होता है, जिसे उत्पादकता को अत्यधिक महत्वपूर्ण मानने वाली कोई भी सस्कृति एक बडा अपराध समझेगी। यह तथ्य भी सारहीन है कि उद्योगपति स्वभावत. युद्ध को पसन्द करते

है, क्योकि उससे उन्हे बहुत भारी मुनाफा होता है । कारण अमेरिका में युद्ध-कालीन ठेको के अनुसार कमाये गये मुनाफे सरकार को वापस करने की व्यवस्था है । इस व्यवस्था के अनुसार दूसरे विश्व युद्ध के दौरान मे और उसके बाद उद्योगपतियो ने १०,४३,१६,३७,००० डालर सरकार को लौटाये । शेष मुनाफो पर भी भारी टैक्स लगाये गये । ये टैक्स लगने से सामान्य युद्ध कालीन मुनाफे से ऊपर की मुनाफे की सारी रकम का ६५ प्रतिशत भाग सरकार के हाथ मे चला गया । इसके अलावा उद्योगो से प्राप्त मुनाफा व्यक्तियो को डिविडेड के रूप मे बाटने पर उस पर फिर बहुत भारी आयकर लगाया गया, जिसकी दर उच्च व्यक्तिगत आय वाले वर्ग पर बहुत ऊँची पडती है ।

अमेरिकनो का मुकाबला एक ऐसे प्रतिद्वन्द्वी से पड़ा है जो सशस्त्र आक्रमण को राजनीतिक शस्त्र के रूप मे इस्तेमाल करता है । इसलिए अमेरिका ऐसे प्रतिद्वन्द्वी से अवश्य ही घाटे मे रहेगा, क्योकि वह इस ढंग से सोच ही नही सकता । अमेरिकन लोग हमेशा यह प्रतीक्षा करेंगे कि दूसरा पक्ष ही पहल करे, क्योकि वे युद्ध को राजनीति का साधन नही मानते और अमेरिका की कोई भी सरकार यदि इस नीति पर चलने लगेगी तो उसे जनता का समर्थन नही मिलेगा ।

जैसा कि हमने पहले बताया है, कुछ कारणो से ससार मे हमारी स्थिति एक नैतिक शक्ति के रूप मे है, इसलिए हम ऐसे किसी भी देश को सहज मे अपना मित्र स्वीकार नही कर सकते, जिसकी आन्तरिक नीतिया स्वतन्त्रता के विरुद्ध हो । किन्तु जिस तरह युद्ध मे हिटलर और मुसोलिनी की एक के बाद एक विजय को देखते हुए हमे रूस को अपना मित्र स्वीकार करना पडा, उसी तरह यदि आज भी रूस की शक्ति का मुकाबला करना हो तो इसके सिवाय कोई दूसरा उपाय नही है ।

इसके साथ ही हमे एक ऐसी परराष्ट्र नीति का अवलम्बन करना पड़ता है, जिसे हमारे देश मे सब लोग, जो नाना देशो से आकर यहा बसे हैं, स्वीकार करें । विदेशी भाषाएं बोलने वाले अमेरिकन लोग

हमारी सरकार से अनेक तरह की मागें कर सकते है, जैसे कि अमेरिकन पोलिश एसोसियेशनो की समन्वय समिति ने यह मांग की थी कि अमेरिका पूर्वी यूरोप की उन सब सरकारो को मान्यता देना बन्द कर दे जो सोवियत रूस की कठपुतली हैं और उनके स्थान पर इन देशो की विदेशो मे स्थापित निर्वासित सरकारो को मान्यता प्रदान करे। अमेरिका मे श्रमिक, व्यवसायी, कृपक, भूतपूर्व सैनिक, स्त्रिया और विभिन्न धार्मिक वर्ग—सभी परराष्ट्र नीति मे दिलचस्पी लेते हैं और हमेशा वाशिंगटन मे सरकार के सामने अपने विचार रखते रहते हैं।

हमारी आप्रवास नीति के विपक्ष मे भी विरोधी ताकतें सक्रिय रहती है। इस शताब्दी के पहले दो दशको में अमेरिका मे आप्रवासी लोग इतनी जबर्दस्त बाढ के रूप मे आये कि वह उन सब को आसानी से खपा नही सकता था। इससे घबराकर कॉंग्रेस ने इस बाढ को रोकने के लिए कई प्रतिबन्धक कानून पास किये। इनमे से सब से बाद का कानून मैककॅरनवालटर कानून है जो १९५२ मे पास किया गया। इस कानून ने उन अभागे किन्तु वस्तुत योग्य व्यक्तियो के लिए, जो अतीत मे अत्याचार और गरीबी से पनाह पाने के लिए सयुक्त राज्य को ही अपना एकमात्र आश्रय समझते रहे है, अमेरिका के द्वार बन्द कर दिये। इस कानून ने लोगो के मन मे सयुक्त राज्य की उस छवि को भी धुंधला कर दिया है, जिसमे उसे अत्याचार से पीडित व्यक्तियो का सहारा और समुद्धारक अंकित किया जाता था।

अमेरिकन प्रशासन और विभिन्न धार्मिक, नागरिक, शैक्षणिक और श्रमिक वर्गों की सहायता से, जिन्होने आप्रवास नीति को अधिक उदार बनाने का समर्थन किया है, मौजूदा कानून को सशोधित करने के लिए अनेक विधेयक पेश किये जाते रहे हैं। हंगरी मे कम्युनिस्ट अत्याचार से पीडित शरणार्थियो को अमेरिका मे प्रवेश की अनुमति देने के लिए विशेष व्यवस्था की गई। किन्तु विश्व की परिस्थितियो के कारण

आप्रवास की नीति सम्भवत अभी अनेक वर्ष तक एक सजीव प्रश्न बनी रहेगी।

एक ऐसे राष्ट्र मे, जो सौ वर्ष से भी अधिक समय तक बिना किसी परराष्ट्र नीति के रहा और जिसे अब वे सबक रातो-रात सीखने पड़ रहे है, जिन्हे पुराने देश सादियो से सीखते रहे है, ये कठिनाइयाँ पैदा होना स्वाभाविक ही है। हमने अपनी परराष्ट्र नीति को दोनो मुख्य राजनीतिक दलो की सामान्य नीति बनाने मे बहुत हद तक सफलता प्राप्त की है और हमारी जनता ने सारे ससार मे लोगो के रहन-सहन के स्तर को ऊँचा उठाने और उनकी आजादी की रक्षा करने के अनवरत सघर्ष मे अपने नैतिक और भौतिक साधनो का योगदान किया है।

सन् १६४६ तक हमारी सब से बडी त्रुटि थी हमारी तटस्थता की नीति। लेकिन अन्त मे हम जाग उठे और हमने इस त्रुटि को अनुभव किया परन्तु अब भारत जैसे देशो मे यही नीति देखकर हमे भारी आघात लगा है। भारत दर असल आज उसी दौर मे से गुजर रहा है जिसमे से हम अपनी स्वतन्त्रता की लडाई के दिनो मे और उसके बाद गुजर रहे थे और, और जिसमे हमे अपनी कठिनाई से अर्जित स्वतन्त्रता को मजबूत बनाने के सिवाय और किसी चीज का खयाल नही था।

हमने अतर्राष्ट्रीय क्षेत्र मे काफी नुक्सान उठाया है और खतरे और तनाव मोल लिये है, इसलिए हम यह मानकर चलते रहे हैं कि इससे हमे कम-से-कम लोगो का प्रेम और सम्मान तो मिलेगा ही। यही कारण है कि जब हमारे मित्रदेश भी हमारी जीवन-पद्धति की कठोर आलोचना करते है, हमारी क्षमताओ मे सन्देह करते है और हमारी शक्तिशालिता देखकर नाराज होते हैं तो हमे दु.ख होता है। हम देखते हैं कि यूरोप हम से बहुत ऊँचे दर्जे के व्यवहार की आशा करता है और जब हम दूसरो के कोपभाजन बनते हैं तो वह खुश भी होता है जैसा कि पी० जी० वर्स्टहोर्न ने लिखा है, यूरोप यह आशा करता है कि संयुक्त राज्य उसकी ढाल भी बने और आत्मा भी, या दोनो मे से जो भी उसके लिए लाभकर हो वही वह बने।

\

इसीलिए ब्रिटेन चाहता था कि इडोचीन मे हम अपने उपनिवेशवाद-विरोधी सिद्धान्तो पर बल दें, किन्तु साथ ही वह यह भी चाहता था कि ईरान मे हम अपने आदर्शवाद को भुलाकर ब्रिटिश नीति का समर्थन करें।

'अमेरिकन राजनय के सामने एक और कठिनाई भी है और वह यह कि सयुक्त राज्य दूमरे देशो के साथ मब वार्त्ताए बिल्कुल खुले मच पर बिना कुछ छिपाये करना आवश्यक समभता है। वह अखबारो से कुछ छिपाता नही, और अखबार स्वभावत विवाद और मघर्ष पर अधिक जोर देते हैं और हर घटना को सयुक्त राज्य की विजय या पराजय के रूप मे पेश करते है (हमारी मरकार ने भी सिद्धान्तत. यह बात स्वीकार की हुई है कि सब वार्ताएँ खुल्लमखुल्ला तौर पर हो)। फिर भी राजनय एक ऐसी चीज है जिसमे समझौते अवश्य करने पडते है। सयुक्त राष्ट्र सघ के सभी सगठनो और सस्थाओ की प्रभावकारी सफलताओ की खबरें अधिक पूर्ण रूप मे देने से वार्त्ता मे लोगो का विश्वास अधिक दृढ हो सकता है।

नया साहसपूर्ण कार्यक्रम

कभी यहाँ और कभी वहाँ आक्रमण की आशकाए होती रहने से सयुक्त राज्य आर्थिक सहायता की अपेक्षा सैनिक गठबन्धनो और सैनिक व्ययो पर अधिक बल देने लगा है। लेकिन इतना होने पर भी दूसरे विश्व-युद्ध के बाद अब तक सयुक्त राज्य अन्य देशो को ५६ अरब डालर की आर्थिक सहायता दे चुका है। यह राशि इतनी बडी है कि इसका अनुमान सहज मे नही लगाया जा सकता। इसके अलावा अमेरिकनो की १० अरब डालर की प्राइवेट पूजी भी अन्य देशो मे लगी है। कई बार जिन देशो मे यह पूजी लगाई उनके मुनाफाखोरो ने उसका एक बडा हिस्सा स्वय हडप लिया। कई बार ऐसा भी हुआ है कि हमने यह सहायता उन देशो को दी जिनकी हमारे साथ सधिया है और दूसरे अल्प-वकसित देशो को, जो उनसे कम जरूरतमन्द नही थे, हमने उससे वचित

रखा। फिर भी जितनी बडी सहायता हमने दी है उसकी मिसाल दुनिया मे कही भी नही मिल सकती।

यूरोपीय उद्योगो को हमने जो सहायता दी है उससे उनका उत्पादन युद्ध-पूर्व के स्तर से ७० प्रतिशत ऊँचा हो गया। अमेरिकन पर्यटको और सैनिको के जरिये ३·२ अरब अमेरिकन डालर और हर वर्ष यूरोप मे पहुँच रहे है और उनका असर हर यूरोपीय घर पर स्पष्ट नजर आता है। प्रसिद्ध ब्रिटिश अर्थशास्त्री बार्बेरा वार्ड का कहना है कि अमेरिका के सहायता कार्यक्रमो ने निश्चित रूप से उसे ससार का नेता होने का दावेदार बना दिया है "और इन्ही कार्यक्रमो के कारण आज ससार के सब स्वतन्त्र राष्ट्रो मे एकता है।"

वैदेशिक कार्यक्रम प्रशासन के भूतपूर्व निदेशक हैरल्ड ई० स्टास्सन को दी गई एक रिपोर्ट मे कहा गया था कि अमेरिका अन्य देशो को जो टैक्निकल सहयोग दे रहा है, वह वास्तव मे अमेरिका की नये-नये क्षेत्रो मे साहसिक कार्य करने की हमेशा से चली आ रही प्रवृत्ति का ही दूसरा नाम है। अमेरिकन लोग प्रारम्भ से ही आबाद इलाको मे सीखे गये ज्ञान को सचित कर पारस्परिक सहयोग के द्वारा नई परिस्थितियो मे इस्तेमाल करने के अभ्यस्त रहे है। ये नई परिस्थितियाँ भी कालान्तर मे आबाद इलाको मे परिणत हो जाती है और फिर इनमे सचित ज्ञान और अनुभव अगले नये इलाको को दे दिया जाता है। इसी भावना से अमेरिकन विशेषज्ञ टैक्निकल सहयोग कार्यक्रम के अन्तर्गत अन्य देशो मे जाकर स्वैच्छिक पारस्परिक सहयोग से उनके विशेषज्ञो के साथ काम करते है।

इस टैक्निकल सहयोग के परिणाम देखने हो तो जोर्डन के हाशिमी राज्य मे देखिए जहाँ ऊसर और सूखे मरुस्थल पर हरे-भरे नखलिस्तान लहलहा रहे है, भारत मे देखिये जहा गेहूँ की फसल मे पाँचगुनी वृद्धि हो गई है, ईरान मे देखिये जहाँ किसानो को खेती की नई-नई विधियाँ सिखाई जा रही हैं और बोलीविया से लेबनान, पाकिस्तान और थाईलैंड

तक फैली उन ग्राम-सुधार परियोजनाओ मे देखिए, जिनमे लोगो को सहकारिता के तरीके सिखाये गये हैं, उत्पादन वढाया गया है और गाँवों को स्वास्थ्य सेवाएँ और अच्छा पेय पानी उपलब्ध कराया गया है।

लेवनान मे चतुःसूची कार्यक्रम का एक विवरण देते हुए कहा गया है कि "चतु सूची कार्यक्रम एक ऐसा वाहन है जिस पर सवार होकर वैज्ञानिक ज्ञान, टैक्निकल आविष्कार और भौतिक प्रगति अमेरिकन आदर्शो, अमेरिकन आशाओ और मानव समाज मे सच्चा भ्रातृत्व स्थापित करने की अमेरिकन आकाक्षाँओ के साथ सहयात्री के रूप मे अन्य देशो में पहुँचते हैं।"

चर्चो और 'केयर' एव वर्ल्ड नेवर्स आदि सस्थाओ द्वारा सचालित अनेक स्वैच्छिक कार्यक्रम, छोटे होने पर भी काफी प्रभावशाली हैं, क्योकि वे अमेरिकन जनता की अपनी भौतिक सम्पदा और टैक्निकल ज्ञान को दूसरो के साथ वाँट कर उपभोग करने की सहज आकाक्षा की अभिव्यक्ति है।

पॉल रश नामक अमेरिकन, जो युद्ध से पहले टोकियो के एक एपिस्कोपल विश्वविद्यालय मे अध्यापक था, इसका एक अच्छा उदाहरण है। युद्ध के वाद जव वह अमेरिका से जापान लौटा तो वहाँ उसे यह अनुभव हुआ कि जापान की आवादी वहुत तेजी से वढ रही है और खाने को आहार उतना उपलब्ध नही है। इससे उसके मन पर इतना जवर्दस्त आघात पहुँचा कि उसने स्वय ही थोडा वहुत धन सग्रह किया और कियोसातो नामक एक छोटे से पहाडी गाव मे छोटे पैमाने पर उत्पादन का एक प्रयोग आरम्भ किया। वह यह देखना चाहता था कि एक पहाड़ी जमीन पर जो अव तक विल्कुल उपजाऊ नही थी क्या कुछ किया जा सकता है। आज कियोसातो शैक्षणिक परीक्षण परियोजना १६ किस्म की सब्जियाँ और सात किस्म के अनाज पैदा करती है, हीयरफोर्ड और जर्सी नस्ल की पशुशाला, एक आधुनिक ढग की डेयरी और हजारो मुर्गियो वाली मुर्गीशालाएं चलाती है। यह डेयरी और मुर्गीशालाएँ

चलाने के लिए प्रारम्भ में कुछ अमेरिकन मित्रो ने गौएँ और मुर्गियाँ दी थी। हर किसान ने, जिसके पास दस मुर्गियाँ थी, कम-से-कम दस अडो से चूजे पैदा करना स्वीकार किया और यह वचन दिया कि वह दस स्वस्थ मुर्गियाँ किसी अन्य साथी किसान को देगा।

इस गाव के लोगो को जो कुछ वर्ष पूर्व वडी कठिनाई से अपना निर्वाह कर पाते थे, आज एक गिरजाघर, एक पुस्तकालय और एक अच्छा साधन-सम्पन्न अस्पताल भी उपलब्ध है। सबसे बडी बात यह है कि कियोसातो के लोगो ने पारस्परिक सहायता से अपनी सहायता करना सीख लिया है। यहाँ २०० आदमी श्रमदान से सडकें बना रहे है। 'फोर-एच' क्लबें भी चल रही है। जब बूढे और अपंग लोगो के एक आश्रम मे भोजन की कमी हो गई तो चार सौ कृषक बच्चो ने एक-एक आलू दान कर चार बुशल आलू जमा कर दिए। पाँच वर्षो मे इस गाँव ने पिछली पाँच शताब्दियो से भी ज्यादा तरक्की कर ली। हजारो लोगो ने आकर वहाँ इस कायाकल्प को देखा। अब इस परियोजना की भाँति और भी कतनी ही परियोजनाएँ जापान के पहाड़ी इलाको मे शुरू हो गई हैं।

इसी तरह क्लिफोर्ड क्लिण्टन भी एक कल्पनाशील व्यक्ति था। उसका 'मील्स फॉर मिलियन्स' (लाखो के लिये भोजन) आन्दोलन बिना किसी लाभ के अन्नाभाव से ग्रस्त इलाको मे सस्ता बहूद्देश्यक आहार बेचता है।

सयुक्त राज्य के विशाल सूखे इलाके मे अवस्थित आठ हजार आबादी के छोटे से शहर फ्लैगस्टाफ (एरिजोना) मे एक अखबार यह ऐलान करता है कि 'केयर' नामक स्वैच्छिक समाज सेवी सगठन को नवम्बर मे दिए जाने वाले हर एक डालर मे एक स्थानीय नागरिक एक और डालर की वृद्धि कर देगा। और इन डालरो मे से हर एक अन्य दशो मे अवस्थित १६ सकटग्रस्त क्षेत्रो मे से एक के हर

शरणार्थी या वेरोजगार परिवार को २२ पौड अमेरिकन खाद्य-पदार्थ—दुग्ध चूर्ण, पनीर, चावल, सेम, गेहूँ और मकई का आटा—मुहैया करेगा।

पत्र का सम्पादक इस ऐलान के साथ टिप्पणी करते हुए कहता है कि "इस दान के द्वारा अन्य देशो के भूखे लोगो के पेट भरने और उनके प्रति अपनी मैत्री का भावना का सवूत देने का उत्तम अवसर है।" फ्लैगस्टाफ के निवासी उन लोगो को कभी देख नही सकेंगे जिन्हें ये पैकेट मिलेंगे। फिर भी उन्हें इस पुण्य कार्य मे योग देकर खुशी होती है।" पचास से अधिक अन्य सगठन भी ऐसे है जो अन्य देशो को सहायता के पैकेट भेजते है। इनमे से सवसे वडे दस सगठनो ने १९५६ के पहले छः महीनो मे १६ करोड़ २० लाख डालर से अधिक राशि इस कार्य पर खर्च की।

'वर्ल्ड नेवर्स' (विश्व पड़ोसी) नामक सगठन भी एशिया और अफ्रीका के देशो मे स्वास्थ्य, शिक्षा और कृषि के क्षेत्र मे प्रायोगिक परियोजनाएँ चला रहा है। इस संगठन का जन्म एक दिन एक ईसाई पादरी के इस उपदेश से हुआ कि व्यक्तिगत स्वैच्छिक दान के आधार पर ईसाई धर्म के सिद्धान्तो के अनुसार जन-सेवा का कार्य करना ही कम्युनिज्म को रोक सकता है। यह मगठन वही सहायता कार्य करता है जहा लोग उसके लिए इच्छा प्रकट करते हैं। यह सगठन ग्रामीणो को स्वावलम्वन मे सहायता देता है, उन्हें खेती, शिल्प, स्वच्छता और शिशु-परिचर्या के वेहतर तरीके सिखाता है।

वर्ल्ड लिटरेसी, इन्कार्पोरेटेड नामक संगठन प्रौढो को पढना सिखाने की डा० फ्रैंक लॉवक की विशिष्ट पद्धति की शि .देता है। इस पद्धति से पढना सीखकर गाँव के प्रौढ लोग अपनी खेती की विधियो और स्वास्थ्य रक्षा के तरीको मे सुधार कर सकते हैं। युद्धकालान वच्चो के लिए धर्म पिता योजना, स्वतन्त्र यूरोप के लिए राष्ट्रीय समिति, स्वतन्त्रता के लिए धर्मयुद्ध, अन्तर्राष्ट्रीय उद्धार समिति आदि अनेक

संगठन विदेशों मे सहायतार्थ व्यय करने के लिए अमेरिकनो से भारी मात्रा मे स्वैच्छिक दान सग्रह करते हैं।

यदि अमेरिकन मजदूर यूनियनो, विद्वत्संघो और राटरी आदि क्लबो की भाँति और भी बहुत से स्वैच्छिक सेवा-सगठन अन्य देशो मे अपने जैसे सगठनो के साथ मिलकर अपने अन्तर्राष्ट्रीय सगठन बना लें तो अन्य देशो मे सहायता का यह कार्य और भी बड़े पैमाने पर हो सकता है। विश्व सौहार्द के लिए जिन घनिष्ठ सम्बन्धो और सम्पर्को की आवश्यकता है वे सरकारो के बीच राजनयिक सम्बन्धो की स्थापना से नही बन सकते। विश्व मे एकता और सच्ची मैत्री तब तक स्थापित नही हो सकती, जब तक कि लाखो और करोडो व्यक्ति परस्पर एक-दूसरे के सम्पर्क मे आकर और विचारो का आदान-प्रदान कर आपस मे मानवीय और भावनात्मक सम्बन्धो की स्थापना न कर लें।

कल्पना कीजिये कि विभिन्न देशो के बीच इस प्रकार का मिलन और आदान-प्रदान बीस, तीस या पचास वर्ष तक चलता रहे। तब क्या यह सम्भव नही है कि वे विद्वेष और पूर्वग्रह जो आज लोगो को एक-दूसरे से अलग रखे हुए है, उसी तरह मिट जाएँ, जिस तरह महासघ निर्माण के समय अमेरिकन लोगो को एक-दूसरे से अलग करने वाले विद्वेष और पूर्वग्रह नष्ट हो गये थे? और क्या हम यह कल्पना नहीं कर सकते कि लोगो का यह स्वेच्छा से मिल कर काम करना ऐसे सगठनो और सम्बन्धो को जन्म देगा जो सयुक्त राष्ट्रसघ को उसी तरह नियन्त्रित और प्रभावित कर सकेंगे, जिस तरह आज हमारे राष्ट्रीय सगठन सयुक्त राज्य की सरकार को नियन्त्रित और प्रभावित करते हैं?

एक नई विश्व सस्कृति?

एक ऐसी दुनिया मे, जहाँ हर वक्त ही संकट और झगड़े बने रहते है, एकत्व की भावना पैदा करने के लिए सयुक्त राज्य क्या कर सकता है?

चीन की चित्रलिपि मे 'सकट' के लिए जो चित्राक्षर है, वह दो अन्य चित्राक्षरो—खतरा और अवसर—से मिलकर बना है। सचमुच ही आज इन दोनो—खतरा और अवसर—का जैसा मिलन हम देख रहे हैं, वैसा इससे पहले कभी नही देखा गया। आज हमारे हाथ मे यशस्विता की जो आशा और अनुकूलता आ गई है, उससे हम यह देख पा रहे हैं कि भूख और बीमारी की बाधाएँ आज दुर्लंघ्य नही रही, बल्कि स्वय मनुष्य के पैदा किये हुए झगडो ने ही प्रगति का रास्ता रोका हुआ है।

जैसा कि चेस्टर बोल्स ने कहा है, "मध्य ससार के लोगो को इतना अधिक प्रभावित करने वाले चार क्रातिकारी सिद्धान्त है राष्ट्रीय स्वतन्त्रता, मानवीय प्रतिष्ठा, आर्थिक उन्नति और शान्ति।" कोई भी निष्पक्ष पर्यवेक्षक बिना किसी कठिनाई के यह अनुमान लगा सकता है कि कम्युनिस्ट देशो को शेष ससार से अलग करने वाले लोहे के पर्दे के किस ओर इन सिद्धान्तो के पनपने और जीवित रहने की अधिक गुजाइश है।

मार्क्सवादियो की भाति हमारे पास सामाजिक सुधारो की कोई ऐसी पेटेंट दवा नही है जो तमाम बीमारियो का अचूक इलाज हो। लेकिन यही लोकतन्त्र की सब से बडी ताकत है, क्योकि हम किसी के ऊपर अपनी कोई विशिष्ट प्रणाली थोपते नही, बल्कि स्वास्थ्य और आर्थिक समृद्धि की ऐसी परिस्थितिया पैदा कर देते है, जिनमे लोग अपने उद्देश्यो को स्वय पूरा कर सके। हम जिस हाथ को थामते हैं, उसमे हथकडी नही पहनाते, बल्कि उसमे मदद के लिए कुछ रख देते हैं। हम रूस की तरह बाहर से क्रान्ति को नही भडका सकते, क्योकि हमारे इतिहास ने हमे यह विश्वास करा दिया है कि सामाजिक और आर्थिक उन्नति हर देश मे भीतर से होती है और वह उस देश के लोगो द्वारा अपने सविधान के आधार पर, जो मानवीय अधिकारो की रक्षा की गारटी करता है, की गई राजनीतिक कार्रवाई से ही सम्भव है।

किन्तु हमारा इतिहास अधिकाधिक लोगो के जीवन-स्तर को ऊँचा उठाने के लि ए एक स्थायी क्रान्ति की योजना अवश्य प्रस्तुत करता है—इस स्थायी क्रान्ति से लोगो को अधिक मात्रा मे और वेहतर भोजन मिल सकता है, उनके लिए अधिक अच्छे स्वास्थ्य की परिस्थितियां पैदा हो सकती उन्हे अधिक अवकाश, अधिक अच्छी शिक्षा और अधिक समानता और अवसरो की प्राप्ति हो सकती है,

अन्य देशो मे सयुक्त राज्य का सम्मान इस वात पर निर्भर है कि हम अपने ही देश मे अपनी समस्याओ को कैसे हल करते हैं—कैसे हम वच्चो और दूसरो की अपराध-वृत्ति की, गन्दी बस्तियो और अपनी औद्योगिक सभ्यता के नीचे छिपे भद्दे और मलिन रूप की समस्याओ को सुलझाते है, क्या हम अपने सव नागरिको को समान सरक्षण और लाभ प्रदान करते हैं और क्या हम मे वह परिपक्वता और जिम्मेदारी है जो ससार मे हमारी ऊँची स्थिति को कायम रखने के लिए आवश्यक है। अन्तर्राष्ट्रीय मैत्री के वारे मे हम चाहे कुछ भी कहें, उसका उतना असर कभी नही होगा, जितना अपने देश के भीतर किये गये हमारे कामो का होगा।

अमेरिकन लोग कभी-कभी अपने लोकतन्त्र के उपभोग मे दूसरो क ो भी हिस्सा वटाने का अवसर देने के अत्युत्साह मे आकर उन्हें लोकतन्त्र 'सिखाने' लगते है। इससे उनकी स्थिति बडी विषम हो जाती है। जिन लोगो ने फ्रास अ ौर इडोनेशिया मे, ग्रीस और फिनलैंड मे अपनी आजादी के लिए लडाई लडी है, उन्हे किसी तरह का 'सबक' लेने की आवश्यकता नही है। साथ ही हमे यह आग्रह भी नही करना चाहिए कि हर देश सयुक्त राज्य अ ौर सोवियत रूस मे से किसी एक का चुनाव कर ले।. म स्वय एक शताब्दी से भी अधिक समय तक पृथक्ता की नीति का अवलम्बन करते रहे हैं, इसलिए यह मानते हुए भी कि आज ससार पर उन दिनो की अपेक्षा अधिक भयकर खतरा विद्यमान है, हमे उन देशो के प्रति सहानुभूति रखनी चाहिए जो शक्ति-

सघर्ष से अलग रह कर अपने भाग्य का निर्माण स्वय करना चाहते हैं। हम अपनी सस्थाओ और परम्पराओ को अन्य देशो की मिट्टी मे नही रोप सकते। हम सिर्फ पद्धतियो और अभिवृत्तियो के आदान-प्रदान की ही आशा कर सकते है।

सारा ससार पश्चिम के वैज्ञानिक तरीको को और सार्वभौम शिक्षा कानून के शासन, सार्वजनिक स्वास्थ्य, सामाजिक सुरक्षा, व्यक्तिगत स्वतन्त्रता और जन-कल्याण के लिए सरकार के उत्तरदायित्व के सम्बन्ध मे हमारे स्टैण्डर्ड को अपनाने के लिए खुशी से तैयार रहता है। किन्तु पश्चिमी सभ्यता भी अन्य सस्कृतियो से बहुत कुछ शिक्षा ले सकती है।

पूर्व की विशेषता यह है कि वह ससार को एक सर्वसमावेशी और अव्यवहित रूप मे ग्राह्य सौन्दर्य की सतत विद्यमान धारा के रूप मे ग्रहण करता है। वह समय को एक बहती नदी के बजाय एक स्थिर जलाशय के रूप मे देखता है। पश्चिम जहाँ सब अनुभवो का विश्लेषण करने का प्रयत्न करता है, वहाँ पूर्व यह मान कर चलता है कि सभी चीजे अशत. अपूर्वनिर्धारित है। इसलिए बुद्धिमान व्यक्ति अपने आपको किसी बात से बाँधता नही है, क्योकि बाधने का अर्थ यह है कि यदि घटनाक्रम के बदलने से पीछे हटना पडे तो वह गुजाइश भी उसके लिए नही रहेगी। यह दृष्टिकोण विश्व की राजनीति पर बहुत गहरा और महत्त्वपूर्ण असर डालता है।

आज इस जमाने मे हमारे सामने सबसे बडा काम एक ऐसा दृष्टिकोण अपनाना है जो वैज्ञानिक दृष्टि से अत्यधिक उन्नत और सैद्धान्तिक दृष्टि से प्रेरित पश्चिमी राष्ट्रो के ऊचे जीवन-स्तर के साथ पूर्वी देशो की सौन्दर्य की सार्वभौम अनुभूति, स्थायी स्थितप्रज्ञता, आध्यात्मिकता और सर्वात्मबुद्धि का समन्वय कर सके।

जब से अमेरिकन अतीन्द्रियवादियो ने भौतिकवाद पर आक्रमण किया और पूर्व के आध्यात्मिक स्रोतो से प्रेरणा ग्रहण की, तब से पूर्व की विचारधाराओं, दर्शन और कला मे हम लोग अधिक रुचि लेने लगे

हैं। जिस जमाने मे अमेरिकन जहाज चीन से दौलत और कीमती खजाने लेकर आया करते थे, तभी से अमेरिकन कला पर पूर्व की छाप नजर आती रही है। अमेरिकन चित्रकला पर, खास कर स्थापत्य कला पर, जापान का प्रभाव काफी व्यापक है और निरन्तर वढ रहा है। पूर्व के धर्म अमेरिका मे अनेक धार्मिक मतमतान्तरो और सम्प्रदायो के आधार है। पूर्व सम्बन्धी अध्ययन का अमेरिका के सभी वडे विश्वविद्यालयो मे तेजी से प्रसार हुआ है। पहले पूर्व की सभ्यताओ के बारे मे आम अमेरिकन जनता को केवल पुस्तको या चित्रो से ही जानकारी मिलती थी किन्तु आज विदेशो से लौटे सैनिको और पर्यटको की बढती हुई सख्या के द्वारा इन सभ्यताओ की कुछ हद तक प्रत्यक्ष जानकारी भी मिल रही है। हवाई द्वीप पूर्व और पश्चिम का मिलन-स्थल है, जहाँ अनेक स्तरो पर दोनो की सभ्यता और सस्कृति का परस्पर विलय हुआ है। इस द्वीप मे अमेरिका की धरती पर दोनो जीवन-दर्शनो का सम्मिश्रण हो रहा है।

विश्व परिभ्रमण और सामूहिक प्रचार के साधनो के जरिये सब को निरन्तर सुलभ होने वाली जानकारी के द्वारा अमेरिकन लोग पहले हमेशा की अपेक्षा आज दुनिया के अधिक निकट सम्पर्क मे है। श्रमिको, किसानो, युवको और महिलाओ के सगठन आज अपने सदस्यो को वैदेशिक मामलो के बारे मे तथ्यो की जानकारी देने मे पहले से कही अधिक समय व्यतीत करते है। आजकल आप किसी भी सर्विस क्लब या यूनियन की पत्रिका को उठाइये आपको विदेशी मामलो के सम्बन्ध मे कम-से-कम एक लेख अवश्य मिलेगा और इससे अधिक लेख भी मिल सकते है। ये सगठन विदेशी मामलो के बारे मे एक व्यापक जनमत के लिए आधार प्रस्तुत करते है, जो बाद मे कॉग्रेस को प्रभावित करता है और प्रशासन को समर्थन प्रदान करता है। आज इस बात के अनेक ठोस प्रमाण उपलब्ध हैं कि अब अमेरिका का जनमत बहुत स्थिर हो गया है और उसमे अधिक परिवर्त्तन नही होते।

अमेरिका शेष ससार मे अपनी जिम्मेदारी को जितना अधिक महसूस करता है और ससार के मामलो मे जितना ज्यादा हिस्सा लेता जा रहा है, उतना ही उसकी व्यक्तिवादिता, स्वैच्छिक सगठनवाद और सघवाद की भावनाए भी आगे बढती जाती है। पॉल रश और विलफोर्ड विलटन जैसे लोगो के वैयक्तिक प्रयत्न, उनकी सफलता के लिए जनता का स्वैच्छिक सगठनो के जरिये सहयोग और सयुक्त राष्ट्रसघ और उसके विविध सगठनो मे सघवाद के सिद्धान्त का उपयोग, ये सभी आज के जमाने के चिह्न और प्रतीक है। हमारी दुनिया ऐसी है जिसमे दूरगामी दृष्टि से शक्ति-सन्तुलन का महत्त्व उतना नही है, जितना कि सस्कृतियो के पारस्परिक सम्पर्क, समन्वय और आदान-प्रदान का जो एक नई विश्व सभ्यता का निर्माण कर रहा है, विज्ञान की विश्लेपण-पद्धति और कला की सश्लेपण-पद्धति के बीच सन्तुलन कायम कर रहा है और जीवन-स्तर को ऊचा उठा कर समस्त नर-नारियो को अपनी बौद्धिक और आध्यात्मिक विरासत के पूर्ण उपभोग का अवसर प्रदान करता है।

सन् १९२० के दशक मे, जैसा कि जॉर्ज सोल ने कहा है, सयुक्त राज्य मे 'सिक्योरिटी' शब्द का अर्थ होता था बॉड, हुण्डी या शेयर। सन् १९३० के दशक मे उसका अर्थ हो गया बुढापे मे गरीबी से सुरक्षा। सन् १९४० के दशक मे उसका अर्थ हुआ ससार की तानाशाही से रक्षा। उससे अगले १९५० के दशक मे अक्सर उसका अर्थ समझा जाने लगा किसी सम्भावित शत्रु से राज्य के गोपनीय रहस्यो और भेदो की हिफाजत। और अब १९६० के दशक मे उसका अर्थ एक ऐसा जीवन हो सकता है जो सृजनात्मक और सोद्देश्य क्रिया-कलाप और गतिविधियो के कारण सुरक्षित और निश्चिन्ततापूर्ण हो गया हो, बशर्ते कि हम अपनी क्षमताओ और योग्यताओ से अधिकतम लाभ उठाए।

इस सुरक्षित जीवन के बीज बोये जा चुके हैं। हमने एक उन्मुक्त समाज का निर्माण कर लिया जो अपनी सस्थाओ और परम्पराओ मे सुधार के लिए हमेशा प्रयत्न करता रहता है, जो अपनी निज की अग्र-

गत के दबाव के कारण हमेशा एक तरह को उत्तेजना अनुभव करते हुए भी औपचारिकता से रहित और मैत्रीपूर्ण रहता है, जिसमे सघर्ष और विरोध भी है और ऐक्य भी, जो भविष्य के लिए आशाओ से ओत-प्रोत है और वर्त्तमान के अन्यायो से विक्षुब्ध भी और फिर भी जो आध्यात्मिक, मानसिक, भौतिक और शारीरिक सभी प्रकार की शक्तियों और ऊर्जाओ से अनुप्राणित और चिर-नवीन है। इस समाज की वर्चस्विता अंशतः उसके यौवन का परिणाम है और उसकी आशावादिता इसके भौतिक प्राचुर्य का फल है।

इस समाज और सस्कृति के बारे मे सब से बड़े श्रेय की बात यह है कि उसका स्वर भावात्मक है, अभावात्मक नही, आशामय है निराशापूर्ण नही, प्रेमपूर्ण है घृणामय नही। वह विनाश करना नही चाहता, चाहता है निर्माण करना। वह वर्ग-विद्वेप पैदा करना नही चाहता, बल्कि वर्ग-भेद का ही अन्त कर देना चाहता है। वह असमानता को मिटाने के लिए ससार मे विद्यमान अभाव और दैन्य का बँटवारा करना नही चाहता, वल्कि चाहता है कि उत्पादन को इतना बढा दिया जाए कि जो प्राचुर्य किसी समय कुछ थोडे-से लोगो को प्राप्त था, वह सभी को प्राप्त होने लगे। शताब्दियो से यह समाज पड़ोसीचारे के सहयोग से समृद्ध और परिपुष्ट जीवन का अभ्यस्त रहा है, इसलिए उसने अब इस तथ्य को स्वीकार कर लिया है कि उसका नया पड़ोस यह सारी दुनिया है।